

## टॉम काका की कुटिया (UNCLE TOM'S CABIN)

हिंदी अनुवाद : हनुमान प्रसाद पोद्दार

### 1. गुलामों की दुर्दशा

माघ का महीना है। दिन ढल चुका है। कैंटाकी प्रदेश के किसी नगर के एक मकान में भोजन के उपरांत दो भलेमानस पास-पास बैठे हुए किसी वाद-विवाद में लीन हो रहे थे।

कहने को दोनों ही भलेमानस कहे गए हैं, पर थोड़ा ध्यान से देखने पर साफ मालूम हो जाएगा कि इनमें से एक की गणना सचमुच भले आदमियों में नहीं की जा सकती। यह आदमी देखने में नाटा और मोटा है। इसका शारीरिक गठन बहुत ही मामूली है। कपड़े-लत्तों से अलबत्ता खूब बना-ठना है। उसके और रंग-ढंग भी ऐसे हैं जिनसे जान पड़ता है कि यह बड़ा आदमी बनना चाहता है। लगता है, मानो इस समय धन इकट्ठा करके समाज के अंधकूप से बाहर निकलने की चेष्टा कर रहा हो। वह टूटी-फूटी और अशुद्ध अंग्रेजी में बातचीत कर रहा है। बीच-बीच में तरह-तरह के भद्दे और अश्लील शब्द भी उसके मुँह से निकल पड़ते हैं।

दूसरा आदमी घर का मालिक है। वह देखने में सज्जन जान पड़ता है। इसका नाम आर्थर शेल्वी है और पहले का हेली।

उन दोनों में देर से बातें हो रही थीं, पर हम बीच से ही आरंभ करते हैं। शेल्वी ने कहा - "मैं चाहता हूँ कि यही बात पक्की रहे।"

हेली बोला - "नहीं मिस्टर शेल्वी, हम इस बात को कभी नहीं मान सकते, कभी नहीं!"

शेल्वी - "क्यों, तुम सच्ची बात नहीं जानते। टॉम मामूली दास नहीं है। इन दामों पर तो मैं कहीं भी उसे सहज ही बेच सकता हूँ। वह बड़ा सच्चरित्र, ईमानदार और चतुर है। मेरे सारे काम बड़ी चतुराई से करता है।"

"अजी, बस करो, बहुत शेखी मत बघारो। गुलाम लोग जैसे सच्चरित्र और ईमानदार होते हैं, हम खूब जानते हैं। तुम्हारा टॉम ही कहाँ का अनोखा ईमानदार आ गया!"

"नहीं-नहीं, वास्तव में टॉम सच्चरित्र और धार्मिक है। बरसों से वह मेरा काम करता चला आया है, लेकिन कभी किसी काम में उसने मुझे धोखा नहीं दिया है।"

"हाँ साहब, यह तो ठीक है, पर बहुत लोगों का खयाल है कि हब्शी गुलामों को धर्म-कर्म

का बिल्कुल ज्ञान नहीं होता है, लेकिन हम ऐसा नहीं समझते। अभी पिछले साल हम अर्लिस में एक दास बेचने को ले गए थे। वह बड़ा ही धार्मिक और सीधा-सादा था। उसमें हमें खासा मुनाफा रहा। बेचनेवाले ने बड़े संकट में पड़कर हमारे हाथ बेचा था। इसी से सस्ते में हाथ लग गया और बेचने में हमें बड़ा फायदा रहा। खरे धर्म की बड़ी कीमत है। यह गुण होने से दासों के दाम भी बढ़ जाते हैं, लेकिन भाई, माल जरा होना चाहिए असली।"

शेल्वी बोला - "मैं कह सकता हूँ कि टॉम के जैसे सच्चे धर्मात्मा संसार में बहुत कम ही होंगे। अभी कल की बात है। मैंने उसे सिनसिनेटी में एक आदमी के यहाँ से अपने पाँच सौ रुपए लाने को भेजा था। वह फौरन रुपए लेकर लौट आया। वहाँ उसे कितने ही बदमाशों ने पाँच सौ रुपए लेकर चंपत हो जाने की पट्टी पढ़ाई, बहुतेरा बहकाया, पर उसने किसी की एक न सुनी। तुम्हीं कहो, ऐसे ईमानदार दास को क्या कोई अपनी इच्छा से बेचेगा? यह तो तुम्हारे कर्ज में जकड़ जाने से लाचार होकर बेचना पड़ रहा है। टॉम का मूल्य मेरे सारे कर्ज के बराबर है। तुममें समझ हो तो ऐसे गुण-संपन्न टॉम को लेकर मेरा पीछा छोड़ो।"

"भाई, कारोबारी आदमी में जितनी समझ होती है, उतनी तो हममें भी है। पर इस साल बाजार की हालत उतनी अच्छी नहीं है, नहीं तो मैं तुम्हारा ही कहना मान लेता।" हेली ने लाचारी के स्वर में कहा।

"फिर तुम क्या कहना चाहते हो?"

"टॉम के साथ एक छोकरा या छोकरी नहीं दे सकते?"

"मेरे पास बेचने के लिए कोई लड़का-लड़की नहीं है। मैं अपने दास-दासियों को कभी नहीं बेचता। यह तो इस बार लाचारी की हालत में बेच रहा हूँ।"

अभी शेल्वी की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि घर का दरवाजा खोलकर एक पाँच-छह वर्ष का वर्णसंकर बालक अंदर आया। देखने में वह बहुत सुंदर था। काले-काले घुँघराले बाल उसके कोमल चेहरे पर चारों ओर बिखरे हुए थे। उसकी दोनों काली-काली आँखें चमक रही थीं। उसकी आँखों से नम्रता और तेज टपक रहा था। उसके सादे-स्वच्छ वस्त्र मुख की सुंदरता को और भी बढ़ा रहे थे। बालक का लजीला और निडर स्वभाव देखते ही पता लग जाता था कि वह अपने मालिक का प्यारा है।

शेल्वी ने बालक को देखते ही कहा - "जिम, लेना यह।" और एक मुट्ठी किशमिश उसके सामने डाल दी। किशमिश उठाने के लिए बालक को लपकता देखकर उसका मालिक हँसने लगा। किशमिश उठा लेने के बाद शेल्वी ने उस बालक को अपने पास बुलाकर प्यार से कहा - "जिम, इन्हें जरा अपना नाच तो दिखला!"

बालक झट तैयार होकर ठुमुक-ठुमुक नाचने लगा। इस पर हेली बड़ा खुश हुआ, खूब वाह-

वाह की और एक नारंगी उस लड़के को दी।

शेल्वी ने कहा - "अब जरा अपने कूबड़े चाचा की तरह कमर झुकाकर लकड़ी के सहारे चलने की नकल तो कर।"

देखते-देखते बालक ने मालिक की लाठी लेकर कूबड़ों के लाठी के सहारे चलने की हूबहू नकल कर दी। बालक की इस विचित्र बाल-लीला को देखकर शेल्वी और हेली दोनों खूब हँसे। इसी भाँति अपने मालिक की आज्ञा से बालक ने और भी कई नकलें करके दिखाईं।

यह सब देखकर हेली बोला - "वाहजी, खूब अलबेला छोकरा है यह तो! बस, इसी को टॉम के साथ दे दो, फिर तुम्हारी छुट्टी, एकदम छुट्टी! कसम से यही करो, सारा हिसाब चुकता हो जाएगा।"

इसी समय एक वर्णसंकर युवती धीरे से दरवाजा खोलकर अंदर आई। वह बालक की माता जान पड़ती थी। दोनों की काली आँखें और घुँघराले बाल एक-से थे। हेली उसकी सुंदरता पर मग्ध हो, उसकी ओर आँखें गड़ाकर घूरने लगा। शर्म से युवती की आँखें नीची हो गईं। एक बार देखने में ही उसके अंगों की सुडौलता दास-व्यवसायी हेली के मन में घर कर गई।

शेल्वी ने आंगतुक स्त्री इलाइजा को देखकर पूछा - "इलाइजा, क्या चाहती हो?"

"मैं हेरी को ढूँढ़ने आई थी।" बालक पाई हुई चीजों को लेकर माँ के पास दौड़ गया।

शेल्वी ने कहा - "इसे ले जाओ।"

बालक को गोद में उठाकर युवती चली गई। इलाइजा के चले जाने पर हेली बोला - "कैसी सुंदर छोकरी है। इसे अर्लिस में बेचो तो मालामाल हो जाओ। हमने हजार-हजार पर जिन छोकरियों को बिकते देखा है, वे भी इससे ज्यादा खूबसूरत नहीं होतीं।"

शेल्वी - "मैं इसे बेचकर धन इकट्ठा नहीं करना चाहता।"

"क्यों? बोलो, तुम इसे कितने का माल समझते हो? कितने पर सौदा करने को राजी हो? और बेचो तो क्या लोगे?"

शेल्वी - "मैं इसे कभी नहीं बेचूँगा। बराबर का सोना लेकर भी मेरी स्त्री इसे अलग नहीं करेगी।"

हेली बोला - "वाह उस्ताद, तुमने भी खूब कही! अरे, औरतें नफे-नुकसान की बातें क्या जानें! रुपए के मोल का उन्हें क्या पता! लेकिन तुम अपनी बीवी को एक बार समझाओ तो कि इसे बेच डालने पर कैसे बढ़िया-बढ़िया गहने और कपड़े हाथ लगेंगे। फिर मैं देखूँगा कि तुम्हारी

बीवी इसे बेचना चाहती है कि नहीं।"

शेल्वी ने झुँझलाकर दड़ता से कहा - "हेली, तुमसे एक बार कह दिया कि मैं इसे नहीं बेचूँगा, फिर क्यों बेकार की बातें करते हो? एक बार जिस काम के लिए इनकार कर दिया, उसे फिर कभी नहीं करूँगा। सच मानो!"

इस पर हेली बोला - "अच्छा, बाबा, जाने दो। लड़के को तो दोगे न? हम ज्यादा दाम देकर इसे खरीद रहे हैं। तुम्हें बेचना ही पड़ेगा।"

शेल्वी - "तुम्हें इस लड़के की क्या जरूरत है?"

हेली - "हमारे एक दोस्त ने बेचने के लिए कुछ खूबसूरत लड़के माँगे हैं। सच कहता हूँ कि तुम्हारे जैसे बड़े आदमी बड़े शौक से ऐसे छोकरो को खरीदते हैं। बाजार में इनके बड़े दाम उठते हैं। फिर यह लड़का! यही तो असल में बेचने की चीज है। कैसा बढ़िया खिलाड़ी है, कैसा गाना गाता है।"

शेल्वी - "मैं इसे नहीं बेचना चाहता। मेरे दिल में कुछ दया है। इसे इसकी माँ की गोद से अलग करने की मेरी इच्छा नहीं है।"

हेली - "सो तो मैं खूब समझता हूँ। इन सब नन्हें-नन्हें छोकरो को बेचने के वक्त इनकी माँ बहुत रोती-चिल्लाती हैं और तुम लोग इनका रोना सुनकर पिघल जाते हो। लेकिन जरा हिकमत से काम लिया जाए तो, तुम्हारे सिर की कसम, जरा भी हल्लड़ नहीं मचता। सुनो, लड़के को बेचने के पहले उसकी माँ को कहीं टरका दो। फिर बच्चे को खरीदार के हवाले कर देने पर जब वह औरत घर लौटे तो उसे एक जोड़ा कर्णफूल या और कोई दिल-बहलाव की चीज खरीदकर दे दो। बस, उसका सारा दुःख-दर्द काफूर हो जाएगा, वह लड़के को याद तक नहीं करेगी। तुम्हारी कसम, यह सब तो हम लोगों के बाएँ हाथ का खेल है।"

शेल्वी ने दुःख के स्वर में कहा, मैं तो नहीं समझता कि इतने से उसके दिल को संतोष हो जाएगा।"

हेली बोला - "संतोष क्यों नहीं होगा? ये भी क्या कोई गोरे हैं? जरा चतुराई से काम लो तो बेड़ा पार है। बहुत लोग कहते हैं कि गुलामी का रोजगार मनुष्य को पत्थर बना देता है, पर यह सरासर झूठ है। बहुतेरे दास-व्यवसायी जरा-सी भावुकता में सारा बना-बनाया खेल बिगाड़ बैठते हैं। सच कहता हूँ, उन्हें इससे बड़ा नुकसान उठाना पड़ता है। तुम्हारी कसम, चाल से काम न लेने की वजह से अर्लिस में ऐसे ही एक व्यापारी के बहुत-से रुपए मिट्टी में मिल गए। उसने एक औरत खरीदी थी। उसका एक छोटा-सा लड़का था। लड़का दूसरे के हाथ बिका था। खरीदार ने लड़के को औरत की गोद से खींचकर फेंक दिया और उसकी मुश्कें कसकर घर ले गया। इसी से वह रो-रोकर पागल हो गई और आखिर में मर गई। नफे की उम्मीद पर जो एक हजार गिने थे,

उसमें नफा तो गया भाड़ में, एक हजार में एक टका भी वसूल न हुआ। इसी से मैं जो करता हूँ, बड़े दाव-पेंच के साथ करता हूँ। बोलो, यह क्या अक्लमंदी नहीं है? भगवान जानते हैं मेरे काम में कभी कोई टंटा बखेड़ा उठता ही नहीं। तुमने जो कहा, वह हमको भी ठीक जँचता है। दास-दासियों के साथ दया का बरताव तो करना ही चाहिए। हम किसी औरत की गोद से लड़का नहीं छीनते; बल्कि उसे किसी बहाने से दूसरी जगह टरका देते हैं और पीछे से लड़के को भी चंपत कर देते हैं। देख लो, इससे दया-माया, धरम-करम सब बने रहते हैं। हम हमेशा यों ही दया के साथ काम करते हैं। नुकसान किस चिड़िया का नाम है, हम जानते ही नहीं। बहूतरे तो हमारी दया की बात का मजाक उड़ाते हैं। वे इसे दया नहीं, ढोंग बताते हैं। पर बताया करें, हमने कभी घाटा तो नहीं उठाया। दया से काम लेने से कभी पैसा बरबाद नहीं जाता। तुम्हीं कहो, हम झूठ कहते हैं?"

हेली की दया की डींग ने शेल्वी को हँसा दिया। शेल्वी का हँसना देखकर हेली का उत्साह दूना हो गया। उसने फिर बातों का सूत्र आगे बढ़ाया। कहने लगा - "यह बड़ा अचरज है कि लोग ये सब बातें समझते नहीं। पहले टॉम लोकर नाम का हमारा एक साझीदार था। यों तो इन कामों में वह बड़ा घाघ था, पर गुलामों के लिए तो कमबख्त यमराज ही था। हम उसे बहुत समझाते कि 'टॉम, लड़कियाँ जब रोती हैं तब पीट-पीटकर उनका कचूमर निकालने से क्या फायदा? उनके रोने-धोने से अपना क्या बिगड़ता है? अरे रोना-धोना तो उनका काम ही है। वह तो कभी रुकने का नहीं। फिर नाहक ठोंक-ठोंककर उनका हूलिया बिगाड़ने से क्या फायदा! उलटा अपना ही नुकसान है।' हम उसे दो मीठी बातें करके काम निकालने के लिए बहुत समझाते। कहते कि कोड़ों की मार से जो काम नहीं निकलता, वह दो मीठी बातों से हो जाता है, किंतु टॉम पर इसका कोई असर न होता। आखिर जब उसके साझे में हमें घाटा होने लगा, तो हमने साझा तोड़ दिया। लेकिन भई, मन का बड़ा साफ और पक्का कामकाजी आदमी था वह। उसके मुकाबले का आदमी खोजे जल्दी नहीं मिल सकता, यों तो दुनिया भरी पड़ी है।"

शेल्वी - "तुम क्या टॉम लोकर से अच्छी तरह से काम चलाते हो?"

हेली - "बेशक, जहाँ जरा गड़बड़ जान पड़ती है, वहाँ हम बहुत सँभलकर काम लेते हैं। छोटे लड़के-लड़कियों को बेचने के समय हम उनकी माताओं को खिसका देते हैं। कहावत है न कि आँखों से दूर होने पर मन से भी दूर हो जाता है। गोरों की तरह लड़कों के साथ रहने की आशा करना काले गुलामों का काम नहीं। बराबर ऐसी शिक्षा पानेवाले गुलाम सपने में भी वैसी आस नहीं करते।"

शेल्वी बोला - "मालूम होता है, तब तो मेरे यहाँ के दास-दासियों ने सही शिक्षा नहीं पाई है।"

हेली - "हाँ, बेशक! तुम सारे कैंटाकीवालों ने गुलामों को बिगाड़ रखा है। करना चाहते हो तुम भला, नतीजा होता है उल्टा। एक गुलाम आज यहाँ है, कल उसे टॉम ले जाएगा, परसों उसे

डिक के घर जाना पड़ेगा और अगले दिन फिर किसी और का होगा। यों ही दुनिया का चक्कर काटता रहेगा। अगर तुम उसे खूब सुख देकर, उसके मन में कुटुंब के साथ रहने की आशा पैदा कर देते हो तो फिर वह तकलीफ सहने लायक नहीं रह जाता। तुम लोग कालों और गोरों का भेद मिटा देना चाहते हो। पर क्या यह कभी संभव है? काला गोरे की बराबरी कर सकता है? काला काला ही है, गोरा गोरा।"

अंग्रेज सौदागरों के दया-धर्म की गूढ़ व्याख्या करके ईसा से अपनी दयालुता की तुलना करते हुए हेली ने एक गिलास शरी पीकर अपनी प्यास बुझाई और फिर शेल्वी से पूछा, हाँ, तो अब कहो, तुम क्या करोगे?"

शेल्वी ने कहा - "अपनी स्त्री से सलाह करके बताऊँगा। पर तुम किसी के सामने इन बातों की चर्चा मत करना। कहीं मेरी स्त्री के कानों तक यह बात पहुँच गई तो बड़ा बखेड़ा होगा। वह जीते-जी कभी दास-दासी बेचना स्वीकार न करेगी।"

हेली - "हम बहुत जल्दी दूसरी जगह जाना चाहते हैं। जो कुछ करना हो, आज ही तय कर डालो।"

शेल्वी - "अच्छा, तुम सात बजे आ जाना। जैसा होगा, बता दूँगा।"

हेली के जाने के उपरांत शेल्वी साहब मन-ही-मन सोचने लगे कि कर्ज भी बुरी बला है, जिसके पीछे टॉम जैसे स्वामिभक्त ईमानदार नौकर को इस दृष्ट के हाथ बेचना पड़ रहा है! यदि मैं इसका ऋणी न होता तो टॉम को बेचने की बात मुँह से निकालते ही मैं हंटरों से इसकी खबर लेता। पर इलाइजा के लड़के के बेचने की बात अपनी स्त्री से कैसे कहूँगा? वह तो इसे सुनते ही झगड़ने लगेगी।

इस समय केंटाकी प्रदेश में दक्षिण की भाँति दास-दासियों पर घोर अत्याचार नहीं होता था। लूसियाना आदि प्रदेशों में अंग्रेज बनिए, अधिक मूनाफे के लोभ में, गुलामों से दिन-रात काम लिया करते थे और जरा भी भूल होते ही पीठ की चमड़ी उधेड़ देते थे। पर केंटाकी प्रदेश के दो-एक सहृदय अंग्रेज दास-दासियों के साथ सदा अच्छा व्यवहार करते थे। दास-दासियों का भी अपने मालिकों पर प्रेम होता था। किंतु यह सब होने पर भी दासत्व-प्रथा से होनेवाले कष्टों में तनिक भी कमी न होती थी। देश के प्रचलित कानून के कारण कर्ज के लिए सहृदय अंग्रेजों के भी गुलामों को नीलाम होना पड़ता था। शेल्वी साहब बहुत निर्दयी न थे, बल्कि उन्हें मामूली तौर पर सहृदय कहा जा सकता था। दास-दासियों के साथ कठोर व्यवहार करके उनका हाथ कभी कलंकित नहीं हुआ था। पर इस समय वह बेचारे क्या करें, दास-व्यवसायी हेली के कर्ज में बुरी तरह से जकड़ गए थे। उससे छूटने के लिए दास-दासी बेचने के सिवा और कोई उपाय नहीं था। हेली ने उनके टॉम नामक दास को खरीदना चाहा था। टॉम को न बेचें तो सब-कुछ नीलाम हुआ जाता है। पहले हेली के साथ शेल्वी साहब की उसी कर्ज के विषय में बातें हो रही थीं। अंत में

हेली ने टॉम को खरीदने का प्रस्ताव किया और शेल्वी साहब को उसे मानना पड़ा; पर इलाइजा के पुत्र को बेचने न बेचने का अभी तक कुछ निश्चित न हुआ था। इलाइजा जब हेरी की खोज में साहब के कमरे में घुसने लगी, तभी उसके कान में भनक पड़ गई कि हेली उसके लड़के को खरीदना चाहता है। इस पर उसने बाहर आइ में खड़ी होकर उन लोगों की सारी बातें सुनने का विचार किया था, पर शेल्वी साहब की मेम ने उसे किसी दूसरे काम से पुकार लिया। इससे उसे तुरंत वहाँ से हट जाना पड़ा। अपनी संतान की बिक्री की बात सुनकर वह बहुत ही घबरा गई थी। उसकी छाती धड़कने लगी थी। उसके होश-हवास ठिकाने न रहे। शेल्वी साहब की मेम ने उससे कपड़ा लाने को कहा और उसने लाकर रख दिया एक गिलास पानी। कहा पानी को तो उठा लाई बोतल। इससे मेम ने ऊबकर स्नेह-भरे वाक्यों में उसे डाँटकर कहा - "अरी इलाइजा, आज तुझे क्या हो गया है?"

इस पर इलाइजा सिसकने लगी। शेल्वी साहब की मेम ने पूछा - "बेटी, तुझे हो क्या गया है?"

इलाइजा और रोने लगी। थोड़ी देर बाद बोली - "माँ, बाबा के पास एक दास-व्यवसायी आया है। मैंने उसकी बातें सुनी हैं।"

शेल्वी साहब की मेम बोली - "बस, तू ऐसी ही है। अरे, दास-व्यवसायी आया है तो आने दे! क्या हुआ?"

इस पर इलाइजा घबराकर सिसकती हुई बोली - "माँ, बाबा क्या मेरे हेरी को बेच डालेंगे?"

श्रीमती शेल्वी प्रेम-भरे वचनों से बोली - "अरी, तू तो पागल हो गई है। कौन बेचता है तेरे हेरी को? तू नहीं जानती कि तेरे बाबा दक्षिणी प्रदेश के निर्दयी लोगों के हाथ दास-दासी नहीं बेचा करते। अपने दास-दासियों को वे कभी नहीं बेचेंगे। तू नाहक ही 'हेरी-हेरी' करके पागल हो रही है! इधर आ, जल्दी से मेरा जूड़ा बाँध दे।"

इन व्यर्थ की बातों को अनसुनाकर इलाइजा बोली - "माँ, बाबा को मेरे हेरी को मत बेचने देना।"

शेल्वी की मेम ने दया से भरकर कहा - "तू बिल्कुल बेसमझ है। तू चुपचाप बैठी रह। मुझे अपनी संतान बेचना स्वीकार है, पर तेरी संतान नहीं बेचने दूँगी। मैं देख रही हूँ, तू इसी तरह पागल हो जाएगी। हमारे घर कोई आया, बस, तू समझ बैठी कि तेरे लड़के का खरीदार ही है।"

इस समझाने-बुझाने से इलाइजा को कुछ संतोष हुआ और वह मेम के बाल ठीक करने लगी। शेल्वी साहब की मेम बड़ी दयालु थी। उसका हृदय ज्ञान, धर्म और सद्भावों से भरा हुआ था। दास-दासियों को वह अपनी संतान के समान प्यार करती थी। गुलामी की प्रथा से उसे बड़ी घृणा थी। शेल्वी साहब की धर्म पर अधिक श्रद्धा न थी। सारे सत्कर्मों का भार अपनी स्त्री के

हाथों में सौंपकर वे निश्चित थे। मालूम होता है, उन्होंने समझ रखा था कि बड़े-बड़े सत्कार्य करके उनकी स्त्री जो ढेर का पुण्य इकट्ठा कर रही है, उसी के प्रताप से वे दोनों तर जाएँगे, उन्हें और अलग पुण्य करने की कोई आवश्यकता नहीं है, उतना ही पुण्य दोनों के लिए काफी होगा। आइए, एक बार शेल्वी साहब के निर्जन घर में चलकर देखें कि वे किस सोच-विचार में पड़े हैं।

शेल्वी साहब को अपने चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार दिखाई दे रहा है। वे सोच रहे हैं कि इलाइजा के पुत्र की बिक्री के विषय में स्त्री से क्या कहें, कैसे कहें। शेल्वी साहब को अपनी मेम का जितना डर है, इलाइजा के दुःखित होने की उतनी फिक्र नहीं। वे केवल भय से व्याकुल हैं। उनकी समझ में नहीं आता कि वे क्या करें। मेम साहब जानती थी कि शेल्वी साहब दयालु हैं। इसी से उन्होंने इलाइजा को सरलता से इस प्रकार धीरज बँधा दिया था। स्वप्न में भी नहीं सोची थी कि उसके स्वामी ऐसा करेंगे। और तो क्या, इलाइजा की बात का उसने जरा भी खयाल न किया। इसी से उसने अपने पति से इन बातों की चर्चा तक न की और उस दोपहर को वह किसी पड़ोसी के यहाँ मिलने चली गई।

## 2. स्वतंत्रता या मृत्यु

पीछे आगे

इलाइजा शेल्वी साहब के घर बड़े लाड़-प्यार से पली थी। श्रीमती शेल्वी इलाइजा पर बड़ा स्नेह रखती थी। अपनी कन्या की भाँति उसका लालन-पोषण करती थी। अमरीका में और जो बहुत-से गोरे अंग्रेजी सौदागर थे, वे सुंदर दासियों के गर्भ से लड़के-लड़की पैदा करके बाजार में उन्हें ऊँचे दामों पर बेच डालते थे। उन पापी कलंकी गोरे अंग्रेज सौदागरों के घर इन अभागी सुंदर दासियों के सतीत्व की रक्षा की कोई संभावना न रहती थी। पर सौभाग्यवश इलाइजा वैसे दुःख, यंत्रणा और पापों से बची हुई थी। शेल्वी साहब की मेम ने उसे ईसाई धर्म की खासी शिक्षा दिलाई थी। सत्संग में रहने के कारण इलाइजा का चरित्र बड़ा पवित्र था। जब वह युवती हुई तो श्रीमती शेल्वी ने जार्ज हेरिस नाम के एक बलिष्ठ, बुद्धिमान और सुंदर वर्ण-संकर के साथ उसका विवाह कर दिया। जार्ज शेल्वी साहब के एक पड़ोसी का दास था। रूप-गुण, सभी बातों में वह इलाइजा के योग्य था। पर जार्ज का मालिक गुलामों से बड़ा निष्ठुर व्यवहार करता था। उन्हें सदा दुःख देता था और उनको कोड़े लगाता था। जार्ज का जन्म एक अंग्रेज बनिए और अफ्रीका की एक क्रीत दासी के मेल से हुआ था। उस बनिए की मृत्यु हो जाने पर, उसके कर्ज के लिए, जार्ज को अपने भाई-बहनों सहित नीलाम होना पड़ा। जार्ज के वर्तमान मालिक ने उसे नीलाम में खरीदकर विलसन नामक एक आदमी के पाट के कारखाने में लगा दिया। जार्ज कारखाने में काम करके जो कुछ पाता था, उसे अपने मालिक को सौंप देना पड़ता था। दासों को अपने कमाए हुए धन पर कोई अधिकार नहीं था। बैल, घोड़े आदि पशुओं को किराए पर चलाकर जैसे लोग धन कमाते हैं, उसी प्रकार अमरीका के गोरे सौदागर गुलामों को किराए पर लगाकर रुपये इकट्ठा करते थे।



विलसन के कारखाने में जार्ज बड़ी सावधानी और ईमानदारी से काम करता था। गुलाम होने पर भी उसकी बुद्धि बड़ी तेज थी। उसने अपनी अकल से पाट साफ करने के लिए एक बड़ी अच्छी कल बनाई थी। विलसन ने उसकी यह परिश्रमशीलता, होशियारी, चतुराई और ईमानदारी देखकर उसे अपने कारखाने का मैनेजर बना दिया। कारखाने के और नौकर-चाकर उसे बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगे। पर जार्ज था तो गुलाम ही। भला उसका इतना सम्मान और यह उन्नति, उसके नीच मालिक अंग्रेज सौदागर को क्यों सुहाने जाए? जार्ज का कोई भी गुण उसे अपने दुष्ट मालिक के अत्याचारों से न बचा सका।

जार्ज का मालिक उसे इस प्रकार महत्व दिए जाते देखकर मन-ही-मन जल-भुनकर खाक हो गया। जार्ज पर लोग श्रद्धा करने लगे, यह सुनकर उसके विद्वेष की अग्नि भभक उठी। उसने मन-ही-मन ठान लिया कि जार्ज को विलसन के कारखाने से निकालकर और किसी सख्त काम में लगाऊँगा। बस फिर क्या था? विचार उठने भर की देर थी। दूसरे दिन वह विलसन के कारखाने में पहुँचकर उससे बोला - "जार्ज को अब मैं तुम्हारे कारखाने में काम नहीं करने दूँगा।"

विलसन ने कहा - "जार्ज के परिश्रम से मेरे कारखाने की बड़ी उन्नति हुई है। उसको अलग कर लेने से मेरी बहुत हानि होगी।" उसने और भी कहा - "यदि तुम्हें रुपयों का लोभ हो तो मैं उसके लिए तुम्हें अब से दूनी मजदूरी दे सकता हूँ।" पर जार्ज के मालिक ने एक न मानी। उसे कारखाने से अलग करके मिट्टी खोदने के काम में लगा दिया और उसको मनमाने कोड़े लगाने लगा।

जार्ज ने विलसन के कारखाने में नौकर होने पर इलाइजा से विवाह किया था। जार्ज को विलसन बहुत चाहता था। इससे जार्ज रोज का काम खत्म करते ही अपनी स्त्री से मिल सकता था। पर अब उसे वहाँ नहीं जाने दिया जाता था। उसके मालिक ने उसे शेल्वी के यहाँ जाने से रोका और अपने यहाँ की एक दासी से नाता जोड़ने की आज्ञा दी। इलाइजा जार्ज को प्राणों से भी प्यारी थी। भला उसे छोड़कर वह कैसे दूसरी दासी को ग्रहण करे? दास-दासियों के हृदय में क्या शुद्ध प्रेम का संचार नहीं होता? इलाइजा की तीन संतानें हुईं, जिनमें केवल एक ही जीवित है। यह संतान दोनों के दिलों को जोड़ती है। कोई भी आदमी ऐसे पवित्र प्रेम को कैसे भूल सकता है? क्या वह कभी ऐसे गाढ़े स्नेह-बंधन को तोड़ सकता है? जार्ज गुलाम है, पराधीन है, तो क्या हुआ! क्या वह प्रेम के इस बंधन को तोड़ना कभी स्वीकार कर सकता है? क्या अपनी स्त्री की जगह दूसरी स्त्री को अंगीकार कर सकता है? जार्ज ने देख लिया कि अब कोई दूसरा उपाय नहीं है। बस, मौत ही उसे इस गुलामी की चोट से मुक्त कर सकती है। इसी से उसने 'स्वतंत्रता या मृत्यु' इस वाक्य को अपना मूलमंत्र बनाया।

वह भागने का उद्योग करने लगा।

दोपहर को शेल्वी साहब की मेम के बाहर चले जाने पर इलाइजा घर में अकेली बैठी हुई चिंता कर रही थी। इतने में किसी ने पीछे से आकर उसके कंधे पर हाथ रखा। वह चौंक उठी। पीछे घूमकर देखा तो उसका स्वामी था। जार्ज को देखते ही इलाइजा आनंदित होकर बोली - "जार्ज, तुम बड़े वक्त से आए हो? माँ घूमने गई हैं।"

पर जार्ज के मुख पर हँसी नहीं थी। उसका दिल बहुत ही दुःखी था। वह इलाइजा से जन्म भर के लिए बिदा माँगने आया था। आज वह और दिनों की भाँति इलाइजा से हँस-हँसकर बातें नहीं कर सकता था। इलाइजा की गोद के बालक ने जार्ज का हाथ पकड़ लिया, पर आज जार्ज ने उसे प्यार नहीं किया और न आज उसने उसका कोमल मुख ही चूमा। जार्ज की यह दशा देखकर इलाइजा ने बहुत डरते-डरते पूछा - "तुम्हें क्या हो गया है? तुम इतने उदास क्यों हो? लो, हेरी को पकड़ो। हेरी तुम्हारी गोद में आना चाहता है।"

जार्ज ने उत्तर दिया - "बड़ा अच्छा होता अगर हेरी का जन्म ही न होता। भगवान का मुझे इनसान पैदा करना व्यर्थ ही रहा।"

इलाइजा बहुत डरी और जार्ज के कंधे पर हाथ रखकर रोने लगी। जार्ज ने फिर कहा - "इलाइजा, हम लोगों का मिलन न होना ही अच्छा था।"

इलाइजा ने गहरा दुःख प्रकट करके कहा - "जार्ज, यह तुम क्या कह रहे हो? मैं तुम्हारे मुख की ओर देखकर अपना सारा दुःख, सारा क्लेश भूल जाती हूँ। आज तुम्हें क्या हो गया है?"

जार्ज ने कहा - "इस संसार में न सुख है, न शांति। यह जीवन एक प्रकार की विडंबना है। इससे तो ईश्वर मौत दे दे तो भला..."

"जार्ज, तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? ईश्वर जिस तरह रखे, उसी में संतुष्ट रहना चाहिए। मैं जानती हूँ, विलसन के कारखाने से छुड़ा दिए जाने के कारण ही तुम कितने दुःखी हो। धीरज रखो! देखो, ईश्वर क्या करते हैं!"

"मैंने बहुत सहा और बहुत धीरज रखकर भी देखा, पर अब नहीं सहा जाता इलाइजा, और धीरज रखने की सामर्थ्य नहीं है। सहने और धीरज रखने की भी हद है। हाड़-मांस के शरीर से जितना सहा जा सकता है, उससे सौगुना अधिक सह चुका। आदमी की प्रकृति जहाँ तक धीरज रखने में समर्थ है, उससे अधिक धीरज रख चुका। पर मैं अब और नहीं सह सकता। मैंने विलसन के कारखाने में जो कुछ कमाया, उसमें से कभी एक पैसा नहीं खाया। सब-कुछ उस दुरात्मा मालिक के हवाले कर दिया। इनाम में भी कभी कुछ पाया तो उसी को सौंप दिया। पर

उस नीच की करतूत देखो, कारखाने के सब लोगों की मुझपर प्रेम और श्रद्धा थी, मेरे साथ सबका अच्छा बरताव था, यह उस दुरात्मा मालिक से नहीं देखा गया और इसी से क्रुद्धकर उसने मुझे वहाँ से हटा लिया। इस पर भी मैं कुछ न बोला। अपनी दुर्दशा की बात सोचकर चुपचाप उसका दुर्व्यवहार सह लिया। फिर भी वह मुझपर अत्याचार करने से बाज न आया।"

इलाइजा ने कहा - "नहीं कैसे सहोगे, सहना ही पड़ेगा। वह मालिक और तुम नौकर... वह जो चाहे कर सकता है।"

"जो चाहे सो कर सकता है! मुझपर किसने उसे यह अधिकार दिया है? कहाँ से उसे यह क्षमता मिली है? मुझमें क्या मनुष्य की आत्मा नहीं है? मैं भी क्या उसी की तरह मनुष्य नहीं हूँ? मैं खूब जानता हूँ कि मैं उससे सौगुना सच बोलनेवाला हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझे उससे अच्छा लिखना-पढ़ना आता है। मैं उससे लोगों की सौगुनी श्रद्धा का पात्र हो सकता हूँ। फिर कौन-सा कारण है कि वह जब चाहे, बिना कसूर के मुझे मारे? मुझे इस तरह पीटने का अधिकार उसे किसने दिया? मैंने उसके डर से छिपे-छिपे पढ़ना-लिखना सीखा, उसने मेरे पढ़ने-लिखने में क्या-क्या अड़चनें नहीं डालीं। पर अब किस अपराध के कारण वह मुझपर ऐसा घोर अत्याचार कर रहा है? वह मुझे पशुओं के काम में लगाना चाहता है। पाप के दलदल में फँसाना चाहता है। मुझे एकदम नीचे गिराने का उसने संकल्प कर लिया है। बुरी नीयत से मुझे मिट्टी काटने के काम में लगाया है। तुम्हीं कहो, मैं अब कितना सह सकता हूँ?"

"जार्ज, मुझे बड़ा डर लग रहा है। तुम्हारे चेहरे के रंग-ढंग से जान पड़ता है कि तुम कहीं आत्महत्या या और कोई पाप-कर्म न कर डालो। मैं तुम्हारे दिल का दुःख समझती हूँ, पर सावधान रहो और कम-से-कम मेरे और हेरी के भले की खातिर धीरज रखो।"

जार्ज ने कहा - "अब मुझमें धीरज रखने की ताकत नहीं है। तकलीफें दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं। आखिर हाड़-मांस का यह शरीर कहाँ तक सहेगा? यह नीच, तरह-तरह की हिकमत करके मुझे सताता है, तरह-तरह से मेरा अपमान करता है। जरा-सा बहाना मिला कि पीट डालता है। मेरी ओर लोगों की थोड़ी-सी श्रद्धा देखी कि जलकर कहता है, तेरे ऊँचे सिर को पैरों के नीचे रौंद डालूँगा। कल की बात है, उसका छोटा लड़का एक घोड़े को दनादन चाबुक मार रहा था। मैंने उसे मना किया। इस पर वह दुष्ट बालक मेरे ही ऊपर चाबुक बरसाने लगा। तब मैंने उसका चाबुक पकड़ लिया। इस पर वह मुझे लात मारकर अपने पिता से जाकर बोला, 'जार्ज ने मेरी बड़ी बेइज्जती की है।' इतना सुनना था कि उसके पिता ने मुझे पास के एक पेड़ से बाँध दिया और अपने लड़के से बोला, 'अपने कोड़े से इसे जहाँ तक बने पीटो।' वह मेरी पीठ पर चाबुक मारने लगा। यह देखो, उस मार से मेरी सारी पीठ छिल पड़ी है। इलाइजा को अपनी पीठ दिखाकर जार्ज फिर कहने लगा, 'किसने इस नीच को मुझपर ऐसा प्रभुत्व जमाने का अधिकार दिया है? इलाइजा, तुम्हारे मालिक ने तुम्हें लाड़-प्यार से पाला है। इससे तुम्हारी उनपर बड़ी भक्ति है। पर मैं ऐसे नर-पिशाच की भक्ति कैसे करूँ? तुम्हारे मालिक ने तुम्हारे लिए बहुत धन खर्च किया, पर मुझे जिस मूल्य में उस नीच ने मोल लिया था, उससे सौगुना मैं उसे कमाकर दे चुका। मैं

अब हर्गिज ऐसा वहशियाना व्यवहार नहीं सहूँगा - कभी नहीं, कभी नहीं!"

ये सब बातें सुनकर इलाइजा सन्न हो गई। उसके मुँह से कोई बात न निकली। कुछ देर बाद बोली - "तो अब क्या करना चाहते हो? क्या तुम नहीं जानते कि दुःख-सुख दोनों में उसी परमपिता का भरोसा है?"

"इलाइजा, तुम्हारे दिल में धर्म-भाव है, इसी से तुम ऐसा कहती हो, पर मेरा दिल बदले की हिंसा से भरा हुआ है। भगवान है, इस पर मुझे विश्वास नहीं है। ईश्वर होता तो मेरी यह दुर्दशा क्यों होती?"

"जार्ज, यह न कहो। चाहे जैसी दुर्दशा क्यों न हो, भगवान पर विश्वास करना ही चाहिए। मैं बचपन में माँ से सुना करती थी कि हर हालत में मनुष्य को ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए।"

जार्ज ने तीखे स्वर में कहा - "तुम्हारी माँ ऐसा कह सकती हैं। जो सब तरह से सुखी हैं, आनंद भोगते हैं, जिनके घर-द्वार हैं, धन-दौलत है और जिनको मनचाहा काम करने की आजादी है, वे सहज में ऐसा उपदेश दे सकते हैं। पर अगर वे कभी मेरी-जैसी हालत में पड़कर भी परमेश्वर पर वैसा ही विश्वास रख सकें, तो मैं जानूँ। तब मैं उनकी बात पर भरोसा कर सकता हूँ। मैं अगर सुखी होता, मुझे अगर मनुष्यों के अधिकार मिले होते तो मैं भी ऐसा ही करता। तुमने अभी तक मेरी दुर्दशा की सारी बातें नहीं सुनीं। लो, सुनो। मेरे मालिक ने कहा है कि वह अब मुझे तुम्हारे पास नहीं आने देगा। तुम्हारे मालिक के दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने के कारण वह उनसे बहुत चिढ़ा हुआ है। कहता है, दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने पर वे खराब हो जाते हैं। वे आजाद होने की कोशिश करने लगते हैं, विशेषकर उसका विश्वास है कि तुम्हें ब्याहकर तुम्हारे भड़काने से मैं कुछ आजाद-सा हो गया हूँ। इसी से वह तुम्हारे पास अब हर्गिज नहीं आने देगा। अपने घर की मीना नाम की दासी से वह मुझसे ब्याह करने को कहता है। इसमें कोई शक नहीं कि उससे ब्याह न करने पर वह मुझे दक्षिण देश में बेच डालेगा।"

इलाइजा ने गहरी साँस लेकर कहा - "मीना से तुम्हारा ब्याह कैसे करेगा? ईसाई धर्म के अनुसार पादरियों के सामने हम लोगों का ब्याह हुआ है।"

जार्ज बोला - "तुम्हें मालूम नहीं कि इस देश के कानून में गुलामों को ब्याह करने का अधिकार नहीं है। तुम्हारे और मेरे मालिक जब तक चाहें, तुम्हारे पास मुझे आने देंगे और तभी तक तुम मेरी बीवी हो और मैं तुम्हारा खाविंद हूँ। तुम्हारे मालिक चाहें तो अभी तुम्हें दूसरे आदमी के हाथ सौंप सकते हैं। मेरे मालिक चाहें तो मुझे दूसरी औरत से नाता जोड़ने को मजबूर कर सकते हैं। हम-सरीखे दुखियारे गुलामों का न औरत पर कोई हक है, न औलाद पर। घर के पशु-पक्षियों की जो हालत है, वह हमारी भी है। तुम्हारे बेटे को तुमसे छीनकर बेच सकते हैं। इसी से मैंने पहले ही कहा कि तुम्हारे साथ मेरा मिलना-जुलना न होना ही अच्छा था। मुझे

अगर आदमी का तन न मिलता, हम लोगों की अगर औलाद न होती तो ठीक था। हम लोगों का यह तन धारण करना ही विडंबना-मात्र है। हम लोगों का विवाह ही सारे दुःखों का एकमात्र कारण है। हमारी औलाद हमारे दिल की आग बनकर हमारा कलेजा जलाएगी। इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारी यह संतान ही किसी समय तुम्हारे दिल में दुःख की आग जलाने का कारण बनेगी।"

"मेरे मालिक तो बड़े दयालु हैं।" इलाइजा ने संतोष के साथ कहा।

"दयालु होने से क्या हुआ? आज अगर वह मर जाएँ तो तुम्हें अपने लड़के के साथ उनके कर्ज के लिए नीलाम होना पड़ेगा। इस संतान को जितना प्यार करोगी, इसके अफसोस में तुम्हें उतना ही ज्यादा जलना पड़ेगा - इसका न जन्मना ही अच्छा था।"

जार्ज की बात सुनकर इलाइजा को इसके पहले की वे बातें याद आ गईं, जो शेल्वी साहब और गुलामों के व्यापारी हेली के दरम्यान हुई थीं। इससे वह अधीर हो गई। पर वह थी बड़ी बुद्धिमती। जार्ज के सामने उसने अपने मन की बात प्रकट नहीं होने दी। जार्ज अपने ही दुःख से पागल हो रहा है, उसका होश ठिकाने नहीं है। ऐसे समय में यदि उससे यह बात कह दी जाएगी तो वह निस्संदेह शोक से बिल्कुल विह्वल हो जाएगा, यह सोचकर इलाइजा ने जार्ज के सामने हेरी के बिकने की आशंका के विषय में कोई बात नहीं उठाई।

फिर कुछ देर बाद जार्ज ने इलाइजा का हाथ पकड़कर कहा - "इलाइजा, मैं जाता हूँ। यह उम्मीद नहीं कि अब फिर इस जन्म में कभी भेंट होगी। लगता है, यही हम लोगों की आखिरी मुलाकात है।"

"जाते हो? कहाँ जाओगे?" व्याकुल होकर इलाइजा बोली।

"मैं किसी तरह कनाडा उपनिवेश में पहुँचने का यत्न करूँगा। वहाँ गुलामी की चाल नहीं है। वहाँ पहुँच सका तो स्वाधीन हो जाऊँगा। फिर मैं तुम्हें तुम्हारे मालिक से खरीद ले जाऊँगा। अगर बीच ही में भागते हुए पकड़ा गया तो फिर जान देनी होगी। इस कठोर यातना को सहने के लिए फिर इस शरीर का मोह नहीं करूँगा।"

"पर तू मेरी एक बात मानो", इलाइजा ने डबडबाई आँखों से कहा - "पकड़े जाने पर भी आत्महत्या मत करना।"

"मुझे आत्महत्या नहीं करनी पड़ेगी। पकड़ लेने पर वे ही लोग मेरी हत्या कर डालेंगे।"

"तुम भागना चाहते हो तो भाग जाओ; पर इस अभागिन और इस संतान के कल्याण के लिए आत्महत्या या नरहत्या इत्यादि किसी पाप से अपने हाथों को कलंकित मत करना। मैं फिर

कहती हूँ, परम पिता की प्रार्थना करो, और उसी की करुणा का भरोसा रखो।"

जार्ज बोला - "इलाइजा, मैंने मन में जो निश्चय किया है, वह तुम्हें सुनाता हूँ। अभी तक मेरे मालिक के मन में मेरे भागने के विचार पर कोई संदेह नहीं है। मैं आज ही रात को भागने की सारी तैयारी करूँगा। और भी कई गुलाम इस तैयारी में मेरी सहायता करेंगे। सब ठीक-ठाक हो जाने पर इसी सप्ताह में मुझे भागने का अच्छा मौका मिलेगा। तुम मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो। तुम्हारे हृदय में भक्ति, विश्वास और श्रद्धा है। ईश्वर तुम्हारी प्रार्थना सुनेंगे। मेरा हृदय तो शुष्क हो गया है। अत्याचार से सताया हुआ हृदय सदा द्वेष और हिंसा से ही भरा रहता है। ऐसे हृदय में ईश्वर का स्थान नहीं। ऐसा हृदय ईश्वर के नाम पर नहीं पसीजता, न ऐसे हृदय में धर्म-विश्वास को ही स्थान मिल सकता है। यही कारण है कि जगत में किसी न्याय-परायण मंगलमय ईश्वर का राज्य है, इस पर मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता।"

"जार्ज, जार्ज, मैं बार-बार कहती हूँ कि ऐसी बात तुम जबान पर मत लाओ। चाहे जैसी दुर्दशा क्यों न हो, धीरज रखकर सदा एकाग्रचित्त से मंगलमय परमात्मा के चरणों में आत्म-समर्पण करो। हम जैसे अभागे, निराश्रित, निर्बल और अनाथ गुलामों का एक ईश्वर के सिवा संसार में दूसरा कौन सहायक है? वह दयामय ईश्वर ही हम अशरणों का शरण, निरूपायों का उपाय, अनाथों का नाथ और बेसहारों का सहारा है। हृदय में उस ईश्वर का ध्यान करो, तुम्हें पाप और कलंक कभी छू नहीं सकेंगे।"

इलाइजा की बातें समाप्त होते ही जार्ज ने कहा - "अब विदा होता हूँ।"

वह बारंबार सतृष्ण नयनों से इलाइजा के मुँह की ओर निहारने लगा। अब इलाइजा अपने आँसू न रोक सकी। रो पड़ी। उसके रोने से जार्ज का दिल भी पिघल गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। फिर वह आँखें पोंछते हुए हेरी का मुँह चूमकर चल पड़ा। इलाइजा हेरी को गोद में लिए जार्ज के मार्ग की ओर एकटक देखती रही। कुछ देर बाद, जार्ज के आँखों से ओझल हो जाने पर उसे चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार दिखाई देने लगा। आज सूर्यास्त के साथ-साथ इलाइजा का सुख-सूर्य भी अस्त हो गया। पर उसके दुःख की घोर अँधियारी आने में अभी कुछ देर थी।

#### 4. टॉम की बिक्री

पीछे आगे

टॉम को बेचने के संबंध में हेली से शेल्वी साहब की जो बातचीत हुई थी, वह पहले अध्याय में लिखी जा चुकी है। उसे पढ़कर पाठकों को केवल इतना मालूम हुआ होगा कि शेल्वी साहब के यहाँ टॉम नाम का एक स्वामिभक्त क्रीत दास था और उसे खरीदने के लिए ही हेली शेल्वी साहब के पास आया था। इस अध्याय में हम टॉम का विशेष परिचय देते हैं। टॉम यद्यपि

अफ्रीका-वासी काला क्रीत दास था, फिर भी उसे धर्माधर्म का खूब ज्ञान था। वह बहुत ही सीधा, परिश्रमी और सदाचारी था। स्वार्थपरता उसे छू तक नहीं सकी थी। वह सब तरह से भला था। शेल्वी साहब पर कर्ज का बोझ न होता, तो वे उसे कभी न बेचते। शेल्वी साहब के यहाँ उनके रहने के स्थान से थोड़ी ही दूरी पर, दास-दासियों के रहने योग्य कई छोटे-छोटे घर थे। अमरीका के प्रायः सभी धनाढ्य बनियों के घर अफ्रीका के अभागे काले दास-दासियों से ठसाठस भरे थे। इनमें से अधिकांश महापुरुष इन अभागे दास-दासियों को सदा सताते और उनपर घोर अत्याचार करते रहते थे। पर इनमें जहाँ हजार बुरे थे, वहीं पाँच भले भी थे। सभी जातियों में भले-बुरे दोनों होते हैं। उन सज्जन अंग्रेजों के यहाँ दास-दासियों को थोड़ा-सा आराम रहता था। पहले कहा जा चुका है कि शेल्वी साहब की मेम का हृदय दया-धर्मादि गुणों से अलंकृत था। दास-दासियों पर अत्याचार करना तो दूर, वह सदा उनकी आत्माओं को उन्नत करने में लगी रहती थीं। वह उन्हें लिखना-पढ़ना सीखने का अवसर देती तथा उन्हें उपदेश देकर सदा उत्तम मार्ग पर चलाने की चेष्टा करती।

शेल्वी साहब के गुलामों में टॉम सबसे पुराना था। क्लोई नाम की एक दासी के साथ टॉम का विवाह हुआ था। उसके गर्भ से टॉम को तीन-चार संतानें हुईं। क्लोई शेल्वी साहब के घर की मुख्य रसोइन थी। वह दूसरे दास-दासियों पर सदा हुकम चलाती थी और अपने मन में समझती थी कि कैंटाकी भर में उसकी-सी रसोइन दूसरी नहीं है। उसके बनाए भोजन में किसी तरह की भूल बताने से वह बहुत ही गुस्सा होती थी। इसलिए वह जो कुछ बनाती थी, वही सबको अच्छा जान पड़ता था। क्लोई में और भी अनेक गुण थे। वह पतिपरायण थी और अपनी संतान को बड़ा प्यार करती थी। टॉम का घर अन्य दास-दासियों के घरों की निम्नत कुछ बड़ा था। शेल्वी साहब के तेरह वर्ष के लड़के जार्ज से टॉम कभी-कभी पढ़ना सीखा करता था। प्रतिदिन संध्या-समय टॉम मुहल्ले के सारे दास-दासियों को बटोरकर अपने घर में उन लोगों के साथ मिलकर ईश्वर की उपासना करता और उन्हें बाइबिल पढ़कर सुनाया करता था। अधिक पढ़ा-लिखा न होने पर भी टॉम का हृदय भक्ति और प्रेम से भरा था। वह बड़ी सीधी-सादी भाषा में ईश्वर की उपासना करता था। दूसरे दास-दासी टॉम को अपना पादरी मानते थे। जिस समय दास-व्यवसायी हेली ने शेल्वी के कमरे में बैठकर टॉम को खरीदने का प्रस्ताव किया था, उस समय शेल्वी का पुत्र जार्ज स्कूल में था। जार्ज को इन बातों का जरा भी पता न था। स्कूल से लौटकर वह नित्य टॉम को पढ़ाने के लिए उसके घर जाया करता था, वैसे ही आज भी उसके घर बैठा पढ़ा रहा था। पर टॉम या जार्ज किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि आज टॉम के सारे सुखों का सूर्य डूब जाएगा, आज टॉम को पतिपरायण स्त्री और संतान से जन्म भर के लिए बिछड़ना पड़ेगा।

शेल्वी साहब ने संध्या के सात बजे दास-व्यवसायी हेली को बुलाया था। हेली ठीक समय पर शेल्वी साहब के यहाँ आ पहुँचा। इधर टॉम जब जार्ज के पास बैठा पढ़ रहा था, एक कमरे में बैठे शेल्वी साहब और हेली दोनों टॉम की बिक्री के विषय में लिखा-पढ़ी कर रहे थे। लिखा-पढ़ी समाप्त हो जाने पर हेली बोला - "सब ठीक है, अब तुम इस बिक्री के इकरारनामे पर दस्तखत

कर दो।" शेल्वी साहब ने बड़े खिन्न मन से हस्ताक्षर करके उसे हेली को सौंप दिया। हेली ने उन्हें एक पुराना बंधक रखा हुआ दस्तावेज वापस किया। इस दस्तावेज के लिए ही शेल्वी साहब को स्वामिभक्त टॉम और इलाइजा के नन्हें बच्चे हेरी को बेचना पड़ा था। हस्ताक्षर का कार्य निबट जाने के बाद शेल्वी साहब हेली से बोले - "तुमने वचन दिया है कि टॉम को किसी निर्दयी बनिए के हाथ नहीं बेचोगे, देखना अपनी बात मत छोड़ना।"

हेली बोला - "जब टॉम को मुझे बेच ही डाला, तब इस बात को बार-बार क्यों दुहराते हो?"

शेल्वी साहब ने कहा - "मैंने संकट में पड़कर बेचा है।"

इस पर हेली हँसते हुए कहने लगा - "और मैं भी तुम्हारी तरह संकट में पड़ जाऊँ तो? पर हम खुद उसपर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करेंगे। तुमसे हम कह चुके हैं कि हम दया-धर्म को साथ रखकर अपना कारोबार करते हैं।"

टॉम और इलाइजा के बच्चे को खरीदकर हेली जब चला गया तो शेल्वी साहब उदास होकर अलग बैठ गए और चूल्ह का कश खींचते हुए मन-ही-मन विचार करने लगे कि दास-व्यवसायी भी कैसे पाजी होते हैं! खरीदने के क्षण भर पहले ही कहता था कि टॉम को किसी भलेमानस के हाथ बेचूँगा, और इकरारनामे की लिखा-पढ़ी होते ही बदलकर बातें बनाने लगा!

## 5. एक हृदयविदारक दृश्य

पीछे आगे

टॉम और इलाइजा के पुत्र को बेचकर शेल्वी साहब रात को अपने सोने के कमरे में जाकर दुखित चित्त से कुर्सी पर पड़े चिढ़ी-पत्री पढ़ रहे थे। उनकी मेम आईने के सामने खड़ी होकर कपड़े बदल रही थी। शेल्वी साहब को इस प्रकार उदास देखते ही उसे इलाइजा के पुत्र के विक्रय की बात याद आ गई। उसने अपने पति से पूछा - "आर्थर, वह कौन था, जो आज अपने यहाँ बड़े ठाट-बाट से आया था?"

"उसका नाम हेली है।"

"हेली! यह कौन है? यहाँ क्यों आया था?"

"नेसेज नगर में उससे मेरा कुछ काम पड़ा था, उसी संबंध में आया था।"

"बस, एक ही दिन के काम पड़ने में उसने तुमसे इतनी घनिष्ठता पैदा कर ली कि यहाँ आकर घरवालों की तरह खाया-पिया?"



शेल्वी ने कहा - "कुछ हिसाब था, उसी को साफ करने के लिए मैंने उसे यहाँ बुलाया था।"

"क्या वह दास-व्यवसायी है?"

यह प्रश्न सुनकर शेल्वी साहब ने और भी अधिक चिंतायुक्त होकर कहा - "तुम यह क्यों पूछ रही हो?"

मेम बोली - "दोपहर को इलाइजा ने बहुत घबराहट के साथ आकर मुझसे कहा था कि तुम उसके लड़के को बेचने के विषय में उस आदमी से बातचीत कर रहे थे। इस पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। वास्तव में इलाइजा बड़ी भोली है।"

यह बात सुनकर शेल्वी साहब विचलित होकर बोले - "क्या इलाइजा ऐसा कह रही थी?"

"हाँ, उसने यही कहा था, लेकिन मैंने उसे समझा दिया कि वह बड़ी बेवकूफ है, यों ही बका करती है।"

"एमिली, मैं ऐसे आदमियों के हाथ दास-दासी बेचना हमेशा बड़े अन्याय का काम समझता था, पर आज इस संकट की हालत में बिना बेचे काम नहीं चल सकता। हेली जैसे निर्दयी मनुष्य के हाथ अपने किसी दास-दासी को अवश्य बेचना पड़ेगा।"

"हेली के हाथ! असंभव है! तुम हँसी तो नहीं कर रहे हो?"

"मैं हँसी नहीं करता। मुझे बड़ा दुःख है कि टॉम को बेचना पड़ा।"

"क्या! हमारे टॉम को बेचोगे? ऐसे प्रभु-भक्त विश्वासी दास को? तुमने तो उसकी प्रभु-भक्ति के पुरस्कार में उसे कभी आजाद कर देने का वचन दिया था न? तुम और मैं दोनों उसे गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करके स्वाधीनता देने की हजारों बार आशाएँ दिला चुके हैं। उसे कैसे बेच रहे हो? तुम्हारी इस बात से मुझे मालूम होता है कि तुमने इलाइजा के बच्चे को भी बेच दिया है!"

"एमिली, अब तुमसे ये सब बातें छिपाना व्यर्थ है। मैंने सचमुच इलाइजा के लड़के और टॉम को बेचना स्वीकार कर लिया है, पर महज इतने के लिए तुम मुझे निर्दयी क्यों ठहराती हो? यह तो सभी करते हैं।"

"तो और किसी को न बेचकर टॉम और इलाइजा के पुत्र को ही क्यों बेचा?"

शेल्वी ने कहा - "टॉम और इलाइजा के लड़के का मूल्य सबसे अधिक मिलने के कारण ही उन्हें बेचना पड़ा। हेली इलाइजा को इससे भी अधिक मूल्य पर लेने को तैयार था, पर इन दोनों

के बदले क्या इलाइजा को देना तुम्हें स्वीकार होता?"

"वह पापी राक्षस मेरी इलाइजा को भी खरीदना चाहता था?"

"तुम्हारे दुःख की बात सोचकर ही मैंने इलाइजा को बेचना स्वीकार नहीं किया। इससे तुम मुझे उतना दोष नहीं दे सकती हो।"

"आर्थर, मुझे क्षमा करो। एकाएक तुम्हारे मुँह से ऐसी बातें सुनकर मैं तो दंग रह गई। तुम जरा विचार करके तो देखो, जिसके पास दिल है वह टॉम जैसे ईश्वर-परायण दास को कैसे बेच सकता है? काले होने पर भी टॉम का दिल बड़ा उजला है। वह बात-की-बात में तुम्हारे लिए जान दे सकता है।" श्रीमती शेल्वी ने हैरानी से भरकर कहा।

"एमिली, यह मैं खूब जानता हूँ, पर करूँ क्या! मैं कर्ज में बुरी तरह फँस गया हूँ... और कोई उपाय भी नहीं सूझता।"

"हम लोगों की और जो कुछ जायदाद है, वह सब क्यों नहीं बेच डालते? धन-संपत्ति की मोह-ममता में अनायास छोड़ देंगी। सब तरह की असुविधाएँ सह लेंगी। गरीबी से जो दुःख होगा, वह हँसते-हँसते उठा लेंगी। तुम्हें मेरे दिल की व्यथा का पता नहीं। मैंने किस तरह से दास-दासियों को पाला-पोसा है, उन्हें धर्म सिखाया, उनके सारे अभाव दूर करने की कोशिश की है और उनके साथ हमेशा धर्म-चर्चा की है। पर आज यदि मैं उन्हें अपने स्वार्थ के लिए बेच डालूँ, तो मैं उन्हें कैसे मुँह दिखाऊँगी? मैंने हमेशा उन्हें स्वामी के साथ स्त्री; स्त्री के साथ स्वामी, संतान के साथ माता-पिता और माता-पिता के साथ संतान के कर्तव्य की शिक्षा दी है। पर यह शिक्षा देकर फिर मैं ही संतान को माता की गोद से और स्वामी को स्त्री के साथ से सदा के लिए अलग करने पर तैयार होऊँ? मैंने कितनी ही बार इलाइजा को समझाया होगा कि संतान को सदाचारी और सुशिक्षित किए बिना माता का कर्तव्य पूरा नहीं होता। मैं इलाइजा को अपनी संतान के भले के लिए ईश्वर से बार-बार प्रार्थना करने को कहती आई हूँ। आज मैं कैसे उसी इलाइजा की छाती से उसके बच्चे को हमेशा के लिए अलग करने दूँगी? मैं इन दास-दासियों से बराबर कहती आई हूँ कि संसार की सारी धन-दौलत से मनुष्य की आत्मा का मूल्य कहीं अधिक है। इससे धन-दौलत के लिए मनुष्यता को नीचे गिराना या नष्ट करना एकदम अनुचित है। पर हाय, आज मैं स्वयं ही धन के लिए उसी मनुष्यात्मा का विनाश करने को आमादा हूँ। ऐसे नीच निर्दयी नर-पिशाच दास-व्यवसायी के हाथ में सौंपकर भी क्या इनकी किसी प्रकार की नैतिक या आध्यात्मिक उन्नति की आशा की जा सकती है?"

"प्यारी, तुम्हारा दुःख देखकर मुझे भी बड़ा दुःख हो रहा है। तुम्हारा दुःख मुझसे सहा नहीं जाता। पर देखो, मेरे पास और कोई चारा नहीं है। इन दोनों को बेचकर कर्ज न चुकाऊँ तो निर्दयी हेली डिग्री जारी कराकर हमारे घर-बार और सारे दास-दासियों को नीलाम करा लेगा। दो

को बेचकर सभी की रक्षा करना मुनासिब समझता हूँ।"

शेल्वी साहब की ये बातें सुनकर उनकी स्त्री बार-बार लंबी साँसें ले-लेकर कहने लगी - "गुलामी की इस घृणित प्रथा को आश्रय देने के कारण सचमुच ही ईश्वर हमपर नाराज है। इसमें शक नहीं कि यह प्रथा बहुत ही बुरी है। मालिक या दास, किसी के लिए लाभदायक नहीं है, यह दोनों को घोर नरक में डुबोती है, दोनों के ही दिलों को कलंकित करती है। मेरी यह बड़ी भूल थी, जो मैं समझती थी कि दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने भर से ही गुलामी की इस प्रथा का कलंक धुल जाएगा। इस प्रथा से संबंधित देश का मौजूदा कानून हद से ज्यादा घृणित और नीति-विरुद्ध है। इन कानून को मानकर दास-दासी रखना घोर अन्याय है। दास-दासियों से अच्छा व्यवहार करने पर भी इस प्रथा का कलंक दूर नहीं हो सकता। अच्छे बर्ताव से इस कृप्रा की गंदगी कुछ अंश भले ही दूर हो जाएँ, पर इसका भीतरी कलंक जड़ से नहीं जा सकता। मैं समझती थी कि दास-दासियों से अच्छा बर्ताव करके और धर्म की शिक्षा देकर मैं उनकी दशा-सुधार लूँगी, पर यह समझकर मैंने कितनी बड़ी मूर्खता की। दासत्व-प्रथा को बिल्कुल आश्रय न देना ही बेहतर था।"

शेल्वी साहब ने अपनी मेम का यह पश्चाताप सुनकर कहा - "प्यारी, मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। तुम तो गुलामी की प्रथा के विरोधी दल की एक सदस्य बन बैठी हो।"

"आर्थर, मैं इस प्रथा को कभी न्यायसंगत नहीं समझती थी, और न कभी दास-दासी रखने की मेरी इच्छा ही होती थी।"

शेल्वी ने कहा - "पर बड़े-बड़े पादरियों ने इस प्रथा का समर्थन किया है। अभी उस दिन हम लोगों के पादरी ब्रांसन साहब ने गिरजे में जो उपदेश दिया था, उसे तो तुमने सुना था न?"

"मैं तुम्हारे बड़े पादरी का उपदेश नहीं सुनना चाहती। मैं अब ब्रांसन का उपदेश सुनने के लिए कभी गिरजे में नहीं जाऊँगी। पादरी और ख्रिस्तान पुजारी खुशामद के मारे धनी व्यापारियों की हाँ-मैं-हाँ मिलाने के लिए उनकी इच्छा के अनुकूल उपदेश देते हैं। क्या उनमें से कोई स्वतंत्र विचार प्रकट करने का भी साहस रखता है? अर्थ ही सारे अनर्थों की जड़ है। धन के लोभ से इस घृणित, अन्यायपूर्ण देशाचार का समर्थन करते हुए इन महात्माओं को लज्जा नहीं आती। केवल धनी व्यापारियों को खुश करने और पापी पेट को भरने के लिए वे ऐसे घृणित मतों का प्रचार करते हैं।"

"लो, अब आगे फिर कभी धर्म-धर्म की बहुत दुहाई मत देना! देख लिया न कि ये धर्म-प्रचारक समय-समय पर कैसे ऊटपटांग मतों का प्रचार करते हैं? उनके ये सब मत तो हमारे जैसे पापियों को भी घृणित मालूम होते हैं। धर्म का तत्व समझना बहुत कठिन है। मुझपर कर्ज का बोझ न होता तो मैं कभी ऐसा काम न करता। अब तुमने समझ लिया होगा कि कैसे संकट

मैं पड़कर मैंने यह काम किया है। अब तुम्हीं देख लो कि मेरा यह काम उचित है या नहीं।"

श्रीमती शेल्वी ने कहा - "हाँ, ठीक है, तुमने सब परिस्थिति के अनुसार ही किया है, किंतु खेद है कि मेरा कोई ऐसा मूल्यवान गहना नहीं है, जिसे बेचकर इलाइजा के हृदय-रत्न, उस दुःखिनी के जीवन-सर्वस्व की रक्षा कर सकूँ। अच्छा, क्या मेरी इस घड़ी को बेचकर उसके पैसे से इलाइजा के बच्चे की रक्षा हो सकती है!" इलाइजा के बच्चे के लिए मैं अपना सब-कुछ देने को तैयार हूँ।

"एमिली, तुम्हारी ऐसी शोचनीय दशा को देखकर मुझे बड़ा दुःख होता है। लेकिन बिक्री की पक्की लिखा-पढ़ी हो चुकी है। हेली ने बिक्री के दस्तावेज पर मेरे दस्तखत करा लिए हैं। अब कोई उपाय नहीं है। हेली के हाथ में मेरे सर्वनाश की बागडोर थी। इलाइजा के बच्चे को बेचकर ही मैंने उससे छुटकारा पाया है।"

"हेली क्या बिल्कुल ही निर्दयी है?" श्रीमती शेल्वी ने आवेश में कहा।

"निर्दयी तो नहीं कह सकता। लेकिन वैसा लोभी और अर्थ-पिशाच तो शायद ही दूसरा हो। वह धन के लिए अपनी स्त्री तक को किराए पर दे सकता है और अपनी माता तक को खुशी से बेच सकता है।"

"यह जानते हुए भी तुमने ऐसे नराधम के हाथ टॉम और इलाइजा के बच्चे को सौंप दिया! ओफ, कितने दुःख की बात है!"

"क्या करूँ? बिना बेचे गुजर न थी। मैं स्वयं ही ऐसे कामों से बड़ी नफरत करता हूँ, पर लाचारी है! हेली कल ही आकर इन लोगों को ले जाएगा। मैं सवेरे ही घोड़े पर सवार होकर दूसरी जगह चला जाऊँगा। टॉम को ले जाने के समय मुझसे नहीं रहा जाएगा। तुम भी इलाइजा को साथ लेकर कहीं चली जाना। हम लोगों के पीछे हेली का इन लोगों को ले जाना अच्छा होगा।"

"मैं यों कपट रचकर इलाइजा को किसी दूसरी जगह नहीं ले जा सकूँगी। मैं ऐसे निष्ठुर काम में कोई सहायता नहीं करूँगी। टॉम को ले जाते समय मैं उससे मिलूँगी। उसे आशीर्वाद भी दूँगी। पर जब मुझे इलाइजा की बात याद आती है तो मेरी छाती फटने लगती है। मुझे चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार दिखाई पड़ता है। तुम्हें नहीं मालूम कि गोद से शिशु के छीने जाने पर माता को कितनी वेदना होती है।"

शेल्वी साहब और उनकी मेम में जिस समय ये बातें हो रही थीं, इलाइजा पासवाली कोठरी में बैठी थी और उनकी सब बातें सुन रही थी। उनकी बातचीत समाप्त होने पर इलाइजा धीरे-धीरे, दबे-पाँव, अपने घर की ओर चली। डर से उसका हृदय धड़क रहा था। उसने रोते हुए - "हे ईश्वर, हे दयामय, रक्षा करो!" कहकर घर में प्रवेश किया। खाट पर सोए हुए बालक को गोद में उठा लिया और उसका मुँह चूमकर कहने लगी - "दुखिया के धन, तू दूसरों के हाथ बिक गया

है। पर यह दुखिया माँ प्राण रहते तूझे नहीं छोड़ेगी।" डर के मारे उसकी आँखों का पानी सूख गया। जब हृदय बिल्कुल सूख जाता है तो आँखों में पानी नहीं रहता। उस समय हृदय कटकर आँखों से खून बहने की तैयारी हो जाती है। इस समय इलाइजा का यही हाल था। उसका हृदय विदीर्ण होने की नौबत आ गई थी, परंतु निराशा भी कभी-कभी मनुष्य के मन को ढाढ़स बँधा देती है। इस समय इलाइजा केवल साहस के बल पर खड़ी थी। वह एक कागज और पेंसिल लेकर लिखने लगी:

'माता, मुझे अकृतज्ञ मत समझना। बाबा के साथ शाम के समय तुम्हारी जो बातें हो रही थीं, वे सब मैंने आड़ में बैठकर सुन ली हैं। मैं अपनी संतान की रक्षा के लिए भागने को मजबूर हूँ। मंगलमय प्रभु तुम्हारा मंगल करे!' इस आशय का झटपट एक पत्र लिखकर उसने वहीं खाट पर छोड़ दिया।

बालक को सर्दी से बचाने के लिए कुछ कपड़े, एक चादर और एक शाल साथ ले कर, लड़के को हृदय से लगाए, वह घर से बाहर हो गई। पहले वह प्रभु-भक्त टॉम के घर की ओर गई। वहाँ पहुँचकर उसने टॉम के दरवाजे की कुंडी खटखटाई। टॉम बहुत रात गए तक भजन-ध्यान किया करता था। इससे उस समय वह जाग रहा था। टॉम की स्त्री क्लोई ने द्वार खोल दिया। इस समय इलाइजा को देखकर वह चकित रह गई। इलाइजा ने बड़े करुण शब्दों में कहा - "टॉम, मैं हेरी को लेकर भाग रही हूँ। बाबा ने हेरी को और तुम्हें एक व्यापारी के हाथ बेच डाला है।"

टॉम और क्लोई, दोनों ही इस आकस्मिक घटना को सुनकर चौंक पड़े। टॉम निस्तब्ध-सा रह गया। उसके मुँह से कोई बात न निकली। किंतु क्लोई ने कहा कि हम लोगों ने ऐसा कौन-सा अपराध किया था, जो इस तरह बेच दिया? इस पर इलाइजा ने मेम और शेल्वी साहब में जो बातें हुई थीं, वे कह सुनाई और बोली - "कर्जदार होने के कारण बेचा गया है, न कि किसी अपराध के लिए। पर माँ इससे अत्यंत दुःखित हुई हैं। उनका हृदय सचमुच ही दया-ममता से भरा है। मैं बड़ी कृतघ्न हूँ, इसी से माँ को छोड़कर इस प्रकार भागने को तैयार हो गई हूँ, पर भागने के सिवा मेरे पास कोई उपाय नहीं है। बिना भागे हेरी की रक्षा नहीं हो सकती।"

इस पर क्लोई ने टॉम से कहा - "तुम भी क्यों नहीं भाग जाते? मैं तुम्हारे कपड़े-लत्ते ला देती हूँ... तुम्हें तो दूसरी जगह जाने का पास भी मिला हुआ है।"

टॉम बोला - "मैं कभी नहीं भागूँगा। मेरे बेचने से अगर दूसरे दास-दासियों की रक्षा होती है तो मेरा बिकना अच्छा ही है। भगवान सर्वव्यापी है। कहीं क्यों न रहूँ, वह मेरे साथ है। मैं कभी विश्वासघात नहीं करूँगा। भला मैं धोखा देकर भागने में इसका उपयोग कैसे कर सकता हूँ?"

भागने की अनिच्छा दिखाकर टॉम चुप रह गया और मुँह लटकाकर आँसू बहाने लगा। खाट पर सोए हुए बच्चों की ओर देखकर वह बारंबार आँहें भरने लगा। फिर क्लोई चाची से इलाइजा कहने लगी कि आज संध्या को जार्ज मेरे पास आए थे। उनका मालिक उनपर घोर अत्याचार

करने लगा है। सताए जाने के कारण वह भी भागने का उद्योग कर रहे हैं। भेंट होने पर मैं उनसे अपने भागने का वृत्तांत कहूँगी। उन्हें भली प्रकार समझाऊँगी कि यदि इस लोक में उनसे भेंट न हुई तो परलोक में अवश्य मिलना होगा। मरते-मरते वही मेरी एकमात्र गति और एकमात्र आधार है।"

इलाइजा की ये बातें पूरी होने पर क्लोई ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसका मुँह चूमा और रोते हुए उसे विदा किया।

विकट अँधेरी रात थी। चारों ओर सन्नाटा था। उसी भयंकर अँधियारी रात में बच्चे को गोद में लिए उन्नीस साल की युवती अकेली कदम बढ़ाए जा रही है। उसके लिए चारों दिशाएँ समान हैं, कहीं कोई खतरा दिखाई नहीं पड़ता, पर क्या सचमुच इलाइजा निस्सहाय और शरणहीन है? नहीं, इलाइजा सर्वथा अनाथ नहीं है। अनार्थों के नाथ, दीनानाथ, दीनबंधु भगवान अब भी उसके साथ हैं। लोभी गोरे व्यापारी कालों से भले ही घृणा करें, पर सर्वसाक्षी परमात्मा के महान दरबार में कालों और गोरों में कोई भेद नहीं है। वहाँ सभी बराबर हैं।

## 6. इलाइजा की खोज

रात गई। दिन निकला। प्रभात का सूर्य गगन में उदय होकर गोरे, काले सब पर समान भाव से अपनी मनोहर प्रभा फैलाने लगा। सारा संसार उठकर अपने-अपने कामों में लग गया, पर शेल्वी साहब के कमरे के किवाड़ अभी तक नहीं खुले। कारण यही था कि कल रात को मेम और वे ठीक समय पर नहीं सो सके थे, इसी से आज बड़ी देर तक सोते रहे। मेम बिस्तर से उठते ही इलाइजा को पुकारने लगी, पर कोई जवाब न मिला। कुछ देर बाद उसने आंड़ी नामक दास को इलाइजा को बुलाने भेजा। आंड़ी ने इलाइजा के घर से लौटकर कहा कि उसका घर सूना पड़ा है। चीजें जहाँ-तहाँ बिखरी हुई हैं। जान पड़ता है कि वह भाग गई!

इन बातों से शेल्वी साहब और उनकी मेम ने तुरंत समझ लिया कि अपने बच्चे को लेकर वह कहीं चली गई। मेम के मुँह से अकस्मात निकला - "परमात्मा इलाइजा के बच्चे की रक्षा करे।"

लेकिन शेल्वी साहब यह सुनकर बहुत झुँझलाए और बोले - "प्यारी, तुम एकदम नासमझ की-सी बातें कर रही हो। हेली जरूर कहेगा कि मैंने ही षड़यंत्र रचकर इलाइजा को भगा दिया है। उसके कहने की कई खास वजहें भी हैं। और उसका ऐसा सोचना अकारण न होगा, क्योंकि मैंने पहले से ही इलाइजा के लड़के को बेचने की अनिच्छा प्रकट की थी।"

इसके बाद शेल्वी साहब नीचे के घर में आए। इधर घर की नौकर-मंडली में इलाइजा के

भागने की बात पर बड़ा आंदोलन आरंभ हुआ। किसी ने कहा कि हेली तो सुनते ही दुःख में पागल हो जाएगा; किसी ने कहा कि वह अर्थ-पिशाच यह खबर पाकर बड़ा ऊधम मचाएगा; कोई बोला कि हेली निश्चय ही गालियों की बौछार करेगा। ये बातें हो ही रही थीं कि चाबुक लिए हेली वहाँ आ पहुँचा। इलाइजा के भागने की बात सुनते ही दाँत पीसकर - "हरामजादी, सूअर की औलाद" , इत्यादि घृणित गालियों की बौछार से वह इलाइजा को याद करने लगा। अंत में वह सहसा असभ्य व्यक्ति की भाँति उस कमरे में पहुँचा जहाँ शेल्वी और उसकी मेम बैठे थे। वहाँ जाकर वह जोर से बोला - "शेल्वी, तुमने बड़ा जुल्म किया है।"

शेल्वी साहब ने कहा - "हेली, जरा भलमनसाहत से बातें करो। देखते नहीं, मेरी स्त्री यहाँ बैठी है!"

पर अर्थ-पिशाच हेली को उस समय भले-बुरे का ज्ञान कहाँ था? उसने फिर उसी प्रकार चिल्लाकर कहा - "सचमुच, तुमने बड़ा जुल्म किया है!"

इस पर शेल्वी साहब बहुत क्रुद्ध हुए और हेली को झिड़ककर बोले - "तुम क्या निरे मूर्ख ही हो! एक भद्र महिला के सामने यों सिर पर टोप डाले खड़े हो!"

इतना कहकर उन्होंने अपने नौकर आंडी को हेली का टोप गिरा देने की आज्ञा दी। आंडी ने तुरंत हेली के सिर का टोप और हाथ का चाबुक छीन लिया। तब हेली मिजाज को ठंडा करके बोला - "भई, तुम्हें भलमनसी से काम लेना चाहिए था।"

इतना सुनना था कि शेल्वी ने बड़े क्रोध से कड़ककर कहा - "मैंने कौन-सी बेईमानी की है? मेरी भलमनसी की बात मुँह से निकाली तो अभी धक्का देकर बाहर कर दूँगा।"

अर्थ-पिशाच प्रायः कायर ही होते हैं। वे कमजोरों के सामने शेर बने रहते हैं, पर जब कोई अपने से सवाया मिल जाता है तो भेड़ बन जाते हैं। हेली ने शेल्वी साहब को क्रुद्ध देखकर डरते हुए कहा - "हमारी किस्मत ही फूटी है, नहीं तो ऐसा क्यों होता?"

शेल्वी साहब क्रोध को रोककर कहने लगे - "तुम्हारा इस तरह नुकसान न हुआ होता तो मैं कभी तुमको घर में घुसने न देता। पर खैर, तुम्हें मेरे साथ कारोबार करके घाटा हुआ है, इसलिए मैं तुम्हें अपने घोड़े और आदमी देता हूँ। तुम इलाइजा को खोज लाओ और उसे पकड़कर अपना खरीदा हुआ माल ले जाओ।"

धन-लोलुप हेली की करतूत देखकर शेल्वी साहब की मेम मन-ही-मन बहुत कूढ़ी और वहाँ से उठकर चली गई। तब शेल्वी ने आंडी को बुलवाकर कहा - "आंडी, तुम और साम दोनों हेली साहब के साथ घोड़ों पर चढ़कर इलाइजा की खोज में जल्दी जाओ।"

आंडी ने अस्तबल में पहुँचकर साम को ये सब बातें सुनाई और घोड़े तैयार करने को कहा।

मालिक की आज्ञा सुनते ही साम झटपट घोड़ा तैयार करने लगा और कूद-फाँद करके कहने लगा - "इलाइजा को अभी पकड़कर लाता हूँ, अभी लाता हूँ।"

आंडी ने उसके कान में कहा - "अरे, तू समझता नहीं? मेम साहब नहीं चाहती कि इलाइजा पकड़ी जाए। इससे घोड़ा कसने में जरा देर कर दे।"

साम बोला - "तुमने कैसे जाना कि मेम साहब नहीं चाहती?"

आंडी ने कहा - "जब मैंने मेम साहब से इलाइजा के भाग जाने का समाचार कहा तो वे बोलीं - "परमात्मा इलाइजा के बच्चे की रक्षा करे।" पर साहब यह सुनकर झुँझला उठे।

साम बड़ा नंबरी था। जब जान लिया कि मेम साहब इलाइजा को पकड़ने के पक्ष में नहीं हैं, तब फिर वह जल्दी घोड़ा क्यों कसे? अस्तबल में जाकर एक घोड़ा खोल देता है, फिर उसको पकड़ता है; फिर छोड़ देता है, फिर पीछे दौड़कर पकड़ता है, यों ही समय टाल रहा है। फिर अपनी सवारी के घोड़े पर काठी कसकर इस ढंग से उसके नीचे एक काँटा लगा दिया कि घोड़े पर चढ़ते ही काँटा चुभने से घोड़ा भड़ककर सवार को जमीन पर पटक दे। हेली के घोड़े की जीन के नीचे भी उसने एक ऐसा ही काँटा लगा दिया।

शेल्वी ने कई बार साम को पुकारकर कहा - "साम, इतनी देरी क्यों हो रही है?"

साम ने कहा - "सरकार, बड़ा बदमाश घोड़ा है। जल्दी जीन ही नहीं धरने देता।"

इस तरह धीरे-धीरे समय निकलने लगा। इधर शेल्वी साहब की मेम ने साम को बुलाकर कहा - "साम, दोनों घोड़ों के पैरों में न जाने क्या हो रहा है! देखना, बहुत दौड़ाकर हैरान मत करना।"

साम को चाहे अक्ल हो या न हो, पर ऐसी बातें वह बड़ी फुर्ती से समझ लेता था। मेम साहब का मतलब वह तत्काल समझ गया। साम को घोड़ा लाने में देरी करते देख हेली स्वयं अस्तबल में पहुँचा। साम और आंडी को झटपट घोड़े पर चढ़ने को कहकर वह अपने घोड़े पर चढ़ने लगा, परंतु उसका पीठ पर बैठना था कि घोड़ा एकदम उछल पड़ा और वह नीचे जमीन पर आ गिरा। हेली को पटककर घोड़ा मैदान की ओर भागा। आंडी, साम तथा शेल्वी के दूसरे नौकर - "अरे, घोड़ा भाग गया! पकड़ो, पकड़ो!" चिल्लाते हुए उसके पीछे दौड़ने लगे। इस तरह दोपहर का दिन चढ़ आया। तीसरे पहर साम घोड़े को पकड़कर हेली के पास आया। हेली साम को डाँटकर बोला - "तूने हमारे तीन घंटे यों ही बरबाद कर दिए। अब फौरन घोड़े पर सवार होकर हमारे साथ चलो।" ...



साम बोला - "आपका घोड़ा पकड़ने में जो मूसीबत मूझे उठानी पड़ी, उसे मेरा जी ही जानता है। और क्या कहूँ! आपको बड़ी जल्दी थी, इसी से मैंने इतनी मेहनत की। मेरी तो जान ही निकल गई। आपका काम था, इसलिए कर दिया। अगर दूसरे का होता तो कभी नहीं करता; पर बिना पेट में दाना पड़े नहीं चला जाएगा। घोड़े भी बहुत थक गए हैं। कोई खटके की बात नहीं है। इलाइजा तेज नहीं चल सकती। भोजन के बाद चलने पर भी उसे चुटकी बजाते पकड़ लेंगे।"

इसी समय शेल्वी साहब की मेम हेली के पास आकर बड़ी नम्रता से बोली - "महाशय, दोपहर दिन बीत चला है। अब बिना खाए, भूखे-प्यासे जाना तो ठीक न होगा। कृपा करके आज हमारे यहाँ भोजन कीजिए।"

सच तो यह है कि शेल्वी की मेम हेली-सरीखे नर-पिशाच से बात तक करने से नफरत करती थी; पर आज उसके साथ बैठकर भोजन तक करने में उसे घृणा नहीं हुई। व्यावहारिक कामों में हेली अपने को बड़ा चतुर समझता था, पर स्त्री की चतुराई समझना कठिन काम है। जो हेली दुनिया को चराता फिरता है, आज वही स्त्री के फंदे में फँसकर स्वयं ठगा गया।

## 7. माता का रोमांचकारी पराक्रम

श्रीमती शेल्वी के अनुरोध पर हेली भोजन के लिए ठहर गया। पर इधर इलाइजा तेजी से कदम बढ़ाती चली जा रही थी। उसकी उस समय की दुर्दशा सोचकर पत्थर का दिल भी पिघल जाएगा। इस संसार में इलाइजा का कोई नहीं है। उसका पति घोर अत्याचार से तंग आकर भागने की फिरक कर रहा है, पर भाग न पाया तो आत्महत्या कर लेगा। अब इस जन्म में इलाइजा को पति के दर्शन की आशा नहीं है। यह संसार इलाइजा के लिए अपार समुद्र है। उसे मालूम नहीं कि सांसारिक घटना-स्रोत उसे किधर बहा ले जाएगा। इस संसार-समुद्र में उसके लिए कोई अवलंब, कोई ठिकाना नहीं है। वह लड़के को गोद में लेकर विशाल संसार-सागर में कूद पड़ी है। पर सब प्रकार से आश्रयहीन होते हुए भी उसके जीवन का एक लक्ष्य है। कोई ठिकाना न रहने पर भी यदि मनुष्य के जीवन का कोई लक्ष्य रहे, तो उस तक पहुँचने के उद्योग में वह किसी कष्ट को कष्ट नहीं समझता, किसी यंत्रणा को यंत्रणा नहीं मानता। पर जिसके जीवन का कोई लक्ष्य या कोई उद्देश्य ही नहीं है, ऐसा मनुष्य संसार में पग-पग पर कष्टों का अनुभव करता है, सब प्रकार के भोग उसके लिए दुर्भोग हो जाते हैं।

दास-व्यवसायी के हाथ से संतान की रक्षा करना ही इलाइजा के जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। जीवन के इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उसे कोई भी कष्ट, कष्ट नहीं लगता, किसी भी दुःख की उसे परवा नहीं। दुबली-पतली इलाइजा छह बरस के बालक को गोद में लिए बेतहाशा चली जा रही है। बालक पैदल चलने में समर्थ था; पर उसके छिन जाने के भय की भावना उसके मन

मैं ऐसी जम गई थी कि एक बार भी बालक को गोद से नीचे नहीं उतारी। कुछ दूर चलती और फिर पीछे घूम कर देखती जाती कि कहीं कोई आता तो नहीं है। पेड़ के पत्ते के गिरने की आहट सुनते ही चौंक पड़ती और पीछे मुड़ कर देखती हुई - "ईश्वर, रक्षा करो, ईश्वर, रक्षा करो!" कहकर चिल्ला उठती। बालक ने एक बार आँखें खोली, पर इलाइजा ने उससे कहा - "चुप रह, नहीं तो पकड़ा जाएगा।" बालक तत्काल उसके गले से चिपटकर निद्रित-सा हो गया। स्नेह की भी कैसी विचित्र शक्ति है। बालक के अंग-स्पर्श से इलाइजा के शरीर में नया बल आ गया। मानसिक अवस्था मनुष्य को कितना बलवान बना सकती है, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता। जो लोग यह कहते हैं कि शारीरिक बल के बिना कोई काम नहीं हो सकता, वे भूल करते हैं। मानसिक शक्ति निर्बल को भी सबल बना देती है। शरीर पर मन का अपूर्व प्रभाव और प्रभुत्व होता है। मानसिक बल कभी-कभी रक्त, मांस और नसों को इस्पात की भाँति दृढ़ और मजबूत बना देता है। वीर-शिरोमणि नेपोलियन का अपूर्व वीरत्व इसी मानसिक बल का फल था। मानसिक बल के बिना शरीर अनायास अवसन्न हो जाता है। मानसिक बल सदैव शरीर में बिजली का-सा काम करता है और शरीर में तेज बनाए रखता है। जो मानसिक बल से हीन है, वही वास्तव में निर्बल है।

इलाइजा शरीर से अवश्य दुर्बल थी, पर उसमें मानसिक बल की कमी न थी। वह बालक को गोद में लिए हुए तेज चाल से कोई दस-बारह कोस चली गई। क्षण भर भी कहीं ठहरकर उसने दम न लिया। लक्ष्य-साधन की प्रबल इच्छा ने ही इस अबला के हृदय को सबल बना दिया था। उसके आंतरिक उत्साह ने ही उसके शरीर में यह अलौकिक पराक्रम भर दिया था। इस तरह चलते-चलते रात बीत चली। सड़क पर चारों ओर घोड़ा-गाड़ियाँ दौड़ने लगीं। इलाइजा ने यह सोचकर कि अब लड़के को गोद में लिए रहने से उस पर लोग घर छोड़कर भागी हुई होने का संदेह करने लगेंगे, लड़के को गोद से उतार दिया और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिए। बालक उसके पीछे-पीछे चलने लगा। कुछ दूर पर एक बाग था, वहीं जाकर वह अपने साथ लाई हुई खाने-पीने की चीजें बालक को खिलाने लगी। पर स्वयं कुछ न खाया। बालक देख रहा था उसकी माता ने कुछ नहीं खाया।

बालक ने स्वयं अपने हाथों से माता के मुँह में खाने की कुछ चीजें डाल दीं, पर इलाइजा से खाया नहीं गया। दुःख, भय और त्रास से उसका कंठ सूख गया था। बालक ने खाने को कहा तो वह बोली - "बेटा, जब तक तूझे किसी सुरक्षित स्थान पर लेकर नहीं पहुँचती हूँ तब तक मैं कुछ खा-पी नहीं सकूँगी।" बालक के खा लेने पर इलाइजा फिर ओहियो नदी की ओर चल पड़ी। वह सोच रही थी, ओहियो नदी पार करते ही उसकी सारी आशंकाएँ दूर हो जाएँगी। धीरे-धीरे और भी दो-तीन स्थानों को लाँघकर वह एक बिल्कुल अनजान जगह में जा पहुँची। यहाँ किसी के संदेह करने की अधिक संभावना न रही। इलाइजा अफ्रीकी दास-दासियों की भाँति काली न थी। वह अंग्रेज पिता के वीर्य से पैदा हुई थी। देखने में वह कोई अंग्रेज कुलवधू-सी जान पड़ती थी। इस अनजान स्थान में इलाइजा की विपत्ति की आशंका ने ही तो उसके शरीर को ताकत दे रखी थी। आशंका घटने पर उसका शरीर भी क्रमशः शिथिल पड़ने लगा। धीरे-धीरे भूख-प्यास और

थकावट ने उसे मजबूर कर दिया। यहाँ किसी के पहचानने का खटका नहीं है, यह सोचकर उसने निकट की एक दुकान में जाकर कुछ खाने की चीजें लीं और बालक के साथ खा-पीकर फिर चलने लगी। सूर्यास्त से कुछ पहले वह ओहियो नदी-तट के एक गाँव में जा पहुँची। तट पर जाकर चाह-भरी आँखों से वह बार-बार ओहियो नदी के दूसरी पार की ओर देखने लगी। अब उसे केवल नदी पार करने की फिक्र थी। बरफ गल गई थी। नाव बिना नदी पार होना असंभव था। किनारे के पास थोड़ी ही दूर पर एक सराय दिखाई दिया। वहाँ एक बुढ़िया बैठी-बैठी कुछ काँटे-चम्मच साफ कर रही थी। इलाइजा ने बुढ़िया से पूछा कि पार जाने के लिए नाव मिलेगी या नहीं? बुढ़िया बोली - "नाव मिलने की कोई संभावना नहीं है।" इससे इलाइजा निराश हो गई। वृद्ध ने उसकी यह दशा देखकर पूछा - "क्या उस पार के किसी गाँव में तुम्हारा कोई कुटुंबी बीमार है?" इलाइजा ने कहा - "कल मुझे खबर मिली कि मेरे एक बच्चे की हालत बहुत खराब है, इसी से मैं घबराई हुई जा रही हूँ। अगर आज नदी पार न कर सकी तो उसे देख पाऊँगी, इसमें संदेह है।"

बुढ़िया ने उसकी यह कातरावधि सुनकर एक पुरुष को बुलाया और कहा - "सालोमन भैया, जरा देखना तो, नदी पार करने के लिए कोई नाव है क्या?"

सालोमन ने कहा कि आज पार होने की आशा नहीं है। कल कोई नाव मिल सकती है। इसके बाद इलाइजा, बुढ़िया के कहने पर रात वहीं बिताने को राजी हो गई। उसी सराय की एक कोठरी में जाकर उसने बालक को एक तरफ सुला दिया और स्वयं उसकी बगल में बैठकर सोचने लगी।

उधर शेल्वी साहब के घर भोजन करने के लिए गुलामों का व्यापारी हेली फँस गया। शेल्वी साहब की मेम ने क्लोई को बहुत शीघ्र भोजन बनाकर लाने की आज्ञा दी। पर आज अजीब हालत है। क्लोई से झटपट भोजन तैयार ही नहीं हो पा रहा है। कभी चूल्हे की आग बुझ जाती है तो कभी बनती हुई चीज ही बिगड़ जाती है और वह फिर दोबारा बनानी पड़ती है। इस तरह बड़ी गड़बड़ होने लगी। उधर शेल्वी साहब भोजन की शीघ्र तैयारी के लिए आदमी-पर-आदमी भेज रहे हैं। एक दास आकर बोला कि देर होते देखकर हेली साहब बहुत घबरा रहे हैं। क्लोई झुंझलाकर बोली - "घबरा रहे हैं तो मेरी बला से, भाड़-चूल्हे में जाएँ, हम क्या करें!"

वहाँ जैक नाम का एक दास बैठा था। वह बोला - "भाड़-चूल्हे में ही क्यों, वह यम के यहाँ जाने को छटपटा रहा है। उसे अभी नरक की हवा खानी पड़ेगी।" क्लोई ने फिर कहा - "उस शैतान के लिए नरक ही ठीक है। वह सैकड़ों गरीबों के गले पर छुरी फेरता है। वह राक्षस बच्चे को जबरदस्ती माँ की गोद से छीन लेता है। स्त्री को स्वामीहीन और शिशु को पितृहीन करता है। क्या ईश्वर अंधा है? उस पापी को अवश्य नरक की भयंकर आग में तड़पना पड़ेगा।"

जैक बोला - "चाची, तू बहुत ठीक कहती है। नालायक की लाश को गीदड़ों और कुत्तों से

नुचते देखकर मैं बड़ा खुश होऊँगा।"

इसी बीच टॉम वहाँ आ पहुँचा। उसके हृदय में अलौकिक धर्म की धारा बहती थी। क्लोई से टॉम कहने लगा - "हमारी किस्मत में जो लिखा था सो हुआ। इसके लिए किसी दूसरे आदमी को कोसना और उसके विरुद्ध दिल में बुरा भाव पोसना अच्छा नहीं।"

टॉम ने अपनी स्त्री से बातचीत शुरू की ही थी कि एक नौकर उसको शेल्वी साहब के पास बुलाने पहुँचा। शेल्वी ने हेली की ओर संकेत करके कहा - "टॉम, मैंने इनके हाथ तुम्हें बेचा है। यह अभी किसी काम से जा रहे हैं। आज तुम्हें नहीं ले जा सकेंगे। दो-चार दिन बाद आकर ले जाएँगे। जब ये लेने आएँ तो तुरंत इनके साथ चले जाना। नहीं गए तो अपनी लिखा-पढ़ी के अनुसार इनको मुझे एक हजार हरजाना देना पड़ेगा। देखो, इस बात में गलती मत करना।"

टॉम बोला - "आपकी आज्ञा सिर-माथे है। मैं छोटी उम्र में आपके यहाँ आया था। जिस समय आप एक साल के थे, उसी समय आपकी माता आपको मुझे सौंपकर बोली, टॉम, यही भविष्य में तुम्हारा मालिक होगा। इसे जतन से पालना। उस समय से आपको गोदी में खिलाया, आपको पाला-पोसा और आपका सारा काम किया। पर कहिए, आज तक क्या कभी किसी काम में मैंने आपको धोखा दिया है?"

टॉम की यह बात सुनकर शेल्वी का सिर झुक गया। उनकी आँखों में पानी भर आया। कहने लगे - "टॉम, तुमने हमेशा बड़ी सच्चाई से मेरा काम किया है, पर कर्ज में फँस जाने के कारण लाचारी में मुझे तुमको बेचना पड़ा है।"

शेल्वी साहब की मेम ने कहा - "टॉम, तुम घबराना मत, मैं रुपया इकट्ठा करके फिर तुम्हें जरूर इनसे खरीद लूँगी।"

साथ ही मेम ने हेली से कहा - "टॉम को आप जिसके भी हाथ बेचें, कृपया उसका नाम-पता हमें अवश्य लिख भेजिएगा।"

हेली ने कहा - "मैं तो दस रुपयों के फायदे के लालच में यह काम करता हूँ। शायद कुछ दिनों बाद फिर आप ही के हाथ बेच दूँ।"

शेल्वी साहब की मेम हेली-सरीखे नर-पिशाच से बात करने में बड़ी नफरत करती थी। फिर भी आज वह बहुत-से विषयों पर उससे बातें करने लगी। इस बातचीत का उद्देश्य था कि किसी तरह समय बीत जाए।

दोपहर के जब दो बज गए, तब साम और आंडी घोड़े लेकर दरवाजे पर आ गए। शेल्वी साहब और उनकी मेम से बिदा माँगकर हेली इलाइजा को पकड़ने चला। घोड़े पर चढ़ते समय उसने साम से पूछा - "क्या तुम्हारे मालिक के यहाँ शिकारी कुत्ते हैं?" साम खूब जानता था कि

उनके यहाँ एक भी शिकारी कुत्ता नहीं है, लेकिन फिर भी समय गुजारने के लिए वह दृष्टता से बोला - "हाँ, हमारे यहाँ बहुत कुत्ते हैं। आप ठहरिए, मैं अभी लाता हूँ।" और फिर कई पालतू कुत्ते लाकर उसके सामने पेश कर दिए। उन्हें देखकर हेली बहुत क्रुद्धा और बोला - "अरे गधे, ये कुत्ते हम नहीं चाहते। भागे हुए दासों को पकड़ने के लिए शिकारी कुत्ते हुआ करते हैं। तू बहुत बदमाश है। चलो, तुम्हें कुत्ते लाने की जरूरत नहीं है।" थोड़ी दूर जाकर हेली ने कहा - "ओहियो नदी की ओर चलो।"

साम ने बड़ी गंभीरता से मुँह बनाकर कहा - "जनाब, नदी को दो रास्ते गए हैं, एक तो अच्छा-खासा नया रास्ता है, दूसरा खराब हो गया है। इससे अब उधर होकर बहुत लोगों का आना-जाना नहीं है। बताइए आप किस रास्ते से चलना चाहते हैं?"

साम की दो रास्तों की बात सुनकर आंडी की हँसी न रुकी। वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। पर साम फिर बड़ी गंभीर सूरत बनाकर आंडी को डाँटकर कहने लगा - "आंडी, तू बड़ा बेवकूफ है। तू वक्त-बेवक्त कुछ भी नहीं देखता। यह भी क्या हँसने का वक्त है? जिसमें हेली साहब का काम हो जाए, वही देखना चाहिए।" वह फिर हेली से कहने लगा - "जनाब, मालूम होता है कि इलाइजा खराब रास्ते ही गई है, क्योंकि उधर बहुत लोगों का आना-जाना नहीं है। लेकिन हम लोगों को उस रास्ते से जाने में सुभीता न होगा। वह रास्ता जगह-जगह से कट गया है। इससे चलिए, हम लोग इस नए रास्ते से ही चलें। अच्छे रास्ते से ही जाने में ठीक रहेगा।"

साम की ये बातें सुनकर हेली सोचने लगा कि इलाइजा निर्जन रास्ते से ही भागी होगी, पर यह लड़का बड़ा धूर्त है। पहले भूल से उस रास्ते का नाम ले गया, अब बहकाकर मुझे दूसरे रास्ते से ले जाना चाहता है, इससे पुराने से ही जाना ठीक होगा। सचमुच इस संसार में वहमी आदमी एकाएक झूठ-सच का निर्णय नहीं कर सकते। हेली ने बीहड़ रास्ते से ही जाना ठानकर साथियों को उसी ओर चलने की आज्ञा दी।

साम ने बहुत मना किया - "साहब, इस रास्ते से मत चलिए। जरूर कहीं-न-कहीं भटक जाएँगे। रास्ता साफ नहीं है। जगह-जगह कट गया है।"

साम की इन बातों से हेली का संदेह और बढ़ गया। वह साम को डपटकर कहने लगा - "हम तेरी बात नहीं सुनना चाहते। इसी रास्ते चलना होगा।"

असल में वह सुनसान रास्ता बहुत दिन से बंद हो गया था। साम यह बात खूब जानता था। उसकी चालाकी न समझकर हेली ने उसी रास्ते से जाने का तय किया, यह देख वह मन-ही-मन खुश होकर हँसने लगा। थोड़ी दूर चला और फिर बोला - "अजी साहब, यह रास्ता बड़ा खराब है। इससे चलना दुश्वार मालूम होता है।" उसकी बातों से हेली को बहुत ही क्रोध आ गया और वह कहने लगा - "तू चुप रह! तेरे कहने से हम रास्ता नहीं छोड़ेंगे।" इस पर साम चुप रह

गया और अत्यंत नम्रता दिखाकर बोला - "तो जिधर से आपकी इच्छा हो, चलिए।"

इस तरह चलते-चलते साम और आंडी बीच-बीच में झूठ-मूठ चिल्लाने लगते - "वह रही इलाइजा!... देखो-देखो, कपड़ा दीख पड़ता है!... वह इलाइजा दीख पड़ती है।" इनकी चिल्लाहट से घोड़ा बार-बार चौंकता था, और बेकार देर होती थी। अंत में करीब एक घंटे के बाद वे एक लंबे-चौड़े मैदान में पहुँचे। आगे बढ़ने का रास्ता न था, जो था वह वहीं खत्म हो गया था। तब साम ने हेली से कहा - "देख लीजिए साहब, मैंने आपसे पहले ही कहा था कि यह रास्ता बंद हो गया है। पर आपने मेरी बात सुनी नहीं। अपने यहाँ के रास्तों का हाल हम लोगों को अच्छी तरह मालूम है। आप दूसरी जगह के आदमी ठहरे आपको इन बातों का क्या पता?" हेली क्रोधित होकर कहने लगा - "तू बड़ा बदमाश है। तूने यह सब जान-बूझकर किया है।"

साम ने इस प्रकार डाँट खाकर धीरे-धीरे कहा - "साहब, मैंने तो आपसे पहले ही इस रास्ते से चलने को मना कर दिया था, पर आप नहीं माने तो मैं क्या करूँ? इसमें मेरा क्या कसूर है?"

अब हेली क्या कहे! असल में साम ने दो बार खुल्लमखुल्ल इस रास्ते से जाने को मना किया था। अब वे घोड़ों को घुमाकर अच्छे रास्ते की ओर वेग से बढ़े। शाम भी न हो पाई थी कि वे उसी सराय के सामने, जिसमें इलाइजा ठहरी थी, आ पहुँचे। इलाइजा को यहाँ पहुँचे एक ही घंटा हुआ था। अपने बच्चे को सुलाकर वह खिड़की में खड़ी होकर नदी की ओर देख रही थी। इसी समय साम की निगाह उस पर जा पड़ी। हेली और आंडी साम के पीछे थे। उन्हें इलाइजा नहीं दिखाई दी। साम ने बदमाशी से हवा में अपनी टोपी फेंक दी और जोरों से चिल्लाने लगा - "मेरी टोपी हवा में उड़ गई... अरे, मेरी टोपी उड़ गई!" यह चिल्लाना इलाइजा को सुनाई पड़ा। उसने उधर आँखें घुमाते ही साम और हेली को देख लिया। फिर क्या था! सोते बालक को गोद में लेकर उछलती हुई पीछे का दरवाजा खोलकर भागी। हेली ने उसे देख लिया। वह तत्काल घोड़े से उतरकर बाघ की तरह उसके पीछे लपका। उधर इलाइजा के उस थके हुए शरीर में अकस्मात् मानो हजारों हाथियों का बल आ गया। वह बिजली की भाँति तड़पकर निकट की ओहियो नदी में कूद पड़ी। जल पर उस समय बर्फ तैर रही थी। बर्फ पर कूदते ही वह हिम-खंडों के साथ बहने लगी। उसके बोझ से बर्फ का टुकड़ा ज्यों ही डूबने को होता कि वह कूदकर दूसरे टुकड़े पर जा पहुँचती। इस तरह एक खंड से दूसरे पर कूदती हुई आगे बढ़ने लगी। उसके जूते टुकड़े-टुकड़े हो गए। बर्फ की रगड़ से छिलकर उसके दोनों पैरों से खून बहने लगा। पर बालक को उसने ऐसी दृढ़ता से पकड़ रखा था कि एक बार भी वह गोद से छूटने न पाया।

थोड़ी ही देर में इलाइजा नदी को पार करके दूसरे किनारे पर पहुँच गई। वहाँ उसे एक आदमी किनारे पर खड़ा दिखाई दिया। उसने इलाइजा को हाथ पकड़कर किनारे पर चढ़ा लिया और पूछा - "तुम कौन हो? तुम तो बड़ी बहादुर जान पड़ती हो।" इलाइजा ने आवाज से उसे पहचान लिया। वह शेल्वी साहब के घर के पास ही कहीं खेती करता था। अतः इलाइजा ने उसका नाम लेकर कहा - "सिम, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ! मुझे बताओ कि मैं कहाँ छिपकर रह

सकती हूँ। मेरे इस बच्चे को मालिक ने बेच दिया है। खरीदार इसे पकड़ने आया है। सिम, तुम भी बाल-बच्चोंवाले हो।"

सिम ने कहा - "मुझसे जहाँ तक बनेगा, मैं तुम्हारा उपकार करूँगा। तुम्हें कोई खटका नहीं। निश्चिंत हो जाओ। तुम पास के ही इस गाँव में चली जाओ। सामने वह जो सफेद घर दिखाई दे रहा है, वहाँ जाने से तुम्हें शरण मिलेगी।"

इस पर इलाइजा सिम को आशीर्वाद देती हुई बच्चे को छाती से लगाकर उसी घर की ओर चली गई।

इलाइजा के चले जाने पर सिम सोचने लगा - "इसे मैंने पकड़ा नहीं, उल्टा भागने का रास्ता बता दिया। इससे कहीं शेल्वी साहब मुझपर नाराज न हो जाएँ। बला से, हो जाएँगे तो क्या है! इस आफत की मारी स्त्री पर क्या कोई सख्ती कर सकता है!"

सिम अपढ़ और गँवार है। उस पर बनावटी धर्म की छाया नहीं पड़ी है। उसके हृदय में ऐसे भाव का आना असंभव नहीं है। पर यदि कहीं वह पढ़ा-लिखा शहरी होता तो प्रचलित कानून के गौरव की रक्षा के लिए जरूर इलाइजा को पकड़कर पुलिस के हवाले कर देता।

हम लोग अब सिम और इलाइजा से विदा होकर पाठकों को हेली की खबर सुनाना चाहते हैं। इलाइजा को जल्दी-जल्दी बर्फ पर जाते देखकर हेली भैचक्का-सा रह गया। साम तथा आंडी से बोला - "अरे, उसके सिर पर भूत सवार है। देखो, ठीक बिल्ली की तरह कूदती जा रही है!"

हेली की बात सुनकर दोनों हँस पड़े। इस पर हेली दोनों को कोड़ा लगाने के लिए उतारू हो गया। वे जरा हटकर बोले - "साहब, हमारा काम हो गया, अब हम जाते हैं। घोड़ा लेकर अधिक दूर जाने से मेम साहब नाराज होंगी। यहाँ और ठहरने की जरूरत नहीं दीख पड़ती।" इतना कहकर दोनों हँसते हुए वहाँ से चल दिए।

## 8. पकड़नेवालों की तैनाती

संध्या से पहले ही इलाइजा नदी पार करके दूसरे किनारे पहुँच गई। धीरे-धीरे अँधेरा छा गया। इससे अब वह हेली को दिखाई न पड़ी। हेली निराश होकर सराय में वापस चला आया। उस घर में अकेला बैठा-बैठा अपने भाग्य को कोसता हुआ मन-ही-मन कहने लगा - "इस संसार में न्याय नहीं है। यदि न्याय होता तो मेरे इतने रुपयों का नुकसान क्यों होता?"

इसी समय वहाँ दो आदमी और आ गए। उनमें एक ज्यादा लंबा था। उसके चेहरे से निर्दयता टपकती थी। जान पड़ता था, मानो नरक का द्वारपाल है। उसके कपड़े और चाल-ढाल

भी इसी बात की गवाही दे रहे थे। उसे देखकर हेली बहुत संतुष्ट हुआ। बोला - "लोकर, आज तो तुम बड़े मौके से आए।"

इस आदमी का नाम टॉम लोकर था। पहले हेली इसके साझे में काम करता था। लोकर के दूसरे साथी कद का नाटा था। उसका नाम था मार्क। हेली ने उसे देखकर पूछा - "लोकर, यह आदमी तुम्हारा साझीदार जान पड़ता है।"

इस पर लोकर ने हेली और मार्क दोनों का आपस में परिचय करा दिया। फिर वह तीनों व्यवस्थापिका-सभा के मेंबरों की भाँति मेज पर बैठ गए। पहले हेली ने अपनी दुःख-कहानी बड़े करुण शब्दों में आरंभ की। बार-बार वह अपने भाग्य को कोसकर कहने लगा - "औरत की जाति बड़ी दुष्ट होती है। उसे न्याय-अन्याय का जरा भी विचार नहीं होता। हमने कितने रुपए देकर तो उसके छोकरे को खरीदा और वह औरत एक छोकरे की माया न तज सकी। देखो, उस औरत ने कितना अन्याय किया है? वह छोकरे को लेकर भाग गई!"

हेली की बातें सुनकर लोकर का साथी मार्क बड़ी गंभीरता से अपना मंतव्य प्रकट करने लगा - "आजकल खेती-बाड़ी, वाणिज्य, शिल्प और विज्ञान आदि सभी विभागों में नए-नए आविष्कार हो रहे हैं। यदि संतान की मोह-माया न रखनेवाली जाति की स्त्रियों को पैदा करने की कोई कल निकल आए तो उससे संसार का बड़ा भला हो और सब भाँति के आविष्कारों की अपेक्षा ऐसी स्त्रियाँ पैदा करने का आविष्कार सबसे अधिक उपयोगी होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।"

हेली ने उसका हृदय से अनुमोदन करके कहा - "तुम बहुत ठीक कहते हो। कसम है, ऐसी औरतों के पैदा हुए बिना तो रोजी-रोजगार करना दुश्वार है। छोटे-छोटे बच्चे माताओं के सिर के बोझ ही हैं। भाई, तुम्हीं कहो, बच्चों से औरतों को क्या लाभ होता है? कुछ भी नहीं। लेकिन वे बच्चों को छोड़ना नहीं चाहतीं। वे यह भी नहीं समझतीं कि दुःख देने के सिवा बच्चे उनका कोई फायदा नहीं करते, खास करके चुपचाप लड़कों को खरीदारों के हवाले न कर देने से कितना पाप लगता है, यह उन अल्हड़ों के दिमाग में नहीं बैठता।"

हेली की बात समाप्त होते ही मार्क फिर कहने लगा - "भाई, पिछले माह मैंने एक रोगी लड़के के साथ एक दासी मोल ली थी। सोचा था कि रोगी लड़के को माँ की गोद से लेकर बेचने में उसकी माँ कोई आपत्ति नहीं करेगी। लेकिन स्त्रियों की माया समझ में नहीं आती। रोगी लड़कों पर स्त्रियों का स्नेह और अधिक होता है। भाई, क्या कहूँ, उस रोगी लड़के के बेचने के थोड़े ही दिनों बाद उसकी माँ भी मर गई।"

मार्क की यह बात सुनते ही हेली ने कहा - "तुम्हारे सिर की कसम, भाई, सच कहता हूँ, हमपर भी एक बार ऐसी ही बीती थी। हमने एक बार एक अंधे छोकरे और उसकी माँ को खरीदा था। खरीदने के समय छोकरे के अंधे होने का पता नहीं था, पीछे से पता चलने पर उसे दूसरी



जगह बेच दिया। फिर क्या था? उसकी माँ उसे गोद में लेकर नदी में डूबकर मर गई। हमारे सारे रुपए पर पानी फिर गया।"

टॉम लोकर अब तक ब्रांडी की बोतल में ही मस्त था। अब तक उसे बातें करने की फुर्सत न मिली थी। जब पूरी बोतल खाली कर चुका तब बोला - "भाई, मेरे काम का तो ढंग ही निराला है। लड़का-लड़की, पुरुष-स्त्री, कोई हो, मैं पहले से ही कह रखता हूँ कि बेचने के समय जरा भी रोना-पीटना सुना कि मारे बेंतों के चमड़ी उधेड़ दूँगा। युवतियों को खासतौर से समझा देता हूँ कि तुम्हारी गोद के बच्चे पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। मैंने रुपया देकर मोल लिया है, जो जी चाहेगा, करूँगा। इससे फिर किसी को चूँ करने का साहस नहीं होता और अगर कोई ऐसी निकलती है कि समझाने पर भी रोने-पीटने से बाज नहीं आती तो मेरे ये मजबूत हाथ उसे दुरुस्त करने के लिए तैयार रहते हैं।" इतना कहते-कहते उसने मेज पर इतने जोर से हाथ पटका कि मेज के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

हेली ने कहा - "लोकर, हंटरों से यों खबर लेने को हम कोई तुम्हारी अक्लमंदी नहीं समझते। ये बातें कोई कारोबार की नहीं हैं। समझदार लोग कभी मार-पीट नहीं करते। आत्मा सब में है। चमड़ी उधेड़ने से तुम्हारी और उसकी सबकी आत्मा में बराबर दर्द होता है। हमको इस बात का तजुरबा है कि बिना मार-पीट के कारोबार में ज्यादा फायदा होता है।"

हेली की यह बात लोकर को बहुत चुभी। उसने कहा - "अरे बच्चू, मेरे सामने बहुत 'आत्मा-आत्मा' मत बको। मेरी आत्मा का हाल मैं खूब जानता हूँ। तेरे शरीर को पीसकर चलनी में छान डालने से भी आत्मा का एक कण नहीं निकलेगा।"

हेली ने मुँह बनाकर कहा - "लोकर, इतने झुँझलाते क्यों हो? मुनासिब बात कहने से जलकर खाक हो जाते हो!"

अब लोकर और भी बिगड़कर बोला - "तेरी धर्म की बातें मैं नहीं सुनना चाहता। तू मुझे उपदेश देने चला है? मैं तेरी नस-नस पहचानता हूँ। तू अपने मन में अपने को बड़ा धार्मिक समझता है, लेकिन क्या मुझे खबर नहीं कि तेरा धर्म और भलमनसी लोगों को ठगने के लिए एक तरह का जाल है। लोगों को कर्ज देते समय तू बड़ी भलमनसी दिखाकर मीठी-मीठी बातें बनाता है, और जब रुपया वसूल करने का समय आता है तब तू गला घोटकर आदमी को मार डालता है और उसका सब-कुछ हजम कर जाता है। यही है न तेरी आत्मा?"

बात बढ़ती देख टॉम लोकर के साथी मार्क ने दोनों हाथ फैलाकर कहा - "भाई, इन झगड़े-टंटों में क्या रखा है! कुछ काम की बातें करो। सबके अपने अलग-अलग मत होते हैं। हेली का अच्छापन उसकी दो-ही-चार बातों से मुझे मालूम हो गया। अब हेली ने जो बात कही है, उसे झटपट तय कर डालो।" फिर हेली से बोला - "भाई, उस स्त्री को पकड़वाने पर क्या दोगे?"

"उस औरत से मेरा क्या मतलब! मैं तो सिर्फ लड़के को चाहता हूँ। उस लड़के को खरीदकर ही मुझे बेवकूफ बनना पड़ा है।"

लोकर ने कहा - "तुम बचू, आज के नहीं, हमेशा के बेवकूफ हो।"

मार्क ने कहा - "लोकर, तुम फिर टायं-टायं करने लगे। इन सब बखेड़ों से क्या मतलब? मतलब से मतलब रखो, देने-लेने की बातें करो।"

हेली बोला - "हाँ, बोलो न, तुम लोग कितना चाहते हो? हम कहते हैं कि लड़के को बेचने पर जो मुनाफा मिलेगा, उसमें से दस रुपया सैकड़ा तुम लोगों को देंगे।"

लोकर ने कहा - "अजी, अपनी ये चालाकियाँ रहने दीजिए, हमसे नहीं चलेंगी। तुम्हीं बड़े उस्ताद हो, उसकी खोज मैं सिर हम खपाएँगे, और जो न पकड़ पाए तो हमारी सारी मेहनत मिट्टी में मिली। पहले हम लोगों की मेहनत के पचास रुपए हाथ पर रखो, तब बात करो।"

मार्क बोला - "इसमें क्या कहना है! यह तो कायदा ही है। कहीं बिना बयाना दिए कोई काम होता है? मेरा तो वकालत का पेशा ही ठहरा, मैं यह सब खूब जानता हूँ।"

बड़ी दलील और हूज्जतों के बाद हेली ने उन लोगों को पचास रुपए दिए। मार्क और लोकर ने उस भगोड़ी को पकड़ने का बीड़ा उठाया। वकालत ही की भाँति यह पेशा भी उस समय बड़े गौरव का समझा जाता था। इससे केवल रुपयों ही की आमद नहीं थी, बल्कि यह पेशा देश-हितैषिता और देशी कानून के गौरव की रक्षा का समझा जाता था, अतः उस काम का बीड़ा उठाकर उनके लज्जित होने का कोई कारण न था। हेली से रुपए पाकर वे नदी पार करने का उपाय खोजने लगे।

## 9. साम की वक्तवली-कला

हेली को ओहियो नदी के किनारे ही छोड़कर साम और आंडी घोड़े लेकर घर की ओर लौट पड़े थे। राह में साम को बड़ी हँसी आ रही थी। उसने आंडी से कहा - "आंडी, तू अभी कल का लड़का है। आज मैं न होता तो तुझमें इतनी अक्ल कहाँ थी? देख, दो रास्तों की बात बनाकर मैंने हेली को दो घंटे तक कैसे हैरान किया। यह चाल चलकर दो घंटे की देर न की जाती तो इलाइजा अवश्य पकड़ी जाती।"

इस प्रकार बातें करते हुए रात को दस-ग्यारह बजे वे शेल्वी के घर पहुँच गए। घोड़े की टापों की आहट कान में पड़ते ही श्रीमती शेल्वी तेजी से घर के बाहर आई और उत्कंठा से बार-

बार पूछने लगीं - "हेली और इलाइजा कहाँ हैं?"

साम ने मुस्कराते हुए कहा - "हेली साहब मुँह लटकाए सराय में चित्त पड़े हैं।"

"और इलाइजा का क्या हुआ? वह कहाँ गई?"

"ईश्वर की कृपा से इलाइजा ओहियो नदी पार करके कैनन प्रदेश में पहुँच गई है।"

"कैनन प्रदेश में पहुँच गई! मतलब?" शेल्वी साहब की मेम ने समझा कि शायद इलाइजा की मृत्यु हो गई।

"मेम साहब, ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा आप करता है। इलाइजा ओहियो नदी को मानो साक्षात् विमान पर चढ़कर पार कर गई। मैंने अपनी जिंदगी में ऐसी अद्भुत घटना कभी नहीं देखी।"

श्रीमती शेल्वी से इस प्रकार बातें करते-करते साम के हृदय में धर्मभाव लहराने लगा। वह इलाइजा के भागने के वृत्तांत को धर्म-शास्त्र के भाँति-भाँति के रूपकों से सजाकर कहने लगा। इतने में शेल्वी साहब ने स्वयं बाहर आकर साम से कहा - "घर के अंदर जाकर मेम साहब से बातें कहो।" फिर मेम साहब से बोले - "तुम इतनी घबराकर इस सर्दी में बाहर क्यों चली आई हो? सर्दी लग जाएगी। अंदर जाकर सब बातें क्यों नहीं सुन लेती? तुम तो इलाइजा के लिए बहुत ही घबरा रही हो।"

मेम ने कहा - "आर्थर, मैं स्त्री हूँ, मेरा भी बच्चा है। संतान का स्नेह माता के सिवा दूसरा नहीं जान सकता। इलाइजा की कैसी दुर्दशा हुई और हम लोगों ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया, इसे संतान-वत्सल माता और पतिव्रता स्त्री के अलावा और कोई नहीं समझेगा। सच पूछो तो इलाइजा के साथ ऐसी निर्दयता का व्यवहार करके मैं और तुम दोनों ईश्वर के सामने पाप के भागी हैं।"

"पाप? इसमें पाप की क्या बात है? हारे दर्जे उसे बेचना पड़ा। इसमें भी पाप है?" शेल्वी बोले।

"आर्थर, मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहती। मैं अपने मन में भली-भाँति समझती हूँ कि हम लोगों ने इलाइजा पर घोर अत्याचार किया है।"

इस पर शेल्वी ने मेम से और कुछ नहीं कहा। केवल साम से बोले - "अंदर आकर मेम साहब को इलाइजा के भागने का हाल विस्तार से सुना दो।"

साम कहने लगा - "मैंने अपनी आँखों से देखा है। इलाइजा बिना नाव-बेड़े के ओहियो नदी

को पार कर गई। बर्फ के टुकड़े बह रहे थे, उन्हीं पर होकर गई। एक टुकड़ा डूबने को होता तो वह झट दूसरे पर कूद जाती। इस तरह बर्फ पर कूदती-फाँदती उस पार निकल गई। उधर एक आदमी ने हाथ पकड़कर उसे किनारे पर कर लिया। इसके बाद अँधेरा ज्यादा हो जाने के कारण और कुछ दिखाई नहीं दिया।"

शेल्वी ने विस्मित होकर कहा - "यह बड़े आश्चर्य की बात है! वह बहती हुई बर्फ पर से कूदती हुई चली गई? मुझे तो विश्वास नहीं होता कि आदमी सहज में यों जा सकता है।"

साम बोला - "हज़ूर, सहज में कैसे जाया जा सकता है? ईश्वर की विशेष कृपा के बिना कोई भी इस तरह से नहीं जा सकता। सुनिए, संक्षेप में सारा हाल सुनाता हूँ। आप सुनकर चकित रह जाएँगे। साक्षात् ईश्वर के सहारे के बिना यह नहीं हो सकता है। मैं, आंड़ी और हेली साहब शाम के कुछ पहले ही ओहियो नदी के इस पार पहुँचे। मैं सबके आगे-आगे था। वे दोनों कुछ पीछे थे। मैंने ही सबसे पहले इलाइजा को देखा। वह पास की सराय के जंगले के सहारे खड़ी थी। मैंने झूठ-मूठ सिर की टोपी फेंक दी, और 'हवा में उड़ी-उड़ी' करके चिल्लाने लगा। जिंदे की तो बात क्या, मेरी इस चिल्लाहट से मुर्दा भी जाग सकता था। बस, इलाइजा हम लोगों की ओर देखते ही पिछवाड़े के दरवाजे से भाग चली। हेली साहब की नजर पड़ गई। वह उसके पीछे ऐसे लपके जैसे भेड़ के पीछे बाघ दौड़ता है। इलाइजा ने जब देखा कि अब तो वह पकड़ी जाएगी, कोई उपाय नहीं रहा, तो नदी में कूद पड़ी और बहती बर्फ पर से कूदती हुई उस पार निकल गई।"

शेल्वी की मेम बड़े ध्यान से सब बातें सुन रही थीं। वह बोल उठीं - "भगवान, तुम्हारी महिमा अपरंपार है। तुम्हें सहस्रों बार धन्यवाद है। तुम्हारी ही कृपा से आज इलाइजा की जान बची।"

इतना कहकर फिर साम से पूछा - "इलाइजा का लड़का तो जिंदा है?"

साम बोला - "जी हाँ, वह जिंदा है। पर आज मैं न होता तो इलाइजा अवश्य पकड़ी जाती। ईश्वर भी बड़ा कारसाज है। अच्छे कामों के लिए वह कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही देता है। आज सवेरे घोड़े कसने में उत्पात मचाकर हेली के दो घंटे खराब किए और फिर राह में कम-से-कम अढ़ाई कोस का उसे बेकार चक्कर दिलाया। ऐसा हैरान किया कि उसे भी याद रहेगा। यह सब ईश्वर की ही कृपा समझनी चाहिए।"

शेल्वी साहब साम के मुँह से ईश्वर की दया की यह व्याख्या सुनकर बहुत ही नाराज हुए और साम से कहने लगे - "यदि तू फिर कभी हमारे यहाँ रहते हुए ईश्वर की विशेष दया का ऐसा काम करेगा, तो तेरी खूब मरम्मत होगी। किसी का काम करना स्वीकार करके इस प्रकार कपट करना बड़ा अन्याय है। मैं तुम्हारी ऐसी दृष्टता और धोखेबाजी के काम को नहीं सराह

सकता।"

श्रीमती शेल्वी को अपने पक्ष में देखकर साम बड़ी गंभीरता से कहने लगा - "हूजूर, आप या मेम साहब थोड़े ही ऐसा करती हैं। हम नौकर-चाकर कभी-कभी ऐसी दुष्टता किया ही करते हैं।"

साम के इस काम में श्रीमती शेल्वी का भी हाथ था। अतः साम को वहाँ से शीघ्र हटाने के लिए उन्होंने कहा - "तुम स्वयं ही समझते हो, ऐसी दुष्टता करना बुरा है। अतः तुम्हारा दोष क्षमा करने योग्य है। तुम दोनों बहुत भूखे होंगे। शीघ्र क्लोई के पास जाकर खाना माँगकर खा लो।"

साम एक अच्छा वक्ता था। अच्छे भाषणों के लिए वह प्रसिद्ध था। शेल्वी साहब जब किसी राजनैतिक सभा में या कहीं व्याख्यान सुनने जाया करते तो साम को अक्सर साथ ले जाते थे। इस प्रकार साथ रहते-रहते साम बहुत-सी सभाएँ देख चुका था और कितने ही व्याख्यान सुन चुका था। कितनी ही जगहों में शेल्वी साहब जब सभा-मंडप में चले जाते, तब साम अपनी मंडली के दासों को लेकर वहीं बाहर दूसरी सभा किया करता और उसमें व्याख्यान दिया करता था। इसी से उसकी भाषण-शक्ति बढ़ी-चढ़ी थी। उसे मन-ही-मन इस बात का बड़ा दुःख रहा कि इलाइजा के भागने के संबंध में वह आज जी भरकर व्याख्यान नहीं दे पाया। ईश्वर की विशेष करुणा की बात कहते ही शेल्वी साहब ने धमकाकर उसका उत्साह भंग कर दिया। रसोईघर में जाते हुए वह मन-ही-मन सोचने लगा, बड़े दुःख की बात है कि ऐसा गंभीर विषय बिना लंबे व्याख्यान के यों ही हाथ से निकला जा रहा है। अतः उसने निश्चय किया कि पाकशाला में दास-दासियों के सामने इस विषय में अवश्य ही व्याख्यान देगा।

क्लोई चाची से भोजन को लेकर कभी-कभी उसकी चखचख हो जाया करती थी। पर आज तेज भूख हो जाने के कारण उसने मेल ही से काम लेना उचित समझा। इससे पाकशाला में पहुँचकर क्लोई को देखते ही उसके रसोई बनाने की लंबी-चौड़ी तारीफ करने लगा। साम के प्रशंसा-वाक्य क्लोई के कानों में सुधा ढालने लगे। घर में जितने प्रकार की खाने की चीजें थीं, उसने सबमें से थोड़ी-थोड़ी साम को परोसी। इस संसार में आत्म-प्रशंसा सभी को भाती है। ऐसे आदमियों की संख्या इनी-गिनी होगी, जो आत्म-प्रशंसा नहीं सुनना चाहते, जिन्हें अपने खुशामद-पसंद न होने का गर्व है। जो ऐसा कहते हैं कि हम खुशामदियों को अपने पास तक नहीं फटकने देते, उन्हें भी खुशामद पसंद है, यह साबित करने के लिए विशेष कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है। आप इस बार उनसे कहिए - "अजी साहब, आपको तो खुशामद बिल्कुल ही पसंद नहीं है। आपको भला कोई खुशामदी अपनी बातों में क्या लाएगा?" इसमें संदेह नहीं कि इस ठुकराहाती से वह साहब तुरंत पानी-पानी हो जाएँगे। वास्तव में अपनी प्रशंसा किसी को बुरी नहीं लगती। लेकिन बात यह है कि जितने आदमी हैं, उतनी ही तरह की खुशामदें भी हैं। किसी को किसी ढंग की खुशामद पसंद है, किसी को किसी ढंग की।

साम जब रसोईघर में बैठकर पेट-पूजा करने लगा, तब सब दास-दासी वहाँ इकट्ठे होकर बड़े

चाव से इलाइजा और उसके पुत्र के विषय में पूछताछ करने लगे। दास-दासियों से घर भरा हुआ देखकर साम के आनंद की सीमा न रही। इससे उसको एक लंबा व्याख्यान झाड़ने का दुर्लभ अवसर मिल गया। उसकी अपूर्व वक्तृत्व-शक्ति इस प्रकार प्रवाहित होने लगी:

"प्यारे स्वदेश-बंधुओं, देखो, तुम लोगों की रक्षा के लिए मैं किसी भी कठिन-से-कठिन कार्य में अग्रसर हो सकता हूँ। हम लोगों में से किसी एक पर भी यदि कोई अत्याचार करे तो समझना चाहिए, अनुभव करना चाहिए कि उसने हम सब पर अत्याचार किया है। तुम लोग समझ सकते हो कि इसके अंदर एक प्रकार की गूढ़ नीति है। इसलिए प्राण देकर तुम लोगों की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।"

साम के इतना कहते-कहते आंडी ने टोककर कहा - "सवेरे तो तुम इलाइजा को पकड़वा देने को कहते थे?"

आंडी की बात सुनकर साम ने और अधिक गंभीर बनकर कहा - "आंडी, इन गहरी बातों को समझने की अक्ल तुझमें नहीं है। तेरे जैसे भोले-भाले बालक के हृदय में केवल सद्भाव और सदिच्छा ही हो सकती है। तू इतने जटिल विषयों के नैतिक तत्व समझने के लायक नहीं है।"

'नैतिक तत्व' शब्द सुनकर आंडी चुप हो रहा। पर साम की जीभ फिर डाकगाड़ी की तरह खटाखट चलने लगी:

"मैं सदा सोच-समझकर, यानी विवेक से काम लेता हूँ। विवेक ही मेरी बागडोर है। पहले मैंने देखा कि शेल्वी साहब चाहते हैं कि इलाइजा पकड़ी जाए, अतएव विवेक के अनुरोध से मैंने उसी के अनुसार कार्य करने का निश्चय किया। फिर जब यह सुना कि मेम साहब ऐसा नहीं चाहतीं, तब मेरा विवेक दूसरे रास्ते पर चलने लगा। मेम साहब के पक्ष में विवेक के रहने से अधिक लाभ की आशा रहती है। इसलिए अब तुम लोग अनायास समझ सकते हो कि मैं नीति के रास्ते, विवेक के रास्ते और लाभ के रास्ते ही अधिक जाता हूँ। कहो आंडी, अब समझे असल बात?"

साम के श्रोतागण हंकारी भरते हुए उसकी बातें सुन रहे थे। यह देखकर साम से चुप न रहा गया। वह एक मुर्गी की टांग मुँह में डालकर फिर कहने लगा:

"विवेक, नीति, अध्यवसाय यह इतना सहज विषय नहीं है। देखो, किसी काम को करने के लिए मैंने पहले एक रास्ता पकड़ा और फिर उसी कार्य को करने के लिए दूसरे रास्ते का सहारा लेता हूँ। ऐसा करने में क्या कम मेहनत और नीति खर्च करनी पड़ती है?"

साम के लंबे भाषण से क्लोई कुछ घबरा-सी गई। अतः लाल झंडी दिखाने के लिए बोली - "अब तुम जाकर सो जाओ और दूसरों को भी सोने की छुट्टी दो।"

क्लोई की बात सुनकर मेल-गाड़ी रुक गई। साम ने वहीं अपना व्याख्यान समाप्त कर दिया और सबको आशीर्वाद देकर बिदा किया।

## 10. मानवता का हृदयस्पर्शी दृश्य

जिस दिन संध्या को इलाइजा ओहियो नदी पार हुई थी, उस दिन साढ़े सात बजे व्यवस्थापिका-सभा के सदस्य वार्ड साहब घर में बैठे अपनी स्त्री से तरह-तरह की बातें कर रहे थे। नीति-विशारद वार्ड साहब और उनकी मेम के बीच जो बातें हो रही थीं, वे इस प्रकार थीं :

मेम ने कहा - "मैं स्वप्न में भी नहीं सोचती थी कि तुम आज घर आ सकोगे।"

"हाँ, मेरे आने की कोई आशा नहीं थी; पर दक्षिण देश की ओर जाना है, इससे सोचा कि आज की रात घर पर बिताकर कल सवेरे चला जाऊँगा। मेरा तो नाकों दम आ गया। कितने जोर से सिर में दर्द हो रहा है।"

सिर दुखने की बात सुनकर वार्ड साहब की मेम कपूर की शीशी लाने के लिए उठीं। पर वार्ड साहब ने उसका हाथ पकड़कर कहा - "दवा की जरूरत नहीं है, यों ही आराम हो जाएगा। मारे काम के मेरा जी घबरा उठा है। नित्य नए कानून की धाराओं का मसविदा गढ़ना बड़ी आफत का काम है।"

मेम बोली - "आजकल व्यवस्थापिका-सभा में किन-किन कानूनों का मसविदा पेश है?"

वार्ड साहब ने बड़े अचरज में आकर मन-ही-मन कहा - स्त्रियाँ भी कानून की खबर रखती हैं। फिर प्रकट में बोले - "आजकल किसी भारी कानून का मसविदा नहीं बन रहा है।"

"आप यह क्या कहते हैं? मैंने पत्रों में देखा है कि व्यवस्थापिका-सभा से एक ऐसा कड़ा कानून जारी होनेवाला है कि कोई भागे हुए दास-दासियों को शरण नहीं दे सकेगा। चाहे वे भूख-सर्दी से मर भले ही जाएँ, पर उन्हें कोई एक पैसे या कपड़े तक की सहायता न दे सकेगा। क्या यह सच है? मुझे तो विश्वास नहीं होता कि जिनके हृदय में कुछ भी दया-धर्म है वे ऐसा कानून जारी करेंगे! सोचिए, इससे कैसी भयंकर दशा हो जाएगी। मान लीजिए, कोई दास या दासी कहीं से भागी और दस दिन की राह काटकर यहाँ आ पहुँची। पेट भरने के लिए उसके पास एक पैसा तक नहीं है, और न सर्दी से बचने के लिए कोई फटा कपड़ा ही उसके तन पर है, भला कहिए, ऐसे अनाथ और निस्सहाय व्यक्ति को कौन ऐसा निर्दयी होगा, जो एक समय का भोजन और टिकने को स्थान देने से इनकार करेगा? मेरा तो इस बात को सुनकर ही कलेजा काँपता है। यह

कानून धर्म और नीति के बिलकुल विरुद्ध है।"

वार्ड साहब हँसते हुए कहने लगे - "प्यारी, मुझे नहीं मालूम था, तुम तो एक खासी नीति-विशारद पंडिता बन गई हो।"

मेम बोली - "मैं आपके कायदे-कानून अथवा राजनीति की कुछ परवा नहीं करती। पर यह मुझे स्पष्ट दिखाई देता है कि ऐसा कानून जारी करना केवल निर्दयता का प्रचार करना है। जिनके पालन करने के लिए यह बनाया जा रहा है, उन्हें भी विवश होकर अपने हृदय की दया और धर्म को सर्वथा तिलांजलि दे देनी पड़ेगी। आप ही कहिए, क्या यह कानून धर्म या न्याय के अनुकूल होगा?"

"इसके न्यायसंगत होने में क्या संदेह है?"

"मैं तो कभी विश्वास नहीं कर सकती कि तुम ऐसे कानून को न्यायसंगत मानते हो। मैं समझती हूँ कि तुमने कभी ऐसे कानून के पक्ष में राय नहीं दी होगी।"

"मैंने तो इस कानून का बड़े जोरों से अनुमोदन किया है।"

"बड़ी लज्जा आती है कि तुमने भी ऐसे कानून के पक्ष में राय दी है। इससे बढ़कर घृणित और नीच कोई कानून हो ही नहीं सकता। मैं निश्चयपूर्वक कहती हूँ कि मैं इस कानून को कभी नहीं मानूँगी। देख लेना, कोई ऐसा अवसर मिला तो फिर मैं निश्चय ही इसका उल्लंघन करूँगी। ओफ, कैसा आश्चर्य है! कोई बेचारा दीन-दरिद्री मनुष्य, काला होने के कारण, गोरों के अत्याचार से दुःखी होकर भूख से मरता मेरे दरवाजे पर किसी दिन आ जाए और मैं उसे एक मुट्ठी अन्न न दे पाऊँ! मैं नहीं जानती कि किसी स्त्री का हृदय विधाता ने ऐसा पत्थर का बनाया है कि ऐसे विपदाग्रस्त मनुष्य को आश्रय देने से वह इनकार कर देगी!"

"मेरी, तुम मेरी बात सुनो। मैं खूब जानता हूँ कि तुम्हारा हृदय बड़ा कोमल है। दया और स्नेह से भरा है, पर कभी-कभी ऐसी दया और धर्म का फल उल्टा भी हो जाता है। सर्व-साधारण के हित के विचार से हमें कभी-कभी दया, माया और स्नेह-ममता को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ता है। आजकल जो राजनैतिक आंदोलन चल रहा है, इसमें किसी पर विशेष दया दिखलाने से मुँह मोड़े रहना बहुत जरूरी है। इसलिए इस कानून को न्याय-विरुद्ध नहीं कहा जा सकता।"

"जान, मैं तुम्हारे राजनैतिक आंदोलन को नहीं समझती। पर यह मुझसे छिपा नहीं है कि कौन-सी बात धर्म-विरुद्ध है और कौन-सी धर्म-संगत। मेरी समझ में दीनों पर दया दिखाना, भूखे को अन्न और प्यासे को पानी देना तथा दुखियों का दुःख दूर करना आदि मनुष्य के जीवन के प्रधान कर्तव्य हैं।"

"पर इन कर्तव्यों का पालन करने में यदि सर्वसाधारण का अहित होता हो, तब क्या



करोगी?" वार्ड साहब ने पूछा।

"मेरा अटल विश्वास है कि कर्तव्य-पालन से सर्व-साधारण का अहित कभी हो ही नहीं सकता।"

"मेरी, सुनो मैं तुम्हें अपने कथन की सच्चाई समझाए देता हूँ। यह बहुत सहज-सी बात है।"

"मैं खूब जानती हूँ कि तर्क मैं तुमसे कोई जीत नहीं सकता। तुम सारी रात तर्क में बिता सकते हो और सच को झूठ और झूठ को सच साबित कर सकते हो। पर इसे जाने दो। मैं तुमसे पूछती हूँ कि अभी तुम्हारे दरवाजे पर भागा हुआ निराश्रित दास आकर एक मुड़ी दाना माँगे, तो क्या तुम उसे भागा हुआ समझकर अपने दरवाजे से भगा दोगे? ऐसे आदमी पर क्या तुम्हें दया नहीं आएगी?"

वार्ड साहब बोले - "ऐसे आदमी को दरवाजे से भगा देना अवश्य ही बहुत खेदजनक है; पर कर्तव्य के लिए क्या नहीं करना पड़ता?"

"ऐसे निष्ठुर व्यवहार को क्या तुम कर्तव्य समझते हो? इसे कभी कर्तव्य नहीं कहा जा सकता। गुलामों पर लोग जोर-जुल्म करते हैं, उन्हें बहुत सताते हैं, इसी से वे भाग जाते हैं। उनपर अत्याचार न हों तो वे न भागें। दास-दासी रखनेवाले यदि उन्हें न सताएँ, तो फिर कानून की जरूरत ही न पड़े।"

"मेरी, सुनो मैं तुम्हें एक युक्ति से इस कानून की आवश्यकता को समझा दूँ।"

"मैं ऐसे निष्ठुर आचरण के संबंध में तुम्हारी युक्ति या दलीलें नहीं सुनना चाहती। मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि तुम लोगों जैसे कानूनी आदमी भाँति-भाँति के कुटिल तर्कों द्वारा सच को झूठ और झूठ को सच साबित कर सकते हैं।"

साहब और मेम में बातें हो रही थीं कि इतने में काजो नाम का एक नौकर वहाँ आया और बड़ी घबराहट से बोला - "मेम साहब, जरा नीचे आकर देखिए, कैसा भयानक दृश्य है।"

नीचे पहुँचते ही मेम ने जो देखा, उससे घबराकर वह बार-बार साहब को पुकारने लगी। साहब ने वहाँ जाकर देखा कि एक दुबली-सी स्त्री एक बच्चे को छाती से चिपटाए हुए उनके दरवाजे पर अचेत पड़ी है। उसके दोनों पैर बहुत छिले हुए हैं। उनसे लगातार खून बह रहा है। उसके कपड़े चिथड़े हो गए हैं। वार्ड साहब देखते ही समझ गए कि वह भागी हुई दासी है। उन्होंने ऐसी सुंदर दासी कभी नहीं देखी थी। उसकी सुंदरता और उसके सुख की सुदृढ़ता देखकर साहब के हृदय में करुणा का स्रोत बह चला। वह थोड़ी देर पहले की बातचीत को भूल गए। उस स्त्री को होश में लाने के लिए वह भाँति-भाँति के उपाय करने लगे। उन्होंने बेहोश स्त्री की छाती से बालक को उठाकर अपनी गोद में ले लिया था। होश में आते ही स्त्री ने अपने बच्चे को गोद

मैं न देखा तो "हेरी-हेरी!" कहकर चिल्लाने लगी। चिल्लाहट सुनते ही बालक काजो की गोद से अपनी माता की गोद में चला गया। तब वह कुछ शांत होकर वार्ड साहब की मेम से कहने लगी - "मुझे बचाइए! मुझे शरण दीजिए! दुश्मन के हाथ से मेरे बच्चे की रक्षा कीजिए!"

वार्ड साहब की मेम ने कहा - "बेटी, तू डर मत। यहाँ कोई तेरा कुछ न बिगाड़ सकेगा। तू यहाँ बेधड़क होकर रह।"

यह सुनकर उस रमणी ने कहा - "भगवान, आपका भला करें!"

फिर मेम ने रसोईघर के पास उसके विश्राम का प्रबंध कर देने की आज्ञा दी और दास-दासियों से उसकी सेवा-टहल करने के लिए कहकर आप भोजन करने घर में चली गई। वार्ड साहब उस स्त्री का दुःख देखकर पिघल गए थे। वे अपनी स्त्री से जाकर बोले - "कुछ समझ में नहीं आता कि यह स्त्री कहाँ से आई है। पर यह युवती बड़ी सुंदर है।"

मेम बोली - "अभी तो वह सोई है, उठने पर उससे उसका नाम-धाम पूछूँगी।"

कुछ देर रुककर वार्ड साहब ने फिर कहा - "प्यारी, जो कपड़ा वह पहने है, वह बहुत पुराना हो गया है। देखो तो, तुम्हारा कोई गाउन उसको आ सकता है या नहीं। वह तुमसे थोड़ी लंबी है।"

वार्ड साहब की स्त्री मन-ही-मन में हँसने लगी और सोचने लगी कि स्वामी की कानूनी विद्या धीरे-धीरे कमजोर पड़ रही है। पर प्रकट रूप में केवल इतना ही बोली - "अच्छा देखती हूँ।"

वार्ड साहब कुछ देर बाद फिर बोले - "प्यारी, वह स्त्री बहुत सर्दी खा गई जान पड़ती है। इसे कुछ ओढ़ने को भी देना चाहिए। मेरी पुरानी चादर इसे दे दो।"

इतने में ही दीना नामक दासी ने आकर कहा - "मेम साहब, वह स्त्री जाग गई है। आपसे कुछ कहना चाहती है।"

वार्ड साहब और उनकी मेम, तत्काल दोनों उस स्त्री के पास गए। मेम ने पूछा - "हम लोगों से तुम जो कुछ कहना चाहती हो, सो कहो। उस स्त्री के मुँह से बात नहीं निकलती थी। वह बार-बार लंबी साँसें ले रही थी और रो रही थी। तब वार्ड साहब की मेम उसे ढाढ़स देकर कहने लगी- बेटी, डरो मत। हम तुम्हारा कुछ भी अहित नहीं करेंगे। तुम साफ-साफ कहो कहाँ से आई हो और क्या चाहती हो?"

कुछ देर बाद स्त्री ने कहा - "मैं कैंटाकी से आ रही हूँ।" इस पर वार्ड साहब ने उससे जिरह-

सी आरंभ कर दी - "कैटाकी से तुम किस तारीख को चली थी?"

"आज ही रात को आई हूँ।"

"रात में कैसे आई?"

"बर्फ के टुकड़ों के सहारे चलकर।"

सब लोग अचरज में आकर कहने लगे - "बर्फ पर से कैसे आई?"

"परमात्मा ने ही मुझे पार लगाया। पकड़नेवालों ने मेरा पीछा कर रखा था। ऐसी दशा में नदी पार करने के सिवा मेरे बचने की और कोई सूरत न थी।"

वार्ड साहब का दास काजो बोला - "बाप-रे-बाप! कैसा अचरज है! गली हुई बर्फ टुकड़े होकर जल पर तैर रही थी, उसी पर से पार चली आई!"

आर्त स्वर में स्त्री बोली - "मैं जानती थी कि बर्फ गल रही है। मुझे मालूम था कि इस तरह बहती हुई बर्फ पर से किसी का जाना असंभव है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं नदी पार कर सकूँगी। मैं तो मौत का आलिंगन करने के लिए नदी में कूदी थी, पर ईश्वर की महिमा अपार है। मनुष्य उसे नहीं समझ सकता। मनुष्य नहीं जानता कि निर्बल के बल एकमात्र भगवान हैं। ईश्वर की महिमा से क्या नहीं हो सकता? मैं केवल उसी की महिमा से पार हुई।"

इतना कहकर आकाश की ओर इस तरह देखने लगी, मानो वह ईश्वर-दर्शन करने की प्रतीक्षा कर रही हो।

वार्ड साहब ने पूछा - "तू क्या किसी की खरीदी हुई दासी है?"

"हाँ, पर मेरे मालिक बड़े दयालु थे।"

"तो तेरी मालकिन तुझे बहुत सताती होंगी?"

"नहीं-नहीं, वह तो माता की भाँति मेरा दुलार करती थीं।"

"फिर तुमने ऐसे मालिक को छोड़कर ऐसी भयानक विपत्ति का रास्ता क्यों अपनाया?"

यह सुनकर स्त्री वार्ड साहब की मेम के मुँह की ओर आँसू भरी आँखों से देखने लगी और बोली - "मेम साहब, पुत्र-शोक कितना दुःखदायी होता है, यह आप अवश्य समझ सकती हैं। आपको क्या कभी पुत्र का वियोग सहना पड़ा है?"

इस प्रश्न से वार्ड साहब की मेम का हृदय एकदम विदीर्ण हो गया। वह अपने आँसू न रोक सकी। अभी एक महीना हुआ, उनका इकलौता बेटा उन्हें छोड़कर चला गया था। मेम को रोते देखकर काजो और दीना इत्यादि सभी आँसू बहाने लगे। वार्ड साहब बड़े कष्ट से आँसू रोककर हृदय के उमड़े हुए शोक के आवेग को छिपाने की चेष्टा करने लगे। वह ठहरे व्यवस्थापिका-सभा के सदस्य! आँसू बहाते देखकर कहीं लोग उन्हें निर्मल आत्मा न समझने लगे।

कुछ देर बाद मेम ने उससे पूछा - "तुमने मुझसे ऐसा सवाल क्यों किया? आज एक महीना हुआ होगा, मेरे हृदय का सर्वस्व हेनरी मुझे अनाथ करके चला गया।"

"तब आप मेरा दुःख समझ सकती हैं। एक-एक करके मेरी दो संतानें काल की भेंट हो चुकीं, अब यही एक बच्चा मेरे जीवन का आधार है। मैं पल भर के लिए भी इसे आँखों से ओट नहीं कर सकती। लेकिन मेरे मालिक ने इस दुध-मुँहे बच्चे को दास-व्यापारी के हाथ बेच दिया। वह निर्दयी इसे दक्षिण देश में ले जाने की तैयारी कर रहा था। यह दुध-मुँहा बच्चा माँ को छोड़कर कभी नहीं रह सकता। मैं इसे कैसे छोड़ दूँ? इसी से दास-व्यवसायी के चंगुल से बचाने के लिए मैं इसे लेकर भाग आई हूँ। किंतु मेरे भागने के बाद खरीदार ने, मेरे मालिक के दो दासों को साथ लेकर मेरा पीछा किया। ओहियो नदी के उस पार पकड़े जाने के डर से मैं प्राणों की ममता छोड़कर नदी में कूद पड़ी। नदी को पार कैसे किया, यह मुझे याद नहीं। बस, इतना ही ध्यान है कि इधर किनारे पर आते ही सिम नामक एक दास ने मेरा हाथ पकड़कर किनारे उठा लिया और उसी की सलाह से मैं इस घर में आई हूँ।"

"तब तुमने कैसे कहा कि तुम्हारे मालिक और मालकिन बड़े दयावान हैं? इस बालक को बेचकर उन्होंने तुम्हारे साथ बड़ी ही कठोरता का बर्ताव किया है।"

"मैं कभी कृतघ्न नहीं होऊँगी। जब तक जीती रहूँगी, कहूँगी कि मेरे मालिक और मालकिन बड़े दयालु हैं। उन्होंने किसी भी दास-दासी पर कभी बेरहमी नहीं दिखाई। मालिक ने दास-व्यवसायी के कर्ज में जकड़ जाने के कारण लाचार होकर मेरे बच्चे को बेचा।"

"क्या तुम्हारे पति नहीं हैं?"

"हाँ, हैं। पर वह दूसरे के दास हैं। उनका मालिक बड़ा कठोर है। उसके अत्याचार से मेरा पति बड़ा कष्ट पा रहा है। सुना है कि वह मेरे पति को दक्षिण में बेचनेवाला है। अब इस जीवन में उससे भेंट होती नहीं दिखाई देती।"

"तो अब तुम कहाँ जाना चाहती हो?"

"मैं कनाडा जाना चाहती हूँ। यहाँ से कनाडा कितनी दूर है?"

मेम साहब मन-ही-मन सोचने लगीं कि हाय, कैसी शोचनीय स्थिति है! यह कैसे कनाडा

पहुँचेगी? प्रकट रूप से बोलीं - "बेटी, कनाडा बड़ी दूर है। पर हमसे जहाँ तक हो सकेगा, तुम्हारी मदद करने का यत्न करेंगे। आज की रात यहीं रहो। कल जैसा होगा, देखा जाएगा!"

वार्ड साहब की मेम ने दीना को उसके सोने का प्रबंध करने का आदेश दिया और फिर अपने सोने के कमरे में चली गई। वहाँ पहुँचते ही वार्ड साहब बोले - "प्यारी, इस स्त्री के संबंध में अब क्या करना चाहिए? मैं बड़ी आफत में फँस गया हूँ। इस स्त्री की तलाश में कल खरीदार यहाँ अवश्य आएगा। मेरे यहाँ भगोड़ी दासी का निकलना बड़ी लज्जा का विषय होगा। व्यवस्थापिका-सभा का सदस्य होकर मैंने ही कल कानून बनाया कि भगोड़े दास-दासियों को जो कोई अपने यहाँ ठहरने देगा, उसे दंड मिलेगा और आज मैं ही उस कानून को तोड़ूँ! अच्छा होगा कि इस विषय में जो कुछ करना हो, आज रात ही को कर डाला जाए।"

"आज रात को क्या किया जा सकता है?"

मेम अच्छी तरह जानती थीं कि साहब का मन बड़ा दयालु है। वह अवश्य उस अनाथ के लिए कोई-न-कोई ठीक व्यवस्था कर देंगे। मन-ही-मन यह सोचकर वह चुप रह गई और साहब का कानून का पक्षपात स्मरण करके मंद-मंद मुस्कराने लगीं। कुछ देर बाद साहब बूट पहनकर खड़े हो गए और कहने लगे - "प्यारी, इसके संबंध में मैं जो कुछ करना चाहता हूँ, वह तुम्हें बताता हूँ। इसे किसी निरापद स्थान पर पहुँचा देना ठीक होगा। यहाँ से थोड़ी दूर पर वान ट्रांप नामक मेरा मुवक्किल है। पहले उसके यहाँ दास-दासियों का बड़ा जमघट था, पर समय के फेर से उसकी ऐसी कायापलट हुई कि नर-नारियों को गुलाम बनाकर रखना वह पाप समझने लगा। उसने अपने सारे दास-दासियों की भलाई के लिए और भी कई काम किए। आजकल उसने यहाँ से तीन-चार कोस की दूरी पर जमीन लेकर वहाँ भागे हुए दास-दासियों के लिए ऐसे घर बना दिए हैं, जिनमें ये शरण ले सकें। वह स्वयं भी वहीं रहता है। वहाँ पहुँचा आने से कठोर दास-व्यवसायी के चंगुल से यह अभागिनी स्त्री बच सकती है। पर मेरे अलावा किसी का रात को गाड़ी हाँककर इसे वहाँ पहुँचा आना संभव नहीं।"

"क्यों? काजो खूब गाड़ी हाँक सकता है। क्या वह नहीं पहुँचा आ सकता?"

"वहाँ का मार्ग बड़ा दुर्गम है, राह में दो बड़ी खाड़ियाँ पार करनी पड़ती हैं। काजो को उसे रास्ते का भी पता नहीं होगा। इससे मुझे स्वयं ही जाना पड़ेगा। काजो को 12 बजे गाड़ी तैयारकर रखने को कह दो। मैं स्वयं ही इसे पहुँचा आऊँगा और लौटती बार कोलंबस होता हुआ आऊँगा, जिससे लोग समझ लेंगे कि मैं वहीं किसी काम से गया था।"

"नाथ, दूसरों के दुःख से सदैव तुम्हारा हृदय पसीज जाता है। तुम्हारी यह सहृदयता ही तुम्हारे ज्ञान और विज्ञता की अपेक्षा लोगों के मन में तुम पर अधिक भक्ति और श्रद्धा उपजाती है। तुम जब-तब अपने को पहचानना भूल जाते हो, पर मैं तुम्हारे हृदय से खूब परिचित हूँ। तुम चाहे जिस खयाल से चाहे जैसा कानून क्यों न बनाओ, किंतु दूसरे कानूनबाजों की तरह तुम

आत्मा-विहीन होकर निष्ठुर काम में अपने को नहीं लगा सकते। यह मैं भली-भाँति जानती हूँ कि व्यवस्थापिका-सभा के सभी सदस्यों में मानवात्मा है।"

वार्ड साहब अपनी स्त्री के मुख से अपनी सहृदयता की प्रशंसा सुनते ही प्रेम से पुलकित हो गए। सोचा कि जिन्हें ऐसी स्त्री का सुख प्राप्त नहीं, उनका मनुष्य-जन्म वृथा है। यह सोचते-सोचते वे दरवाजे पर देखने के लिए आए कि गाड़ी तैयार हुई या नहीं। फिर मेम के पास जाकर बोले - "प्यारी, मुझे एक बात याद आई है। हेनरी के जो कुछ कपड़े हैं, उन्हें चाहो तो इस अनाथ बालक के लिए दे डालो।"

मेम ने अपने मृत पुत्र के कपड़े और खिलौने इत्यादि चीजों की एक गठरी बाँध दी। फिर रात को 12 बजे वार्ड साहब इलाइजा को लेकर गाड़ी पर चढ़ने लगे। उस समय वह गठरी इलाइजा के हाथ में दे दी। इलाइजा उस समय बार-बार मेम के प्रति अपनी हार्दिक भक्ति और कृतज्ञता-प्रकट करने की चेष्टा करने लगी, पर उसमें बोलने की शक्ति न थी। उसके हृदय की उस समय की अवस्था शब्दों द्वारा प्रकट नहीं की जा सकती। वह गाड़ी में चढ़ी हुई घूम-घूमकर मेम की ओर देखने लगी। उसकी आँखों में आँसू भर आए।

आज वार्ड साहब में भी विचित्र परिवर्तन हो गया था। कल उनकी वक्तृता से व्यवस्थापिका-सभा का भवन गूँजता था, कल उन्होंने अनेक बार इस बात को दहराया था कि सर्वसाधारण के हित की दृष्टि से प्रत्येक छोटे-बड़े का कर्तव्य है कि स्त्री-जाति की-सी सहृदयता को छोड़कर भागे हुए दास-दासियों को पकड़ा दे। कल उन्हें स्त्री-जाति मानव-हृदय की दुर्बलताओं की खान जान पड़ी थी; पर आज वही वार्ड साहब स्वयं उस दुर्बलता के शिकार बन बैठे! केवल अखबारों और रिपोर्टों में पढ़कर भगोड़ों की दुर्दशा का अनुमान नहीं हो सकता था। इसी से कल तक 'भगोड़ा' शब्द देखकर उनके हृदय में तनिक भी दया नहीं उपजती थी। पर आज सामने साक्षात् भगोड़े की दुर्दशा देखते ही उन्हें चक्कर आ गया, उन्हें सच्ची स्थिति का ज्ञान हो गया और जिस जाति की कमजोरी की उन्होंने निंदा की थी, उसी ने आज उनके मस्तिष्क को चकरा दिया। इससे मालूम होता है कि व्यवस्थापिका-सभा के सदस्यों में भी मानव आत्मा मौजूद है। उनमें भी मनुष्यत्व है। उन्हें सदैव समाचार-पत्रों और रिपोर्टों के सिवा देश की सच्ची दशा जानने का अवसर नहीं मिलता। अपनी आँखों से वे लोगों की दुर्दशा का दृश्य नहीं देखते, इसी से उनके कथन में और वास्तविक स्थिति में बहुत अंतर होता है और जान पड़ता है कि वे मनुष्यत्व-विहीन हैं।

वार्ड साहब ने कल जिस कानून को जारी किया था, उसका फल आज उनको ही भोगना पड़ा। घोर अँधेरी रात है। मूसलाधार वर्षा हो रही है। रास्ता कीचड़ से लथपथ है। घोड़ा इस रास्ते से गाड़ी को खींचकर आगे बढ़ने में असमर्थ है। व्यवस्थापिका-सभा के माननीय सदस्य अपने नौकर काजो के साथ गाड़ी से उतर पड़े। काजो ने घंटों घोड़े की लगाम पकड़कर आगे बढ़ाने की कोशिश की और वार्ड साहब ने पीछे से गाड़ी को ठेला, तब कहीं जाकर बड़ी कठिनाई से गाड़ी आगे बढ़ी और धीरे-धीरे उस आश्रम के पास पहुँची। घर का मालिक अभी सो रहा था। उसे बड़ी

मुश्किल से जगाया। थोड़ी देर में आँखें मलते हुए वह गाड़ी के पास आया और वार्ड साहब को देखकर नमस्कार करने के लिए हाथ उठाया। मकान-मालिक का नाम था - 'जान वान ट्रंप'। वह पहले कैंटाकी नगर में रहता था। उसके पास अनगिनत गुलाम थे, पर अर्थलोलुपता और स्वार्थपरता के कारण उसके हृदय के उत्तम और स्वाभाविक भावों का सर्वथा नाश नहीं होने पाया। उसके दिल में यह बात बैठ गई कि देश भर में प्रचलित गुलामी प्रथा और दासों को सताना, दास और मालिक दोनों की ही आत्मा को नीचे गिराता है। दासों की दुर्दशा पर विचार करते-करते उसका हृदय पसीज गया। फिर उसने तुरंत अपने सारे दास-दासियों को गुलामी की बेड़ी से मुक्त कर दिया। साथ ही उसे दासों के दुःख दूर करने की चिंता हुई। इस निर्जन भूमि में अनाथ दासों को शरण देने के लिए जो स्थान बना है, वह उसी चेष्टा का फल है।

वार्ड साहब ने जैसे ही उसे इलाइजा की दुरावस्था की बात सुनाई, उसने तुरंत इलाइजा को गाड़ी से उतारकर अपने घर की एक कोठरी में उसके रहने के लिए जगह कर दी। उसे ढाढ़स देकर वह कहने लगा - "बेटी, यहाँ तू ब्रेफिक्र होकर रहो। मजाल नहीं कि यहाँ से तूम्हें कोई पकड़ ले जाए। मेरे यहाँ बहुत आदमी हैं। यहाँ पकड़नेवालों की पैठ नहीं हो सकती।"

वान ट्रंप ने वार्ड साहब से वह रात वहीं बिताने का अनुरोध किया, पर वह राजी न हुए। उन्होंने पहले से ही कोलंबस होकर लौटने का निश्चय कर रखा था। लोगों के संदेह करने के डर से वह झटपट गाड़ी पर सवार हो गए। चलते समय इलाइजा की सहायता के लिए वान ट्रंप के हाथ में दस रुपए का एक नोट देते गए।

## 11. दारुण बिछोह

गोरे बनियों की अर्थ-लोलुपता के कारण अफ्रीकी उपनिवेशों के जो अभागे काले हब्शी अमरीका में ले जाकर दास बनाकर बेचे जाते थे, उनकी स्वभाव-प्रकृति से हम भारतवासियों की किसी-किसी विषय में बड़ी समानता है। भारतवासियों की भाँति इन अभागे क्रीत दास-दासियों में भी संतान-वात्सल्य, दांपत्य-प्रेम, पारिवारिक स्नेह और कृतज्ञता की मात्रा बहुत अधिक दिखाई पड़ती थी। परिवार से किसी एक व्यक्ति को पृथक् करके बेचने में इन्हें कैसा भयानक कष्ट होता था, इसे वज्र हृदय अर्थ-पिशाच गोरे बनिए क्या समझ सकते थे?

शेल्बी साहब ने टॉम को हेली के हाथ बेच तो डाला ही था, पर इलाइजा की खोज से हेली के लौटने तक, कम-से-कम दो तीन दिन, टॉम को अपने परिवार में रहने का सुअवसर मिल गया। जिस दिन हेली के साथ उसके जाने की बात थी उस दिन उसने बड़े तड़के उठकर अपने बाल-बच्चों और स्त्री के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, फिर उपासना के उपरांत अपने

सोए हुए बालकों के बिस्तर के पास खड़ा होकर वह एकटक उनकी ओर देखने लगा। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। कुछ देर बाद एक आह भरकर वह बोला - "जान पड़ता है, तुम लोगों से मेरी यही अंतिम भेंट है।" उसकी यह बात क्लोई के कान में जा पड़ी और उसका हृदय भर आया। उसने रोते हुए पति से कहा - "तुम मुझे ईश्वर पर भरोसा रखकर शोक न करने को कहते हो, पर मैं ईश्वर पर भरोसा नहीं रख सकती। मेरे मन में कितनी ही आशंकाएँ उठ रही हैं। न मालूम वह तुम्हें कहाँ-का-कहाँ ले जाएगा, और जब-तब कितना दुःख देगा। मेम दो-एक बरस में रुपए इकट्ठे करके तुम्हें फिर मोल लेने का प्रयत्न करेंगी, पर उतने ही दिनों में न जाने तुम पर कितनी आफतें आ सकती हैं। दक्षिण गए हूँ मैं बहुत थोड़े ही लौटकर आते हैं। दक्षिण के चाय के बगीचों और तंबाकू के खेतों में बेहद परिश्रम करके सैकड़ों दास-दासी असमय काल के गाल में चले जाते हैं। तुम्हीं कहो, यह सब जानते हुए मैं अपने हृदय के आवेग को कैसे रोक सकती हूँ।"

टॉम ने कहा - "दीनबन्धु भगवान सब जगह मौजूद है। वह मेरे साथ रहकर सदा मेरी खबर लेगा।"

"परमेश्वर के साथ रहते हुए भी तो समय-समय पर कितनी ही घोर विपदाएँ आ पड़ती हैं। इसी से परमेश्वर पर भरोसा रखकर मैं अपने मन को नहीं समझा सकती।" क्लोई ने रुंधे गले से कहा।

"हम सब मंगलमय ईश्वर के मंगल-शासन में हैं। उनकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। जिसे लोग विपदा समझते हैं, वही संपदा का मूल कारण है। देखो, मुझे बेचकर मालिक ने तुमको और बाल-बच्चों को बचाने की चेष्टा की। तुम लोग तो निरापद रहोगे। हम सब-के-सब जहाँ-तहाँ तीन-तेरह नहीं बिके, यही क्या कम सौभाग्य की बात है। मालिक ने केवल मुझे ही बेचा, इसके लिए मैं उनका बड़ा अनुगृहीत हूँ।"

"मुझे तो इसमें मालिक के अनुग्रह की कोई बात नहीं दीख पड़ती। तुम्हारे जैसे प्रभुभक्त और विश्वासी दास को बेचना कभी उचित नहीं कहा जा सकता। वह तुम्हारी प्रभुभक्ति से प्रसन्न होकर एक बार तुम्हें दासत्व से मुक्त कर देने का वचन दे चुके हैं, पर आज उसे भूलकर ऋण से छुटकारा पाने के लिए बेखटके तुम्हें बेच डाला! गोरी जाति दूसरे के दुःख का खयाल कभी नहीं करती। वह सदा अपने ही सुख में मस्त रहती है। जो मनुष्य स्त्री को पति-हीन और बालकों को पितृ-हीन करता है उसका विचार ईश्वर के यहाँ अवश्य होगा।"

"क्लोई मालिक के बारे में ऐसी बातें मुँह से न निकालो। इससे मेरे हृदय को बड़ी वेदना होती है। मेरे साथ यही तुम्हारी अंतिम भेंट है। इस समय मेरे सम्मुख ऐसी बातें मत कहो। दूसरे दासों के मालिकों से हमारे मालिक कहीं अच्छे हैं। वह दास-दासियों को कभी व्यर्थ तंग नहीं करते। वह किसी को बेंत नहीं मारते। किसी की विवाहिता स्त्री को कभी रखैल बनाकर उसका धर्म नहीं बिगाड़ते। इसी लिए ईश्वर के सामने ऐसे मालिक के कल्याण के लिए प्रार्थना करना



अपना कर्तव्य है। इसी कैंटाकी में देख लो; सैकड़ों लोगों के असंख्य दास-दासियाँ हैं। जरा उनकी दुःख-दायक घोर यंत्रणा से अपना मिलान तो करो।"

क्लोई फिर कुछ नहीं बोली। मन-ही-मन वह सोचने लगी कि आज सदा के लिए उसके स्वामी का सुख-सूर्य अस्त हो जाएगा। अब ऐसी एक भी संध्या आने की आशा नहीं, जब उसको अच्छा भोजन मिलेगा। इसी से क्लोई ने अपने स्वामी के भोजन के निमित्त भाँति-भाँति की चीजें बनाई और तैयार हो जाने पर बड़े प्रेम से उसको खिलाई। भोजन कर चुकने पर टॉम ने अपनी दो बरस की छोटी कन्या को गोद में उठा लिया और बार-बार उसका मुँह चूमने लगा। क्लोई उस बालिका का हाथ पकड़कर कहने लगी - "न जाने कब इसको भी माँ की गोद छोड़कर अलग हो जाना पड़ेगा। दास-दासियों की संतान होना केवल एक खेल ही है।" क्लोई की बातें समाप्त न होने पाई थीं कि शेल्वी साहब की मेम वहाँ आ पहुँची। टॉम और क्लोई को आँसू बहाते देखकर उनकी भी आँखें डबडबा आईं। ज्यों-त्यों धीरज रखकर वह कहने लगी - "टॉम, मैं चाहती थी कि तुम्हें कुछ रुपए दूँ। पर विचार कर देखा कि उससे तुम्हारा कोई फायदा न होगा। तुम्हारे पास जो कुछ होगा, उसे वह अर्थ-पिशाच दास-व्यवसायी हेली कभी हड़प लिए बिना न छोड़ेगा। टॉम, तुमसे मैं अब क्या कहूँ! मैं कुछ भी कहने के योग्य नहीं। पर मैं तुमसे इतनी प्रतिज्ञा अवश्य करती हूँ कि रुपए ज़ड़ते ही मैं तुम्हें तत्काल छुड़ा लूँगी। जब तक रुपया इकट्ठा नहीं होता, तब तक अपने को ईश्वर के हाथों में सौंपकर धीरज रखना!"

इसी समय वहाँ हेली आ पहुँचा। आते ही टॉम से बोला - "चलो बच्चू, और देर करने की जरूरत नहीं।"

टॉम यह सुनते ही उसके पीछे जाकर गाड़ी पर सवार हो गया। क्लोई इत्यादि घर के सब दास-दासी उस गाड़ी के पास जमकर खड़े हो गए। हेली ने टॉम को गाड़ी में बैठाकर लोहे की जंजीर से उसके दोनों पैर कस दिए। यह देखकर सब दास-दासियों के हृदय को बड़ी भारी चोट लगी। वे सब मन-ही-मन हेली को गालियाँ देने लगे। उन लोगों की टॉम पर बड़ी श्रद्धा और भक्ति थी, उसे वे अंतःकरण से प्यार करते थे। इससे टॉम को लोहे की सांकल से बाँधे जाते देखकर वे बार-बार लंबी साँसें भरने लगे। टॉम के दो बड़े लड़के भी पिता की यह दशा देखकर चिल्लाने लगे। तब शेल्वी साहब की मेम ने हेली से कहा - "महाशय, टॉम भागनेवाला आदमी नहीं है। इसे आप नाहक बाँध रहे हैं। इसके बंधन खोल दीजिए।" हेली ने उत्तर दिया - "मेम साहब, बस, अब आप माफ कीजिए। आपके यहाँ सौदा करके मैं पाँच सौ रुपया दंड भुगत चुका हूँ। अब मैं इसे ढीला नहीं छोड़ने का!"

इतना कहकर उसने गाड़ी हाँकने की आज्ञा दी। जाते-जाते टॉम ने कहा - "मेम साहब, मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि चलते समय मास्टर जार्ज से भेंट नहीं हुई।"

टॉम के बिकने की बातचीत प्रकट होने के पहले ही जार्ज कुछ दिनों के लिए किसी आत्मीय के यहाँ चला गया था। टॉम के बिकने के संबंध में अभी तक उसे कुछ पता न था। टॉम को ले

जाने के समय शेल्वी साहब ने पहले ही वहाँ न रहने का निश्चय कर लिया था और तदनुसार वे कहीं दूसरी जगह चले गए थे। टॉम को साथ लेकर हेली पहले एक लोहार की दुकान पर आया। वहाँ जेब से दो हथकड़ियाँ निकालकर लोहार से बोला कि इसके हाथ में पहना दो। टॉम को देखते ही लोहार चौंककर बोला - "ऐं, यह तो शेल्वी साहब का टॉम है! क्या इसे बेच डाला? भला ऐसे स्वामिभक्त दास को भी क्या कोई बेचता है!" फिर हेली से बोला - "साहब, आप अपनी हथकड़ी अपने हाथों में ही रखिए, इसे डालने की आवश्यकता नहीं। मैं इसे खूब जानता हूँ। यह बड़ा ईमानदार आदमी है।"

हेली बोला - "ज्यादा ईमानदार ही धोखा देते हैं। तुम अपनी बातें रहने दो। इसे हथकड़ियाँ पहना दो।"

लोहार ने पूछा - "टॉम, अपनी स्त्री को छोड़ चला क्या?"

उसके उत्तर में हेली ने कहा - "जहाँ यह बिकेगा, वहाँ क्या और दासियाँ नहीं मिलेंगी? इन लोगों को औरतों की क्या कमी है? दक्षिण देश में पैर रखते ही एक-न-एक को तुरंत पटा लेगा।"

हेली से जब लोहार की ये बातें हो रही थीं, उसी समय बड़े वेग से एक घोड़ा दौड़ाता हुआ और एक तेरह वर्ष का लड़का वहाँ आया। वह घोड़े से उतरकर एकदम टॉम के गले से लिपट गया। टॉम उसे गोद में लेकर कहने लगा - "मास्टर जार्ज, मुझे बड़ा आनंद हुआ कि जाते समय तुमसे भेंट हो गई।"

टॉम के पैर लोहे की जंजीर से बँधे देखकर जार्ज की आँखें लाल हो गईं। वह क्रुद्ध होकर बोला - "मैं अभी बदमाश हेली का सिर फोड़ता हूँ।"

टॉम ने उसे मना करके कहा - "अब तुम हेली के साथ झगड़ोगे तो वह मुझे और सताएगा। इसलिए तुम कुछ मत बोलो।"

यह सुनकर जार्ज सिर झुकाकर चुप रह गया, लेकिन उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। कुछ देर बाद शांत होकर जार्ज कहने लगा - "कैसी लज्जा का विषय है... कितनी कठोरता का व्यवहार है! बाबा ने तुम्हारे बेचने की बात मुझसे एक बार भी नहीं कही, यदि मेरा साथी लिंकन मुझसे तुम्हारे विक्रय की बात न करता, तो मुझे कुछ भी पता न चलता। मेरा जी चाहता है कि मैं अपना घर-द्वार सब फूँक दूँ। यह कष्ट तो सहा नहीं जाता।"

टॉम ने कहा - "जार्ज, ऐसी बात मत कहो। अपने पिता के विषय में तुम्हें ऐसी बात कहना उचित नहीं।"

टॉम के लिए जार्ज एक मोहर साथ लाया था, किंतु टॉम ने मोहर लेने से इनकार करके

कहा - "जार्ज, यह मोहर मेरे किस काम आएगी? हेली साहब देखते ही ले लेंगे।"

जार्ज ने कहा - "मैंने इसे हेली के हाथ से बचाने का उपाय सोच लिया है। इसमें डोरा डालकर तुम्हारे गले में बाँध देने से यह हेली की नजर से बची रहेगी। तुम्हारे कपड़ों के नीचे छिपी रहेगी।" इतना कहकर जार्ज ने मोहर तागे में पिरोकर टॉम के गले में लटका दी। टॉम बड़े स्नेह से जार्ज को उपदेश देने लगा और बोला - "बच्चा जार्ज, सदा ध्यान से अपनी माता के सद्विचार और सदाचार पर चलना। परमात्मा संसार में सारी चीजें दो बार दे सकते हैं, पर 'माँ' दुबारा नहीं मिलती। इस प्रदेश में दया-धर्म और सद्गुणों से भूषित कोई दूसरी स्त्री तुम्हारी माँ के समान नहीं है। ऐसी स्नेहमयी जननी संसार में दुर्लभ है। तुम कभी अपने मन-वचन-कार्य द्वारा उनके हृदय को मत दुखाना। देखना, उनके आदर-सत्कार में कभी त्रुटि न करना, उनकी आज्ञा का उल्लंघन न होने पाए। मनुष्य का स्वभाव है कि युवावस्था में उसका मन पाप की ओर ढलता है। लेकिन सत्संग मनुष्य को उससे हटाकर सत्य-पथ की ओर ले जाता है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि अपनी माता के आदर्श चरित्र और सत्कर्मों के प्रभाव से तुम एक बड़े पवित्र, साधु-प्रकृति मनुष्य बन सकोगे। बचपन में ईश्वर की भक्ति करना सीखोगे तो निर्विघ्न संसार में आगे बढ़ते जाओगे।"

जार्ज ने टॉम का उपदेश सुनकर कहा - "टॉम काका, तुम मुझे सदा सद्उपदेश देते रहे हो। तुम्हारे आज के उपदेश का मैं तन-मन से पालन करूँगा और सदैव सन्मार्ग पर चलने की चेष्टा करूँगा। जब मैं बड़ा होकर स्वयं काम-काज करूँगा, तब तुम्हारे रहने के लिए एक अच्छा घर बनवा दूँगा। वृद्धावस्था में तुम उसमें भले आदमियों की भाँति रहना। फिर तुम्हें गुलामी का दुःख नहीं भोगना पड़ेगा।"

जार्ज की बात समाप्त होने के पहले ही हेली हथकड़ी लेकर गाड़ी के पास आया। उसने टॉम के हाथों में हथकड़ी डाल दी। इस पर जार्ज ने कहा - "हेली, तुमने टॉम को बेड़ी और हथकड़ी से जकड़ दिया है, यह बात मैं अभी जाकर पिता और माता से कहूँगा।"

"जाओ, कह दो, हमारा उससे क्या बनता-बिगड़ता है?"

जार्ज ने फिर कहा - "हेली, क्या तुम जन्म-भर यही नीच काम करते रहोगे? क्या सदा तुम नर-नारियों का क्रय-विक्रय करोगे और कैदियों की भाँति उन्हें हथकड़ी-बेड़ी से जकड़कर यंत्रणा देते रहोगे? क्या तुम्हें इस व्यवसाय को करने में जरा भी शर्म नहीं आती?"

हेली बोला - "तुम लोगों जैसे अमीर आदमी जब तक दास-दासी खरीदना नहीं छोड़ेंगे, तबतक हम लोगों का यह पेशा बंद नहीं होगा। तुम लोग खरीद सकते हो तो फिर हम लोग बेच क्यों नहीं सकते? जो खरीदें वे तो बड़े अच्छे, बड़े धर्मात्मा रहे... उनका तो कोई कसूर ही नहीं... और सारा दोष हम बेचनेवालों के सिर!"

जार्ज ने कहा - "ईश्वर से यही मनाता हूँ कि मुझे यह दास-दासियों के लेने-बेचने का नीच

काम न करना पड़े!"

इतना कहकर जार्ज चला गया। हेली ने भी टॉम को साथ लेकर गाड़ी हाँकने का हुक्म दिया। जार्ज जिस मार्ग से जा रहा था, उसी ओर टॉम की टकटकी लगी थी। वह मन-ही-मन कहने लगा - "ईश्वर इस बालक को चिरंजीवी करें। केंटाकी प्रदेश में इसके समान उच्च हृदयवाले थोड़े ही लोग निकलेंगे।"

थोड़ी दूर आगे जाकर हेली ने टॉम का बंधन खोल दिया और उससे कहा - "देखो, भागने की कोशिश नहीं करोगे तो अब तुम्हें हथकड़ी नहीं पहनाएँगे।" टॉम ने कहा - "मैं कभी नहीं भागूँगा।"

## 12. दास की रामकहानी

दिन ढल चुका है। आकाश मेघाच्छन्न है। थोड़ी बूँदा-बाँदी हो रही है। बटोही संध्या का आगमन देखकर होटलों में आश्रय लेने लगे। एक होटल केंटाकी प्रदेश के सदर रास्ते के बहुत निकट था। यहाँ सदैव लोगों का आना-जाना बना रहता था। इस होटल के सामने की कोठरियाँ औरों की निस्बत अधिक गंदी थीं। बड़े आदमियों के नौकर-चाकरों तथा मजदूरों से ही ये कोठरियाँ भरी हुई थीं। पीछे की ओर की कोठरी में राह की थकावट मिटाने के लिए दो आदमी बैठे हुए हैं। उनमें एक का नाम विलसन है। विलसन ने जवानी बिताकर बुढ़ापे में पैर रखा है। इसी से उसमें जवानी का जोश नहीं है। अधिक जाड़े के कारण वह सिक्ड़ गया है। दूसरे आदमी में उतनी भलमनसाहत नहीं है और न उतना पढ़ा-लिखा है। वह भेड़ें चराकर अपनी जिंदगी बिताता है। थोड़ी ही देर बाद भेड़वाले ने इस प्रकार बातचीत का सिलसिला शुरू किया:

"आपने यह विज्ञापन देखा है?"

विलसन ने कहा - "कैसा विज्ञापन?"

भेड़वाला बोला - "यह देखिए!"

इतना कहकर उसने विलसन के हाथ में एक छपा हुआ विज्ञापन दे दिया। विलसन चश्मा लगाकर उस विज्ञापन को पढ़ने लगा -

"कुछ दिन हुए, मेरा जार्ज नामक एक दास भाग गया है। कद में साढ़े तीन हाथ लंबा और

रंग में गोरा है। अंग्रेजी खूब अच्छी बोलता है और समझ लेता है। उसके पेट और गले में बेंतों की मार के निशान हैं। उसके बाएँ हाथ की कलाई पर लोहे की दहकती हुई छड़ से दागकर 'एच' का निशान कर दिया गया है। जो कोई उसे पकड़वा देगा उसे 400 रुपया इनाम दिया जाएगा। यदि कोई उसे जीता न पकड़ पाए तो मारकर कम-से-कम उसकी लाश हमारे यहाँ पहुँचाने से भी इतना ही इनाम मिलेगा।"

यह विज्ञापन पढ़कर विलसन कहने लगा - "इस विज्ञापन में उल्लिखित गुलाम को मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ। वह छह साल तक मेरी अधीनता में काम कर चुका है। उसकी तीव्र बुद्धि, भलमनसी और सुशीलता देखकर मैं उस पर बहुत प्रसन्न था। उस आदमी ने पाट साफ करने के लिए अपनी अकल से एक बड़ी अच्छी कल बनाई थी। उसकी बनाई हुई कल का बड़ा आदर हुआ। आज वह प्रायः सर्वत्र काम में लाई जाती है। कल बनाने का ठेका उसके मालिक को मिला हुआ है और इससे वह मालामाल हो गया है।"

यह सुनकर भेड़वाला अचंभे में आ गया। बोला - "साहब, देखिए, उसमें इतने गुण और यह अन्याय! आप लोगों की चाल-ढाल भी बड़ी अजीब है। आप लोग अपने गुलामों को जितना दुःख देते हैं, उतना तो मैं भेड़ों को भी नहीं देता। ओफ, आप लोगों के बड़े घरों की स्त्रियाँ अपने दास-दासियों की संतानों पर जरा भी दया नहीं दिखातीं। आप कहते हैं कि विज्ञापन में जिस गुलाम का जिक्र है वह बड़ा बुद्धिमान है। उसने अपनी अकल से एक कल बना डाली है। लेकिन इस तीव्र बुद्धि का उसे क्या फल मिला? कल के बनाने का ठेका मालिक को मिला और उसके सद्गुणों के बदले में मालिक ने लोहे की छड़ से उसका हाथ दाग दिया! वाह री भलमनसी!"

वहीं एक तीसरा आदमी और बैठा था। वह कहने लगा - "इसमें बेजा क्या किया! गुलाम पर मालिक का अधिकार है, उसके साथ चाहे जैसा व्यवहार करे। गुलाम मालिक की मर्जी के मुताबिक चलें तो क्यों मारे जाएँ, पर गोरे दास सहज में दुरुस्त नहीं होते!"

इस आदमी की बात समाप्त नहीं होने पाई थी कि होटल के दरवाजे पर एक गाड़ी आ लगी। उसमें से बहुत बढ़िया कपड़े पहने हुए एक गोरा नवयुवक उतरकर होटल में आया। विलसन आदि जहाँ बातें कर रहे थे, वहाँ पर वह पहुँच गया। उसने घर के दरवाजे पर चिपका हुआ वह विज्ञापन देखकर अपने दास से कहा - "जिम, कल उस होटल में जिस आदमी को देखा था, वही इस विज्ञापनवाला गुलाम जान पड़ता है।"

जिम बोला - "जी हाँ। उसे पकड़ लेता तो इनाम मिलता। पर इस विज्ञापन का हाल ही नहीं मालूम था।" फिर नवागंतुक युवक ने होटल के मालिक को अपना नाम हेनरी बटलर बताया और रात भर ठहरने के लिए एक अलग कमरे का प्रबंध कर देने को कहा। होटलवाला उधर अलग कमरे का प्रबंध करने चला गया, इधर विलसन साहब उस व्यक्ति के चेहरे को बार-बार घूरकर सोचने लगे कि मैंने इसे कहीं-न-कहीं देखा है। यह परिचित-सा जान पड़ता है।

विलसन के मन की बात को युवक ताड़ गया और उसके पास जाकर बोला - "साहब कहिए, पहचानते हैं? मैं बेक लैंग ग्राम का रहनेवाला बटलर हूँ।"

विलसन कुछ निश्चय न कर सका कि उसकी बात का क्या उत्तर दे, पर सभ्यता के लिहाज से बोला - "पहचानता हूँ।"

फिर बटलर उसका हाथ पकड़कर एकांत कमरे में ले गया। कमरे के किवाड़ भीतर से बंद कर लिए और वह विलसन के मुँह की ओर ताकने लगा। कुछ देर बाद विलसन बोला - "जार्ज!"

बटलर - "जी हाँ।"

विलसन - "मुझे संदेह तक नहीं हुआ कि तुम ऐसे गुप्त वेश में आए हो।"

बटलर - "अच्छा कहिए, विज्ञापन पढ़कर मुझे कोई मेरे इस वेश में पहचान सकता है?"

विलसन - "जार्ज, तुमने बड़े ही भयंकर मार्ग पर पैर रखा है। मैं तुम्हें कभी ऐसा करने की सलाह न देता।"

बटलर - "इसके सिवा और कोई चारा ही नहीं है।"

विलसन - "तुम्हारे इस प्रकार भागने पर मुझे बड़ा दुःख हुआ।"

बटलर - "मैं तो तुम्हारे दुःख का कोई कारण नहीं देखता।"

विलसन - "क्यों, क्या तुम नहीं जानते कि तुम अपने देश में प्रचलित कानून के विरुद्ध जा रहे हो?"

बटलर - "मेरा देश? कहाँ है मेरा देश? क्या इस पृथ्वी पर कोई ऐसा स्थान भी है, जिसे मैं अपना देश कह सकूँ? मेरा देश कब्रिस्तान है। जहाँ मुझे समाधि मिलेगी, वही मेरा देश है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह शीघ्र ही मुझे उस देश में पहुँचा दे।"

विलसन - "राम-राम, जार्ज, मुँह से ऐसी बात निकालना बाइबिल के विरुद्ध है। मैं इससे इनकार नहीं करता कि तुम्हारा मालिक बड़ा अत्याचारी है, पर बाइबिल की आज्ञा को मानो तो दास-दासियों को मालिक के वशीभूत होकर रहना पड़ेगा।"

बटलर - "विलसन, दासत्व-प्रथा के समर्थन में बाइबिल या अन्य किसी धर्मशास्त्र की दुहाई मत दो। यदि गुलामी की प्रथा जैसी घृणित प्रथा भी बाइबिल के मत से ठीक है तो लानत है उस बाइबिल पर। मैं उसे हजार बार पैरों से रौंद दूँगा। ऐसी बाइबिल का नाम संसार से जितनी जल्दी मिट जाए, उतना ही अच्छा है। मैं सर्व-शक्तिमान परमात्मा से पूछता हूँ कि अपनी

स्वाधीनता की रक्षा के लिए और अत्याचार से अपना निस्तार करने के लिए भागना क्या धर्म-विरुद्ध है? मुझे विश्वास है कि मेरा यह कार्य ईश्वर की दृष्टि में कभी धर्म-विरुद्ध न होगा।"

विलसन - "तुम पर जैसे घोर अत्याचार हुए हैं उनसे तुम्हारा यों जोश में आ जाना, तुम्हारे मन में ऐसे भावों का उठना स्वाभाविक है, पर फिर भी मैं तुम्हारे इस कार्य को धर्मानुकूल नहीं कह सकता। क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि ईसाई धर्म में महात्माओं ने मनुष्य को अपनी भली-बुरी चाहे जैसी स्थिति हो, उसी में संतुष्ट रहने का उपदेश दिया है? हम सबको अपनी स्थिति में संतुष्ट रहना चाहिए।"

बटलर - "ठीक है, मैं भी यदि तुम्हारी भाँति स्वाधीन होता तो अपनी स्थिति में ही संतुष्ट रहता। मनुष्य धनी हो अथवा दरिद्र, यदि प्रकृति के दिए हुए मनुष्य के स्वाभाविक अधिकार उससे कोई न छीने तो वह ईश्वर पर भरोसा करके संतोष कर सकता है। पर मनुष्य को प्रकृति तो मनुष्य की दी जाए और उसे जीवन बिताना पड़े पशुओं का-सा, और मनुष्य के स्वाभाविक अधिकारों से उसे सर्वथा वंचित रखा जाए, तो ऐसी दशा में सृष्टिकर्ता की करुणा में उसे अवश्य ही संशय होने लगेगा। तुम लोगों को शर्म नहीं आती कि प्रमाण देकर गुलामों को संतुष्ट रहने की सीख देते हो! तुम्हारे स्त्री-पुत्रों को तुमसे छीनकर यदि कोई जहाँ-तहाँ बेच डाले तो क्या फिर भी तुम संतुष्ट बने रहोगे?"

'बटलर' नामधारी छद्मवेशी जार्ज की ऐसी बातें सुनकर विलसन एकदम अचंभे में आ गया। उसके मुँह से बात न निकली। थोड़ी देर बाद कहने लगा - "जार्ज, मैंने सदैव तुम्हारे साथ मित्र-जैसा व्यवहार किया है। तुम्हें विपत्ति से बचाने की चेष्टा की है। पर अब मैं देखता हूँ कि तुम विपत्ति के घोर समुद्र में कूद रहे हो। पकड़े गए तो फिर तुम्हारे बचने की क्या सूरत है? तब तो इससे भी अधिक दुर्दशा में पड़ोगे। ताज्जुब नहीं कि तुम्हारा मालिक तुम्हें जान से भी मार डाले।"

जार्ज - "विलसन, यह मैं खूब जानता हूँ। पर पकड़े जाने पर मेरे छुटकारे का उपाय मेरी जेब में है।"

यह कहकर उसने जेब से पिस्तौल निकालकर कहा - "यदि पकड़ा गया तो इसी पिस्तौल से तुम लोगों के इस कैंटाकी प्रदेश में साढ़े तीन हाथ जगह लेकर दासत्व-शृंखला से इस शरीर को मुक्त करूँगा।"

विलसन - "जार्ज, तुम तो बिल्कुल पागल हो गए हो। ओफ! कैसी भयंकर बातें कर रहे हो। तुम आत्महत्या करना चाहते हो? तुम अपने देशीय कानून के विरुद्ध काम करने पर तूले हुए हो।"

जार्ज - "फिर तुम मेरे देश का नाम लेते हो? कहाँ है मेरा देश? यह तो तुम्हारा देश है। क्रीत दासी के गर्भ से उत्पन्न मेरे जैसे मनुष्यों के लिए क्या कहीं स्वदेश है? हम लोगों के लिए

न कहीं अपना देश है न अपना घर है। हम लोगों का अपनी स्त्री पर भी कोई अधिकार नहीं है। यहीं तक नहीं, हमारे शरीर पर भी हमारा अधिकार नहीं है। बिना अपराध के मालिक हमें हजार बार पीट सकता है, पर ऐसा कोई कानून नहीं जो हम लोगों के शरीर की रक्षा कर सके। देश में जितने कानून हैं, सभी हम लोगों के नाश के लिए हैं। ये सब कानून हम लोगों के बनाए हुए नहीं हैं और न उनके बनाने में हम लोगों की राय ही ली गई है। फिर ऐसे कानून के विरुद्ध चलने से क्या कोई कभी धर्म-भ्रष्ट होता है? विलसन, मुझे बिल्कुल गँवार मत समझो। चौथी जुलाई का भाषण मुझे खूब याद है। तुम्हारे कानून-विधाता साल में एक बार कहा करते हैं न कि प्रजा की सम्मति के बिना राजा या शासनकर्ता कोई कानून नहीं बना सकते। पर तुम्हीं बताओ, यहाँ जितने कानून प्रचलित हैं उनमें किसी कानून के बनने या प्रचार करने के पहले क्या कभी उसके विषय में हम लोगों का मत लिया गया है? जिस कानून के बनाने में हम लोगों का मत नहीं लिया गया, उस कानून को मानने के लिए भी मैं कभी मजबूर नहीं। विलसन, मेरी जो दुर्दशा हो चुकी है, उन सबका तुम्हें पता नहीं है, इसी से तुम ऐसा कहते हो। जन्म से आज तक मैंने कैसे दुःख झेले हैं, इसका वर्णन करना असंभव है। तुम्हारे इस कैंटाकी प्रदेश के एक रईस अंग्रेज के वीर्य से मेरा जन्म हुआ था। मेरी माता उस गोरे की क्रीत दासी थी। क्रमशः उसके सात बच्चे हुए। मैं उनमें सबसे छोटा हूँ। मेरी छह बरस की उम्र में उस पाषाण हृदय गोरे की मृत्यु हो गई। उसका कर्ज अदा करने के लिए उसके घर की और सब चीजों के साथ-साथ हम लोगों की भी नीलामी हुई। एक-एक करके मेरे छह भाई-बहनों को भिन्न-भिन्न लोगों ने खरीदा। इसके बाद माता मुझे छाती से चिपटाकर रोते-रोते मेरे वर्तमान मालिक से बोली, 'महाशय, मुझे और इस बालक को एक साथ खरीद लीजिए। मेरी छाती से इस अबोध बालक को अलग न कीजिए।' वह नर-पिशाच भला क्यों मानता! उसने बारंबार मेरी माता को ठोकरों से पीछे हटाकर उसकी छाती से मुझे छीन लिया, और तुरंत मुझे बाँधकर अपने घर की ओर ले गया। मैं एक बार आँख उठाकर माता की ओर देखने भी न पाया। दो-तीन बार केवल उसके आर्त-नाद के शब्द मेरे कानों में पड़े। इसके कई दिनों बाद मेरा मालिक मेरी बड़ी बहन को उस व्यक्ति से, जिसने उसे नीलामी में खरीदा था, मोल ले आया। इस बात से पहले मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। सोचने लगा कि बड़ी बहन के साथ रहकर माँ के वियोग का शोक कुछ हल्का पड़ पड़ जाएगा। पर शीघ्र ही मेरी वह आशा बेकार सिद्ध हुई। बड़ी बहन मेरी माता की भाँति बहू ही सुंदर थी। धर्म-अधर्म का उसे बड़ा खयाल था। मेरा मालिक उसे उपपत्नी बनाने की बहूत चेष्टा करने लगा। पर वह किसी तरह धर्म छोड़ने को राजी न हुई। इससे मालिक को बड़ा क्रोध आता और वह उसे रोज बेंतों से खूब पीटता। एक दिन उसकी मार देखकर मैं शोक और दुःख से अधीर हो गया। अंत में मेरे मालिक ने जब देख लिया कि मेरी बहन जान निकल जाने पर भी धर्म नहीं छोड़ेगी तो उसे किसी दक्षिण-देशीय अंग्रेज-बनिए के हाथ बेच डाला। पर अब वह कहाँ है, जीती है या मर गई, मुझे मालूम नहीं। इस जन्म में फिर उससे भेंट होने की आशा नहीं। इसके बाद मैं अकेला उस कठोर-हृदय मालिक के यहाँ रहने लगा, कभी-कभी मुझे भूखे ही दिन काटने पड़ते। कभी-कभी उसकी खाकर बाहर फेंकी हुई हड्डियों को भूख मिटाने के लिए चूसता था, पर मैं भोजन या और किसी शारीरिक कष्ट की परवा न करता था।"



"मैं दिन-रात माता और भाई-बहनों के शोक में पागल हुआ रहता था। ध्यान आता था कि मुझे प्यार करनेवाला, मुझपर दया करनेवाला, मुझसे मीठा बोलनेवाला अब इस संसार में कोई नहीं। बचपन में मेरी माता कहा करती थी कि विपत्ति में ईश्वर का स्मरण करने से वह सब दुःख दूर कर देता है। माता की वह बात याद करके कभी-कभी ईश्वर को पुकारता था। इससे मन में कुछ आशा का संचार होने से जीता रहा। कुछ दिनों बाद मालिक ने मुझे तुम्हारे कारखाने में लगा दिया। तुम्हारे यहाँ ही पहले-पहल इस जन्म में मैंने दया और स्नेह का अनुभव किया। तुम्हीं ने पहले मेरे लिखने-पढ़ने का सुभीता कर दिया था, और तुम्हारे कारखाने में रहते समय ही शेल्वी साहब की दासी इलाइजा से मेरा विवाह हुआ था। क्रीत दासी होने पर भी इलाइजा का हृदय स्वच्छ और धर्म-पूर्ण था। उसके उस अकृत्रिम और अकपट प्रणय ने मुझमें फिर जान डाल दी। उसके सहवास से माता और बहनों का शोक कुछ-कुछ हल्का होता गया। पर जब तक यह देश में फैला घृणित कानून दूर न हो, तब तक क्रीत-दासों को सुख की संभावना कहाँ! मेरे निर्दयी मालिक से मेरा यह सुखी जीवन नहीं देखा गया। वह द्वेष की अग्नि से जल उठा और इलाइजा को छोड़कर उसने मुझे अपने घर की, अपनी पुरानी उपपत्नी, मीना नाम की क्रीत दासी से विवाह करने की आज्ञा दी। भला मैं इलाइजा को छोड़कर मीना से कैसे विवाह करता! क्या यह काम धर्म या बाइबिल के मत के अनुकूल है? धिक्कार है तुम्हारे ईसाई धर्म को! धिक्कार है तुम्हारी बाइबिल को! और सौ-सौ धिक्कार हैं तुम्हारे देश में प्रचलित कानून को! इस घृणित कानून की आड़ में नित्य लाखों मनुष्यों का नाश हो रहा है और तुम मुझे इसी घृणित कानून का पालन करने को समझाते हो। यदि सचमुच ही इस संसार की रचना करनेवाला कोई न्यायी मंगलमय ईश्वर है तो इस घृणित कानून के विपरीत चलकर मैं उसका प्रिय कार्य पूरा कर रहा हूँ। मैं भागकर कनाडा जा रहा हूँ। यदि किसी ने मुझे पकड़ने की हिम्मत की तो मैं तुरंत उसकी जान ले लूँगा, और यदि हारकर पकड़ा गया तो अपनी जान देकर साढ़े तीन हाथ भूमि पर आनंद-पूर्वक अनंत काल के लिए सुख की सेज बिछाकर सोऊँगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वाधीनता की रक्षा के लिए युद्ध करने में कोई पाप नहीं है। तुम्हारे बाप-दादे भी तो स्वाधीनता की रक्षा के लिए लड़े थे। उस युद्ध में यदि उन्हें कोई पाप नहीं लगा तो अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए किसी आदमी को मार डालने में मुझे भी कोई पाप नहीं लगेगा।"

जार्ज की यह रामकहानी सुनकर विलसन का हृदय पसीज गया। उसके दिल पर यह बात जम गई कि गुलामी की इस प्रथा के उठ जाने में ही कल्याण है। वह फिर बोला - "जार्ज, इस दशा में मैं तुम्हें भागने से नहीं रोकूँगा, पर किसी की जान मत लेना। हाँ, यह तो कहो कि अपनी स्त्री के विषय में क्या करोगे? तुम्हारी स्त्री इस समय कहाँ है?"

जार्ज ने कहा - "मैं नहीं जानता कि मेरी स्त्री इस समय कहाँ है। पर सुना है कि उसके मालिक ने उसके बच्चे को बेचने का प्रस्ताव किया था, इससे वह अपने बच्चे को लेकर भाग गई है। मालूम नहीं कि उससे कब भेंट होगी, अथवा इस जन्म में भेंट होगी भी या नहीं।"

विलसन - "यह बड़े अचंभे की बात है। ऐसे दयालु परिवार ने तुम्हारे बच्चे को बेचने की

बात ठान ली!"

जार्ज - "अक्सर होता है कि दयालु परिवार भी कर्ज में फँसकर धर्म-अधर्म की कुछ भी परवा नहीं करता और सामाजिक मर्यादा को बचाने के लिए माता की गोद से शिशु को छीनकर बेच देता है, क्योंकि देश में प्रचलित इस घृणित कानून ने इस प्रकार की कठोरताओं को सदा आश्रय दिया है। केवल दयालु परिवार मिलने से ही किसी दास का कोई उपकार नहीं हो सकता।"

विलसन के हृदय पर जार्ज की इन बातों का बड़ा असर हुआ। उसने जेब से कुछ नोट निकालकर जार्ज को दिए और कहा - "ये रुपए बहुत काम आएँगे।"

जार्ज ने रुपए लेने से इनकार करते हुए बहुत नम्रतापूर्वक कहा - "विलसन, तुमने समय-समय पर मेरा बहुत उपकार किया है। मैं तुमसे और रुपए नहीं लेना चाहता। यों रुपए देते रहने से तुम स्वयं कर्ज में फँस जाओगे।"

पर विलसन ने उसकी एक न सुनी और जबरदस्ती उसकी जेब में रुपए डाल दिए। लाचार जार्ज को लेने पड़े। जार्ज ने विलसन से कहा - "यदि मैं कभी तुम्हारे रुपए चुकाने लायक हुआ, तो तुम्हें वापस लेने पड़ेंगे।"

विलसन - "तुम कितने दिनों तक इस प्रकार गुप्त वेश में रहोगे? तुम्हारे साथ यह काला आदमी कौन है?"

जार्ज - "यह आदमी भी गुलाम था। एक बरस हुआ, यह किसी तरह भागकर कनाडा चला गया था। इसके भाग जाने से इसका मालिक मारे गुस्से के पागल होकर इसकी माता को दिन-रात मारने और सताने लगा। माता के दुःख की बात सुनकर उसे चुपके से भगा ले जाने के लिए यह फिर आया है।"

विलसन - "तो क्या इसकी माता का उद्धारकर लाए?"

जार्ज - "अभी मौका नहीं मिला। पहले यह मुझे किसी सुरक्षित स्थान में पहुँचा देगा और फिर अपनी माता के उद्धार के लिए इस प्रदेश में आकर उसे ले जाएगा।"

विलसन - "यह तो बड़ा हिम्मतवाला बहादुर आदमी है, भाई! पर जार्ज, देखना तुम बड़ी सावधानी से रहना, कहीं पकड़े न जाना।"

जार्ज - "मैं गुलामी से छूट चुका हूँ। भागकर बच गया तो भी स्वाधीनता है हाथ और पकड़ा गया तो भी समाधि में जाकर पूरी स्वाधीनता से सुख की नींद सोऊँगा। यदि तुम कभी सुनो कि मैं पकड़ा गया हूँ तो निश्चय ही मन में समझ लेना कि मैं मर गया हूँ।"

इन बातों के बाद विलसन ने जार्ज से विदा माँगी, पर घर के बाहर पैर रखते ही जार्ज ने फिर पुकारकर कहा - "विलसन, मेरी एक बात सुनकर जाओ। यदि मैं पकड़ा गया तो अवश्य ही मेरी जान जाएगी और मालिक मुझे मुर्दे कुत्ते की तरह कहीं फेंकवा देगा। उस समय इस संसार में मेरे लिए मेरी स्त्री के सिवा और कोई एक बूँद आँसू भी न गिराएगा। मैं तुम्हें अपना एक चित्र देता हूँ। मेरी स्त्री से भेंट हो जाए तो उसे दे देना और कहना कि जीते-मरते मैं उसी का हूँ। उसे बच्चे को लेकर कनाडा जाने को समझा देना और बच्चे को गुलामी की जंजीरों से बचाए रखने की चेष्टा करने का मेरी ओर से अनुरोध कर देना। उससे कहना कि दासों के मालिक चाहे जितने दयालु हों, पर उनके दासों के दुःख-कष्ट दूर नहीं हो सकते, क्योंकि मालिक के कर्ज के लिए दूसरों के हाथ में जाने का सदा ही खटका बना रहता है।"

विलसन - "तुम्हारी स्त्री से भेंट होने पर मैं अवश्य ही ये सब बातें कहूँगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह निर्विघ्न तुम्हें निरापद स्थान पर पहुँचने में समर्थ करें। तुम सदा ईश्वर का स्मरण करते रहना।"

जार्ज - "क्या संसार में कहीं कोई ईश्वर है? संसार में सदा यह अविचार और अन्याय देखकर मेरे मन में शंका होती है कि इस संसार में न्यायी परमेश्वर नहीं है। हाँ, यदि कोई ईश्वर हो भी तो वह तुम्हीं लोगों का रक्षक है। ईश्वर के अस्तित्व पर मुझे विश्वास नहीं होता।"

विलसन - "जार्ज, ऐसी बातें मुँह से न निकालो। मन में कभी ऐसे संशय को स्थान मत दो। परमेश्वर प्रत्यक्ष इस संसार का शासन करता है। वह सर्वत्र व्यापक है। उस पर विश्वास करो। अपने को उसी के सहारे छोड़कर न्याय और सत्पथ पर बढ़ते जाओ। निश्चय ही उसकी करुणा से निर्विघ्न सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाओगे। इस संसार में व्यक्ति-विशेष को जो कष्ट और यंत्रणाएँ मिलती हैं, वे सब उनके कर्मों का फल हैं। मनुष्यों को कभी-कभी अपने बाप-दादों के पाप का फल भी भोगना पड़ता है। मंगलमय ईश्वर पर अटल विश्वास, पूर्ण भरोसा और उसके हाथों में आत्म-समर्पण किए बिना उन कर्मों के फल से छुटकारा नहीं मिल सकता।"

विलसन की बात सुनकर जार्ज बोला - "मैं तुम्हारे इस उपदेश के अनुसार कार्य करने की चेष्टा करूँगा।"

यह कहकर वे दोनों एक-दूसरे से बिदा हुए।

### 13. नीलाम की मार्मिक घटना

टॉम को साथ लिए हुए हेली चलते-चलते एक नगर के निकट पहुँचा। मार्ग में दोनों ही चुप थे। कोई किसी से कुछ न बोलता था। दोनों अपनी-अपनी धुन में मस्त थे। देखिए, इस संसार में लोगों की प्रकृति में कितना निरालापन दिखाई पड़ता है। दोनों एक ही जगह बैठे हुए थे। आँखों के सामने का दृश्य भी दोनों के लिए एक ही-सा था, पर विचारों की लहर एक-दूसरे से बिल्कुल ही भिन्न थी। उनके पृथक्-पृथक् विचारों का नमूना देखिए। हेली सोच रहा था कि खूब लंबा-चौड़ा और ताकतवर मर्द है। इसे दक्षिण के देश में बेचूँगा तो कम-से-कम दो-तीन सौ रुपए नफे के तो जरूर ही मिल जाएँगे। फिर तरंग जो उठी तो सोचने लगा कि दास-व्यवसायियों में मुझ जैसे दयालु मनुष्य विरले ही निकलेंगे। देखो न, मैंने थोड़ी ही दूर आकर टॉम के हाथ खोल दिए, केवल पैर भर बाँध रखे हैं। फिर संसार का व्यवहार सोचकर मन-ही-मन कहने लगा कि मैंने टॉम के साथ इतनी भलमनसी की है, पर वह अकृतज्ञ क्रीत दास है। वह कभी मेरी इस भलमनसी की दाद न देगा।

उधर टॉम के विचार देखिए, वे और ही तरह के थे। टॉम सोच रहा था कि मंगलमय परमात्मा इस संसार का शासन करता है। इसलिए अपने को उसी पूर्ण ब्रह्म के हाथों में सौंप देना चाहिए। फिर किसी अमंगल का कोई डर न रहेगा। मनुष्य ईश्वर के उद्देश्य को समझने में सर्वथा असमर्थ है। इसी से वह जीवन की किसी-किसी घटना को विपत्ति या दुर्घटना समझ बैठता है। पर जब मनुष्य का मोह दूर हो जाता है तब वह समझने लगता है कि ईश्वर जो कुछ करता है, सब उसके भले के लिए ही करता है।

ऐसे ही भावों के सहारे टॉम अपने उमड़े हुए शोक को रोकता था। टॉम और हेली के ये चिंता-स्रोत अभी समाप्त न होने पाए थे कि वे सामने के नगर में आ पहुँचे। वहाँ हेली ने अपनी जेब से एक गजट निकाला और बड़ी तत्परता से उसमें छपा हुआ एक विज्ञापन इस प्रकार पढ़ने लगा:

#### नीलाम

अदालत की आज्ञानुसार आगामी मंगलवार, 20वीं फरवरी को वाशिंगटन नगर की दीवानी कचहरी के सामने, परलोकवासी ब्रांसन- साहब का ऋण चुकाने के लिए, नीचे लिखे हुए दास-दासी सबसे ऊँची डाक बोलनेवाले के हाथ बेचे जाएँगे:

#### नीलाम की सूची

नंबर दास-दासी उम्र

1 हागर (दासी) 60 बरस

2 जॉन 30 बरस

3 बेंजमिन 21 बरस

4 सेल 25 बरस

5 अलबर्ट 24 बरस

20 जनवरी, दस्तखत

1850 सेमुअल नरिश, टॉमस फ्लिट "मुंशी अदालत"

विज्ञापन पढ़कर हेली ने टॉम से कहा - "यहाँ हम कई और दास-दासी खरीदेंगे। इसलिए तुम्हें थोड़ी देर को जेलखाने में रखकर हम कचहरी जाते हैं।"

यह कहकर वह टॉम को जेल में रखकर खुद नीलाम-घर की ओर चला गया।

दोपहर हो चली है। कचहरी में लोगों की भीड़ जमा हो रही है। वहाँ से थोड़ी ही दूर, बिना छत का, लोहे की छड़ों से घिरा हुआ माल-गोदाम-सरीखा एक घर था। पैरों की धूल से वह घर भरा हुआ था। इस घर के एक कोने में कई काले दास-दासी बैठे बात कर रहे थे। इनमें हागर नाम की जो दासी थी, उसकी उम्र अस्सी से ऊपर जान पड़ती थी। पर असल में वह 60 से अधिक की न थी। दिन-रात की बेहिसाब मेहनत और भाँति-भाँति के कष्टों तथा भूख के दुःख से वह ऐसी जीर्ण हो गई थी। चलने में लकवे के रोगी की भाँति उसका सारा शरीर काँपता था। उस हतभागिनी की बगल में एक 14 बरस का लड़का बैठा हुआ था। हागर के और सब लड़के-लड़कियों को उसके मालिक ने पहले ही जहाँ-तहाँ बेच डाला था। कम से कम 10-12 संतानों में केवल यही लड़का आज तक इसके साथ है। हागर बालक के गले में बाँह डाले बैठी थी। जब कोई खरीदार बालक के शरीर की जाँच करने आता, तब वह बुढ़िया चौंक जाती और कहती - "हम दोनों एकसाथ ही बेचे जाएँगे।" इतना कहकर बालक को और भी जोर से जकड़ लेती थी। वहीं तीस वर्ष का एक और दास बैठा था। वह बोला - "हागर मौसी, तुम क्यों डरती हो? मुंशीजी तो कह चुके हैं कि वह तुम्हें और अलबर्ट को एक ही साथ बेचने का यत्न करेंगे।"

इसी समय हेली वहाँ आया। वह एक-एक दास के शरीर की जाँच करके देखने लगा। उसने हर एक के मुँह में अँगुली डालकर पहले दाँत गिने, फिर खड़ा करके शरीर की लंबाई नापी। वह शरीर को जगह-जगह से टटोल कर देखने लगा। अंत में देखते-दिखाते हागर के पास पहुँचा और उसके चौदह वर्ष के पुत्र अलबर्ट की जाँच करने के लिए झटके से उसका हाथ खींचकर उठाया। यह देखकर वृद्ध माता बोली - "साहब, हम दोनों साथ ही बेचे जाएँगे, मैं अभी खूब काम-काज करने लायक हूँ।"

हेली ने हँसकर पूछा - "तुम तंबाकू के खेतों या चाय के बगीचों में काम कर सकोगी?"

बुढ़िया ने कहा - "हाँ-हाँ, खूब कर सकूँगी।"

हेली ने हँसते हुए एक दूसरे खरीदार के निकट जाकर कहा - "हम इस छोटे छोकरे को लेना चाहते हैं। लड़का खूब मजबूत है।"

इस पर उस दूसरे खरीदार ने कहा - "मैंने सुना है कि बुढ़िया और लड़का दोनों साथ ही बेचे जाएँगे।"

तब हेली बोला - "बुढ़िया की कीमत तो कोई एक पैसा भी नहीं देगा, हवा से इसकी कमर टेढ़ी हो गई है। एक आँख की कानी अलग है। ऐसी मरी हत्या को लेकर कौन अपनी पूँजी नष्ट करेगा। हमें तो कोई मुफ्त में दे तो भी नहीं लें। अगर बालक और बुढ़िया साथ बिकें तो बालक के दाम भी घट जाएँगे।"

हेली की बातें समाप्त न होने पाई थीं कि नीलाम का घंटा बजा। अदालत के मुंशी सेमुअल नरिश और टॉमस फ्लिट नाक पर चश्मा चढ़ाए नीलाम-घर में आए। नीलामवालों ने डाक की हाँक लगाई। वृद्ध हागर ने अलबर्ट से कहा - "बेटा, मुझे पकड़कर बैठ जा, जिससे हम दोनों एक ही हाँक में बिक जाएँ।" बालक ने आँखों में आँसू भरकर कहा - "माँ तू नाहक यों क्यों कह रही है? हम लोग एक साथ नहीं बेचे जाएँगे।"

हागर बोली - "जरूर बेचे जाएँगे, जरूर! तू मुझे पकड़कर बैठ जा।"

कुछ देर बाद जब कई नीलाम हो चुके, तब उस बालक को हाथ पकड़कर खड़ा किया। यह देखकर बुढ़िया चिल्लाकर बोली - "दोनों को एक साथ बेचो। हम दोनों को एक साथ नीलाम करो!"

पर नीलामवालों ने धक्का देकर उस बेचारी बुढ़िया को दूर धकेल दिया। बालक की बोली आरंभ हुई। एक-दो-तीन के बाद अंत में हेली ने बालक को खरीदा। तब बालक की माता ने हेली के पास आकर कहा - "साहब, मुझे भी आप ही खरीद लीजिए। बालक से अलग होने पर मेरी जान नहीं बचेगी।"

हेली बोला - "तुम्हें खरीदा जाए चाहे न खरीदा जाए, मरोगी तुम जल्दी ही। तुम्हारे मरने में अब बहुत दिन नहीं हैं।"

इसके बाद बुढ़िया की बोली आरंभ हुई। एक आदमी ने बहुत थोड़े दामों में उसे खरीद लिया, पर बुढ़िया ने बड़ा रोना मचाया। 'हाय-हाय'कर कहने लगी - "मेरे एक बच्चे को भी मेरे संग नहीं छोड़ा! मालिक ने मरते समय कह दिया था कि इस बच्चे को वह मेरी गोद से अलग

नहीं करेंगे। पर हाय, लोगों ने उसे भी न छोड़ा- मुझसे छीन लिया!"

उनमें एक बूढ़ा गुलाम था। उसने कहा - "हागर मौसी, ईश्वर की मर्जी ऐसी ही समझकर तुम संतोष करो। अब रोने-धोने से क्या होगा! हम लोगों के लिए और कोई चारा नहीं है।"

पर हागर को शांति कहाँ? वह और अधिक रोने लगी, बोली - "बताओ, ईश्वर कहाँ है? एक बार उसे देखूँ तो सही। एक-एक करके तेरह लड़के मेरी गोद से छिन गए, पर ईश्वर ने इसका कुछ भी विचार न किया!"

तब बालक अलबर्ट कातर होकर कहने लगा - "माँ, रोओ मत, अपने मालिक के साथ चली जाओ। यह लोग कहते हैं कि तुम्हें खरीदनेवाला भला आदमी है।" किंतु उस शोक-संतप्त माता के मन को इतने से कब ढाढ़स होता। उसने फिर दौड़कर बालक को पकड़ लिया। पागल की भाँति चिल्लाकर कहने लगी - "यही मेरा आखिरी लड़का है। मेरा सबसे छोटा बच्चा है। इसे छोड़कर मैं कहीं नहीं जाऊँगी।" बड़ी मुश्किल से हेली ने उसके हाथ से बालक को छीनकर अपना रास्ता लिया। इधर वह स्त्री अचेत होकर पड़ गई।

इन नीलाम में हेली ने उस बालक के सिवा और भी चार गुलामों को खरीदा था। उन्हें साथ लेकर वह जेल में आया। और वहाँ से टॉम को लेकर सबको नदी की ओर ले गया। फिर दक्षिण देश की ओर जाने के लिए हेली अपने दासों सहित एक स्टीमर पर सवार हुआ।

जहाज के ऊपरी हिस्से में दस-बारह सजे-सजाए कमरे थे। इन कमरों को धनाढ्य यात्रियों ने किराए पर ले रखा था। हंसी-ठट्टे और दिल्लगी-मजाक से ये कमरे गूँज रहे थे। एक कमरे में हँसी के फुहारे-से छूट रहे थे। जान पड़ता था, मानो इस कमरे में किसी नए दुलहे-दुलहिन का दखल है। दूसरे कमरे में संतान-वत्सला माता अपने बच्चे का मुख चूम-चूमकर आनंद-मग्न हो रही थी। किसी-किसी कमरे में शूर्पनखा की बहनें अंग्रेज कुल-कामिनियाँ कई अन्य यात्रियों को अपने से अच्छे कमरों में बैठा देखकर अपने स्वामीयों से लड़-भिड़ रही थीं, अपने भाग्य को कोसती थीं और कार्य-कारण भाव की कड़ी मिलाकर समालोचना करते हुए अंत में अपने इस दुर्भाग्य की जड़ अपने वर्तमान स्वामी को ही ठहराती थीं।

पर इस प्रकार के सजे हुए कमरों और इस आनंद-बहार को देखकर मन केवल क्षण भर के लिए आनंदित हो सकता है। यह बाहरी ठाठ-बाट, यह बनाव-ठनाव और कारीगरी के दृश्य मनुष्य के हृदय में कोई जीती-जागती कविता की तस्वीर नहीं खींच सकते।

पाठक, हमारे साथ आइए, हम आपको एक बार जहाज के गोदाम का दृश्य दिखाएँ। जरा लोहे की जंजीर से जकड़े हुए और अपनी प्यारी पत्नी तथा बाल-बच्चों से जन्म भर के लिए बिछुड़े हुए शोक-विह्वल टॉम के मुख की ओर देखिए। माता की गोद से बिछुड़े हुए मातृ-वत्सल चौदह साल के बालक की आँहें कान देकर सुनिए। साथ ही हेली के दूसरे चार गुलामों की ओर

तनिक ध्यान देकर देखिए कि वे क्या कह और कर रहे हैं। यहाँ आपको जीती-जागती कविता की छवि दिखाई देगी। इस प्रत्यक्ष काव्य के रस से आपका हृदय भर उठेगा।

हेली के चारों गुलाम इस अंधरे गोदाम में बैठे आँसू बहा रहे हैं और एक-दूसरे को अपने दुःख की मार्मिक कहानी सुना-सुनाकर धीरज रखने की चेष्टा कर रहे हैं। इनमें तीस साल की उम्र का जान नामक एक गुलाम था। उसने टॉम के जंजीर से जकड़े घुटनों पर अपना हाथ टेककर कहा - "भाई, मेरी स्त्री यहाँ से थोड़ी दूरी पर रहती है। मेरे बिकने के विषय में उसे कुछ भी नहीं मालूम है। बहुत जी चाहा है कि जन्म भर के लिए चलते-चलते एक बार उसे देख आऊँ। अब इस जिंदगी में तो फिर उससे भेंट नहीं होगी।"

इतना कहकर जान रोने लगा। आँसूओं से उसकी छाती भीग गई। टॉम उसे ढाढ़स दिलाने का यत्न करने लगा, पर उसको सूझ ही नहीं रहा था कि जान को कैसे समझाए। इसी समय एक बालक जहाज के कमरे से उतरकर नीचे आया। वह इन गुलामों को देखते ही अपनी माँ के पास दौड़ा गया और कहने लगा - "माँ, इस जहाज के गोदाम में चार गुलाम बँधे बैठे हैं। वे बहुत रो रहे हैं।"

बालक की माता ने उसके मुँह से यह बात सुनकर बड़े दुःख से कहा - "यह गुलामी की प्रथा हमारे देश के लिए बड़ा भारी कलंक है। जिस मनुष्य के पास हृदय है, वह क्या ऐसी शोचनीय स्थिति देख सकता है?"

पास ही कमरे में एक और अंग्रेज स्त्री बैठी थी। आँखें उसकी बिल्ली की-सी थीं। यह बात सुनकर वह बोल पड़ी - "आपकी समझ में क्या गुलामी की प्रथा बहुत बुरी है? मैं तो नहीं समझती कि इसमें केवल दोष-ही-दोष हैं, कोई गुण नहीं है। इसमें गुण भी हैं, और दोष भी हैं। भलाई भी है और बुराई भी। मान लीजिए कि आज ही सारे गुलामों को गुलामी की जंजीर से मुक्त कर दिया गया तो क्या आप कह सकती हैं कि इससे उन्हें अधिक सुख मिलेगा! आप अच्छी तरह गौर से देखिए तो आपको मालूम हो जाएगा कि गुलाम लोग जिस हालत में हैं, उसे वे बहुत पसंद करते हैं, उसमें उन्हें स्वच्छंदता का आनंद आता है। यदि इन्हें स्वाधीनता दे दी जाए तो इनकी दशा बहुत ही खराब हो जाएगी।"

इस सभ्य रमणी की बात सुनकर बालक की माता ने कहा - "यदि यह घृणित गुलामी की चाल न होती तो माता की गोद से बालक को और स्वामी से स्त्री को बिछुड़कर जबरदस्ती दूसरे आदमी के साथ न रहना पड़ता। इन सब भयानक नृशंस व्यवहारों को स्मरण करके हृदय काँप उठता है। आप एक बार विचार करके देखिए कि यदि आपकी गोद से आपके बच्चे को कोई जबरदस्ती अलग कर दे तो आपको कितना अखरेगा, कैसा असहनीय कष्ट होगा?"

बालक की माता की बात समाप्त होने पर वह सभ्य स्त्री हँसकर बोली - "जो स्त्रियाँ आपकी भाँति हृदय के उच्छ्वास के वश में होकर काम करती हैं, उनमें कई विषयों के गुण-दोषों



की परख करने की शक्ति नहीं रहती। हृदय का उच्छ्वास विचारशक्ति को निस्तेज बना देता है और मनुष्यों के भले-बुरे का ज्ञान हर लेता है। आपके हृदय में जैसा प्रेम-भाव है वैसे प्रेम का संचार क्या काले दास-दासियों के हृदय में भी हो सकता है? केवल अपने हृदय के अनुसार उनके सुख-दुःख और भले-बुरे का अंदाज न कीजिए। गुलामी की प्रथा पर मैंने बहतेरी पुस्तकें पढ़ डाली हैं। इस विषय पर मेरी बहुत बड़े-बड़े विद्वानों से भी बातचीत हुई है। मेरी समझ में गुलामी की प्रथा में किसी प्रकार की कठोरता नहीं है। यदि गुलामों को गुलामी की बेड़ी से मुक्त कर दिया जाए, तो इसमें संदेह नहीं कि वे इससे भी अधिक आफत में पड़ जाएंगे! मेरा तो खयाल है कि गुलामों की वर्तमान दशा बहुत अच्छी है।"

यह सभ्य स्त्री एक गोरे पादरी की स्त्री थी। इसका स्वामी सिर से पाँव तक काले कपड़े पहने हुए पास ही खड़ा था। अपनी स्त्री को एक दूसरी स्त्री से दासत्व-प्रथा के संबंध में बातें करते देखकर उससे न रहा गया। उसने झट जेब से बाइबिल की पोथी निकाली और उनके पास जाकर कहने लगा - "नाहक आप लोग तर्क-वितर्क कर रही हैं। गौर से आप लोगों ने बाइबिल पढ़ी होती तो इस झूठे तर्क-वितर्क की नौबत ही न आती। बाइबिल में तो लिखा है कि कैनान देश के आदमियों को दासों के दास बनकर रहना पड़ेगा। दासत्व-प्रथा का विरोध करना बाइबिल का विरोध करना है, ईसा के धर्म का अपमान करना है। ऐसे धर्म-विरोधी नास्तिक भावों को आप लोग कभी अपने हृदयों में स्थान न दीजिए। ध्यान से बाइबिल पढ़िए, फिर इसमें संदेह ही नहीं रहेगा कि दासत्व-प्रथा ईश्वरीय आज्ञा है।"

पास ही एक लंबा आदमी खड़ा हुआ इन लोगों की बातें सुन रहा था। पादरी साहब की बातें सुनकर उसने हँसते हुए वहाँ आकर कहा - "क्यों पादरी साहब, सचमुच गुलामी की प्रथा ईश्वरीय आज्ञा है? तब हम सभी लोगों को एक-एक दो-दो गुलाम खरीदने चाहिए।"

फिर वही आदमी हेली से बोला - "सुन लीजिए भाई साहब, पादरी महाशय क्या कहते हैं। आप दासत्व-प्रथा को ईश्वरीय आज्ञा बताते हैं। यदि पादरी साहब की बात सच्ची हो तो इसमें जरा भी संदेह नहीं हो सकता कि अपनी इस नई आज्ञा का प्रचार करने के लिए ही ईश्वर ने खुद आपको हमारे देश में भेजा है। नित्य ही तो आप हजारों स्त्री-पुरुषों को यहाँ खरीदकर वहाँ बेचा करते हैं और यही कार्य करके महान पुण्य लूट रहे हैं। न जाने आप कितनी ही माताओं की गोद से शिशुओं को छीन लेते हैं, कितनी ही स्त्रियों का सदा के लिए स्वामी से बिछोह करा देते हैं। भाई साहब, आप-सरीखे पुरुषों की तो देवताओं की-सी पूजा होनी चाहिए।"

हेली ने उत्तर दिया - "जनाब, हम बाइबिल की कुछ परवा नहीं करते। हमने तो अपनी जिंदगी में कभी बाइबिल पढ़ी नहीं। बाइबिल पढ़ने का काम पादरियों का है। हमें तो दो पैसे के नफे से काम है, उसी के लिए रोजगार करते हैं। इस पेशे से जब तक फायदा है, कभी नहीं छोड़ेंगे- चाहे बाइबिल नहीं, बाइबिल का बाप कहे, नफा होते यह काम नहीं छोड़ते। हाँ, अगर यह रोजगार बाइबिल के मत से भी ठीक है तो हम लोगों के लिए और भी अच्छा है।"

कैटाकी प्रदेश के राजमार्ग के पास के होटल में जिस भेड़वाले से गुलामी की प्रथा के संबंध में विलसन की बातें हुई थीं, यह लंबा-सा आदमी वही भेड़वाला है। यह भेड़ें चराकर अपना जीवन-निर्वाह करता है, इसी से पादरी साहब की तरह बाइबिल का विशेष जानकार नहीं है। जब पादरी साहब ने बाइबिल निकालकर तर्क शुरू किया तब इसने हार मान ली और पास ही जो एक युवा पुरुष बैठा था, उसके पास जाकर बैठ गया। उससे बोला - "क्यों साहब, क्या बाइबिल में दास रखने की आज्ञा है? अभी पादरी साहब ने बाइबिल के आधार पर बताया है कि काबुल देश के लोगों पर ईश्वर नाराज है। इसलिए वे दासों के दास होंगे।"

युवक पहले जरा मुस्कराया, फिर बोला - "पादरी साहब ने काबुल नहीं कैनान कहा है।" फिर बड़ी घृणा प्रकट करके वह कहने लगा - "भाई, इन धर्म-ध्वजी पादरियों की बातें बस रहने ही दो। जिस बात से देश के धनी बनियों और राजा-रईसों को सुभीता पहुँचे, उसी को पादरी साहब की बाइबिल समझिए। जिन धनवानों के टुकड़ों से इन धर्म-ढोंगियों का पेट भरता है, उनके स्वार्थ को सिद्ध करनेवाले मतों को ही ये पादरी ईश्वर का आदेश बताते हैं। क्या ये कभी बाइबिल के सच्चे धर्म-प्रचार का भी साहस करते हैं? महर्षि ईसा की नजरों में काले-गोरे सब समान थे, कोई भेदभाव न था। उन्होंने साफ-साफ कहा है कि संसार की समस्त जातियों के अधिकार समान हैं। बाइबिल में इस मत का कहीं उल्लेख नहीं है कि एक जाति दूसरी जाति पर अत्याचार करे। आजकल तो स्वार्थपरता ही बाइबिल है। गुलामों के नीलाम-घर को गिरजा समझिए। जुआड़ी-खाना न्यायालय है। चोरों का सम्मिलन-स्थल व्यवस्थापिका-सभा है। उस समदर्शी परमात्मा के यहाँ क्या कभी काले और गोरे में भेद समझा जा सकता है? पर इन काले वस्त्रधारी-ऊपर से गोरे और अंदर से दिल के काले-पादरी साहबों ने बाइबिल की दुहाई देकर फतवा दे दिया कि परमेश्वर ने कालों को गोरों के दास होने के लिए पैदा किया है। और उसी मत का सहारा लेकर व्यवस्थापिका-सभा के माननीय सदस्य खुल्लमखुल्ला भाषण देते हुए नई-नई आज्ञाएँ निकालकर कहते हैं कि गोरों के दास होने के लिए ही काले बनाए गए हैं।"

इस आदमी की बात समाप्त होने के पहले ही जहाज एक नगर के पास जा पहुँचा। वहाँ किनारे लगने पर कई यात्री उतरने की तैयारी करने लगे। इसी समय घाट पर से एक काली स्त्री बड़ी तेजी से दौड़ती हुई आकर गोदाम में घुसी और जंजीर से जकड़े हुए जान नामक गुलाम के गले से लिपटकर रोने लगी। पाठक समझ गए होंगे कि यह काली स्त्री जान की पत्नी थी। जान ने टॉम से इसी की बात कही थी। स्वामी के बिकने की बात सुनकर वह तीस कोस पैदल दौड़ी आई थी और किनारे पर बैठी जहाज की बाट देख रही थी। इसकी दुख-भरी बातों और विलाप का विशद वर्णन अनावश्यक है। दास-दासियों के जीवन में ऐसे हृदय-भेदी दृश्य सदैव दिखाई देते हैं। जहाज खुलने की तैयारी हुई। युवती सदा के लिए विदा होते समय स्वामी से रोती हुई कहने लगी - "जान! अब इस जन्म में तुमसे भेंट होने की आशा नहीं। मैं ईश्वर पर भरोसा करके इस दुःख को सह लूँगी। लेकिन अपने भविष्य की ओर देखकर मेरा कलेजा फटा जाता है। तुम्हारे चले जाने पर, बच्चों को बेचकर रुपए बटोरने के लिए, मालिक अवश्य ही मुझे दूसरे आदमी के साथ रहने को मजबूर करेगा। पर मैं तुमसे कहे देती हूँ कि मुझे आत्महत्या स्वीकार है, मार

खाते-खाते मर जाना मंजूर है; पर मालिक की मार के डर से दूसरा पति करके मैं उसे बच्चे बेचने का मौका न दूँगी।"

इतना कहकर जान की स्त्री चली गई। जहाज लंगर उठाकर दक्षिण देश की ओर रवाना हुआ। चलते-चलते जहाज एक दूसरे नगर के पास पहुँचा। हेली यहाँ उतरा और थोड़ी देर बाद एक क्रीत दासी को साथ लेकर जहाज पर आ गया। उस दासी की गोद में एक साल भर का शिशु था। स्त्री बड़ी प्रसन्न दिखाई पड़ती थी। पर जब जहाज चलने लगा, तब हेली ने फिर उस स्त्री के पास आकर कुछ कहा। इस पर वह स्त्री अत्यंत उदास हो गई। कहने लगी - "मैं तुम्हारी इस बात पर विश्वास नहीं करती।"

हेली बोला - "इस कागज को देख तो मुझे मेरी कही बात का विश्वास हो जाएगा। जहाज में बहुतेरे पढ़े-लिखे आदमी हैं। जिससे तेरा जी चाहे, पढ़वाकर सुन ले।"

स्त्री ने कहा - "मुझे विश्वास नहीं होता कि मालिक ने मेरे साथ ऐसा छल-कपट किया है। मुझसे तो उन्होंने कहा था कि तेरे स्वामी को लूविल नगर का होटल किराए पर दिया है, वहीं जाकर मुझे मजदूरिन का काम करना पड़ेगा। तुम्हारे हाथ मुझे लड़के सहित बेच डाला, यह तो बिल्कुल नहीं कहा।"

हेली बोला - "तू दक्षिण देश के बनिए के हाथ बिकना सुनकर चिल्लाएगी, इसी से तेरे मालिक ने तुझे यह पट्टी पढ़ा दी है। तू इस कागज को जहाज के किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिखा ले। तुझे सच-झूठ का पता चल जाएगा।" फिर हेली ने एक दूसरे आदमी से कहा - "जरा इस कागज को पढ़कर इस औरत को सुना दीजिए।" उस आदमी ने पढ़कर बताया कि जान फरसडिक नाम के साहब ने अपनी क्रीत दासी लूसी और उसके बच्चे को हेली के हाथ बेचा है, उसी का यह दस्तावेज है।

यह बात सुनकर वह स्त्री चीख उठी। उसका चीखना सुनकर जहाज के बहुत-से आदमी वहाँ जमा हो गए। तब स्त्री कहने लगी - "मेरे मालिक ने मुझे तो इसके साथ यह कहकर भेजा है कि तुझे तेरे स्वामी के पास भेजते हैं। पर अब भेद खुला कि यह निरी झाँसेबाजी थी। हाय, न जाने मेरे भाग्य में क्या दुःख लिखे हैं।"

बस, वह स्त्री आगे एक शब्द भी न बोली। हेली ने मन-ही-मन कहा कि चलो, इतने ही में इसका झगड़ा खत्म हो गया।

उस स्त्री की गोद का बच्चा देखने में खूब हष्ट-पुष्ट था। जहाज में एक आदमी था। उसने हेली से कहा - "जान पड़ता है, तुम इस स्त्री को दक्षिण देश में रूई के खेतवालों के हाथ बेचने को लिए जा रहे हो। पर यह समझ लो कि वे लोग लड़के समेत इस स्त्री को कभी नहीं खरीदेंगे, क्योंकि बालक साथ रहने से क्लियों को खेत का काम करने में बड़ी अड़चन पड़ती है। इससे

तुम्हें लड़के को कहीं-न-कहीं दूसरी जगह बेचना ही पड़ेगा। अगर सस्ते दाम में बेचो तो मैं ही इस लड़के को ले लूँ।" हेली ने कहा - "हाँ-हाँ, खरीदार होना चाहिए, हमें बेचने में कोई उज्र नहीं है।"

उस भलेमानस ने पूछा "अच्छा, बोलो, इसके क्या दाम लगे?"

हेली - "यह लड़का खूब तैयार है। कीमत बहुत होगी। माल बड़ा चोखा है।"

भलामानस - "लेकिन छोटा कितना है, जरा इसे भी तो देखो। लेनेवाले को कई बरस तो इसे यों ही खिलाना-पिलाना पड़ेगा।"

हेली - "ऐसे लड़कों के पालने में खर्च ही क्या होता है? जैसे कूत्ते-बिल्ली के बच्चे जरा बड़े होने पर चलने-फिरने लगते हैं, वैसे ही ये भी चलने-फिरने लगते हैं।"

भलामानस - "मेरी एक क्रीत दासी के साल भर का एक बच्चा था, जो पानी में डूबकर मर गया है। वह इस बालक को पाल लेगी। इसी से मैं इसे लेना चाहता हूँ। दस रुपए लो तो दे डालो।"

हेली - "यह माल दस रुपए में! कभी नहीं बेचूँगा। तुम्हें खबर भी है, इसे छः महीने पाल करके सौ रुपए खड़े करूँगा। तुम्हें लेना हो तो पचास से एक कौड़ी कम न लूँगा।"

भलामानस - "अच्छा, तीस रुपए ले लेना।"

हेली - "अच्छा, तुम इतना दबाते हो तो इस तरह करो, न हमारे न तुम्हारे तीस, पैंतालीस कर लो।"

भलामानस - "खैर पैंतालीस ही सही।"

हेली - "तुम कहाँ उतरोगे?"

भलामानस - "मैं लूविल नगर में उतरूँगा।"

हेली - "तो ठीक है। शाम के वक्त जहाज लूविल पहुँचेगा। उस वक्त बालक नींद में रहेगा। मजे में ले जाना। रोवे-चिल्लावेगा नहीं।"

संध्या हो गई। जहाज ने लूविल नगर में पहुँचकर लंगर डाला। जहाज में "लूविल नगर, लूविल नगर" की धूम मच गई। जो यात्री यहाँ उतरनेवाले थे वे हड़बड़ाकर अपना माल-असबाब बाँधने लगे। लूसी का स्वामी इसी नगर में काम करता था। लूसी अपने बच्चे को गोदाम में सुलाकर जहाज के किनारे जा खड़ी हुई। नदी के किनारे सैकड़ों आदमी आते-जाते थे। शायद

उनमें उसका स्वामी भी हो। इसी आशा पर चाह-भरी आँखों से टकटकी लगाकर वह नदी की ओर देखने लगी। खयाल करने लगी कि संभव है, पानी भरने के लिए उसका स्वामी भी वहाँ आया हो। कोई घंटे भर तक जहाज किनारे पर ठहरा रहा पर लूसी ने अपने स्वामी को न देखा। इससे निराश होकर वह गोदाम में लौट आई, यहाँ देखा तो बच्चा नदारद। अब वह पागल की तरह अपने बच्चे को इधर-उधर जहाज में ढूँढ़ने लगी। यह दशा देखकर हेली साहब ने धीरे-धीरे उसके पास आकर कहा - "लूसी, तेरी फिक्र की कोई बात नहीं। तेरे लड़के को हमने एक बड़े दयावान आदमी के हाथ बेच दिया है। वह उसे बहुत मजे में पालेगा। लड़का साथ लेकर दक्षिण देश में जाने पर तुझे बड़ी दिक्कत होती। उसके लालन-पालन के लिए जरा भी फ़र्सत न मिलती। अब मैंने तेरी सारी चिंता मिटा दी। जहाँ तक होगा हम तेरे भले ही का उपाय करेंगे।"

हेली की बात सुनकर स्त्री पर वज्रपात-सा हो गया। उसके मुँह में बात नहीं, काटो तो बदन में खून नहीं। उसे ज्ञान न रहा कि वह बैठी हुई है या खड़ी, सोई हुई स्वप्न देख रही है या जागती है। उसका मुँह सफेद पड़ गया। ऐसी सोचनीय दशा देखकर पत्थर का हृदय हो तो वह भी पिघल जाए। पर दिन-रात दास-दासियों की ऐसी विह्वल अवस्था देखते-देखते हेली का दिल पत्थर से भी सख्त हो गया था। उसे डर था कि स्त्री कहीं चिल्ला न उठे, जिससे जहाज भर में हल्हड़ मच जाए। पर उसका वह डर जाता रहा, क्योंकि ऐसे भयानक शोक की हालत में कंठ और हृदय दोनों सूख जाते हैं। उस दशा में गले से आवाज नहीं निकलती, आँखों में आँसू नहीं आते। उस स्त्री की ऐसी दशा हो गई मानो किसी ने उसका हृदय बरछी से छेदकर उसे भारी पत्थर से दबा दिया हो। न तो वह चिल्लाई न उसकी आँखों से एक बूँद पानी ही गिरा। कठपुतली की तरह उसके हाथ जैसे-के-तैसे रह गए। आँखों की पलकें ऊपर को चढ़ गईं। यह नहीं जान पड़ता था कि वह आँखों से कुछ देख रही है।

उसकी यह निस्तब्ध दशा देखकर हेली मन-ही-मन प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि यह स्त्री शोरगुल नहीं मचाएगी। फिर हजरत उस स्त्री को इस तरह समझाने लगे - "लूसी, हम समझते हैं कि तेरे मन को कुछ दुःख होता है। पर तू समझदार है। ऐसी मामूली-सी बात को लेकर खामखा उदास होने से क्या फायदा है। तू खुद ही समझ सकती है कि ऐसा किए बिना काम नहीं चलता, क्योंकि दक्षिण देश में रूई के खेतों पर काम करनेवाला मजदूर बच्चे को साथ में नहीं रख सकता।"

लूसी का कंठ रुक गया था। इससे वह अस्फुट स्वर में बोली - "मुझे माफ करो, मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती।"

हेली इतने पर भी चुप न रहा, फिर बोला - "लूसी, तू बड़ी अक्लमंद है। जिसमें तेरा भला हो, वही हम करेंगे। दक्षिण देश में चलकर तुझे शीघ्र ही एक नया शौहर जुटा देंगे।"

इस पर वह स्त्री बाण से बिंधी सिंहनी की भाँति कर्कश स्वर में बोल उठी - "मुझसे आप न

बोलिए, मैं आपकी कोई बात नहीं सुनना चाहती।"

हेली समझ गया कि उसका तीर निशाने पर नहीं लगा। इसलिए वह अपने कमरे में चला गया और वह स्त्री अपने को सिर से पैर तक कपड़े से ढँककर वहीं पड़ी रही।

उस स्त्री की ऐसी असहनीय मनोवेदना देखकर टॉम अपना दुःख एकदम भूल गया और शोक भरे हृदय से उसके लिए ठंडी साँसें लेने लगा। टॉम का हृदय आप-ही-आप इस प्रकार भर आता था। उसने ईसाई पादरियों की भाँति बाइबिल से स्वार्थपरता की शिक्षा नहीं पाई। वह नीति-निपुण पंडितों की बखानी हुई राजनीति के गूढ़ तत्वों से बिल्कुल बेखबर है। वह अमरीका-वासी श्वेतांग-शार्दूलों के नैतिक व्यवहार का मर्म समझने में सर्वथा असमर्थ है। वह मौखिक सहानुभूति प्रकट करना नहीं जानता। शोक-विह्वला जननी के दुःख से उसका हृदय विदीर्ण होने लगा, और वह उसे धीरज बँधाने का उपाय सोचने लगा। बहुत सोच-विचार के बाद उस स्त्री के सिरहाने बैठकर टॉम कहने लगा - "माता, तूम्हें ईश्वर पर भरोसा रखकर अपनी हृदय-वेदना घटाने की चेष्टा करो। तुम्हारी इस दुःख-मंत्रणा का कुछ ही दिनों बाद अवश्य अंत हो जाएगा।"

स्त्री शोक से अधीर हो गई थी। उसका हृदय स्तम्भित हो गया था। टॉम के सांत्वना वाक्य उसके कानों में पड़े। टॉम की सहानुभूति उसके हृदय तक नहीं पहुँची।

देखते-देखते घोर अँधेरी रात आ पहुँची। सारे संसार में सन्नाटा छा गया। संसार के सब जीव-जंतु निद्रा में लीन हो गए और अपने-अपने हृदय के सुख-दुःखों को उसी अनंत तिमिर सागर में डुबो दिया। पर संतान-शोक से विह्वल जननी के हृदय की आग न बुझी। पुत्र-शोक से विदग्ध लूसी की आँखों में नींद नहीं है। पर-दुःख प्रमीड़ित टॉम के हृदय में भी शांति नहीं है। जहाज के बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी सभी नींद में मस्त पड़े हैं, पर लूसी को चैन कहा? वह बार-बार पुकारती है - "हे परमात्मन्, इस यातना से उद्धार करो, अपनी गोद में स्थान दो।" लूसी के शब्द टॉम के सिवा दूसरों के कानों में नहीं पड़े। जहाज पर उस समय और कोई नहीं जागता था। इसके कुछ देर बाद जहाज से नदी में, धम से किसी चीज के गिरने का शब्द टॉम को सुनाई दिया।

रात बीती। तड़का हुआ। गुलामों को देखने के लिए हेली गोदाम में पहुँचा। वहाँ लूसी न दिखाई दी। लूसी को उसने एक हजार में खरीदा था। इससे उसे न देखकर हेली पागल-सा हो गया और जहाज में इधर-उधर ढूँढ़ने लगा। कहीं पता न पाकर अंत में टॉम के पास आकर बोला - "तू जरूर लूसी की बात जानता होगा।"

टॉम बोला - "साहब, मैं और तो कुछ नहीं जानता। हाँ, थोड़ी रात थी तब नदी में किसी के कूदने का-सा शब्द सुना था।"

यह सुनकर हेली ने समझ लिया कि लूसी ने आत्महत्या कर ली है। पर इससे उसे कुछ

दुःख न हुआ, क्योंकि वह बहुत बार दास-दासियों को आत्महत्या करते देखता था। इसी से इस घटना से उसके हृदय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उसे केवल अपने घाटे-मुनाफे का ही खयाल हुआ। वह मन-ही-मन में कहने लगा कि इस बार काम में घाटा छोड़ मुनाफा नहीं दिखता। शेल्वी के यहाँ के काम-काज में पाँच सौ मिट्टी में मिले और अब पूरे एक हजार पर पानी फिर गया।

पाठक, आप कहते होंगे कि हेली बड़ा निर्दयी है। आप हेली को मन-ही-मन बार-बार धिक्कारते और कोसते होंगे। पर इसके पहले एक बार वास्तविकता पर विचार कीजिए। हेली अनपढ़ है और अभी तक वह सामाजिक जगत के गहरे अंधकूप में पड़ा हुआ है। सभ्य समाज से उसका वास्ता नहीं है। वह दास-व्यवसायी है। पर बताइए किसने उसे दास-व्यवसायी बनाया है? क्या दासत्व-प्रथा का बनानेवाला हेली है? कभी नहीं। जो सुशिक्षित हैं; शिष्ट कहलाते हैं, सब से आदर पाते हैं, देश के शासन की बागडोर अपने हाथ में लिए हुए हैं, जो देश के उपकार के निमित्त कानून गढ़ते हैं और न्यायासन पर बैठकर इन कानूनों को काम में लाते हैं, वही हेली को दास-व्यवसायी बनानेवाले हैं, उन्हीं ने आज लूसी के बच्चे को गोद से अलग कराके उस निरपराध अबला के प्राण लिए हैं। देश के शासनकर्ताओं, विचारकों, तम ठगों को सजा देते हो, चारों को जेलखाने भेजते हो और खूनियों को सूली पर चढ़ाते हो; पर तम लोग स्वयं नित्य जो नर-हत्याएँ करते हो, नर-नारियों पर घोर अत्याचार करते हो, दूसरों का धन-दौलत हरते हो, उन बातों पर क्या भूलकर भी ध्यान नहीं देते? समझ रखो, परम न्यायी परमेश्वर के न्यायदंड से कोई बचा नहीं रह सकता। पुत्र-शोक में प्राण खोकर लूसी उसी अमृतमय के अमृतधाम को चली गई है। वह अब मंगलमय ईश्वर की गोद में विराज रही है। उस न्यायमूर्ति के निकट उसकी सुनवाई हो रही है। वहीं उसका न्याय होगा। पर अरे, ज्ञान-विज्ञानाभिमानि शासनकर्ताओं और विचारकों, तम लोग ऐसे विषयांध हो रह हो कि पल भर भी उस अंतिम दिन की सुध नहीं करते। नहीं जानते कि लूसी की हत्या के अभियोग में तम लोगों में से हरएक को उसी राजाधिराज के दरबार में कभी अभियुक्त होना पड़ेगा और वहाँ जवाबदेही करनी पड़ेगी।

#### 14. दास-प्रथा का विरोध

समय सदा एक-सा नहीं रहता। आज जिस प्रथा को सब लोग अच्छा समझते हैं, कुछ दिनों बाद कितने ही उसका विरोध करने लगते हैं। धीरे-धीरे दासत्व-प्रथा की बुराइयाँ कितनी ही को खटकने लगीं। उन्होंने इस प्रथा का विरोध करना आरंभ कर दिया। सन् 1865 ईसवी में अमरीका से यह प्रथा दूर हो गई। पर पहले दासत्व-प्रथा के विरोधियों को समय-समय पर बड़े-बड़े सामाजिक अत्याचार सहने पड़ते थे, और लोगों के ताने और गालियाँ सुननी पड़ती थीं। जो लोग गिरजों में या और कहीं इस घृणित प्रथा का समर्थन करते थे, वे ही सच्चे देश-हितैषी समझे जाते थे। अमरीका में नोयर और वेस्टर सरीखे सुशिक्षित और ज्ञानी पुरुष भी इस दास-प्रथा के हिमायती

थे। सच तो यह है कि स्वार्थपरता को तिलांजलि दिए बिना मनुष्य सच्ची देश-हितैषिता का मर्म नहीं समझ सकता। स्वार्थपरता पढ़े-लिखे आदमियों की बुद्धि पर भी पर्दा डाल देती है। सच्चे देशहितैषी जीते-जी कभी देश-हितैषी नहीं कहलाते। समाज में प्रचलित पाप और कुसंस्कारों से उन्हें जन्म भर लड़ाई लड़नी पड़ती है, इसी से वे समाज के प्रिय नहीं हो सकते। इधर सैकड़ों यश के लोभी, स्वार्थ-परायण मनुष्य उनके मार्ग में काँटे बोते रहते हैं। लोगों में प्रचलित पापों और कुसंस्कारों का समर्थन करके वे देश-हितैषी की पदवी धारणकर समाज में अनुचित सम्मान पाते हैं।

महात्मा ईसा मनुष्य-जाति के सच्चे हितैषी थे, पर उनके हाथ-पैरों में कीलें ठोककर उन्हें सूली दी गई। लूथर सच्चा धर्म-सुधारक था, इसी से उसे बड़े-बड़े सामाजिक अत्याचार सहने पड़े। ऐसे सच्चे देश-हितैषी और समाज-सुधारकों के लिए इस जीवन में दुःख, कष्ट और दरिद्रता ही एकमात्र पुरस्कार है। किंतु जो लोग और व्यवसायों की भाँति देश हितैषिता को भी एक व्यवसाय-सा बना लेते हैं तथा लोकप्रिय आडंबर रचते हैं, वे इस व्यवसाय की बदौलत खूब धन कमाते और मौज उड़ाते हैं।

पर-दुःख कातर, स्वार्थहीन, अनासक्त, दरिद्र क्वेकर-मंडली के जिस उदार सज्जन ने भगोड़ी दासी इलाइजा को शरण दी थी, उसे क्या कोई देश-हितैषी अथवा परोपकारी समझता था? संसार के लोगों की आँखों पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है, वे भला कैसे क्वेकर-दल को परोपकारी समझेंगे? उक्त दल के लोग देश-हितैषिता का जामा पहनकर, गले में देश-हितैषिता का ढोल डालकर तथा सिर पर देश-हितैषिता का झंडा फहराते हुए नहीं घूमते। हाँ, दूसरे का दुःख देखकर उनका हृदय भर आता है, परंतु परमात्मा के सिवा उनके हार्दिक भावों को कौन देख सकता है? वे आफत में फँसे हुए नर-नारियों के आँसू अपने हाथ से पोंछ देते थे। दुखियों की आँखों में पानी देखकर उनकी भी आँखें भर आती थीं। वे चुपचाप सच्चा काम करते थे। कभी- "परोपकार, परोपकार" का ढोल नहीं पीटते थे। यही कारण है कि दुनिया के लोग उन्हें नहीं पहचानते थे और उनकी लानत-मलामत करते थे।

ऐसी ही एक पर-दुःख-कातर राचेल नाम की बुढ़िया के पास बैठी हुई इलाइजा बातें कर रही है थी। उक्त बुढ़िया क्वेकर-मंडली के एक धार्मिक ईसाई साइमन हालीडे की पत्नी थी। वृद्ध राचेल कहती थी - "बेटी इलाइजा, क्या तुमने कनाडा ही जाने का निश्चय कर लिया है? यहाँ तुम जितने दिन चाहो, निर्भय होकर रह सकती हो।"

इलाइजा - "नहीं, मैं कनाडा ही जाऊँगी। यहाँ ज्यादा ठहरने में डर लगता है कि कहीं कोई बच्चे को मेरी गोद से छीन न ले। कल रात ही मैंने स्वप्न देखा कि एक मनुष्य आया और मेरे बच्चे को गोद से छीन लिया। इससे मैं बहुत भयभीत हो गई हूँ।"

राचेल - "बेटी, तू यहाँ बेखटके रहो। यहाँ कोई तुम्हारे बच्चे का बाल तक बाँका नहीं कर सकता। यहाँ हम लोग चार-पाँच परिवारों के बहुत-से आदमी रहते हैं। सताए हुए मनुष्य को



शरण देना ही हम लोगों के जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। यहाँ जितने लोग हैं, वे सब अपनी जान देकर भी तुम्हारे बच्चे की रक्षा करेंगे।"

इतने में वहाँ रूथ नाम की एक युवती आई। वह इलाइजा के पुत्र को गोद में लेकर प्यार करने लगी और उसे कई प्रकार के खाने की चीजें दी और बहन की भाँति इलाइजा से बातें करने लगी।

रूथ बोली - "प्यारी बहन इलाइजा, तुम्हें बच्चे समेत सकुशल यहाँ पहुँचे देखकर मुझे बड़ा आनंद हुआ।"

अभी इलाइजा के हृदय का दुःख दूर नहीं हुआ था। इससे वह बातचीत के द्वारा प्रकट रूप में रूथ के प्रति कुछ कृतज्ञता प्रदर्शित न कर सकी। पर इन क्वेकर-दल की स्त्रियों के सद्व्यवहार को देखकर उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया।

इलाइजा को चुप देखकर वृद्ध राचेल बोली - "रूथ, अपने लड़के को कहाँ छोड़ी?"

रूथ - "साथ ही लाई हूँ। तुम्हारी मेरी ने उसे ले लिया है। वह उसे खिला रही है।"

राचेल - "छोटे बच्चों को मेरी बहुत प्यार करती है।"

तभी दरवाजा खुला और प्रफुल्लमुखी मेरी रूथ के छोटे बच्चे को गोद में लिए वहाँ आ पहुँची।

मेरी की गोद से लड़के को अपनी गोद में लेकर वृद्ध राचेल ने कहा - "रूथ, बड़ा सुंदर बच्चा है!"

रूथ ने लजाकर कहा - "माँ, इसे ऐसा ही सब कहते हैं।"

वृद्ध राचेल ने पूछा - "रूथ, अविगेल पीटर्स कैसे हैं?"

रूथ - "अब तो वह बहुत अच्छे हैं। सवेरे मैं उनका कमरा झाड़-बूहार आई थी, दोपहर को श्रीमती लियाहिल ने वहाँ जाकर उनके पथ्य और आहार का प्रबंध कर दिया। संध्या-समय मुझे फिर जाना होगा।"

राचेल - "मेरा भी कल जाने का विचार है। मेरी ने उनके छोटे लड़के के लिए एक जोड़ी मोजा बुन रखा है।"

रूथ ने कहा - "माँ, मैंने सुना है कि हमारे हानस्टन उड की तबियत बहुत खराब हो गई है।"

जॉन कल सारी रात वहीं था। कल मैं भी उनके यहाँ अवश्य जाऊँगी।"

राचेल - "कल रात को अगर तुम्हें वहाँ जागना पड़े तो उनको यहाँ भोजन करने के लिए कह देना।"

रूथ - "अच्छा, मैं यहीं भोजन करने को कह दूँगी।"

इसी समय वृद्ध राचेल के स्वामी साइमन हालीडे वहाँ आ पहुँचे। साइमन हालीडे लंबे-चौड़े और बड़े ताकतवर जान पड़ते थे। चेहरे से उनके दया और स्नेह टपकता था। साइमन ने पूछा - "रूथ, कहो, तुम अच्छी हो? जॉन अच्छी तरह है?"

रूथ - "जी हाँ, सब सकुशल हैं।"

राचेल ने अपने स्वामी को देखते ही पूछा - "क्यों, कोई नई खबर मिली?"

साइमन ने उत्तर दिया - "पीटर स्टीवन ने कहा है कि वे आज ही तीन भागे हुए दास-दासियों को साथ लेकर यहाँ पहुँचेंगे।"

राचेल ने स्वामी के मुख से यह शुभ संवाद सुनकर इलाइजा की ओर देखते हुए प्रसन्न मुख से पूछा - "सच्ची बात है?"

साइमन ने उस प्रश्न का कोई उत्तर न देकर बदले में पूछा - "क्या इलाइजा के पति का नाम जार्ज हेरिस है?"

उनका प्रश्न सुनकर इलाइजा शंकित होकर बोली - "जी हाँ!"

उसे खटका हुआ कि कहीं विज्ञापन तो नहीं निकला है। राचेल ने इलाइजा का यह भाव ताड़ लिया और अलग ले जाकर अपने स्वामी से पूछा - "इस प्रश्न से तुम्हारा क्या मतलब था?"

साइमन ने कहा - "आज ही रात को इसका पति सकुशल यहाँ पहुँच जाएगा। हमारे आदमियों की सहायता से इसका पति, एक और गुलाम और उसकी माता भागने में सफल होकर शरण लेने के लिए यहाँ आ रहे हैं। मुझे जैसे ही खबर मिली, मैंने तुरंत उनके लिए गाड़ी और आदमी भेज दिए हैं कि उन्हें निर्विघ्न यहाँ ले आएँ।"

राचेल - "क्या इलाइजा को यह खबर नहीं सुनाओगे? यह सुनकर तो उसके आनंद की सीमा न रहेगी।"

इलाइजा को खबर सुनाने की सम्मति देकर साइमन अपने कमरे में चले गए। राचेल ने

तुरंत इलाइजा को बुलाकर कहा - "बेटी, मैं तुम्हें एक खबर सुनाती हूँ।"

यह सुनकर इलाइजा बहुत घबराई। सोचने लगी - न जाने क्या आफत आ पड़ी है। पर राचेल ने उसे धीरज देकर कहा - "खबर अच्छी है, डरो मत। तुम्हारा स्वामी भागने में सफल हो गया है। आज रात को यहाँ आ जाएगा।"

इलाइजा के दिल पर उस समय क्या बीत रही थी, यह वही जानेगा जिसने कभी ऐसी दशा का सामना किया हो। एकाएक यह शुभ संवाद सुनने से उसके हृदय में इतना आनंद हुआ कि वह उसके वेग को संभाल न सकी। देखते-देखते इलाइजा बेसुध हो गई। रूथ और राचेल उसे होश में लाने के लिए उसके मुँह पर पानी छिड़कने लगीं। बहुत रात बीतने पर उसे होश आया। चेत होने पर जब इलाइजा ने आँखें खोलीं तो देखा कि उसके स्वामी की गोद में उसका सिर है। देखते-देखते सवेरा हो गया और सूर्य निकल आया। राचेल सबके भोजन का प्रबंध करने लगी। दोपहर को सबने मिलकर एक साथ भोजन किया। इसके पहले जार्ज ने कभी किसी पुरुष के साथ भोजन नहीं किया था। घर के पालतू कुत्ते-बिल्लियों की तरह उसे खाना पड़ता था। दास-व्यवसायी के यहाँ जार्ज मनुष्य के आकार का एक पशु विशेष था, किंतु यहाँ पर दुःख-कातर साइमन हालीडे की दृष्टि में वह वास्तविक मनुष्य है। हालीडे के अकृत्रिम स्नेह और सहृदयता ने आज जार्ज के हृदय में ईश्वर के अस्तित्व पर दृढ़ विश्वास ला दिया। संसार के अन्याय और अविचारों को देखकर जार्ज को ईश्वर की करुणा पर विश्वास नहीं होता था। उसकी यह धारणा हो गई थी कि इस संसार में ईश्वर नहीं है, पर ईश्वर भक्त हालीडे का सदाचरण देखकर उसकी नास्तिकता दूर हो गई। इतने दिन बाद जार्ज को ईश्वर पर भरोसा हुआ।

साइमन हालीडे के बारह वर्ष का एक छोटा लड़का था। उसने पिता से कहा - "बाबा, अगर पुलिस तुम्हें पकड़ ले तो वह तुम्हारा क्या करेगी?"

साइमन ने कहा - "पकड़ लेगी तो सजा देगी। तब क्या तुम और तुम्हारी माता मिलकर खेती से अपनी जिंदगी बसर नहीं कर सकोगे? ईश्वर सबका रक्षक है, वह तुम लोगों की भी रक्षा करेगा।"

उनकी बातें सुनकर जार्ज ने बड़ी घबराहट से पूछा - "क्यों साहब, क्या मुझे बचाने में आप लोगों पर कोई आफत आने का डर है?"

साइमन ने कहा - "तुम इससे बेफिक्र रहो। अच्छे कामों के लिए मैं सदा अपनी जान देने को तैयार रहता हूँ। बलवान के अत्याचार से निर्बल की रक्षा करना ही मेरे जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। मेरी विपत्ति के लिए तुम्हें संकोच करने की आवश्यकता नहीं। मैंने तुम्हारे उपकार के लिए कुछ नहीं किया है। जिस परमात्मा की कृपा से हमें दोनों समय रोटियाँ मिलती हैं, केवल उसी का यह प्रिय कार्य है। तुम यहाँ आराम करो। आज ही रात को हमारे दो आदमी तुम्हें पास के दूसरे ठिकाने पर पहुँचा आएँगे। मुझे खबर लगी है कि पकड़नेवाले और पुलिस के लोग

तुम्हारी खोज में यहाँ आ रहे हैं।"

जार्ज ने शंकित होकर कहा - "साहब, तब तो अभी चल देना अच्छा होगा।"

साइमन हालिडे ने उसे धीरज देकर कहा - "डरो मत! मंगलमय ईश्वर की कृपा से हमारे आदमी तुम्हें रात को सुरक्षित स्थान में पहुँचा आएँगे। दिन में यहाँ किसी आफत का खटका नहीं है।"

## 15. आशा की नई किरण

जिस जहाज पर दास-व्यवसायी हेली सवार था वह चलते-चलते मिसिसिपी नदी में पहुँच गया। इस जहाज पर रूई के ढेर-के-ढेर लदे हुए थे। इस कारण दूर से यह एक सफेद पहाड़-सा दिखाई देता था। जहाज के डेकों पर बड़ी भीड़ थी। सबसे ऊँचे डेक के एक कोने में एक रूई के गट्टे पर टॉम बैठा हुआ था।

कुछ तो शेल्वी साहब के कहने से और कुछ टॉम का सीधा स्वभाव देखकर, हेली का उस पर विश्वास हो गया था। पहले वह उसे हर समय अपनी आँखों के सामने रखता था और जंजीर से जकड़े रहता था। पर जब उसने देख लिया कि टॉम अपनी वर्तमान दशा में कोई असंतोष नहीं प्रकट करता तब उसके बंधन खोल दिए और उसे इच्छानुसार घूमने का अधिकार दे दिया। दूसरे दासों के साथ यह रियायत नहीं थी। काम न रहने पर टॉम ऊपर डेक के एक रूई के गट्टे पर जाकर बैठ जाता और एकाग्रचित होकर बाइबिल पढ़ा करता। इस समय भी वह बाइबिल पढ़ रहा था।

नदी के किनारे खेत-ही-खेत दिखाई पड़ रहे थे। उनमें हजारों दास-दासी फूस की झोपड़ी डालकर रहते थे। इनसे थोड़ी ही दूर पर खेत के मालिकों के सुंदर बंगले और आराम-बाग थे। यह हृदय-स्पर्शी दृश्य देखते-देखते टॉम के हृदय में पिछली बातें जाग उठीं। उसे कैंटाकी के मालिक के खेत और उससे सटी हुई अपनी हवादार कुटिया का ध्यान आ गया। संगी-साथियों की दावतें उसकी आँखों के सामने नाचने लगीं। उसकी स्त्री संध्या-समय का भोजन बना रही है। उसके पुत्र हँस-हँसकर खेल रहे हैं। सबसे छोटा लड़का उसकी गोद में बैठा हुआ अपनी तोतली बोली से उसे खुश कर रहा है। टॉम एकाएक चौंक पड़ा, देखा, पेड़-पल्लव, खेती-बाड़ी सब एक-एक करके पीछे छूटे जा रहे हैं। जहाज के कल-पुरजों की आवाज फिर सुनाई देने लगी। तब उसे अपनी वर्तमान अवस्था का स्मरण हुआ और जान पड़ा कि अब वे सुख के दिन सदा के लिए उसे छोड़ गए। उसके हाथ में जो बाइबिल थी, उस पर आँसू टपकने लगे। आँखें पोंछकर टॉम बाइबिल में शांति के उपदेश ढूँढ़ने लगा। उसने बड़ी उम्र में पढ़ना सीखा था, इससे उसे जल्दी-

जल्दी पढ़ने का अभ्यास नहीं था। वह एक-एक शब्द का अलग-अलग उच्चारण करते हुए पढ़ रहा था - "अपने हृदय में... अशांति मत पैदा होने दो। पिता के यहाँ बहुत स्थान है। मैं वहाँ... तुम्हारे लिए जगह... करने... जा रहा हूँ।"

"इस संसार में तुम्हारा जीवन चाहे किसी दशा में क्यों न कटे, किंतु परम-पिता की मंगलमय भुजाएँ तुम्हारे लिए सदा फैली हुई हैं।" बाइबिल में यह शांतिप्रद और आशाप्रद उपदेश पढ़कर टॉम के हृदय में धीरज आ गया। वह बड़ा पक्का विश्वासी है। कूटिल दर्शनशास्त्र की विषाक्त युक्तियाँ और जटिल विज्ञान के तर्क-वितर्क उसके स्वभाव-सिद्ध विश्वास की जड़ पर कूठार नहीं चला सकते। यह तो वह स्वप्न में भी नहीं सोचता कि बाइबिल की बात भी झूठी हो सकती है। यही कारण है कि हजार निराशा रहने पर भी उसे आशा है, हजार कष्टों के रहते भी उसके हृदय में शांति है। पुस्तक इस समय भी उसके सामने खुली रखी है। उसकी प्रत्येक पंक्ति में अतीत जीवन की सुख-स्मृति जड़ी हुई है। भावी जीवन की सारी आशाएँ उसी पर निर्भर हैं।

इस जहाज के यात्रियों में एक अर्लिस-निवासी धनवान सज्जन थे। वह वारमंट प्रदेश से अपने घर को लौट रहे थे। उनके साथ पाँच-छः वर्ष की एक बालिका और एक आत्मीया रमणी थी। टॉम इस बालिका को बीच-बीच में इधर-से-उधर फिरते देखता था। वह एक जगह नहीं ठहरती थी, इससे वह मन भरकर उसे नहीं देख सकता था। लेकिन बालिका की सूरत इतनी मनोहारी थी कि उसे जो एक बार देखता, उसका जी बार-बार उसे देखने को करता था। बालिका का शरीर शैशव की सुकुमारता और अनुपम सौंदर्य से चमक रहा था। पर सौंदर्य के सिवा इस बालिका में और भी कुछ विशेषताएँ थीं। सौंदर्य से भी अधिक शोभाप्रद किसी अलौकिक माधुर्य से इस बालिका की मूर्ति चमचमा रही थी, जिससे देखने में वह साक्षात् देव-कन्या जान पड़ती थी। उसके मुख पर एक अपूर्व एकाग्रता का भाव था। उस पर एक विलक्षण कांति थी, जिसे देखकर प्रभु के उपासक भावुक व्यक्ति का मन स्वयं मोहित हो जाता था। जो निरे नीरस और भावहीन हैं, उनके नेत्र भी आकर्षित हो जाते थे। यद्यपि उस आकर्षण का मतलब उनकी समझ में नहीं आता था, तथापि उनके हृदय में उस मुख की छाया प्रतिबिंबित होने लगती थी। इन भावों के होते हुए भी बालिका के मुख पर विशेष गंभीरता या विषाद के चिह्न नहीं दीख पड़ते थे, बल्कि वह चपल और खिलाड़ी जान पड़ती थी। वह देर तक एक जगह नहीं टिकती थी। अलमस्त, मन-ही-मन गाती हुई, कभी इधर तो कभी उधर फिर रही थी। पिता और वह आत्मीया रमणी बराबर उसकी ताक में लगे थे। जहाँ वह उनके पास पहुँची कि वे उसे पकड़ लेते थे, पर वह फिर अपने को छुड़ाकर भाग जाती थी, लेकिन वे उसे कहते कुछ नहीं थे। वह सदा ही सादे सफेद वस्त्र पहने रहती थी और मजा यह कि बराबर नाना स्थानों में दौड़-धूप करते रहने पर भी उसके उन स्वच्छ-सफेद वस्त्रों में दाग या धब्बा नहीं लगने पाता था।

जहाज के मल्लाह और खलासी अपने-अपने कामों में लगे हुए हैं। बालिका एक-एककर हर एक के पास जाकर खड़ी होती है, सरल नेत्रों से उसकी ओर देखती है और सोचती है कि इसे कोई दुःख तो नहीं है, इसे कोई पीड़ा तो नहीं है। बालिका कभी-कभी भीड़ में घुस जाती है और उसे देखकर कितने ही कोमलता-रहित शुष्क अधरों पर स्नेहमयी मुस्कराहट छा जाती है। यदि

कहीं बालिका को जरा भी ठोकर लगी या फिसलने की संभावना हुई, तो तत्काल कितने ही कठोर हाथ उसे पकड़कर उठा लेने के लिए फैल जाते हैं। जब वह सामने से निकलती है तो सब उसके लिए मार्ग छोड़ देते हैं।

टॉम का हृदय स्वभाव से ही कोमल था। सुकुमारता पर मोहित होना सहृदय नीग्रो लोगों का एक जातीय गुण है। पहली बार देखते ही टॉम इस बालिका को मन-ही-मन प्यार करने लगा। वह इस सुकुमारी बालिका को देवदूत समझने लगा। बालिका कभी-कभी जंजीर से बँधे हुए हेली के दासों के पास खड़ी होकर खिन्न-चित्त से उनकी ओर देखती है, उनकी जंजीरों को हाथ में लेकर हिलाती-डुलाती है, अंत में ठंडी साँस लेकर वहाँ से हट जाती है। बालिका की ओर टॉम बड़ी उत्सुकता से देखता था और जब वह पास आती तब उससे बातें करना चाहता था, पर ऐसा करने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी।

बालक-बालिकाओं को खुश करने में टॉम बहुत ही कुशल था। वह तरह-तरह के बाजे, गुड़ियाँ और खिलौने बनाने में बड़ा उस्ताद था। जब वह शेल्बी साहब के यहाँ था तब बालक-बालिकाओं के लिए खिलौने बनाने की सामग्री अपनी जेब में रखता था। उनमें से कुछ चीजें अब तक उसकी जेब में पड़ी थीं।

एक दिन वह बालिका उसके पास आकर खड़ी हो गई। मौका देखकर टॉम बातचीत करने की इच्छा से एक-एक करके जेब से तरह-तरह की चीजें निकालने लगा। बालिका शर्मीली थी। पहले तो वह कुछ न बोली, पर धीरे-धीरे उसके मन में कौतूहल और प्रसन्नता का रंग जम गया। टॉम जब खिलौने बना रहा था, तब वह कुछ दूर बैठी बड़े ध्यान से उसके बनाने के ढंग देख रही थी। जब खिलौने बनकर तैयार हो गए तब टॉम एक-एक करके बालिका के हाथ में देने लगा। बालिका संकोच सहित उसके हाथ से खिलौने लेने लगी। धीरे-धीरे बालिका की लज्जा दूर हुई और दोनों में परिचितों की भाँति बातें होने लगीं।

टॉम ने पूछा - "तुम्हारा क्या नाम है?"

बालिका बोली - "मेरा नाम इवान्जेलिन सेंटक्लेयर है। पर मुझे बाबा तथा सब लोग 'इवा' कहते हैं। तुम्हारा क्या नाम है?"

टॉम - "मेरा नाम तो टॉम है, किंतु कैंटाकी में मुझे लड़के 'टॉम काका' कहते थे।

बालिका - "तो मैं भी तुम्हें टॉम काका ही कहा करूँगी। टॉम काका, तुम्हारा नाम तो बड़ा प्यारा है। अच्छा काका, तुम कहाँ जाओगे?"

टॉम - "मुझे मालूम नहीं, कहाँ जाना होगा।"

बालिका - (आश्चर्य करके) "ऐं! अपने जाने का ठिकाना भी नहीं जानते?"

टॉम - "दास-व्यवसायी मुझे जिसके हाथ बेचेगा, उसी के घर जाऊंगा और मुझे यह क्या मालूम कि वह किसके हाथ बेचेगा?"

बालिका - "मेरे पिता तुम्हें खरीद सकते हैं। हमारे यहाँ तुम सुख से रहोगे। मैं अभी जाकर पिता से तुम्हें खरीद लेने के लिए कहूँगी।"

टॉम - "अच्छा, कहना।"

इन बातों के जरा ही देर बाद जहाज लकड़ी लाने के लिए रुक गया। कुलियों के काम में सहायता करने के लिए टॉम किनारे पर जा रहा था। इसी समय इवा अपने पिता से बातें करते-करते अकस्मात् जहाज से नदी में गिर पड़ी। उसका पिता उसके पीछे कूदने ही वाला था कि पीछे से एक आदमी ने उसे पकड़ लिया। इधर टॉम ने इसके पहले ही पानी में कूदकर इवा को पकड़ लिया था। इवा धारा में कुछ दूर बह गई थी, पर टॉम अच्छा तैराक था। वह उसे पकड़कर तैरकर जहाज पर चढ़ आया। इवा बेहोश हो गई थी। उसके पिता उसे कमरे में ले जाकर होश में लाने के लिए नाना प्रकार के उपाय करने लगे। इधर भिन्न-भिन्न कमरों से स्त्रियों का दल सैंटक्लेयर के कमरे में पहुँचकर बनावटी सहानुभूति प्रकट करने लगा। इस सहानुभूति से होना तो क्या था, उल्टा इवा को होश में लाने के कार्य में कुछ देर के लिए व्याघात पहुँचा। वास्तव में इस संसार में बहूँतरे रोगियों को रोग-शैया पर इन सब परोपकारियों के ही कारण असामयिक मृत्यु का शिकार बनना पड़ता है।

इवा बहुत शीघ्र होश में आ गई, पर उसके शरीर में कमजोरी कई दिनों तक बनी रही। चलते-चलते जहाज अर्लिस पहुँचा। यात्रियों ने अपना सामान बाँधना आरंभ किया। टॉम ने नीचे के गोदाम से देखा कि इवान्जेलिन का हाथ पकड़े हुए सैंटक्लेयर साहब हेली के पास खड़े बातें कर रहे हैं और जब-तब हेली की बातें सुनकर हँस पड़ते हैं। कुछ पल के बाद सैंटक्लेयर ने कहा - "अजी, समझ लिया कि तुम्हारा यह काला गुलाम बड़ा धर्मात्मा है। देश भर का सारा ईसाई धर्म इसी काले चमड़े में भरा है। अब यह बोलो कि इस मरक्को चमड़े में भरे हुए ईसाई धर्म के क्या दाम लोगे? ज्यादा-से-ज्यादा मुझे कितना ठगना चाहते हो?"

हेली - "साहब, आपसे हम मजाक नहीं करते। तेरह सौ से एक कौड़ी कम नहीं लेंगे। आप के सर की कसम खाकर कहते हैं, हमें इन तेरह सौ में कोई बड़ा नफा नहीं है, लेकिन..."

सैंटक्लेयर - "लेकिन जान पड़ता है, आप तेरह सौ में बेचकर मुझपर बड़ी मेहरबानी कर रहे हैं।"

हेली - "यह बालिका इस गुलाम को खरीदने के लिए आग्रह कर रही है, इसी से तेरह सौ में

दे देते हैं।"

सेंटक्लेयर - (हँसते हुए) "जी हाँ, तो यह कहिए न कि मुझपर नहीं, आप इस लड़की पर मेहरबानी कर रहे हैं। खैर, तो अब यह बताइए कि टॉम के ठीक दाम क्या लीजिएगा?"

हेली - "साहब, जरा एक बार माल की तो परख कीजिए। कैसा हट्टा-कट्टा-चौड़ा मजबूत आदमी है! क्या बड़ी खोपड़ी है! जान पड़ता है, अक्ल से भरी हुई है। आपकी सौगंध, चीज आला दर्जे की है। ऐसे गुलामों के बड़े दाम होते हैं। अपने मालिक का सारा काम यह बड़ी ईमानदारी से करता था। बड़े काम का आदमी है। एक बार इसके पहले मालिक का सर्टिफिकेट देख लीजिए, फिर कहिएगा। यह बड़ा धर्मात्मा है। इसे कैंटाकी भर के गुलाम अपना पादरी मानते थे।"

सेंटक्लेयर - (हँसते हुए) "खूब तब तो! हम इसे अपने घर का पादरी बना लेंगे। लेकिन हमारे यहाँ धर्म का आडंबर बहुत थोड़ा है। इससे शायद पादरी साहब के लिए काम न मिले।"

हेली - "आप तो सभी बातें मजाक में उड़ा देते हैं। हम आपसे क्या कहें?"

सेंटक्लेयर - "यह कैसे? हमने आपकी कौन-सी बात मजाक में उड़ाई है? आप ही ने तो अभी फरमाया कि यह आदमी पादरी का काम करने की योग्यता रखता है। हाँ, जरा दिखलाइएगा तो इसके पास किस विश्वविद्यालय या किस लर्डबिशप का सर्टिफिकेट है?"

इसी समय इवान्जेलिन ने चुपके से अपने पिता के कान में कहा - "बाबा, इसे खरीद लो। ये थोड़े-से रुपए तुम्हारे लिए कुछ नहीं हैं। इस आदमी को खरीदने की मेरी बड़ी इच्छा है।"

इस पर सेंटक्लेयर ने इवा की ठोड़ी पकड़कर हँसते हुए पूछा - "क्यों इवा, इसका क्या करोगी? क्या इसे घोड़ा बनाकर खेलेगी?"

इवा - "बाबा, मैं इसे सुख से रखूँगी। इसका दुःख दूर करने के लिए इसे खरीदना चाहती हूँ।"

सेंटक्लेयर - "वाह, यह नई बात सुनी। इसे सुखी करने के लिए तू खरीदना चाहती है!"

इतने में हेली ने शेल्वी साहब के दिए हुए टॉम के सर्टिफिकेट को निकालकर सेंटक्लेयर के हाथ में दिया। सेंटक्लेयर ने अक्षर देखकर कहा - "लिखावट तो भले आदमी की-सी है।" फिर सर्टिफिकेट में 'धर्म' शब्द देखकर हँसते हुए कहा - "अरे भाई, इस धर्म के मारे तो देश का सत्यानाश हो जाएगा। अब इस देश की खैर नहीं जान पड़ती। क्रिश्चियन-धर्मावलंबी भाईयों के धर्म-व्यवहार से तो नाकों दम आ ही रहा था, अब ये गुलाम भी धार्मिक बनने चले तो कहिए कुशल कहाँ! हमारे देश में धार्मिक पादरी, व्यवस्थापिका-सभा के धार्मिक मानवीय सदस्य, धार्मिक शासन-कर्ता, धार्मिक वकील और धार्मिक विचारपति, नित्यप्रति धर्म का ढोंग रच कर



देश भर के लोगों को चकमा दे रहे हैं। नित नई जालसाजी और फरेब के फंदे देखने में आते हैं। पर ये गुलाम भी अब धार्मिक बनने चले हैं, यह बड़ी कठिनाई है। लगता है, अब धार्मिक बनकर काम करना मुश्किल हो जाएगा। आजकल तो गोरे इन गुलामों के लिए धर्म का काम करते हैं। इससे काम की कमी नहीं, परंतु अब जब ये गुलाम भी धार्मिक होने लगे तो देश में ऐसा कोई आदमी ही नहीं रह जाएगा, जिस पर धर्म की मूठ चलाई जा सके। खैर, बोलिए इस धर्म की आप क्या कीमत चाहते हैं? क्या धर्म का भाव आजकल कुछ बढ़ गया है? किसी समाचार-पत्र में तो नहीं देखा। हाँ, तो कहिए जनाब, इसके लिए क्या भेंट चढ़ानी पड़ेगी?"

हेली - "असल में आप इसे खरीदना नहीं चाहते, यों ही मजाक कर रहे हैं। हम आपकी इस बात को मानते हैं कि इस दुनिया में कितने ही आदमी धर्म का जामा पहनकर लोगों पर हाथ साफ करते हैं, लेकिन सच्चे आदमी भी दुनिया से निर्बीज नहीं हुए हैं। जो सच्चा धार्मिक है, वह दुनिया को कभी धोखा नहीं देता। आप इस सर्टिफिकेट पर गौर क्यों नहीं करते? टॉम के पहले मालिक ने इसकी कितनी बड़ाई की है, देखिए!"

सेंटक्लेयर - "यदि आप निश्चयपूर्वक मुझसे यह कह सकें कि धार्मिक आदमी को खरीदने से परलोक में भी मैं उसके धर्म का मालिक हो सकूँगा, उसके धर्म का फल भोग सकूँगा, तो मैं धर्म के नाम पर तुम्हें कुछ अधिक रुपए दे सकता हूँ।"

हेली - "वाह साहब, भला ऐसा भी कहीं हुआ है? परलोक में एक के धर्म का मालिक दूसरा कैसे हो सकता है? जीते-जी यह आपका गुलाम है, इसलिए आपका माल है, लेकिन परलोक में इसका धर्म आपका माल कैसे होने लगा? हम तो ऐसा ही समझते हैं। आपको अधिक पूछताछ करनी हो तो पादरियों से सलाह कीजिए।"

सेंटक्लेयर - मिस्टर हेली, तब देखिए, जब इसका धर्म इसी के साथ रहेगा, मेरा उससे कोई संबंध न होगा, तब उस धर्म के लिए अधिक दाम माँगना अनुचित है।"

इतना कहकर सेंटक्लेयर ने हँसते हुए हेली के हाथ में नोटों की गड़्डियाँ पकड़ा दीं। कहा - "लीजिए, गिन लीजिए।"

हेली ने नोट गिनकर प्रसन्नापूर्वक जेब के हवाले किए और बिक्री का दस्तावेज लिखकर सेंटक्लेयर को दे दिया। सेंटक्लेयर इवा को साथ लेकर टॉम के पास आया और मुस्कराते हुए उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा - "आज से मैं तुम्हारा मालिक हूँ। कहो, अपने नए मालिक को कैसा समझते हो?"

टॉम ने घूमकर ज्यों ही सेंटक्लेयर की ओर देखा, उसकी आँखों से आनंद के आँसू टपकने लगे। वास्तव में जो कोई सेंटक्लेयर के सदा हँसमुख, प्रसन्न, स्नेहमय चेहरे की ओर देखता था, उसका हृदय आनंद से भर जाता था। टॉम ने कुछ देर बाद सेंटक्लेयर के प्रश्न के उत्तर में कहा

- "श्रीमान्, परमात्मा से आपके कल्याण के निमित्त प्रार्थना करता हूँ। वह आपको सुखी रखे।"

सेंटक्लेयर ने टॉम से पूछा - "तुम्हारा नाम टॉम है न! तुम गाड़ी हाँकना जानते हो?"

टॉम ने कहा - "मैं अपने पुराने मालिक शेल्वी साहब के यहाँ बराबर गाड़ी चलाता था।"

यह सुनकर सेंटक्लेयर ने कहा - "तो ठीक है, तुम्हें गाड़ी हाँकने का काम दिया जाएगा। लेकिन देखना, बिना जरूरत सप्ताह में एक बार से ज्यादा शराब मत पीना। रोज शराब पीकर गाड़ी हाँकोगे तो किसी-न-किसी दिन जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

पहले तो टॉम को यह बात सुनकर बड़ा अचंभा हुआ, फिर उसने दुःख भरे शब्दों में बड़ी नम्रता से कहा - "जी, मैं शराब नहीं पीता"

सेंटक्लेयर ने टॉम के ये कातर वचन सुनकर कहा - "हाँ,... मैंने सुना है कि तुम शराब नहीं पीते। यह बहुत अच्छा है। पर तुम्हारे दुःखित होने की कोई बात नहीं है। मैंने तो यों ही कह दिया था। तुम्हारी बातचीत से मालूम होता है कि तुम सब काम अच्छी तरह निभा लोगे।"

टॉम ने कहा - "जी, कोई भी काम हो, उसे मैं जी से करने की चेष्टा करता हूँ।"

इसी बीच इवान्जेलिन ने टॉम का हाथ पकड़कर कहा - "टॉम काका, तुम्हें कोई डर नहीं। हमारे यहाँ तुम बड़े आनंद से रहोगे। बाबा कभी किसी को कष्ट नहीं देते। बाबा से कोई बात करने आता है तो वे हँसते ही रहते हैं।"

सेंटक्लेयर ने प्यार से इवा के सिर पर हाथ फेरकर कहा - "इस प्रशंसा के लिए मैं तेरा कृतज्ञ हूँ।"

## 17. नई मालकिन

यहाँ से टॉम के जीवन के इतिहास के साथ और भी कई व्यक्तियों का संबंध आरंभ होता है। अतः उन लोगों का कुछ परिचय देना आवश्यक है।

अगस्टिन सेंटक्लेयर के पिता लूसियाना के एक रईस और जमींदार थे। इनके पूर्वज कनाडा-निवासी थे। अगस्टिन के पिता जन्मभूमि छोड़कर लूसियाना चले आए और वहाँ कुछ जमीन लेकर बहुत से गुलामों से काम लेने लगे और धीरे-धीरे एक अच्छे जमींदार हो गए। अगस्टिन के

चाचा वारमंट में जा बसे और वहाँ खेती करने लगे।

अगस्टिन की माता का जन्म हिउग्नो संप्रदाय के एक फ्रांसीसी उपनिवेशी के घर हुआ था। अगस्टिन का शरीर जन्म से ही अपनी माता की भाँति दुर्बल था। वारमंट की जलवायु बड़ी अच्छी समझी जाती थी, इससे बहुत बचपन में ही अगस्टिन को अपने चाचा के यहाँ भेज दिया गया था।

अगस्टिन सेंटक्लेयर में बचपन से ही कोमलता, उदारता और दयालुता के चिह्न स्पष्ट झलकते थे। ज्यों-ज्यों सेंटक्लेयर की उम्र बढ़ती गई, उसके इन गुणों में भी वृद्धि होती गई। उसकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी। उदारता और महत्ता उसके हृदय के स्वाभाविक गुण थे। क्षुद्रता और नीचता आदि भाव उसके पास नहीं फटकने पाते थे। काम-काज में उसका मन नहीं लगता था। इससे उसके पिता ने सारे काम का भार अपने दूसरे लड़के अलफ्रेड पर डाल दिया था।

अगस्टिन की विश्वविद्यालय की पढ़ाई शीघ्र ही समाप्त हो गई। फिर उसके जीवन में उस लहर का संचार हुआ, जो एक बार सबके हृदयों को चंचल बना देती है। उस लहर से उसका प्रेमी हृदय नवीन अनुराग से उमड़ उठा, उसके जीवन-सरोवर में नया कमल खिल गया। जो हो, रूपक जाने दीजिए, संक्षेप में सुनिए, क्या बात थी। सेंटक्लेयर एक बुद्धिमती, रूप-गुणशीला रमणी के विशुद्ध प्रेम का पात्र हो गया। दोनों का विवाह तय हो गया। युवक अपने घर बड़े उत्साह से विवाह की तैयारियाँ करने लगा। इसी बीच उसकी प्रेमिका के अभिभावक का पत्र आया। लिखा था:

'यह पत्र तुम्हारे पास पहुँचने के पहले ही तुम्हारी मनोनीता कुमारी किसी दूसरे की पत्नी हो जाएगी।'

इसी के साथ सेंटक्लेयर के वे सब प्रेम-पत्र भी वापस आए, जो समय-समय पर उसने अपनी प्रेमिका कुमारी को भेजे थे।

इस पत्र को पाकर सेंटक्लेयर दुःख और आहत अभिमान से पागल-सा हो गया। हृदय की अनिवार्य यंत्रणा के वेग से अधीर होकर उसने निश्चय किया कि अब सारी पिछली बातों को हृदय से एकदम भुला देगा। अदम्य अभिमान के कारण उसने इस बेढंगी कार्रवाई का कारण भी न पूछा। उस पत्र के पाने के दो सप्ताह के भीतर ही उसी नगर के एक धनवान वणिक की अति रूपवती कन्या से उसका विवाह ठीक हो गया। यह संसार एकमात्र खरीद-फरोख्त का बाजार है। विशुद्ध प्रेम और अकृत्रिम परिणय का सौदा इस बाजार में बहुत कम होता है, शायद ही कभी होता हो। अगस्टिन इसका अपवाद न था। उसे लाचार होकर संसार-प्रचलित क्रय-विक्रय की प्रथा का अवलंबन करना पड़ा। देखते-देखते उसका विवाह हो गया। जिस स्त्री से सेंटक्लेयर का विवाह हुआ था, उसकी जमा-पूँजी बस रुपया और सौंदर्य, यही दो चीजें थीं।

विवाह के उपरांत नव-दंपति इष्ट-मित्रों के बीच हँसी-खुशी में दिन बिताने लगे।

किंतु एक महीना भी न होने पाया था कि एक दिन अगस्टिन के नाम एक पत्र आया। पत्र के सिरनामे पर वही परिचित अक्षर थे। पत्र देखकर सेंटक्लेयर का मुँह पीला पड़ गया। काँपते हाथों से उसने पत्र लिया। जिस समय सेंटक्लेयर को पत्र मिला था, उस समय मित्रों से उसका घर भरा हुआ था। वह एक आदमी से हँस-हँसकर बातें कर रहा था। ज्यों-त्यों अपनी बातें समाप्त करके वह चुपके से निकल पड़ा। एकांत में जाकर उसने पत्र खोला। हाय! आज इस पत्र को पढ़ने से ही क्या लाभ है?

वह पत्र सेंटक्लेयर की पूर्व प्रेमिका के पास से आया था। उसे पढ़कर विवाह का पूरा रहस्य मालूम हो गया।

पहले जिस अभिभावक का उल्लेख किया गया है, उस नर-पिशाच ने अपनी अधीनस्थ इस कुमारी को अपने पुत्र के साथ ब्याहने की बड़ी चेष्टा की; पर जब कन्या किसी तरह राजी न हुई तब वह उस पर मनमाने अत्याचार करने लगा। इससे भी जब सफलता न मिली, तो इस दगाबाज ने ऊपरवाली चाल चलकर सेंटक्लेयर से उसका पवित्र नाता तोड़ दिया। इधर सेंटक्लेयर का पत्र न पाने के कारण वह दिन-पर-दिन चिंतित रहने लगी। पत्र पर पत्र लिखे, पर उत्तर न मिला। हजार बार सोचा, पर कोई कारण समझ में नहीं आया। धीरे-धीरे उसके मन में तरह-तरह के संदेह और आशंकाएँ उठने लगीं। इसी सोच में वह दिन-पर-दिन सूखने लगी। अंत में एक दिन उस पापी अभिभावक की शठता उसे मालूम हो गई। वह जान गई कि इस नराधम ने उनके पारस्परिक प्रेम में बाधा डालने की कुचेष्टा की है।

पत्र पढ़कर सेंटक्लेयर को सब बातों का पता चला। पत्र का अंतिम भाग आशापूर्ण वाक्यों और प्रेमोक्तियों से भरा हुआ था। रमणी ने लिखा था- "मैं जीते-जी तुम्हारी ही हूँ।" अभागा युवक उसे पढ़कर छटपटाकर रह गया। उसे मौत से भी अधिक दुःख हुआ। पर क्या करता! सोचा, अब दुःख करने से पुरानी बात नहीं लौटती। उसने तुरंत उत्तर दे दिया। लिखा:

"तुम्हारा पत्र मिला, किंतु समय पर नहीं। अब मिलना न मिलना दोनों बराबर है। मुझे जो खबर मिली थी, उसे मैंने सच मान लिया। मैं उस समय पागल-सा हो गया था। मेरा विवाह हो गया। जो कुछ होना था, हो गया। कुछ भी बाकी नहीं रहा। अब सब बातें मन से भुला दो। जो हो गया सो हो गया।"

इस घटना से सेंटक्लेयर का सुख-स्वप्न भंग हो गया। उसका प्रेमी हृदय शुष्क हो गया। उस काल्पनिक सुख-शांति-पूर्ण संसार को कल्पना से बिना कर देने पर सेंटक्लेयर को प्रकृत संसार-पथ का पथिक होना पड़ा। वह कल्पनानुरंजित संसार यथार्थ संसार से कितना भिन्न है, इसका अनुभव उस संसार में प्रवेश किए बिना नहीं हो सकता।

उपन्यासों में प्रणय-निराशा और मृत्यु मानों एक साथ ही डोर में बँधे रहते हैं। ज्यों ही कोई प्रणय से निराश होता है, तुरंत मृत्यु महारानी पहुँचकर उसके भग्न हृदय की दारुण जलन को सदा के लिए ठंडा कर देती है।

परंतु प्रकृत जीवन और उपन्यास में बड़ा भेद है। प्रकृत जीवन में उपन्यास की भाँति मृत्यु इतनी पास नहीं खड़ी रहती। संसार में नित्य कितने ही लोगों का प्रणय टूटता है, पर कितने आदमी हैं, जो उसके लिए प्राण देते हैं? जीवन चारों ओर से दुःखों और यंत्रणाओं से घिर जाता है, सारी आशाओं पर पानी फिर जाता है। हृदय घोर निराशा में डूब जाता है। इतने पर भी मनुष्य नहीं मरता। जैसे समय पर पहले खाता-पीता था, काम करता था, सोता-घूमता था, वैसे ही अब भी सारे-के-सारे काम करता है। अगस्टिन के हृदय को बहुत गहरी चोट लगने पर भी संसार की इसी गति के अनुसार उसे काम करने पड़ते थे। किंतु उसकी पत्नी मेरी योग्य होती तो उसका अंधकारमय जीवन फिर भी प्रकाशमान हो सकता था, पर मेरी की अदूरदर्शी दृष्टि अगस्टिन के हृदय तक न पहुँचती थी। उसने यह बात जानने की कोशिश तक नहीं की कि उस हृदय पर कोई घाव लगा है। हम पहले ही कह आए हैं कि विप्ल संपत्ति और रूप-लावण्य के सिवा मेरी में और कोई भी गुण न था। पर इन दोनों में एक भी गुण जी की जलन को ठंडा नहीं कर सकता था, हृदय के घाव को नहीं भर सकता था।

पत्र पाने के बाद अगस्टिन एक निर्जन कमरे में जाकर लेट गया। बड़ी देर के बाद पत्नी ने आकर पूछा - "तुम्हें क्या हो गया है?"

सेंटक्लेयर ने कहा - "मेरा सिरदर्द कर रहा है।"

बुद्धिमती मेरी ने इसी को सच मान लिया, फिर कोई और बात न पूछकर औषधि की व्यवस्था कर दी। किंतु वह सिरदर्द क्या एक दिन का था? उसके बाद अक्सर सेंटक्लेयर को उसी प्रकार सिरदर्द हुआ करता था। जब देखते-देखते कई दिन बीत गए, तब एक दिन मेरी ने कहा - "विवाह के पहले नहीं जानती थी कि तुम ऐसे रोगी हो। मैं देखती हूँ कि तुम्हें तो बराबर ही सिरदर्द हुआ करता है। मेरे फूटे भाग! अभी हाल में हम लोगों का विवाह हुआ है और अभी से मुझे लोगों के घर अकेले घूमने जाना पड़ता है। तुम साथ नहीं जा सकते। मुझे बड़ा नागवार मालूम होता है।"

पत्नी की मोटी बुद्धि देखकर पहले-पहल तो सेंटक्लेयर मन-ही-मन संतुष्ट हुआ, परंतु जब विवाहित जीवन के कुछ आरंभिक दिन बीत गए और आदर-सत्कार का बंधन कुछ ढीला पड़ने लगा, तब सेंटक्लेयर ने देखा कि रूप और गुण दोनों एक साथ नहीं रहते और लावण्य तथा सौंदर्य मनुष्य को अधिक दिनों तक सुख नहीं दे सकते। उनका आनंद शीघ्र ही फीका पड़ जाता है। उसने अनुभव किया कि ऐश्वर्य की गोद में पली हुई और पिता की लाडली सुंदरी से इस जीवन-यात्रा में सुख पाने की कोई संभावना नहीं है। जिसे लोग प्रेम कहते हैं, उस प्रेम की मात्रा मेरी के हृदय में एक तो थी ही बहुत थोड़ी, और जो नाममात्र को थी भी वह तो अपने ही ऊपर

थी, दूसरों पर नहीं। मेरी अपने पिता की इकलौटी बेटी थी। पिता के घर नौकर-चाकरों तथा कुटुंबियों पर हुकूमत करती आई थी। उसे जब जिस बात की चाह होती थी, वह तुरंत पूरी होती थी। उसने जब चाहा, वह सुलभ हो या दुर्लभ, पिता ने उसे देकर राजी किया। दास-दासियों पर वह जैसा रौब-दाब रखती थी और दबाव डालती थी, उसका ठिकाना न था। वे बेचारे हर घड़ी मालिक की लड़की को खुश करने की चिंता में लगे रहते थे। कहीं जरा-सी भी भूल हो जाती थी, तो वह उन्हें बड़ा कठोर दंड देती थी। ऐसी दशा में पलकर मेरी का हृदय केवल अहमन्यता और स्वार्थपरता का घर हो गया था। अपने सुख के सिवा उसे और कुछ सुहाता ही न था। अपनी बात के सामने उसे पल भर के लिए भी दूसरे की बात का ध्यान न आता था। साथ ही उसे अपने परम सुंदरी होने का पूरा भान था।

उसका विचार था कि यदि वह असामान्य रूपवती न होती तो लुसियाना प्रदेश के असंख्य नवयुवक उससे विवाह करने के लिए इतनी व्याकुलता क्यों दिखाते? पर मूल कारण कुछ और ही था। असल बात यह थी कि उससे विवाह करने की इच्छा रखनेवाले युवक यह सोचकर उसके आगे शीश झुकाते थे कि जो उससे विवाह करेगा, वही उसके पिता के अपार धन का मालिक होगा। मेरी अपने स्वामी का बड़ा सौभाग्य समझती थी कि उसे उस जैसा स्त्रीरत्न मिला। स्वामी के साथ व्यवहार में भी उसका यह आंतरिक विश्वास पग-पग पर झलकता था। कभी-कभी वह बातों-बातों, में बड़े साफ शब्दों में, स्वामी से यह कह भी डालती थी।

ऐसी स्त्री के साथ रहकर गृहस्थी चलाना सेंटक्लेयर के लिए बड़ा कठिन हो गया। एक ओर तो वह अपनी पूर्व प्रेमिका को अपने हाथों दिए आघात का स्मरण करके दुःखी हो रहा था, अपने को मन-ही-मन बराबर धिक्कारता था और दूसरी ओर इसी समय श्रीमती मेरी महारानी के वचन-बाण उसके हृदय को बँधते थे। इससे वह प्रायः काम का बहाना करके घर से चला जाया करता था। पर ऐसी स्वार्थ-परायण स्त्री सदा स्वामी के अंदर का सारा प्रेम सोखने की इच्छा किया करती है। जो स्त्री स्वामी को प्यार करना नहीं जानती, वह उतना ही अधिक स्वामी का प्रेम चाहती है। अतः सेंटक्लेयर को घर से भागकर भी छुटकारा नहीं मिलता था।

विवाह के एक साल बाद मेरी को एक कन्या हुई। इस कन्या का मुख-कमल देखते ही दयालु सेंटक्लेयर का हृदय गंभीर संतान-वात्सल्य से भर गया। वह कन्या ज्यों-ज्यों बढ़ने लगी, सेंटक्लेयर का प्रेम भी उस पर बढ़ता गया। किंतु सेंटक्लेयर का इस कन्या को प्राणों से अधिक प्यार करना उसकी स्त्री मेरी को असह्य हो गया! वह मन-ही-मन विचार करने लगी कि सेंटक्लेयर के हृदय में एक तो यों ही प्रेम नहीं है, फिर मुश्किल से जो थोड़ा बहुत था भी, सो वह इस कन्या ने ले लिया। मैं तो अब स्वामी के प्रेम से बिल्कुल ही खाली रह गई। यह सब सोचकर वह कन्या का जैसा चाहिए, वैसा लालन-पालन नहीं करती थी। कन्या के जन्म लेने के उपरांत मेरी को प्रायः सिरदर्द बना रहता था। वह सदा पलंग पर पड़ी रहती थी। कन्या के पालन-पोषण का भार दास-दासियों के जिम्मे कर दिया गया। बीच-बीच में सेंटक्लेयर स्वयं उसको सँभाल लिया करता था।

चार-पाँच वर्ष की हो जाने पर बालिका के प्रत्येक कार्य और आचरण से विशेष दया, स्नेह और ममता का भाव प्रकट होने लगा। सेंटक्लेयर ने कन्या की ऐसी कोमल प्रकृति और सहृदयता देखकर अपनी माता के नाम पर उसका नामकरण किया। सेंटक्लेयर की जननी बड़ी दयालु थी। दूसरे का जरा भी दुःख देखकर उसका हृदय भर आता था। अगस्टिन अपनी माता पर असीम श्रद्धा और भक्ति रखता था। उसकी माता का नाम इवान्जेलिन था। इससे उसने अपनी कन्या का भी वही नाम रखा।

इधर मेरी की हालत सुनिए। उसे नित्य एक नया मन गदंत रोग होने लगा। दिन भर अलहदी की तरह पलंग पर पड़े-पड़े शरीर में पीड़ा होने लगती थी और वह सोचती थी कि उसे कोई नया रोग हो गया है। उन रोगों की चिकित्सा और सेवा उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं होती, इसकी उसे सदा ही शिकायत बनी रहती और इसके लिए वह सदैव स्वामी पर चिड़चिड़ाया करती। कभी-कभी अभिमान के वशीभूत होकर रोने लगती और कभी अपने भाग्य को कोसती। वह अपने मन में इसे केवल विधि की विडंबना ही समझती थी कि जो उसकी-सी रूपवती, गुणवती, पुण्यवती और बुद्धिमती नारी को ऐसी दुरवस्था में पड़ना पड़ा। कभी-कभी तो ऐसा होता था कि किसी-किसी मनोकल्पित रोग के कारण वह लगातार तीन-तीन, चार-चार दिन तब बिस्तर न छोड़ती थी। इसलिए घर का सब काम दास-दासियों के ही भरोसे था। इसके सिवा इवा का भी लालन-पालन अच्छी तरह न होने के कारण वह भी कुछ दुबली हो गई थी। यह देखकर सेंटक्लेयर घर के प्रबंध एवं इवा के लालन-पालन के लिए वारमंट से अपने चाचा की लड़की मिस अफिलिया को लाने के लिए वारमंट रवाना हो गया। जहाज में सेंटक्लेयर के साथ जिस महिला की बात पहले कही गई है, वह मिस अफिलिया ही थी। उसे साथ लेकर अगस्टिन इस जहाज में घर लौट रहा था।

चलते-चलते जहाज नवअर्लिस आ पहुँचा। इन लोगों के उतरने के पहले मिस अफिलिया के संबंध में दो-एक बातें कहना उचित जान पड़ता है। मिस अफिलिया की अवस्था 45 वर्ष की है। घर के कामकाज में वह बड़ी होशियार है। उसके हर काम से उसकी सहनशीलता और फुर्तीलेपन का परिचय मिलता है। उसके सारे काम और व्यवहार नियमपूर्वक तथा उत्कृष्ट प्रणाली एवं परिपाटी के होते हैं। काम के लिए यदि वह कोई नियम बना लेती है तो उसे कभी नहीं तोड़ती। नियम की तो वह बड़ी ही पक्की है। असावधानी को वह बहुत बड़ा पाप समझती है। वह औरों को भी किसी काम में लापरवाही करता देखकर बड़ी झुंझलाती और उनपर घृणा प्रकट किया करती है। कर्तव्य-पालन में वह बड़ी कठोर है। जिस काम को वह अपना कर्तव्य समझती है, उसे पूरा करने में कोई कसर नहीं रखती। वह सदा विवेक से काम लिया करती है। यदि उसे 'विवेक की दासी' कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी।

वास्तव में अंग्रेज-ललनाओं में बहुतेरी विवेक के वश में होती हैं, पर उनका वह विवेक-यंत्र अंकुश की भाँति उन्हें चलाता है। मनुष्य-समाज में दो तरह के प्राणी दिखाई पड़ते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो केवल कर्तव्य मानकर विवेक के आदेश का पालन तो करते हैं, पर उसका पालन करने से उनके हृदय में आनंद की धारा नहीं बहती। कुछ ऐसे होते हैं, जो हृदय के वेग में

पड़कर विवेक के आदेश पालन करने में उन्मत्त हो जाते हैं। पहली प्रकार के विवेक का आदेश लोहे के चने चबाने से भी कठिन काम है। जो लोग पहली प्रकार के विवेक के आदेश पर काम करते हैं, उन्हें दुनियाँ कर्तव्य-परायण कहती है। पर दूसरी प्रकार का विवेक मनुष्य को कर्तव्य-प्रमत्त बना देता है। ऐसी दशा में विवेक और आवेग इन दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता। महाराजा जयसिंह को कर्तव्य-परायण कहा जा सकता है, पर वह कर्तव्य-मत अथवा कर्तव्य-नेता कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते। दूसरी पवित्र श्रेणी में बुद्ध, ईसा और चैतन्य आदि के पवित्र नाम गिनाने योग्य हैं। कर्तव्य-परायण मनुष्य मशीन की भाँति कर्तव्य के अनुरोध का पालन करता है, परंतु कर्तव्य-मत्त व्यक्ति हृदय के उमड़े हुए वेग से तन्मय होकर कर्तव्य को पूरा करता है।

मिस अफिलिया कर्तव्य-परायण थी। हम उसे कर्तव्य-मत्त नहीं समझते। कर्तव्य-पालन में वह कभी पीछे नहीं हटती, दुर्गम पर्वत उसके कर्तव्य-मार्ग में कभी बाधा नहीं डाल सकता। अगाध समुद्र या प्रचंड अग्नि कर्तव्य-पालन से विमुख नहीं कर सकती। हृदय की अनिवार्य निर्बलता के साथ वह सदा घोर संग्राम किया करती थी। यदि वह उस विकट संग्राम में कभी हार जाती तो अपनी निर्बल प्रकृति का ध्यान करके बहुत खिन्न होती थी।

अतः इन कारणों से उसका हार्दिक धर्म-विश्वास उसे प्रसन्न बनाकर उल्टा कभी-कभी उसके अंतःकरण को विषाद के अंधकार से पूर्ण कर देता था।

पर बड़ा आश्चर्य तो यह देखकर होता था कि अफिलिया जैसी कर्तव्य-परायण, धीर-गंभीर प्रकृतिवाली और विवेकशील स्त्री, चंचलमति अगस्टिन को प्यार करे। इन दोनों की प्रकृति में जरा-भी समता नहीं थी। दोनों के स्वभाव में 36 का-सा संबंध था। लेकिन मिस अफिलिया लड़कपन से ही बड़े चाव से अगस्टिन को धर्म-शिक्षा दिया करती और अपने सगे छोटे भाई की भाँति उसका दलार करती थी। अगस्टिन का स्वभाव चंचल होने पर भी वह बड़ा स्नेहशील था। इसी से मिस अफिलिया लड़कपन से उसे प्यार करती थी और यही कारण था कि अगस्टिन के प्रस्ताव पर वह तुरंत उसके घर आने को राजी हो गई। अगस्टिन के घर का काम-काज सँभालने तथा इवान्जेलिन के पालन-पोषण का भार उठाने के लिए वह बड़ी खुशी से अगस्टिन के साथ नवअर्लिस आ गई। जहाज नवअर्लिस पहुँचने को हुआ तो मिस अफिलिया बड़ी फुर्ती से माल-असबाब बाँधने लगी। इधर इवा से बार-बार कहने लगी- "तेरी गुड़िया कहाँ है? कैंची कहाँ है! खिलौने कहाँ हैं? अपने सब खिलौने गिन डाल। कितनी लापरवाही रखती है। अभी तक इन चीजों को नहीं गिना?"

इवा ने कहा - "बूआ, अब तो हम लोग घर ही चलते हैं, इन सब चीजों को लेकर क्या होगा?"

अफिलिया - "क्या होगा? घर ले चल, वहाँ ठिकाने से रख देना। बच्चों को अपनी वस्तुएँ



सावधानी से रखनी चाहिए।"

इवा - "बुआ, मुझे यह सब रखना नहीं आता।"

अफिलिया - "अच्छा, तू देख, मैं सब ठीक कर देती हूँ। एक यह तेरा बक्स है। यह खिलौना दो; कैंची तीन और फीता चार। सब चार चीजें हूँ। बेटी, मैं जानती हूँ, तू अकेली अपने बाबा के साथ आती तो ये सब चीजें खो जाती।"

इवा - "हहं, मैंने यों ही कितनी ही बार कितनी चीजें खो दीं और बाबा ने सब चीजें मुझे फिर खरीद दीं।"

अफिलिया - "वाह, कैसी अच्छी बात है। एक बार एक चीज को खो देना और फिर उसी को खरीद लेना।"

इवा - "बुआ, यह तो बड़ी सीधी बात है।"

अफिलिया - "सीधी बात है! यह हद दर्जे की लापरवाही है। घोर लापरवाही।"

यों ही बार-बार "लापरवाही, लापरवाही" करते हुए मिस अफिलिया सारी वस्तुएँ बक्स में भरने लगी। जब बक्स भर गया तो इवा ने कहा - "बुआ, बक्स तो भर गया, अब इसमें और चीजें नहीं समाएँगी। अब क्या करोगी?"

यह सुनकर अफिलिया बोली - "नहीं समाएँगी। जरूर समाएँगी; क्यों नहीं समाएँगी?"

इतना कहकर बक्स के कपड़ों को जोर से दबाने लगी। अफिलिया का रुख देखकर मानो संदूक बेचारा डर गया। अफिलिया ने सारी चीजों को संदूक में रखकर हँसते हुए कहा - "अभी तो संदूक में और भी चीजें रख देने को जगह खाली है। तू इस संदूक पर खड़ी हो जा, मैं चाबी से बंद कर दूँ।"

इस प्रकार अफिलिया संदूक से संग्राम में जीतकर इवा से बोली - "तेरे बाबा कहाँ हैं? जा, उन्हें बुला ला। कह दे, हम लोग तैयार हैं।"

इवा - "बाबा तो नीचे के कमरे में खड़े एक आदमी से बातें कर रहे हैं और नारंगियाँ खा रहे हैं।"

अफिलिया - "जा, दौड़कर बुला ला। जहाज अब घाट-किनारे पहुँचने ही वाला है।"

इवा - "बाबा कभी जल्दी नहीं करते। बुआ, तू इधर आओ। वह देखो, अपना घर दिखाई

पड़ता है।"

अफिलिया - "हाँ, देख लिया। जा, झटपट अपने बाबा को बुला ला। लो, जहाज किनारे आ गया और अगस्टिन अभी भी देर कर रहा है।"

जहाज घाट पर आ लगा। सैकड़ों कुली जहाज पर चढ़ आए। उनमें से एक मिस अफिलिया से बोला - "मेम साहब, अपना बक्स मूझे दीजिए।" दूसरा कुली बोला - "मेम साहब, ये बिस्तरे में उठाता हूँ।" तीसरा बोला - "मेम साहब, यह संदूक मेरे सिर पर उठा दीजिए।" कुलियों का तो यह हाल था और मिस अफिलिया अपनी सारी चीजों को अपने सामने रखकर खड़ी खजाने के संतरी की भाँति पहरा दे रही थी। उसके मुख का रुख और तीव्र दृष्टि देखकर कुली डर के मारे वहाँ से खिसकने लगे। इधर अगस्टिन को देर करते देखकर अफिलिया छटपटाने लगी। कोई पंद्रह मिनट के बाद बिना किसी घबराहट के अगस्टिन ने अफिलिया के पास आकर अन्यमनस्क भाव से पूछा - "बहन, तुम तैयार हो?"

अफिलिया बोली - "मैं एक घंटे से तैयार बैठी हूँ। मैं तुम्हारे देर करने से बहुत उकता रही थी।"

अगस्टिन ने कहा - "उकताने की कौन-सी बात थी! अपनी गाड़ी किनारे खड़ी है। भीड़ छूट जाने दो तो आराम से उतरकर चल चलेंगे।"

इतना कहकर अगस्टिन ने एक कुली से कहा - "अरे, हमारा सामान गाड़ी पर रखवा देना।"

यह सुनकर मिस अफिलिया ने कहा - "मैं उसके साथ जाकर अपने सामने सब चीजें ठीक से गाड़ी पर रखवाती हूँ। तुम यहाँ खड़े रहो।"

अगस्टिन - "तुम्हारे साथ जाने की आवश्यकता नहीं है। यह सब आप ही ठीक से रख देगा। हम लोग साथ ही चलते हैं।"

अफिलिया - "लेकिन यह बैग और बक्स तो मैं कुली को नहीं दूँगी। मैं इन दोनों को स्वयं ही ले चलूँगी।"

अगस्टिन - "अपनी वह उत्तर प्रदेश की चाल छोड़ दो। इस देश की रीति-नीति सीखो। बक्स और बैग तुम ढोओगी तो लोग तुम्हें दासी समझेंगे। डरो मत! सब चीजें इस आदमी को उठाने दो। वह सब चीजें बड़ी सावधानी से गाड़ी पर रख देगा।"

इसी समय इवा बोली - "टॉम कहाँ है?"

अगस्टिन ने उत्तर दिया - "टॉम नीचे है। इवा, टॉम को अपनी माँ के पास ले जाना।"

कहना कि टॉम को गाड़ी हाँकने के लिए लाए हैं। अब उस शराबी कोचवान को गाड़ी नहीं हाँकने दी जाएगी।"

इवा - "बाबा, टॉम बड़ा अच्छा कोचवान रहेगा। वह कभी शराब नहीं पीएगा।"

इसके बाद मिस अफिलिया और इवा को साथ लेकर अगस्टिन जहाज से उतरकर अपनी गाड़ी पर चढ़ा। मिस अफिलिया ने गाड़ी पर चढ़ने के पहले सब चीजें एक-एक करके सँभाल लीं। थोड़ी ही देर में गाड़ी एक सजे-सजाए द्वार पर पहुँच गई। बाहरी दरवाजा पारकर गाड़ी के भीतर पहुँचते ही इवा उतरने के लिए छटपटाने लगी और अफिलिया से बार-बार कहने लगी - "बुआ, देखो, हमारा घर कैसा सुंदर है? तुम्हारे घर ऐसा बगीचा नहीं है।"

अफिलिया मुस्कराकर बोली - "हाँ घर तो सुंदर है, पर ईसाई का-सा घर नहीं जान पड़ता। मालूम होता है, किसी गैर-ईसाई का घर है।"

सैंटकलेयर को अपने लिए 'गैर-ईसाई' शब्द सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। गाड़ी दरवाजे पर लगते ही टॉम सबसे पहले उतरा और घर की शोभा देखकर आश्चर्य से चारों ओर देखने लगा। मिस अफिलिया के साथ सैंटकलेयर के गाड़ी से उतरने पर घर के बहूत-से हब्शी दास-दासी दरवाजे पर आकर जमा हो गए। सैंटकलेयर दास-दासियों पर कभी अत्याचार नहीं करता था। उसके घर इन दास-दासियों को किसी प्रकार की तकलीफ न थी। खाने-पीने का सब तरह से आराम था। इससे उसके लौटने पर सबको विशेष आनंद हुआ। उसका हँसमुख चेहरा देखने के लिए वे सब बड़े उत्सुक थे। इन दास-दासियों में एक लंबा पुरुष था। वह बड़ा ठाट-बाट बनाकर दरवाजे पर सबके आगे आकर खड़ा हुआ। उसके पहनावे और रौब-दाब से लग रहा था कि वह इस घर के गुलामों का सरदार है। अपने पीछे बहूत-से दास-दासियों को एकत्र देखकर, उनपर रौब झाड़ने के लिए उसने तोबड़ा-सा मुँह बनाकर कहा - "अरे काले भाई-बहनों, तुम लोगों की करतूतों से मुझे कभी-कभी बहूत ही शर्मिंदगी उठानी पड़ती है। अपने पैर मिलाकर, एक लाइन में खड़े होओ। आजतक तुम लोगों ने विलायती ढंग पर खड़े होना तक भी नहीं सीखा। तुम लोगों के इस तरह खड़े रहने से मालिक के घर में जाने का रास्ता रुक गया है।"

यह वक्तव्य सुनकर सब दास-दासी एक किनारे हटकर खड़े हो गए।

सैंटकलेयर ने दरवाजे पर पहुँचते ही एडाल्फ नामक इस प्रधान से हाथ मिलाया और उसका नाम लेकर कहा - "एडाल्फ, अच्छे तो हो?"

इस प्रकार सैंटकलेयर द्वारा आदर पाने पर एडाल्फ ने मालिक के स्वागत के लिए जो भाषण रट रखा था, वह सुनाना शुरू किया। एडाल्फ का भाषण सुनकर सैंटकलेयर ने हँसते हुए कहा - "भाषण तो खूब तैयार किया है।"

इतना कहकर वह तुरंत घर में चला गया।

मकान में जाते ही इवा दौड़ती हुई अपनी माँ के कमरे में पहुँची। पलंग पर लेटी अपनी माता के गले से लिपट गई और बार-बार उसका मुख चूमने लगी। पर उसकी माता ने अपने कल्पित रोग के कारण कमजोर बनी रहने की वजह से उसको गोद में तो लिया ही नहीं, बल्कि गले से लिपटकर इवा के बार-बार मुँह चूमने से कुछ झुझलाकर बोली - "जा-जा, बहुत हो गया, बहुत हो गया! ठहर जा, मेरे सिर में दर्द बढ़ जाएगा।"

सेंटक्लेयर ने अपनी स्त्री के कमरे में पहुँचकर उसका मुँह चूमा और मिस अफिलिया की ओर उँगली करके कहा - "प्यारी! देखो तुम्हारी रोग की बात सुनकर अफिलिया बहन आई हैं।"

मेरी पलंग से नहीं उठ सकी। केवल अधखुले नेत्रों से अफिलिया की ओर एक बार देखकर धीमे स्वर में उसका स्वागत किया। सब दासियाँ जब कमरे के द्वार पर आकर खड़ी हुईं तो उनमें मामी नाम की एक दासी के गले लिपटकर इवा उसका मुँह चूमने लगी। उस वृद्ध ने इवा को अपनी छाती से लगाकर उसका मुँह चूमा। उसकी आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे। वह बड़ी चाह से इवा के मुँह की ओर देखने लगी। उसने जिस प्रकार इवा को अपनी छाती से लगाया था, उससे तो यही जान पड़ता था कि वही इवा की माता होगी। कुछ देर के बाद इवा ने मामी की गोद से उतरकर घर की हर दासी का मुख चूमा।

इवा को इस भाँति दासियों का मुँह चूमते देखकर मिस अफिलिया को बड़ा अचंभा हुआ। इस पर वह सेंटक्लेयर से बोली - "अगस्टिन, क्या तुम्हारे इस दक्षिण देश में दास-दासियों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाता है? भाई, हम लोग तो दास-प्रथा के विरोधी होते हुए भी नौकरों को इतना मुँह नहीं लगाते, इतना आदर नहीं देते। हम लोग वेतनभोगी चाकरों को कभी अपने समान नहीं समझते। दास-दासियों पर दया करना उचित है पर मुँह लगाना ठीक नहीं।"

अफिलिया बहन के ईसाई धर्म संबंधी भाषण का स्मरण करके सेंटक्लेयर मन-ही-मन हँसा, पर प्रकट में कुछ नहीं बोला। फिर वह कमरे से बाहर निकलकर मामी, जिमी, पली, सूकी इत्यादि हर एक दासी का हाथ पकड़कर कुशल पूछने लगा। किसी-किसी दासी के गोद के बच्चे के सिर पर हाथ रखकर दलार करने लगा। सेंटक्लेयर के चले जाने पर इवा ने नारंगी की टोकरी उठाकर उसमें से एक-एक नारंगी सब दास-दासियों के बच्चों को दी। उन लोगों को वे खिलौने भी बाँट दिए, जो वह उनके लिए लाई थी। फिर सेंटक्लेयर ने बरामदे में आकर एडाल्फ से कहा - "एडाल्फ, यह जो नया आदमी मेरे साथ आया है, इसका नाम टॉम है। सब पर तुम बड़ी हकूमत दिखाया करते हो, पर देखना, खबरदार, इस आदमी पर कभी रौब न गाँठना। तुम्हारे-जैसे काले बंदरों के मूल्य की अपेक्षा इसके दूने दाम लगे हैं।"

एडाल्फ ने कहा - "सरकार, आप तो मजाक करते हैं।"

सेंटक्लेयर ने एडाल्फ के कोट की ओर देखकर कहा - "वाह-वाह! तुमने मेरा यह कोट कैसे पहन लिया।"

एडाल्फ कुछ शरमाकर बोला - "हज़ूर, इस कोट में ब्रांडी के बहुत दाग लग गए थे। इससे बड़ी बदबू आती थी। मैंने सोचा, अब आप इसे थोड़े ही पहनेंगे। इसे आप जरूर ही फेंक देते, इसी से मैंने पहन लिया।"

एडाल्फ की बात पर सेंटक्लेयर हँसने लगा। इसके बाद वह टॉम को लेकर अपनी स्त्री के कमरे में गया। स्त्री से कहा - "प्यारी, तुम सदा शिकायत किया करती हो कि मैं तुम्हारे आराम का खयाल नहीं करता। यह देखो, तुम्हारी गाड़ी हाँकने के लिए एक अच्छा कोचवान लाया हूँ। यह आदमी कभी शराब मुँह से नहीं लगाता। गाड़ी हाँकने में बड़ा निपुण है। यह इस तरह गाड़ी हाँकेगा कि गाड़ी में चढ़ने पर तुम्हें जरा भी तकलीफ न होगी। आराम से ले जाएंगा।"

सेंटक्लेयर की स्त्री मेरी ने फिर आँखें खोलकर एक बार टॉम की ओर देखा और दबे स्वर से बोली - "कुछ दिन हमारे यहाँ रहा कि शराब पीना सीखा।"

सेंटक्लेयर - "नहीं, यह कभी शराब नहीं पीएगा। यह शराब के पास नहीं फटकता।"

मेरी - "न पीता तो अच्छा ही है। पर मुझे यकीन नहीं आता।"

फिर सेंटक्लेयर ने एडाल्फ को बुलाकर कहा - "एडाल्फ! टॉम को रसोईघर में ले जाओ। देखो, मैंने जो कहा है, सो याद रखना। टॉम पर बहुत हुकूमत मत जताना।"

एडाल्फ के चले जाने पर सेंटक्लेयर ने अपनी अपनी स्त्री को बुलाकर कहा - "प्यारी, जरा इधर आओ।"

मेरी - "रहने दो अपना यह बनावटी प्यार। तुम्हें यहाँ से गए पंद्रह दिन से ज्यादा हो गए, बीच में कभी खोज-खबर भी ली कि मैं मरती हूँ कि जीती हूँ।"

सेंटक्लेयर - "क्या इन पंद्रह दिनों में मैंने तुम्हें पत्र नहीं लिखा?"

मेरी - "बस, वही दो लाइनों का कार्ड। ऐसी चिट्ठियाँ तो नौकरों को लिखी जाती हैं। इतने दिनों में बस दो लाइनों का एक कार्ड मिला था।"

सेंटक्लेयर - "डाक निकलने ही वाली थी, इससे जल्दी मैं कार्ड लिखकर डाल दिया था। अब उस बीती बात पर झगड़ने से क्या लाभ है? देखो, यह फोटो देखो। मैं इवा का हाथ पकड़े खड़ा था। क्यों, तस्वीर अच्छी आई है या नहीं?"

मेरी - "यों हाथ पकड़कर क्यों खड़े हुए? कोई लड़की का हाथ इस तरह पकड़कर खड़ा होता

है?"

सेंटक्लेयर - "खैर, मान लो खड़े होने का ढंग बुरा था, पर देखो, तस्वीर अच्छी आई है या नहीं?"

मेरी - "मेरी राय से तुम्हें क्या लेना-देना! तुम्हें क्या मेरी राय कभी पसंद आती है?"

इतना कहकर मेरी ने तस्वीर उठाकर सिरहाने पटक दी। सेंटक्लेयर मन-ही-मन कहने लगा - "पापिनी का मन किसी तरह नहीं भरता। चूल्हे में जाए ऐसी स्त्री। (प्रकट रूप में) अच्छा, बोलो, तस्वीर अच्छी आई है या नहीं?"

मेरी - "सेंटक्लेयर, मुझे परेशान न करो। तुम्हें अकल तो कुछ है नहीं। तुम मेरा दुःख नहीं समझते। मैं इधर तीन दिन में बड़ी कमजोर हो गई हूँ। मुझे हल्ला-गुल्ला बिल्कुल नहीं सुहाता। घर में तुम्हारे आने से मानो बाजार-सा लग गया है। मेरा दम निकल जाता है। सिर-दर्द के मारे मरी जाती हूँ।"

मिस अफिलिया अभी तक बिल्कुल चुपचाप बैठी थी। सिर-दर्द की बात सुनकर उसे बातें करने का मौका मिला। वह बोली - "क्या यों ही बराबर आपको सिर-दर्द सताया करता है? मैं समझती हूँ, आप सवेरे उठते ही यदि चिरायते का काढ़ा पीएँ तो आपको कुछ आराम हो सकता है। इब्राहिम साहब की स्त्री इन सब रोगों की खूब दवाइयाँ जानती हैं। उनसे मैंने सुना कि इस रोग के लिए चिरायते का काढ़ा बड़ा गुणकारी है।"

यह सुनकर सेंटक्लेयर ने कहा - "तो कल ही मैं एक बोतल चिरायते का अर्क ला दूँगा। अच्छा, दीदी, अब तुम अपने कमरे में जाकर कपड़े बदल डालो।"

मामी को बुलाकर कहा - "अफिलिया बहन के लिए जो कमरा ठीक की हो वह बता दो। देखो, बहन को किसी तरह की तकलीफ न होने पाए। बहुत अच्छी तरह से इसकी सेवा करना।"

## 18. गुलामी का समर्थन!

आज रविवार है। मेरी इन दिनों मन गदगद रोगों से सदा खाट पर पड़ी रहने पर भी हर रविवार को गिरजा अवश्य जाया करती थी। इससे गिरजे के पादरी साहब मेरी की बड़ी तारीफ किया करते थे। वह मेरी की तारीफ में सदा कहा करते - "स्त्रियों में मैडम सेंटक्लेयर आदर्श-धर्मपालिका है। रोग, शोक, आँधी, पानी चाहे जो हो, वह गिरजा जाने से नहीं चूकती। उसकी प्रबल धर्म-तृष्णा

रविवार के दिन उसके दुर्बल शरीर में बिजली की तरह बल भर देती है।"

रविवार को मणि-मुक्ता खचित बड़े सुंदर कपड़े पहनकर मेरी गिरजा जाने की तैयारी करने लगी। उसका यह स्वभाव था कि गिरजा जानेवाले दिन यदि कोई दास या दासी उसके कपड़े लाने में विलंब कर देती, तो वह कोड़ों की मार से उसकी पीठ लाल करके मानती। उस समय उसके हाथ मशीन की तरह चलते थे। बाहर गाड़ी खड़ी हुई है। अफिलिया और इवा को साथ लिए हुए मेरी कमरे से उतर रही थी। बीच ही में मामी मिल गई, इवा उससे बातें करने लगी। मेरी और अफिलिया गाड़ी में जा बैठी। इवा को देर करते देखकर मेरी उसे बार-बार पुकारने लगी। मामी के साथ इवा की बातें सुन लीजिए:

इवा - "मामी, मैं जानती हूँ, तुम्हारे सिर में बड़ी भयानक पीड़ा है।"

मामी - "मिस इवा, ईश्वर तुम्हें सुखी करें। मेरे सिर में बड़ा दर्द होता है, पर तुम इसके लिए रंज मत करो।"

इवा - "मामी, आज तुम्हें गिरजा जाने की छुट्टी मिल गई, यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई।" यह कहकर उसने मामी के गले में हाथ डाल दिया। फिर बोली - "मामी, तुम मेरी यह नासदानी ले लो, इसके सूँघने से तुम्हारे सिर का दर्द मिट जाएगा।"

मामी - "नहीं बच्ची, मैं तुम्हारी यह सोने की सुंदर नासदानी लेकर क्या करूँगी? मेरे पास क्या यह अच्छी लगेगी? मैं इसे हर्गिज नहीं लूँगी।"

इवा - "मामी, तुमको इससे बहुत फायदा होगा, और मेरे पास यह बेमतलब पड़ी हुई है। माँ सिरदर्द के लिए इसे सदा काम में लाया करती थीं। और तुम्हें भी यह लाभ पहुँचाएगी। मेरी प्रसन्नता के लिए तुम्हें अवश्य लेनी पड़ेगी।"

इतना कहकर मामी की चोली में नासदानी डालकर और उसे चूमते हुए इवा अपनी माँ के पास भाग गई।

उसकी माँ ने बड़े क्रोध से पूछा - "इतनी देर कहाँ खड़ी रही?"

इवा - "मैं मामी को अपनी नासदानी देने को ठहर गई थी। मैंने वह नासदानी उसे दे दी।"

मेरी बहुत बिगड़कर बड़ी अधीरता से बोली - "इवा, वह अपनी सोने की नासदानी मामी को दे दी। कब तुझे अक्ल आएगी। जा और उसे अभी लौटा ला।"

इवा की आँखें नीची हो गईं। उसे बड़ा दुःख हुआ। वह धीरे-धीरे लौटी। सेंटक्लेयर वहीं मौजूद था। उसने कहा - "मेरी, मैं कहता हूँ, इवा को अपनी इच्छानुसार कार्य करने दो। वह जो करे,

उसे कर लेने दो।"

मेरी - "सेंटक्लेयर, संसार में उसका कैसे बेड़ा पार होगा?"

सेंटक्लेयर - "सो तो ईश्वर जानता है। पर स्वर्ग में वह मुझसे और तुमसे अच्छी रहेगी।"

इस पर इवा ने धीरे से सेंटक्लेयर के कान में कहा - "आह बाबा, ऐसा मत कहो। इससे माँ को बड़ी वेदना होती है।"

मिस अफिलिया ने सेंटक्लेयर की ओर घूमकर कहा - "क्यों, भैया तुम भी गिरजा चलते हो?"

सेंटक्लेयर - "इस प्रश्न के लिए तुम्हें धन्यवाद। मैं नहीं जाऊँगा।"

मेरी - "मैं बहुत चाहती हूँ कि सेंटक्लेयर मेरे साथ गिरजे जाया करें। पर उनका हृदय बिल्कुल धर्म-हीन है। वास्तव में यह बड़े खेद की बात है।"

सेंटक्लेयर - "मैं तुम लोगों के गिरजा जाने का मतलब खूब जानता हूँ। लोगों में वाहवाही लूटने और धार्मिक कहलाने की इच्छा से तुम गिरजा जाती हो। यदि मैं कभी गिरजा गया भी तो उसी गिरजे में जाऊँगा, जहाँ मामी जाती है। कम-से-कम उस गिरजे में जाकर सोने की गुंजाइश तो नहीं रहती।"

मेरी - "ओफ, मेथोडिस्टों का गिरजा? बड़ा भयंकर है। वहाँ के गुलगपाड़े की भी कोई हद है। वहाँ के पादरी कितना शोर मचाते हैं।"

सेंटक्लेयर - "पर तुम्हारे उस सूने मरुभूमि सरीखे गिरजे से तो वह कहीं अच्छा है।"

फिर इवा से पूछा - "बेटी, तू भी क्या गिरजा जाती है? आओ, यहीं घर रहो, हम दोनों खेलेंगे।"

इवा - "बाबा, मैं भी गिरजा जाऊँगी।"

सेंटक्लेयर - "क्या वहाँ बैठे-बैठे तेरा जी नहीं घबराता?"

इवा - "हाँ, कुछ-कुछ घबराता है और कभी-कभी नींद भी आने लगती है, पर मैं जागते रहने की चेष्टा किया करती हूँ।"

सेंटक्लेयर - "तब वहाँ क्यों जाती है?"



इवा - "बाबा, बूआ कहती है कि हमें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए। वह हम लोगों को बहुत प्यार करते हैं। वही हम लोगों को सब-कुछ देते हैं। गिर्जे में ईश्वर की प्रार्थना के समय जी नहीं घबराता, केवल पादरी साहब के प्रवचन के समय ऊँघ आने लगती है।"

कन्या की बात सुनकर और उसका सरल विश्वास देखकर सेंटक्लेयर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कन्या का मुँह चूमकर कहा - "जाओ बेटी, जाओ! मेरे लिए भी ईश्वर से प्रार्थना करना।"

इवा - "वह तो मैं सदा से करती हूँ।"

यह कहकर वह गाड़ी पर अपनी माँ के पास बैठ गई। सेंटक्लेयर ने पायदान पर खड़े होकर उसका हाथ चूमा। फिर गाड़ी गिर्जे की ओर चली गई। सेंटक्लेयर की आँखों से हर्ष के आँसू बहने लगे। वह मन-ही-मन बोला - "इवान्जेलिन, तुमने अपने इवान्जेलिन नाम को सार्थक किया। तुम मेरे लिए वास्तव में एक इवान्जेलिन (स्वर्गीय बाला) हो।"

गाड़ी में मेरी इवा को समझाने लगी - "इवा, देख, नौकरों पर दया दिखाना मुनासिब जरूर है, पर यह ठीक नहीं कि उनसे अपने बराबर अथवा संबंधियों का-सा व्यवहार किया जाए। मान ले, आज अगर मामी बीमार पड़ जाए तो तू क्या उसे अपने बिछौने पर लेटने देगी?"

इवा - "हाँ, यह तो बड़ा अच्छा होगा, क्योंकि मेरे बिछौने पर रहने से मैं बड़े आराम से उसकी दवा तथा पथ्य-पानी की खबर रख सकूँगी। मेरा बिस्तर मामी के बिस्तर से अच्छा और नरम है, उस पर उसे अच्छी नींद आएगी।"

इवा का यह उत्तर सुनकर मेरी अपने भाग्य को कोसने लगी। बोली - "मैं इसे कैसे समझाऊँ? मैंने क्या कहा और यह क्या समझी।"

अफिलिया - "तुम्हारी बात को इसने कुछ नहीं समझा।"

इवा कुछ देर तो उदास-सी दिखलाई दी, पर सौभाग्य से बच्चों के मन पर किसी बात का प्रभाव देर तक नहीं रहता। इससे जरा-सी देर में गाड़ी की खिड़की से इधर-उधर की चीजें देखकर उसका मन बदल गया और वह फिर पूर्ववत् प्रफुल्लित हो गई।

ये लोग जब गिर्जे से लौटे और सब लोग भोजन करने बैठे, तब सेंटक्लेयर ने मेरी से पूछा - "कहो, आज गिर्जे में किस विषय पर प्रवचन हुआ?"

मेरी - "आज पादरी साहब का धर्मोपदेश बड़ा ही हृदयग्राही था। यह उपदेश सुनने लायक था। वह बिल्कुल मेरे मत से मिलता हुआ था।"

सेंटक्लेयर - "तो मैं समझता हूँ, आज का उपदेश किसी गंभीर विषय पर हुआ होगा?"

मेरी - "हहं, सामाजिक बातें और ऐसे विषयों पर जो मेरा मत है, बस उसी से मेरा मतलब है। पादरी साहब ने बताया कि ईश्वर हर चीज को उपयुक्त समय पर प्रस्फुटित करते हैं। बाइबिल के वचन की उन्होंने व्याख्या की। अपनी व्याख्या में उन्होंने बड़ी स्पष्टता से बताया कि ईश्वर ने ही दुनिया में दरिद्र और धनी दोनों बनाए हैं। इसलिए इस बात को मानना चाहिए कि संसार में ऊँच-नीच का भेद-भाव ईश्वर का बनाया हुआ है। उसकी इच्छा से कुछ आदमी प्रभुत्व करने को और कुछ उनकी गुलामी करने को पैदा हुए हैं।" पादरी साहब ने अकाट्य युक्तियों द्वारा इस विषय पर बड़ी खूबी के साथ प्रतिपादन करते हुए कहा - "जो लोग गुलामी की चाल की बुराईयाँ दिखलाकर उसके विरुद्ध शोर मचाते हैं, वे भूलते हैं। वे ईश्वर की शासन-प्रणाली को बिल्कुल नहीं समझते। उन्हें बाइबिल का बिल्कुल ज्ञान नहीं है। उन्होंने बड़ी अच्छी तरह से यह ईश्वरीय नियम भी दिखाया कि मनुष्यों में विभिन्नता सदा रहेगी। कालों को गोरों की सेवा करनी चाहिए। न करेंगे तो उन्हें पाप का भागी बनना पड़ेगा। ईश्वर जो करते हैं, सबके भले के लिए करते हैं। अतः यह गुलामी की चाल गुलाम और मालिक दोनों के ही भले के लिए है। सेंटक्लेयर, तुमने आज का उपदेश सुना होता तो बहुत-कुछ सीखते।"

सेंटक्लेयर - "मुझे उपदेशों की आवश्यकता नहीं है। मुझे यहीं बैठे-बैठे चरुट पीते हुए विचार करने में बड़ी शांति मिलती है। तुम्हारे गिर्जे में तो चरुट पीने की मुमानियत है, यह बड़ी आफत है।"

मिस अफिलिया - "क्यों? क्या तुम इन विचारों से सहमत नहीं हो?"

सेंटक्लेयर - "कौन, मैं? मैं ऐसे विषयों में धार्मिक विचारों की जरा भी परवा नहीं करता। मैं ऐसे धर्म से कोई वास्ता नहीं रखता। यदि मुझे इस गुलामी-प्रथा पर कुछ कहना पड़े तो मैं साफ कहूँगा कि हम लोग अपने लाभ की दृष्टि से ही इसका समर्थन करते हैं। हमें आराम है, इससे इसका रहना बहुत आवश्यक और उचित है। दासों के बिना काम नहीं चलता, बिना मेहनत-मशक्कत के धन की गठरी हाथ नहीं आती, इससे दासता की प्रथा को हम नहीं हटाना चाहते।"

मेरी - "अगस्टिन, मैं समझती हूँ कि धर्म पर तुम्हारी तनिक भी श्रद्धा नहीं है। तुम्हारी बातें सुनकर हृदय काँपता है।"

सेंटक्लेयर - "हृदय काँपता है! सच है, पर मैं तो सच्ची-सच्ची कहना जानता हूँ। ये सब अपने मतलब की बातें हैं। अच्छा, पादरी लोग कहते हैं कि दास-प्रथा ईश्वर की इच्छा से है और इसकी जरूरत है, इसी से इसकी उत्पत्ति हुई है। ठीक है, मुझे भी पादरी साहब से एक चीज की व्यवस्था लेनी है। जब मैं किसी दिन ताश खेलने में अधिक रात तक जागता रहता हूँ तो मुझे ब्रांडी पीने की जरूरत पड़ती है। पादरी साहब बतावें कि जब ब्रांडी पीने की जरूरत पड़ती है तब वह जरूरत भी ईश्वर ही की बनाई हुई है, इसी लिए ब्रांडी क्यों नहीं पीनी चाहिए? फिर पादरी साहब कहते हैं कि सब चीजों का उपयुक्त समय होता है, उपयुक्त समय पर सभी चीजें अच्छी होती हैं। मेरी समझ में ब्रांडी पीने के लिए संध्या का समय ही बड़ा उपयुक्त होता है। संध्या

और ब्रांडी दोनों ही ईश्वर की बनाई हुई चीजें हैं। दोनों में जब इतना मेल है तब मैं समझता हूँ कि पादरी साहब जरूर ब्रांडी पीने की आज्ञा देंगे।"

अफिलिया - "खैर, इन बातों को जाने दो। यह कहो कि तुम दास-प्रथा को उचित समझते हो या अनुचित?"

सेंटक्लेयर - "मैं तो दास-प्रथा की भलाई-बुराई पर कुछ भी नहीं कहना चाहता। यदि मैं इस प्रश्न का उत्तर दूँ तो मैं समझता हूँ कि तुम मुझे बहुत कोसोगी। मैं उन आदमियों में से हूँ, जो आप शीशे के घर में बैठकर ढेला फेंके हैं, पर मैं स्वयं कभी ऐसा घर नहीं बनाता कि दूसरा उस पर ढेला फेंके। कहने का मतलब यह है कि मैं स्वयं दोषी होते हुए भी दूसरों के दोषों को देखता हूँ, किंतु मैं कभी किसी के सामने अपना मत नहीं प्रकट करता कि जिसमें कोई मुझपर दोषारोपण कर सके।"

मेरी - "बस, इनकी सदा ऐसी ही बातें करने की आदत है। तुम्हें इनसे किसी बात का ठीक उत्तर नहीं मिलेगा। सच तो यह है कि धर्म से इनका कुछ वास्ता नहीं है। जिसका धर्म पर प्रेम होगा, वह क्या कभी ऐसी बातें मुँह से निकाल सकता है?"

सेंटक्लेयर - "धर्म! देख लिया तुम्हारा धर्म! क्या तुम लोग सचमुच गिर्जे में धर्म की बातें सुनने जाती हो? समाज-प्रचलित स्वार्थपरता का तथा मनुष्य के अभ्यस्त पापों का बाइबिल से जोड़-तोड़ बिठाना ही हमारे देश का ईसाई धर्म है! देश में फैले हुए किसी भी अत्याचार या अन्याय को बाइबिल में लिखा बता दिया कि वह धर्म का भाग बन गया, तुम लोग मनुष्य के पापों को धर्म का रूप देने की फिर करते हो, पर मैं जब धर्म की ओर दृष्टि डालता हूँ तो धर्म को अपने से ऊपर ही, न कि नीचे देखता हूँ। मैं अपने पापों को कभी धर्म का जामा पहनाने की चेष्टा नहीं करता। जो पाप है, वह पाप ही रहेगा, चाहे तुम करती हो चाहे मैं, उसे बाइबिल से लाख बार सिद्ध करने की चेष्टा करो, तो भी वह कभी पुण्य नहीं हो सकता।"

अफिलिया - "तो तुम विश्वास नहीं करते कि गुलामी की प्रथा बाइबिल की रूह से ठीक है?"

सेंटक्लेयर - "जिस स्नेहमयी जननी की प्रतिमूर्ति सदा मेरे हृदय में बसी रहती है, बाइबिल उसकी बड़ी प्यारी पुस्तक थी। बाइबिल पर उनकी अटल श्रद्धा और भक्ति थी। बाइबिल द्वारा उनका जीवन गठित हुआ था, परंतु दास-प्रथा से उन्हें बड़ी घृणा थी। इससे दास-प्रथा बाइबिल से सिद्ध है, इसे मैं कभी नहीं मानता। विचार किया जाए तो क्या यूरोप, क्या अमरीका और क्या अफ्रीका, ऐसा कोई देश न ठहरेगा, जहाँ के मनुष्य-समाज में किसी-न-किसी प्रकार की बुरायाँ घुसी हुई न हों। समाज में फैले हुए नीति-विरुद्ध व्यवहारों को बाइबिल से सिद्ध करने में जो लोग अपनी सारी शक्ति खर्च करते हैं और इन्हें धर्म-संगत ठहराते हैं, वे लोग सचमुच अपनी गाढ़ी स्वार्थपरता के कारण मोह के दलदल में फँसे हुए हैं। दास-प्रथा के बिना सहज में हम लोग धनी

नहीं हो सकते, मौज नहीं कर सकते, इसी से अपने सूख के लिए, अपने स्वार्थ की दृष्टि से, हम लोग दास-प्रथा को आवश्यक बताते हैं। पर जो लोग सच्ची बात पर पर्दा डालकर गुलामी के बाइबिल-सम्मत होने की पुकार मचाते हैं, मेरी समझ में वे सरासर सत्य की हत्या करते हैं।"

मेरी - "तुम बड़े नास्तिक हो गए हो!"

सेंटक्लेयर - "यदि आज रूई का चालान रुक जाए और हमारे देश की रूई का भाव एकदम गिर जाए, तो फिर दास-प्रथा की जरूरत न रहेगी। उस समय बाइबिल का अर्थ भी बदल जाएगा। आज बाइबिल के मत से दास-प्रथा उचित है, पर रूई का बाजार मंदा हो जाए तो गुलामों को सीधा अफ्रीका लौटा देना ही ईश्वर-वाक्य माना जाने लगेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि रूई के भाव के साथ-साथ बाइबिल का मत भी बदल जाएगा।"

मेरी - "मैं दास-प्रथा को धर्म-विरुद्ध नहीं मानती। ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरे हृदय में तुम्हारी भाँति नास्तिकता के भाव नहीं भरे हैं।"

इसी समय हाथ में एक सुंदर फूल लिए हुए इवा वहाँ आई। सेंटक्लेयर ने उससे पूछा - "अच्छा, इवा, तू बता कि तुझे वारमंट का दास-दासी-शून्य अपनी बुआ का घर अच्छा लगता है या अपना घर, जहाँ गुलाम भरे पड़े हैं।"

इवा - "निश्चय ही अपना ही घर अच्छा है।"

सेंटक्लेयर - "वह कैसे?"

इवा - "हमारे घर में बहुत आदमी हैं। वे सब मुझे प्यार करते हैं, और मैं उन्हें प्यार करती हूँ, इसी से हमारा घर अच्छा है।"

मेरी - "बस, इसे प्यार-ही-प्यार की सूझी रहती है। हर घड़ी प्यार! ऐसी बेअक्ल लड़की तो मैंने कहीं नहीं देखी। कहती है, दास-दासियों को प्यार करती हूँ। दास-दासियों से, और प्यार!"

इवा - "क्यों बाबा, मेरी यह प्यार की बात बेजा है?"

सेंटक्लेयर - "संसार इसे बुरी समझता है। यहाँ निस्वार्थ प्रेम का कोई पारखी नहीं है। अच्छा, तू बता, भोजन के समय से अब तक कहाँ थी?"

इवा - "मैं टॉम के कमरे में थी, उसका गाना सुन रही थी वहीं दीना चाची ने मुझे भोजन दे दिया था।" "

सेंटक्लेयर - "टॉम का गाना सुन रही थी?"

इवा - "हाँ, वह बहुत अच्छे गीत गाता है।"

सेंटक्लेयर - "सचमुच?"

इवा - "हाँ-हाँ। और वह मुझे भी अपने गीत सिखाएगा।"

सेंटक्लेयर - "टॉम तुम्हें गाना सिखाएगा? गाने के लिए उस्ताद तो बड़ा अच्छा मिला है।"

इवा - "हाँ-हाँ, वह मुझे अपना गाना सुनाता है। मैं उसे अपनी बाइबिल पढ़कर सुनाती हूँ और वह मुझे उसका अर्थ समझाता है।"

मेरी ने हँसते हुए कहा - "टॉम बाइबिल सिखाएगा! क्या मजे की बात है।"

सेंटक्लेयर - "ऐसा मत कहो। धर्म की शिक्षा देने के लिए टॉम मेरी समझ में अवश्य उपयुक्त आदमी है। धर्म के लिए वह बहुत व्याकुल रहता है और उसका हृदय भी बड़ा धार्मिक है। कल मुझे घोड़े की जरूरत थी। इससे मैं धीरे-धीरे उसके कमरे की ओर गया। वहाँ जाकर देखा कि टॉम आँखें बंद किए हुए ईश्वर के ध्यान में मग्न है। मुझे यह जानने की बड़ी उत्कंठा हुई कि टॉम कैसे ईश्वर की आराधना करता है, पर मैंने अब तक कभी ऐसी सरल प्रार्थना नहीं सुनी थी। बड़ी व्याकुलता से उसने ईश्वर से मेरे कल्याण की प्रार्थना की। उस समय उसका चेहरा देखने से सचमुच पूरा महात्मा जान पड़ता था। मैंने बहूतरे पादरियों के मुँह से प्रार्थना सुनी है, किंतु ऐसी विश्वासपूर्ण प्रार्थना कभी नहीं सुनी।"

मेरी - "शायद उसने जान लिया होगा कि तुम सुन रहे हो, इससे तुम्हें खुश करने के लिए उसने ढोंग रचा होगा। मैंने पहले भी कई बार उसकी ठग-विद्या की बात सुनी है।"

सेंटक्लेयर - "उसने मेरे मन को संतुष्ट करने की कोई बात मुँह से नहीं निकाली। उसने निष्कपट मन से ईश्वर के सम्मुख अपने मनोभाव प्रकट किए। उसने ईश्वर से इसी बात की प्रार्थना की कि मुझमें जो दोष हैं, वे दूर हो जाएँ। इससे यह बात मन में नहीं लाई जा सकती कि वह ढोंग करता था।"

अफिलिया - "मैं आशा करती हूँ कि तुम्हारे हृदय पर इसका अच्छा असर होगा।"

सेंटक्लेयर - "मैं समझता हूँ, तुम्हारी और टॉम की राय मेरे विषय में मिलती-जुलती है। अच्छा, मैं अपना चरित्र सुधारने की चेष्टा करूँगा।"

अब हम थोड़ी देर के लिए टॉम से विदा होकर जार्ज, इलाइजा, जिम और उसकी वृद्ध माता का वृत्तांत सुनाते हैं।

संध्या का समय निकट है। जार्ज अपने लड़के को गोद में लिए हुए और अपनी स्त्री इलाइजा का हाथ अपने हाथ में पकड़े हुए बैठा है। दोनों चिंता-मग्न और गंभीर जान पड़ते हैं। उनके गालों पर आँसुओं के चिह्न दीख पड़ते हैं।

जार्ज ने कहा - "हाँ, इलाइजा, मैं जानता हूँ कि तू जो कहती हो, सब सच है। तुम्हारा हृदय स्वर्गीय भावों से पूर्ण है। इसके विपरीत, मेरा हृदय बिल्कुल शुष्क है, लेकिन मैं तुम्हारे वचन-पालन की चेष्टा करूँगा। मैं तुमसे निश्चय कहता हूँ कि स्वतंत्र हो जाने पर मैं एक ईसाई का-सा श्रद्धालु हो जाऊँगा। सर्वशक्तिमान ईश्वर जानता है कि मैंने कभी अपने मन में बुरे विचारों को स्थान नहीं दिया। जब-जब मुझपर घोर अत्याचार हुए, तब-तब मैंने उसी का नाम लेकर अपने मन को धीरज दिया। अब मैं सारी पिछली सख्तियों और अत्याचारों को मन से भुला दूँगा। अपनी बाइबिल पढ़ूँगा और सज्जन बनने की चेष्टा करूँगा।"

इलाइजा - "और जब हम कनाडा पहुँच जाएँगे, तब मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। मैं बहुत अच्छे कपड़े सीना जानती हूँ। मैं बढ़िया धुलाई और इस्तरी का काम भी कर सकती हूँ। हम दोनों वहाँ कुछ-न-कुछ करके अपना जीवन-निर्वाह कर लेंगे।"

जार्ज - "हाँ, इलाइजा, मुझे पेट की इतनी चिंता नहीं है। इस बच्चे को और तुम्हें साथ लेकर जहाँ-कहीं रहूँगा, वहीं मेरे लिए स्वर्ग है। मैं अधिक नहीं चाहता। ईश्वर से इतनी ही प्रार्थना है कि तुमसे वियोग न हो। इस बालक को कोई हमसे छीन न सके। सोचने की बात है कि ये नर-पिशाच गोरे माता की गोद से बच्चों को छीनकर और पति से स्त्री को अलग करके बेच डालते हैं। इससे अभागों गुलामों के हृदयों को कितना कष्ट पहुँचता है। मैं ऐसी दशा में यही चाहता हूँ कि तुम पर और इस बच्चे पर मेरा अपना कहने का अधिकार हो जाए। इसके सिवा मैं ईश्वर से और कुछ नहीं माँगता। मैंने गत पच्चीस वर्ष की अवस्था तक प्रतिदिन कठिन परिश्रम किया है और उसके लिए कौड़ी भी नहीं पाई। न मेरे रहने के लिए झोपड़ी थी और न अपनी कहने के योग्य एक बालिशत जमीन ही। इतने पर भी वे यदि मेरा पिंड छोड़ दें तो मुझे संतोष है। मैं उनका कृतज्ञ रहूँगा। मैं कमाकर तुम्हारे मालिक को तुम्हारा और अपने इस लड़के का मूल्य भेज दूँगा। अपने पुराने मालिक का तो मैं एक कोड़ी का भी कर्जदार नहीं। उसने मुझे जितने में खरीदा था, उससे पाँच गुना उसने मेरे द्वारा वसूल कर लिया। इलाइजा, स्वाधीनता बड़ा अमूल्य रत्न है, पर चिरपराधीन व्यक्ति स्वाधीनता के सुख को नहीं जान सकता। मिश्री खाए बिना उसका स्वाद नहीं जाना जा सकता। इसी भाँति जो सदा से पराधीन है, वह स्वाधीनता की महिमा नहीं समझ सकता। इस विपत्ति की दशा में रहते हुए भी मैं तुमसे स्वाधीनतापूर्वक बातें कर रहा हूँ, इतने ही से मेरा हृदय आनंद से नाच रहा है। आज स्वाधीनता

ने मूझमें फिर जान डाल दी है। परमात्मा करे, संसार में कोई भी पराधीन न रहे, कोई स्वाधीनता के स्वाद से वंचित न हो। संसार में किसी जाति को पराधीनता की जंजीर से न जकड़ा रहना पड़े। इलाइजा, पराधीनता की बेड़ी से सर्वथा मुक्त हो जाने के लिए मैं बहुत छटपटा रहा हूँ।"

इलाइजा - "पर हम अभी संकट से पार नहीं हुए हैं। अभी कनाडा दूर है।"

जार्ज - "यह सत्य है, पर स्वाधीनता की वायु मंद-मंद लहराती जान पड़ती है और उसके स्पर्श मात्र से मैं सजीव-सा जान पड़ता हूँ।"

इसी समय बाहर किसी के बातचीत करने की आवाज सुनाई दी। तुरंत ही किसी ने दरवाजा खड़खड़ाया। इलाइजा ने जाकर दरवाजा खोल दिया।

बाहर से साइमन हालीडे एक क्वेकर-संप्रदाई भाई को साथ लिए हुए अंदर आए। इस दूसरे आदमी का नाम साइमन हालीडे ने फीनियस बताया। फीनियस लंबा-चौड़ा आदमी था। चेहरा देखने से कार्यदक्ष, चालाक और लड़ाका जान पड़ता था। साइमन हालीडे की भाँति इसके मुख पर शांत भाव न था। यह उस ढंग के आदमियों में था जो जितना होते हैं उससे अपने को अधिक समझते और प्रकट करने की कोशिश करते हैं। पर दिल का साफ था।

साइमन हालीडे ने अंदर आकर कहा - "जार्ज, बड़ी आफत है। तुम्हें पकड़ने के लिए आदमी तैनात हुए हैं। फीनियस ने उनकी कुछ-कुछ बातें सुनी हैं। अच्छा होगा कि इसी के मुँह से सारी बातें सुनो।"

फीनियस ने कहना आरंभ किया - "मेरा सदा से यह मत है कि आदमी को सर्वदा एक कान खुला रखकर सोना चाहिए। उससे बड़ा लाभ होता है। पिछली रात मैं एक होटल में ठहरा था। वहाँ एक कमरे में बिस्तर पर पड़ा हुआ था, पर अपने सिद्धांत के अनुसार मैं नींद में ऐसा बेहोश नहीं हो गया था, जैसे कि अक्सर लोग हो जाया करते हैं कि कोई उनके सिरहाने का तकिया भी खींच ले जाए तो उन्हें पता न लगे। हाँ, तो मुझे मालूम हुआ कि मेरे कमरे के बगलवाले कमरे में बैठे कुछ लोग शराब पी रहे हैं और बातें कर रहे हैं। उनकी बातें सुनने की मुझे उतनी परवा नहीं थी, पर जब मैंने उन्हें क्वेकर-मंडली का नाम लेते सुना तो मेरे जी में खटका हुआ और मैं ध्यान से उनकी बातें सुनने लगा। उनमें से एक ने कहा, 'जरूर वे भगोड़े दास-दासी क्वेकरवालों के गाँव में ही छिपे हैं। जल्दी चलकर उस नौजवान को गिरफ्तार करना चाहिए। उसे कैंटाकी ले चलकर उसके मालिक को सौंपना होगा। उसका मालिक जरूर ही उसे मार डालेगा। उसको ऐसी सजा हो जाने पर फिर गुलाम लोग भागने का दुस्साहस नहीं करेंगे। पर उस युवक के लड़के को जिस दास-व्यवसायी ने खरीदा था, उसी को दिया जाएगा, खूब माल मिलेगा और उस युवक की स्त्री को दक्षिण में बेचकर सहज में सोलह-सत्रह सौ मार लिए जाएँगे। वह स्त्री बड़ी सुंदरी है। जिम और उसकी माता को यदि उनके पहले मालिकों के यहाँ ले

जाएँ तो वे जरूर हमें खूब इनाम देंगे। उस आदमी की बातों से मुझे यह भी जान पड़ा कि उनके साथ पुलिस के दो सिपाही भी हैं और तुम लोगों की गिरफ्तारी के लिए उनके पास वारंट है। इनमें से एक जो नाटा है, वह जरूर वकील है, क्योंकि बड़ी कानूनी बातें बनाता है। उसने निश्चय किया है कि वह अदालत में जाकर झूठमूठ कह देगा कि इलाइजा उसी की खरीदी हुई दासी है। फिर उसकी बात पर जब इलाइजा उसकी हो जाएगी तब वह उसे दक्षिण में ले जाकर बेच डालेगा। पुलिस के सिपाहियों के सिवा उनके साथ और भी कई आदमी हैं। मैं बड़ी तेजी से यहाँ आया हूँ। मैं समझता हूँ कि वह सवेरे सात या ज्यादा-से-ज्यादा आठ बजते-बजते यहाँ पहुँच जाएँगे। इसलिए अब जो करना हो, जल्दी किया जाए।"

इस वार्तालाप के उपरांत यह मंडली जिस विचित्र ढंग से खड़ी थी, वह दृश्य चित्र लेने योग्य था। हालीडे के चेहरे पर काफी चिंता छा गई थी। फीनियस भी बड़ी गहरी चिंता में मग्न जान पड़ता था। इलाइजा अपने स्वामी के गले में हाथ डाले खड़ी हुई उसकी ओर देख रही थी। जार्ज की आँखों में सुर्खी छा गई थी। उसकी ऐसी दशा हो गई थी, मानो उसकी आँखों के सामने उसकी स्त्री की नीलामी हो रही हो और उसका लड़का किसी दास-व्यवसायी को बेचा जा रहा हो।

इलाइजा बड़ी दीनता से बोली - "जार्ज, अब क्या उपाय होगा?"

"मैं उपाय जानता हूँ।" - यह कहकर जार्ज कोठरी के अंदर गया और अपनी पिस्तौल लाकर बोला - "जब तक मेरे हाथ में पिस्तौल है, किसी का कुछ डर नहीं। जब तक मुझ में जान है, कोई गोरा तुम्हारा बाल बाँका नहीं कर सकता।"

साइमन हालीडे ने एक ठंडी साँस लेते हुए उससे कहा - "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि ऐसा मत करना।"

इस पर जार्ज ने साइमन से कहा - "महाशय, आपने पिता की भाँति हम लोगों को शरण दी है, इसके लिए हम सब आपके कृतज्ञ हैं, परंतु यदि पकड़नेवालों से यहाँ हम लोगों का किसी प्रकार का झगड़ा हो गया तो देश-प्रचलित घृणित कानून के अनुसार आपको भी दंड-भागी होना पड़ेगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आगे जाकर पकड़नेवालों से मुकाबला हो, जिससे आप पर किसी तरह की आपत्ति आने का अंदेशा न रहे। पकड़नेवालों से भेंट होने पर हम उनके छक्के छुड़ा देंगे। उन स्वार्थी, नर-पिशाच, विवेकहीन गोरों के खून की नदी बहा देंगे। जिसमें दैत्य का-सा बल है, वह बड़ा साहसी तथा मरने-मारने को सदा तैयार है। मुझे भी किसी का भय नहीं है।"

फीनियस अब तक खड़ा बातें सुन रहा था। उसने कहा - "हाँ, भाई, तुम बहुत ठीक कहते हो। पर तुम्हें एक गाड़ी हाँकनेवाले की तो जरूरत पड़ेगी ही, क्योंकि तुम्हें तो रास्ता मालूम नहीं। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

जार्ज- "पर मैं नहीं चाहता कि तुम इस आफत में पड़ो।"



फीनियस - (आश्चर्य से) "आफत! जब आफत आए तो जरा कृपा करके मुझसे भी उसकी जान-पहचान करा देना।"

साइमन ने कहा - "फीनियस बड़ा साहसी और बुद्धिमान आदमी है। वह जी-जान से तुम लोगों की रक्षा करेगा। जार्ज, इतनी जल्दबाजी की जरूरत नहीं है। जरा धीरज से काम लो, युवकों का खून बहुत जल्दी उबल उठता है।"

जार्ज - "मैं पहले किसी पर आक्रमण नहीं करूँगा। मैं उनसे केवल इतना ही कहूँगा कि वह मुझे इस देश से जाने दें और मैं शांतिपूर्वक चला जाऊँगा। हाँ, यदि उन्होंने मेरे कार्य में किसी प्रकार की बाधा डाली तो वे हैं और यह पिस्तौल, मैं बिना उनकी जान लिए नहीं छोड़ूँगा। उनकी जान लेने पर उस दुःख की शांति हो जाएगी, जो माता और बहन का वियोग होने से मुझे हरदम सताया करता है।" माता और बहन का स्मरण होते ही उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। उमड़े हुए शोक से उसका गला भर आया। वह अस्फुट-स्वर में कहने लगा - "बीती बात याद करके मेरा कलेजा फटा जाता है। मेरी एक बड़ी बहन थी। उसे मेरे नीच मालिक ने दक्षिण में बेच डाला। अब स्त्री और पुत्र से अलग करके मेरी दुर्दशा करना चाहता है। जब ईश्वर ने मुझे स्त्री-पुत्र की रक्षा के लिए ये दो दृढ़ भुजाएँ दी हैं तब यदि मैं उनके लिए इनका उपयोग न करूँ, तो ये व्यर्थ हैं। मैं निश्चय के साथ कहता हूँ कि मेरी देह में प्राण रहते मेरी स्त्री और पुत्र को कोई मुझसे अलग नहीं कर सकता। क्या आप इस आचरण के लिए मुझे दोषी कहेंगे?"

साइमन - "कभी नहीं! इन स्वार्थी नर-पिशाच गोरों के सिवा और कोई तुम्हारे इस आचरण को बुरा नहीं कह सकता। दुर्बल से दुर्बल आदमी भी इतना अत्याचार सहन नहीं कर सकता। धिक्कार है इस पाप और अत्याचार-पूर्ण संसार को! पर उससे अधिक धिक्कार है उन पाखंडियों को, जिनकी स्वार्थपरता और अर्थ-तृष्णा के कारण इस संसार में पाप और अत्याचार फैला हुआ है।"

फीनियस अब तक खामोश बैठा हुआ था। साइमन की बात समाप्त होने पर वह बोला - "भाई जार्ज, ईश्वर ने मेरी इन दो भुजाओं में भी कुछ बल दिया है। मित्र, मुझे विश्वास है कि काम पड़ने पर ये भुजाएँ तुम्हारे लिए इस शरीर से अलग हो जाने को भी तैयार रहेंगी।"

साइमन ने कहा - "फीनियस, जार्ज पर जैसे-जैसे अत्याचार हुए हैं, उससे उसके मन में बदला चुकाने की प्रवृत्ति का आना स्वाभाविक है, लेकिन तुम तो शांत रहो। हाँ, सताए हुए अपने भाई-बंधुओं की सहायता के लिए सदा प्राण देने को प्रस्तुत अवश्य रहना चाहिए और अत्याचार के विरुद्ध इसी प्रकार कटिबद्ध रहना ठीक है। पर अब तो नेताओं ने इस विषय में इससे बहुत अच्छे मार्ग का अनुसरण करने की सलाह दी है। उनका कहना है कि मनुष्य को कोई कार्य क्रोधांध अवस्था में नहीं करना चाहिए। क्रोध और द्वेष दोनों मन के विकार हैं। अत्याचार को दूर करने के लिए इन दोनों शत्रुओं के वश में होकर कोई काम करना उचित नहीं है। क्रोध के समय मनुष्य को भले-बुरे का ज्ञान नहीं रहता है। अतः कुछ सोचना हो, करना हो,

सब शांति में होना चाहिए। ईश्वर से हम लोगों को प्रार्थना करनी चाहिए कि हम भटकने न पाएँ।"

फीनियस पर इस उपदेश का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, किंतु फिर भी वह अपनी प्रचंड प्रकृति को वश में करने की चेष्टा करने लगा। हम पहले कह आए हैं कि फीनियस एक भीम-प्रकृति का मनुष्य है, बड़ा संग्राम-प्रिय है, अवसर आने पर वह साक्षात् यमराज की भाँति लड़ता है। विपदा किसे कहते हैं, यह तो वह स्वप्न में भी नहीं सोचता। असल में युद्ध के लिए शारीरिक बल की ही आवश्यकता नहीं है बल्कि मानसिक बल भी इसके लिए बहुत जरूरी है। जो मौत के मुँह में जाने से डरता है, वह कायर संग्राम के उपयुक्त नहीं। उसे कभी देव-दुर्लभ वीर की पदवी नहीं मिल सकती। वीर की जान हथेली पर रहती है, मौत उसके लिए खेल की वस्तु है। फीनियस मृत्यु से कभी नहीं डरता था। पहले तो वह और भी आग-बबूला था, किंतु अब कुछ शांत प्रकृति का हो गया है। प्रेम की छूत वज्र-हृदय को भी कोमल बना देती है। क्वेकर-संप्रदाय की किसी सुशिक्षिता, सहृदया युवती के प्रेम में फँसने के बाद फीनियस की प्रकृति कुछ ठंडी हो गई है। इसकी परोपकार-वृत्ति बड़ी प्रबल है। दूसरे का भला होता हो तो यह अपनी जान दे सकता है। पर अब पहले का-सा भाव नहीं है। पहले वह बिना सोचे-विचारे, बिना बात की, लड़ाई मोल ले लेता था; किंतु अब अपनी प्यारी के शांत मुख कमल का स्मरण आते ही फीनियस अपनी दुर्दम्य प्रकृति को वश में करने की चेष्टा करता है। अब वह सदुपदेश के सम्मुख सिर झुकाता है। जानी और महात्माओं के वाक्यों पर बड़ी श्रद्धा रखता है।

फीनियस को गरम होते देखकर साइमन की सहधर्मिणी वृद्ध राचेल ने मुस्कराकर कहा - "फीनियस किसी काम के लिए कमर कस ले तो किसी की मजाल है कि उसे उसके इरादे से हटा दे लेकिन अब उसका हृदय प्रेम की पवित्र डोर से बँधा हुआ है। इस समय उसका दुर्दम्य मन कैदी बना हुआ है।"

राचेल की बात समाप्त हो जाने पर जार्ज ने साइमन से कहा - "खैर, आप जो कहते हैं, वह सब भी ठीक है, पर यहाँ से भागने के सिवा बचने की और क्या सूरत है? जहाँ तक हो, यहाँ से जल्दी ही हट जाना अच्छा है।"

इस पर फीनियस ने कहा - "हाँ, यह ठीक है। अभी यहाँ से निकल चलने से फिर पकड़नेवालों की दाल न गलेगी। मैं तो दो घंटा रात रहे ही वहाँ से चल दिया था। वे सब आज सवेरे तुम लोगों की तलाश में निकलेंगे। यहाँ से अभी निकल चलें तो वे हम लोगों से चार कोस पीछे रहेंगे। मैं अभी जाकर माइकल क्रास को बुला लाता हूँ। वह पीछे रहकर पकड़नेवालों का भेद लेता रहेगा। हम लोग कुछ आदमी गाड़ी पर चढ़कर आगे बढ़ चलेंगे।"

फीनियस जब माइकल क्रास को बुलाने चला गया, तब साइमन ने कहा - "जार्ज, फीनियस बड़ा चतुर और कामकाजी आदमी है। तुम इसी की सलाह पर चलना। वह अपनी सामर्थ्य भर

तुम्हारी भलाई करने से नहीं चूकेगा।"

जार्ज - "और तो कुछ नहीं, मुझे इस बात का बड़ा खेद हो रहा है कि कहीं हम लोगों के लिए आपको किसी आफत में न फँसना पड़े।"

साइमन - "हम लोगों के लिए तुम कोई चिंता मत करो। हमने जो कुछ किया है, अपने कर्तव्य के अनुरोध से किया है। कर्तव्य-पालन में हमारे प्राण भी जाएँ तो कोई चिंता नहीं।"

फिर साइमन ने अपनी स्त्री की ओर घूमकर कहा - "राचेल, अब शीघ्र ही इन लोगों के खाने-पीने का प्रबंध हो जाना चाहिए। हम अपने घर से इन लोगों को भूखा नहीं जाने देंगे।"

राचेल जब अपने बाल-बच्चों को लेकर जल्दी-जल्दी भोजन बनाने में लगी हुई थी, उसी समय जार्ज और उसकी स्त्री अपने छोटे कमरे में एक-दूसरे के गले में बाँहें डाले हुए बैठे कुछ ही देर में होनेवाले अपने वियोग के संबंध में बातें कर रहे थे। उनकी आँखों में आँसू भरे थे।

जार्ज ने कहा - "इलाइजा, जो लोग मित्रों से घिरे हुए हैं, और धन-धान्य, गृह तथा अनेकानेक संपत्तियों से पूर्ण हैं, उन्हें स्त्री-पुत्र का वियोग ऐसा दुःखदायी नहीं होता होगा। उनके सुख के अनेक साधन हैं, पर तुम्हारे और इस संतान के सिवा संसार में मेरे लिए तो और कुछ नहीं है। तुमसे ब्याह होने के पूर्व इस जगत में मेरी उस दुखियारी माता और बहन के अलावा और कोई प्राणी मुझे प्यार की निगाह से देखनेवाला न था। जिस दिन प्रातः काल मेरी बड़ी बहन एमिली को सौदागर खरीदकर ले गया, उस दिन की याद करके मुझे अपार दुःख होता है। मैं दालान में पड़ा सो रहा था। उस समय उसने रोते हुए आकर मेरा हाथ पकड़कर उठाया और कहा, 'जार्ज, आज तेरी अंतिम हिताकांक्षिणी जा रही है। अभागे बालक, तेरी क्या गति होगी?' मैं उठ खड़ा हुआ और उसके गले से लिपटकर रोने-चिल्लाने लगा। वह भी बहूत रोई। वे अंतिम स्नेह के शब्द सुने आज मुझे दस वर्ष हो गए। मेरा हृदय जल-जलकर खाक हो गया। तुम्हारे प्रेम से मेरे मर्दा शरीर में कुछ जान आ गई थी। बीती बातों को भुलाकर मैं नया मनुष्य बन गया। इलाइजा, अब मुझे मरना कबूल है, पर मैं उन लोगों को तुझे अपने पास से कदापि न ले जाने दूँगा। मुझे इस जीवन की कोई परवा नहीं है। जीना है तो सुख से, अपने स्त्री-पुत्र सहित, नहीं तो इनसे बिछड़कर जीने में क्या आनंद रखा है? यों कृते की मौत मरने की अपेक्षा वीरों की भाँति, अत्याचारियों को, जो हमें सताते हैं, उन नर-पिशाच गोरों को मारकर मरना हजार दर्जे अच्छा है।"

इलाइजा ने सिसकते हुए कहा - "हे परमात्मन् दीनबंधु, हमपर दया करो। हम इतना ही माँगते हैं कि हम सबको इस देश से निर्विघ्न पार कर दो।"

जार्ज - "ईश्वर की इन अत्याचारियों से सहानुभूति है? क्या वह इनके अत्याचारों को देखता है? वह क्यों हम लोगों पर इतना अन्याय होने देता है? और वे अत्याचारी गोरे हमसे कहते हैं

कि बाइबिल में गुलामी लिखी है। वास्तव में शक्ति ही सब कुछ है। उनके पास धन है, जन है, वे स्वस्थ हैं और सब तरह से सुखी हैं। इससे जो चाहते हैं, करते हैं। संसार की बुरी-से-बुरी बात को ये धर्म का फतवा दिला लेते हैं। इनका धर्म केवल ढोंग के सिवा और कुछ नहीं है। क्रिश्चियन कहलाने पर भी इनमें क्रिश्चियन का एक भी गुण नहीं है। जो बेचारे गरीब सच्चे क्रिश्चियन हैं, जिनमें ईसा की-सी सहनशीलता है, उन्हें ये धूल में लुटाते हैं और ठोकरें लगाते हैं। जहाँ तक बनता है, उन्हें सताते हैं। ये उन्हें खरीदते हैं और फिर बेचते हैं। उनके जिगर के खून का, उनकी आहों का, और उनके आँसुओं का सौदा करते हैं और ईश्वर उन्हें इसकी आज्ञा देता है।"

जार्ज की ये बातें सुनकर रसोईघर से साइमन ने पुकारकर कहा - "भाई जार्ज धीरज रखो। मेरी बात सुनो। ईश्वर बड़ा न्यायी है। सांसारिक माया-मोह में फँसे रहने के कारण हम उसकी लीलाओं को नहीं समझ सकते। तुम यह मत समझो कि जो बड़ा धनी है, ऐश्वर्यवान है, और जो बहुत लोगों पर हुकूमत करता है, वह बड़ा सुखी है। धन के नशे में बावले बने हुए विषय-मदांध अत्याचारी और दूसरों पर प्रभुता करनेवालों को इस संसार में तनिक भी सुख नहीं मिलता। आठों पहर चौसठ घड़ी उनके हृदय में अशांति की आग जला करती है। यदि तुम्हें उनके हृदय की वास्तविक स्थिति का पता होता तो तुम यों धन-संपत्ति और ऐश्वर्य के लिए ईश्वर से शिकायत न करते। तुम नहीं जानते कि अनेक अवसरों पर विपत्ति, दुःख और दरिद्रता ही मनुष्य को पवित्र सुख और शांति प्रदान करती है। ऐश्वर्य के मद में मतवाला होकर मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है और अंत में दुर्लभ मानव-जीवन के महत्व को खो बैठता है। विपत्ति और संकट मनुष्य को बहुधा ईश्वर की ओर ले जाते हैं। वह दरिद्रता और वह विपत्ति, जो मनुष्य को ईश्वर की याद करा दे, उस ऐश्वर्य और प्रभुत्व से हजार गुनी अच्छी है, जो मनुष्य को ईश्वर का स्मरण नहीं होने देती। विश्वास और भक्ति की भी क्या अनोखी शक्ति है!"

साइमन ने अपने हृदय के गंभीर विश्वास के साथ जार्ज को यह उपदेश दिया था। अतः जार्ज के मन पर इसका असर हुआ और उसे इससे शांति मिली। इससे पहले जार्ज ने कितने ही क्रिश्चियन पादरियों के कितने ही उपदेश सुने थे, पर उसके मन पर उनका कोई प्रभाव न पड़ा। इस कान से सुना और उस कान से निकाल दिया। सत्य तो यह है कि यदि स्वयं उपदेश देनेवाले के मन में विश्वास और भक्ति न हो, तो वह चाहे जितना गला फाड़-फाड़कर उपदेश दिया करे, किसी पर उसका कुछ असर नहीं होता। और जो अपने सिद्धांत पर स्वयं चलता है, जिसे अपने सिद्धांतों से पूरी लगन है, उसकी बात में, उसके उपदेश में जादू का असर होता है। सच्चा उपदेशक अपने विश्वास की तस्वीर खींचकर रख देता है, क्या मजाल कि किसी के हृदय पर उसकी बात का असर न हो। साइमन ऐसे ही आदमियों में थे। उनका जीवन ही परोपकार के निमित्त था। ईश्वर पर उनकी अगाध भक्ति और श्रद्धा थी। वह संपूर्ण कार्यों को ईश्वर के निमित्त ही करते थे, फिर भला उनके उपदेश का असर जार्ज के हृदय पर क्यों न होता! ऐसे परोपकारी के उपदेश तो पत्थर को भी मोम बना देते हैं।

फिर राचेल प्रेम से इलाइजा का हाथ पकड़कर उसे भोजन कराने ले गई। वे सब लोग

भोजन करने बैठे ही थे कि रूथ वहाँ आ पहुँची। रूथ और इलाइजा के परिचय का उल्लेख पहले हो चुका है। रूथ अपने साथ ऊनी मोजे और कुछ भोजन की सामग्री लाई थी। उसे इलाइजा को देकर बोली - "बहन, तुम्हारे बच्चे के पैर खाली देखकर कई दिन हुए मैंने ये मोजे बना रखे थे। अभी सुना कि तुम लोग यहाँ से चले जाओगे। इसी से जल्दी-जल्दी मैं हेरी के लिए मोजे और कुछ खाने को भी बनाकर लाई हूँ। बच्चों को हर वक्त कुछ-न-कुछ खाने को चाहिए ही।"

इतना कहकर रूथ ने हेरी को गोद में लेकर उसका मुँह चूमा और खाने की चीजें उसकी जेब में डाल दी।

इलाइजा बोली - "बहन, मुझपर तुम बड़ी कृपा करती हो। मैं इसके लिए तुम्हारी बड़ी कृतज्ञ हूँ और हृदय से तुम्हें धन्यवाद देती हूँ।"

राचेल ने कहा - "रूथ, आओ, तुम भी कुछ खा लो।"

रूथ - "नहीं, मैं इस समय ठहर नहीं सकती। मैं लड़के को जान को देकर आई हूँ और चूल्हे पर भात चढ़ा आई हूँ। मेरे जरा भी देर करने से जान की बेपरवाही से भात खराब हो जाएगा। और जो बच्चा रोया तो पास पड़ी हुई सारी चीनी वह उस लड़के को ही दे देगा। जब-तक वह ऐसा ही करता है।" जान रूथ का स्वामी था। इतना कहकर वह इलाइजा और जार्ज से विदा लेकर चली गई।

थोड़ी देर में सब के खा-पी चुकने पर एक बड़ी गाड़ी आई। सब लोग उसी में बैठ गए। फीनियस ने सबको ठीक से बैठा दिया। इलाइजा और जिम की वृद्ध माता गाड़ी के अंदर बैठीं। जिम और जार्ज सामने बैठ गए। फीनियस पीछे बैठा। जार्ज ने जरा मंद पर दृढ़ स्वर में पूछा - "जिम, तुम्हारी पिस्तौल तो ठीक है न!"

जिम - "जी हाँ, सब ठीक है।"

जार्ज - "उन लोगों से भेंट होने पर अवश्य तुम उसका उपयोग करोगे?"

जिम - (छाती फुलाकर और एक गहरी साँस ले कर) "इसमें भी क्या शक है? तुम क्या सोचते हो कि प्राण रहते मैं उन्हें अपनी माँ को फिर ले जाने दूँगा?"

गाड़ी चलने की तैयारी होने पर साइमन ने कहा - "मेरे बंधुओ, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे! तुम लोगों के सकुशल पहुँच जाने की खबर पाकर मुझे बड़ा आनंद होगा।"

इस पर गाड़ी में से सब बोले - "ईश्वर आपका भला करे।"

गाड़ी में बातचीत करने का सुभीता न था। एक तो रास्ता खराब था, दूसरे पहियों की

घड़घड़ाहट भी कम न थी। हेरी अपनी माता की गोद में शीघ्र ही सो गया, पर भय के मारे बढ़िया और इलाइजा की आँखों में नींद कहाँ! बड़ी द्रविधा और उत्कंठा में उनका समय बीत रहा था। थोड़ी रात रहे मालूम हुआ कि गाड़ी पाँच-सात कोस निकल आई है। तब धीरे-धीरे उन लोगों की चिंता घटी। इस समय इलाइजा को कुछ तंद्रा-सी आ रही थी। फीनियस सारी रात गाड़ी के पीछे खड़ा रहा। रास्ते की थकावट दूर करने के लिए वह रात भर तरह-तरह के गीत गाता रहा।

रात को तीन बजे के करीब पीछे से जार्ज को घोड़ों की टापें सुनाई दीं। जार्ज ने फीनियस को यह बात बताई। उसने भी ध्यान से सुना। सुनकर कहा - "मैं समझता हूँ, माइकेल होगा, मैं उसके घोड़े की टापों को पहचानता हूँ।" फिर वह सिर उठाकर पीछे घूम कर देखने लगा। एक सवार सरपट घोड़ा दौड़ाए दूर से आता दिखाई दिया।

फीनियस बोला - "हाँ-हाँ, वही तो है।"

जार्ज और जिम दोनों उछलकर गाड़ी से बाहर आ गए। सब चुपचाप खड़े आगंतुक की बात देख रहे थे। अब वह एक दर्रे से उतर गया, जहाँ से वह उसे देख न सके, पर शीघ्र ही फिर वह उन्हें पहाड़ की चोटी पर दिखाई दिया।

फीनियस बोला - "है-है, माइकेल ही है। लो, यह आ गया।"

माइकेल ने पास आकर कहा - "फीनियस, तुम लोग यहाँ तक आ गए?"

फीनियस - "कहो, क्या खबर है? वे आ रहे हैं?"

माइकेल - "हाँ, वे पीछे चले आ रहे हैं। दस-बारह हैं। शराब के नशे में चूर हैं, लाल-लाल आँखें हैं। मुझे तो जंगली भेड़िए-जैसे लगते हैं।" ये बातें समाप्त हुई थीं कि पीछे से घोड़ों की टापों की खटखट सुनाई देने लगी।

फीनियस गाड़ी से कूद पड़ा। घोड़ों की लगाम जोर से खींचते हुए वह गाड़ी को रास्ते से हटाकर एक पहाड़ की तलहटी में ले गया। अब वे सब पीछा करनेवाले साफ-साफ दिखाई देने लगे। इलाइजा चिल्लाने लगी और बड़ी दृढ़ता से लड़के को अपनी गोद में चिपका लिया। जिम की वृद्ध माता कहने लगी - "हे भगवान बचाओ, हे भगवान, बचाओ! बचाओ!" जार्ज और जिम पिस्तौल तान करके नीचे खड़े हो गए। फीनियस ने सबसे कहा - "तुम लोग सब गाड़ी से उतर आओ और इस चट्टान पर चढ़ जाओ।" माइकेल से कहा कि तुम शीघ्र गाड़ी लेकर आमारिया के घर की ओर चले जाओ और उसे तथा उसके पुत्रों को साथ ले आओ।

फिर फीनियस ने हेरी को इलाइजा की गोद से लेकर अपने कंधे पर चढ़ा लिया और जल्दी-जल्दी चट्टान पर आगे-आगे चढ़ने लगा। बहुत शीघ्र ये लोग चट्टान पर चढ़ गए। वहाँ पहुँचकर फीनियस बोला - "अब तो तुम लोग रास्ते से मेरे गाड़ी हटा लेने और इस चोटी पर चढ़ आने

का मतलब समझ गए होंगे। यहाँ के सब घाट मेरे जाने हुए हैं। यह चोटी ऐसी है कि यहाँ एक आदमी पिस्तौल लेकर खड़ा हो जाए तो सौ आदमियों को हरा सकता है। इस चोटी पर एक साथ दो आदमियों के चढ़ने का रास्ता ही नहीं है। जो कोई हिम्मत करके आने की कोशिश करेगा, उसी को गोली मारकर गिरा दिया जाएगा।"

जार्ज ने कहा - "ठीक है, मैं तुम्हारी चतुराई की प्रशंसा करता हूँ। पर अब तुम बैठ जाओ। हमारा मामला है, जो कुछ बुरा-भला होगा, हम समझें-बूझेंगे, हम लड़-भिड़ लेंगे।"

फीनियस ने हँसकर कहा - "अच्छा, तुम अकेले ही लड़ना। यहाँ से लड़ने में कई आदमियों की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी। एक आदमी ही काफी होगा। मैं खड़ा-खड़ा तमाशा देखूँगा। देखो, जरा नीचे की ओर देखो, वे सब खड़े-खड़े क्या सलाह कर रहे हैं। सब बिल्ली की-सी आँखें निकाल रहे हैं। उनके घूरने से ऐसा जान पड़ता है मानो एक ही छलांग में ऊपर आकर हम लोगों को खा लेंगे। अच्छा, पहले जरा इनसे पूछा तो जाए कि ये हजरत क्यों तशरीफ लाए हैं और क्या चाहते हैं? अगर कहें कि तुम लोगों को गिरफ्तार करने आए हैं, तो कह दिया जाए कि सीधी तरह अपना रास्ता नापो, नहीं तो सब अपनी जान से हाथ धो बैठोगे। इस बात पर अगर लौट जाएँ तो फिर झगड़ा बढ़ाने की जरूरत नहीं रहेगी।"

पकड़ने को आनेवालों में दो तो पाठकों के पूर्व-परिचित टॉम लोकर और मार्क ही थे। ये दोनों सबसे आगे खड़े थे। उनके पीछे दो सिपाही थे। साथ में और भी कई मतवाले थे। इनमें से एक मतवाले ने कहा - "दादा, लोग अच्छी जगह पहुँच गए हैं।"

टॉम लोकर - "यह रहा रास्ता। सब इसी रास्ते पर चढ़े हैं। मैं भी इसी रास्ते चढ़ता हूँ। आज वे नहीं भागने पाएँगे। जल्दी में कहीं कूदे तो हड्डियाँ चूर-चूर हो जाएँगी।"

मार्क - "अरे लोकर, जरा सँभलकर आगे बढ़ो। चट्टान की आड़ से किसी ने गोली दागी तो सीधे जहन्नुम पहुँचोगे।"

टॉम लोकर - "अहं, तुम्हें जब देखो तब जान ही की पड़ी रहती है, मारे डर के मरे जाते हो। क्या खतरा है? ये हब्शी गुलाम बेचारे क्या खाकर गोली चलाएँगे! एक धमकी में ही रोते-रोते नीचे उतर आएँगे।"

मार्क - "क्यों, जान की क्यों नहीं पड़ी रहेगी। रुपयों के लिए जान दूँगा? जान है तो जहान है। गुलाम समझकर मत भूलो। कभी-कभी ये काले गुलाम ही दैत्य की तरह युद्ध करते हैं। एक काला तीन गोरों को जहन्नुम की राह दिखा सकता है।"

इसी समय जार्ज ने उनके सामने की एक चोटी पर आकर बड़े धीरे और शांत भाव से स्पष्ट शब्दों में कहा:

"सज्जनों, आप लोग कौन हैं? क्या चाहते हैं?"

लोकर - "हम लोग भगोड़े गुलामों के एक दल को पकड़ने आए हैं। भगोड़ों के नाम हैं जार्ज हेरिस, इलाइजा और उनका लड़का, तथा जिम सेलडन और उसकी बूढ़ी माँ। हमारे साथ गिरफ्तारी के परवानों सहित पुलिस के कर्मचारी आए हैं। तुम केंटाकी प्रदेश के शेल्बी परगने के हेरि साहब के गुलाम जार्ज हेरिस हो न?"

जार्ज - "जी हाँ, मैं ही जार्ज हेरिस हूँ। केंटाकी के एक हेरिस साहब मुझे अपनी संपत्ति समझाते हैं, किंतु इस समय स्वतंत्र हूँ, परमेश्वर के राज्य में स्वाधीनतापूर्वक विचरता हूँ और मेरी स्त्री-पुत्र पर भी मेरे सिवा और किसी का अधिकार नहीं है। जिम और उसकी माता भी यहीं हैं। अपनी रक्षा के लिए हम लोगों के पास शस्त्र हैं और जरूरत हुई तो हम लोग उनका उपयोग भी करेंगे। तुम्हारी खुशी हो तो ऊपर आओ। पर याद रखो, जो कोई पहले ऊपर चढ़ा, वह हमारी गोली का निशाना बनकर यमपुर की राह नापेगा। उसके बाद फिर जो कोई आएगा, उसकी भी यही गति होगी। और अंत में एक-एक करके सबको जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

मार्क बोला - "आओ-आओ, जल्दी नीचे उतर आओ, खड़े-खड़े बकवाद मत करो। तुम्हारे बोलने की जगह नहीं है। तुम देखते नहीं कि पुलिस-कानून हमारे साथ है। हम लोग कानून से चले हैं, तुम लोगों को पकड़ने का हमें अधिकार है। बहुत चीं-चपड़ न करो, जल्दी नीचे उतर आओ।"

जार्ज - "अजी, मैं खूब जानता हूँ कि तुम लोग कानून से चले हो और तुम्हारे हाथ में शक्ति है। तुम चाहते हो कि मेरी स्त्री को ले जाकर नवअर्लिस में बेच डालो, मेरे बच्चे को बकरी के बच्चे की भाँति किसी व्यवसायी के कसाईखाने में बेच डालो और जिम तथा उसकी माता को उसके उसी नरपिशाच मालिक को सौंप दो। वहाँ पर वह इस बुढ़िया पर बेंत फटकारेगा और इसी के सामने इसके लड़के की जान लेगा। बस, यही तुम्हारा मतलब है। जहन्नुम में गया तुम्हारा कानून। मैं ऐसे कानून पर लात मारता हूँ, जो केवल गरीबों को सताने और धनिकों को फायदा पहुँचाने के लिए बना हो। लानत है तुम्हारे उस कानून पर और उस कानून के अनुसार चलनेवालों और विचार करनेवालों पर। हम इस कानून की जरा भी परवा नहीं करते। और न हम इसे अपना कानून मानते हैं, न तुम्हारे मुल्क ही को अपना देश समझते हैं। हम लोग यहाँ विस्तीर्ण आकाश के नीचे खड़े हुए उतने ही स्वाधीन हैं, जितने तुम लोग। हम भी उसी ईश्वर के बनाए हुए हैं जिसने तुमको बनाया है। हम मरते दम तक अपनी स्वाधीनता के लिए लड़ेंगे। हमारा मूल मंत्र है - स्वाधीनता या मृत्यु।"

उपर्युक्त बातों को करते समय जार्ज को बड़ा जोश आ गया। उसका चेहरा बहुत भयंकर हो गया। उसकी आँखों में क्रोध की लाली छा गई, मानो उनसे आग की चिनगारियाँ बरस रही हों। उसके ओठ फड़कने लगे और उसके दाहिना हाथ उठाकर बोलने के समय ऐसा जान पड़ने लगा, मानो वह देश में फैले हुए अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध परमपिता जगदीश्वर के सिंहासन के



सम्मुख अपील करता हुआ न्याय का पक्ष समर्थन करता हो। यदि किसी अंग्रेज युवक ने इंग्लैंड से अमेरीका को भगाते हुए ऐसी वीरता प्रकट की होती तो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में उसका नाम लिखा जाता, पर क्रीत दासी के गर्भ से उत्पन्न गुलाम जार्ज की वीरता को गोरे इतिहास-लेखक कब स्वीकार करने लगे?

जार्ज की बातें सुनकर और उसके मुख का विकट भाव देखकर पकड़नेवाले सहम गए। वास्तव में कभी-कभी साहस और दृढ़ प्रतिज्ञा बड़े-बड़े बलवानों की छाती भी दहला देती है। मार्क को छोड़कर और सबकी हिम्मत जाती रही। अब मार्क ने निशाना ताककर जार्ज पर गोली चलाई। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि इसकी लाश इसके मालिक को देकर उससे विज्ञापन में लिखा हुआ इनाम वसूलकर लूँगा।

इधर जार्ज उछलकर पीछे हट गया। इलाइजा चीख उठी। गोली उसके पास से सनसनाती हुई निकल गई। जार्ज ने कहा - "इलाइजा, डरो मत। कोई खतरे की बात नहीं।"

फीनियस ने आगे बढ़कर जार्ज से कहा - "इलाइजा को समझाने-बुझाने का यह समय नहीं है। इन दुष्टों का मार्ग बंद करना चाहिए। ये बड़े ही कमीने हैं।"

जार्ज - "जिम, देखो तुम्हारी पिस्तौल ठीक है? जो कोई पहला आदमी चढ़ने की चेष्टा करेगा, उस पर मैं गोली दाग दूँगा। दूसरे को तुम लेना, यही क्रम रहेगा। एक मैं और एक तुम। एक आदमी के लिए दो गोलियाँ बेकार खर्च नहीं की जाएँगी।"

जिम - "अगर तुम्हारा निशाना चूक गया तो फिर क्या करना होगा?"

जार्ज ने जोश से कहा - "ऐसा नहीं होगा। मेरा निशाना बिल्कुल ठीक बैठेगा।"

फीनियस ने मन-ही-मन जार्ज के साहस को सराहा।

मार्क का निशाना चूका देखकर उसका दल सोचने लगा कि अब क्या किया जाए!

लोकर बोला - "मैं इन काले हड्डियों से कभी नहीं डरा और न इस समय डरता हूँ।"

इतना कहकर वह पहाड़ पर चढ़ने लगा। और लोग उसके पीछे-पीछे चलने लगे। कुछ दूर जाते ही जार्ज ने लोकर को ताककर गोली मारी, जो उसकी भुजाओं में लगी। किंतु चोट खाकर भी वह लौटा नहीं। पागल सांड की तरह आगे ही बढ़ता गया। तब फीनियस ने कहा - "मित्र, यहाँ तुम्हारी जरूरत नहीं, नीचे ही चलो।" यह कहकर उसने उसको धकेल दिया। लोकर एकदम वहाँ से लड़खड़ाता हुआ नीचे गिरा। इतनी ऊँचाई से गिरने पर वह अवश्य मर जाता, परंतु बीच में एक पेड़ से अटक जाने के कारण उसके ऊपर से गिरने का वेग कुछ घट गया। इससे वह

मरा तो नहीं, पर जख्मी होकर बेहोश हो गया।

मार्क - "ईश्वर कुशल करे, सब-के-सब साक्षात दैत्य हैं। भागो, भागो, लौट चलो।"

अब तक सिपाही देवता चुप थे, पर लौटते समय भागने में वे भी बड़ी तेजी दिखाने लगे। यह उस श्रेणी के व्यक्ति थे, जो मारनेवालों के तो पीछे और भागनेवालों के आगे रहते हैं। फिर मार्क ने सिपाहियों को बुलाकर कहा - "भाई, तुम लोग जरा देखना, मैं अभी और सिपाहियों को लेकर आता हूँ।"

इतना कहकर वह घोड़े पर चढ़कर नौ-दो-ग्यारह हो गया।

उनमें से एक ने कहा - "क्या तुमने कभी ऐसा अधम कीट देखा था? बेईमान अपने ही काम के लिए हम लोगों को लाया और हम लोगों को इस आफत में फँसाकर आप साफ चलता बना। खैर, चलो, उसे बेचारे वीर लोकर की तो खबर ली जाए कि मरता है या जीता।"

लोकर के पास आकर उनमें से एक बोला - "कहो, हम लोगों के साथ चल सकोगे? क्या तुम्हें चोट ज्यादा लगी है?"

लोकर - "क्या पता, एक बार मुझे उठाकर तो देखो। यह क्वेकर न होता तो मैं और सभी को आनन-फानन में पकड़ लेता।"

फिर दोनों ने किसी तरह सहारा देकर लोकर को घोड़े पर लादा। इधर घोड़े का हिलना था कि वह धड़ाम से जमीन पर आ रहा। यह दशा देखकर दोनों सिपाहियों ने सोचा कि यह तो बड़ी आफत है। इसे लेकर सारी रात मुसीबत में भी कौन फँसे!

यह सोचकर उन दोनों सिपाहियों ने लोकर को उसी दुर्दशा में छोड़कर अपनी-अपनी राह पकड़ी। लोकर मुर्दे की भाँति वहीं पड़ा रहा।

लोकर को छोड़ और सबके चले जाने पर वह दल नीचे उतरा। इधर स्टीपन, आमारिया और दूसरे दो क्वेकरों को साथ लेकर माइकेल गाड़ी समेत वहाँ पहुँच गया। इलाइजा ने पहाड़ के नीचे आते ही लोकर को देखकर कहा - "देखना चाहिए कि इसमें साँस बाकी है या नहीं? मैं तो भगवान से यही मनाती हूँ कि यह मरा न हो।"

फीनियस - (मुस्करा कर) "बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है। लेकिन इसके उन नालायक साथियों को क्या कहा जाए, जो इस बेचारे को इस दशा में छोड़कर चल दिए!"

इलाइजा - "यह बेचारा घावों की पीड़ा से छटपटा रहा है। हम लोगों को इसकी सेवा का प्रयत्न करना चाहिए।"

जार्ज - "इसकी जीवन-रक्षा का उपाय अवश्य किया जाएगा। दुश्मन पर दया करना ईसाई धर्म का एक अंग है।"

फीनियस - "मैं इसे लेकर किसी क्वेकर के यहाँ रखूँगा। फिर सेवा-शुश्रूषा और दवा-पानी से आराम हो जाने पर इसे इसके घर पहुँचा दूँगा। इसे यों छोड़ चलना बड़ी नीचता का काम होगा। देखो तो, इसकी क्या दशा है?"

लोकर के निकट जाकर फीनियस ने उसके शरीर की जाँच की। पहले फीनियस एक नामी शिकारी था। इससे वह घाव की मरहम-पट्टी तथा बहते हुए रक्त-प्रवाह को रोक देने की विधि खूब जानता था। वह अपनी जेब से रुमाल निकालकर पट्टी फाड़-फाड़कर लोकर के घावों पर बाँधने लगा। लोकर ने कहा - "मार्क!"

फीनियस हँसकर बोला - "मार्क कहाँ है? वह तो तुम्हें छोड़कर भाग गया। सिपाही भी चलते बने। हम लोग अब तक तुम्हारे शत्रु थे, पर अब हम लोगों को अपना शुभचिंतक समझो। जहाँ तक हो सकेगा, तुम्हारी पीड़ा दूर करने का यत्न करेंगे।"

लोकर - "मैं बचता नहीं जान पड़ता। नीच कुत्ते मुझे छोड़कर चले गए। मेरी माँ मुझसे सदा करती थी कि ये साथी विपदा में तेरा साथ न देंगे। उसकी बात आज सच निकली।"

जिम की माता ने कहा - "इसकी माँ है। ओफ, उसे कितना कष्ट होगा? हे ईश्वर, इसे जीवन-दान दो।"

लोकर ने फीनियस से अपना हाथ झटककर छुड़ा लिया और तेज होने लगा। तब फीनियस ने कहा - "मित्र, जरा धीरज रखो। बहुत लाल-पीले मत पड़ो।"

लोकर बोला - "तुम्हीं ने तो मुझे धकेल दिया था।"

फीनियस - "जी हाँ, अगर मैं तुम्हें धकेल न देता तो तुम हम सबों को धकेल देते। अब उन बातों को जाने दो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे घावों पर फौरन पट्टी बाँध दी जाए। अब धक्का-मुक्की का काम नहीं है। अब मैं तुम्हारी भलाई ही करूँगा। चलो, तुम्हें किसी क्वेकर के परिवार में पहुँचा दूँ। वहीं तुम्हारी बहुत अच्छी सेवा होगी - इतनी अच्छी कि शायद तुम्हारी माता भी उससे बढ़कर न करती।"

शारीरिक यंत्रणा के कारण लोकर अचेत हो गया। सबने उसे पकड़कर गाड़ी में लिटाया। फिर सब लोग गाड़ी पर बैठे। गाड़ी चल पड़ी। जिम की माँ ने अपनी गोद में लोकर का सिर रख लिया। इलाइजा, जार्ज और जिम सब उसके लिए काफी जगह छोड़कर बैठे।

जार्ज ने फीनियस से पूछा - "आप क्या सोचते हैं कि लोकर अवश्य बच जाएगा?"

फीनियस - "हाँ, जरूर बच जाएगा। बेहोश तो वह ज्यादा खून निकल जाने की वजह से हो गया है। इसमें शक नहीं कि यह बहुत जल्दी अच्छा हो जाएगा।"

जार्ज - "आपकी बात सुनकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। यद्यपि मैंने अपनी जान बचाने के लिए इस पर गोली चलाई थी, फिर भी यदि मेरे हाथ से इसकी मौत हो जाती तो सदा के लिए मेरे माथे पर इसका कलंक लग जाता। अब कहो, इसका करोगे क्या?"

फीनियस बोला - "हमारे क्वेकर संप्रदाय में ग्रांडमय स्टीफन नाम की एक वृद्ध स्त्री है। वह बड़ी दयालु है। इसे उसके यहाँ पहुँचा देने से इसकी खूब सेवा होगी।"

घंटे भर में सब लोग एक साफ-स्वच्छ घर के सामने पहुँचे। लोकर को सब लोगों ने पकड़कर उतारा और वहाँ उस घर में उसे बहुत अच्छे और मुलायम बिस्तरे पर लिटा दिया। बड़ी मुस्तैदी से उसकी सेवा होने लगी।

## 20. सच्ची प्रभु-भक्ति

सदाचार और सुशीलता का सभी जगह आदर होता है। जिसके हृदय में धर्मभाव और साधुभाव का राज्य है, उसके लिए इस संसार में, किसी दशा में, विपत्ति और कष्ट का भय नहीं है। ऐसे आदमी को सभी प्यार करते हैं। सचमुच सद्भाव के प्रभाव से पाषाण-हृदय भी नरम पड़ जाता है। दया, उदारता, स्नेह, सच्चे त्याग और निःस्वार्थ प्रेम के सम्मुख लोगों का सिर सदा झुका रहता है। इसी से टॉम अपने निष्कपट सरल व्यवहार के कारण दिन-प्रति-दिन अपने मालिक की आँखों में चढ़ता गया।

रुपए-पैसे के मामले में सेंटक्लेयर बड़ा लापरवाह था। वह अपने आय-व्यय का कोई लेखा-जोखा नहीं रखता था। उसका एडाल्फ नामक गुलाम ही हाट-बाजार तथा खर्च आदि का काम किया करता था। वह भी अपने मालिक के समान लापरवाह आदमी था, बेहिसाब खर्च करता था। पर टॉम के आने पर सेंटक्लेयर मौके-मौके से उससे काम लेने लगा। उसकी चतुराई और ईमानदारी देखकर सेंटक्लेयर ने शीघ्र ही अपने रुपए-पैसे एवं खर्च का कुल काम उसको सौंप दिया।

अपने हाथ से खर्च का अधिकार निकल जाने के कारण एडाल्फ कुछ उदास हुआ और मुँह बनाने लगा। इस पर सेंटक्लेयर ने कहा - "नहीं-नहीं, एडाल्फ, यह काम तुम टॉम को ही करने

दो। तूम केवल खर्च करना जानते हो और टॉम खर्च और आमद, दोनों को समझता है। इस काम के लिए यदि हम किसी ऐसे आदमी को नियत न करें तो यों ही करते-करते एक दिन रुपयों का तोड़ा हो सकता है।"

टॉम सेंटक्लेयर का काम बड़ी ही ईमानदारी से करता था। उससे कभी किसी खर्च का हिसाब नहीं पूछा जाता था। वह यदि चाहता तो बेईमानी से बहुत रुपए बना लेता; पर वह अधर्म की कौड़ी लेना महापाप समझता था।

सेंटक्लेयर को मालिक जानकर टॉम उसका बड़ा सम्मान करता था, पर इस सम्मान के भाव में दूसरा ही रंग पकड़ा। टॉम बूढ़ा और सेंटक्लेयर नौजवान था। टॉम गंभीर और सेंटक्लेयर चंचल-चित्त था। इससे सेंटक्लेयर के संबंध में टॉम के हृदय में पितृ-वात्सल्य का संचार होने लगा। टॉम ने देखा कि सेंटक्लेयर का हृदय तो बड़ा दयालु है, किंतु वह न कभी बाइबिल पढ़ता है, न कभी उठते-बैठते ईश्वर का भजन ही करता है, न गिरजे में जाकर कभी ईश्वर की वंदना करता है। वह तो सदा हँसी-खुशी में मग्न रहता है। थियेटर जाने का उसे शौक है। कभी-कभी अपने जैसे चंचल-चित्तवाले युवकों में बैठकर खूब शराब पीकर पागल बन जाता है। ये बातें देखकर टॉम के मन में बड़ा दुःख होता था। ऐसा दयालु, सरल-प्रकृति, सहृदय व्यक्ति ईश्वर से अलग पड़ा है, उपासना-हीन जीवन व्यतीत कर रहा है, टॉम के लिए यह बड़े ही कष्ट का विषय था। वह नित्य अपनी प्रार्थना में ईश्वर से विनती करता - "भगवान, इस युवक की मति सुधार दो, उसका हृदय पलट दो! इसके हृदय में धर्म तथा अपनी भक्ति की तृष्णा उत्पन्न कर दो!"

एक दिन की बात है। सेंटक्लेयर ने कहीं बहुत अधिक शराब पी ली और बड़ी रात गए गिरता-पड़ता घर आया। उस समय टॉम और एडाल्फ ने उसे गाड़ी से उतारकर खाट पर सुलाया। सेंटक्लेयर की यह दशा देखकर एडाल्फ हँसने लगा। पर टॉम कुछ न बोल सका। उसकी आँखों से आँसू झरने लगे। टॉम का यह भाव देखकर एडाल्फ और भी हँसने लगा। किंतु टॉम को उस रात बिल्कुल नींद नहीं आई। वह रात भर बैठा-बैठा ईश्वर से मालिक के सुधार के लिए प्रार्थना करता रहा। सबेरे सेंटक्लेयर ने टॉम को कहीं भेजने के लिए बुलाया। टॉम जब आकर खड़ा हुआ तो उसकी आँखें डबडबाई हुई थीं। उसको कुछ रुपए देकर सेंटक्लेयर ने किसी काम के लिए जाने को कहा, किंतु टॉम वहीं खड़ा रहा। तब सेंटक्लेयर ने पूछा - "टॉम, मैं कुछ भूल गया हूँ?"

टॉम - "नहीं, मुझे कहते डर लगता है।"

सेंटक्लेयर ने हाथ का अखबार मेज पर पटक दिया तथा चाय का प्याला भी छोड़ दिया और टॉम की ओर देखने लगा। उसने पूछा - "क्यों टॉम, मामला क्या है? तुम्हारा चेहरा देखकर तो जान पड़ता है, मानो कोई बड़ी भारी विपदा आ पड़ी है।"

टॉम - "प्रभु, मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। मैं समझता था कि मालिक सदा सबके साथ समान

व्यवहार करते हैं।"

सेंटक्लेयर - "तो क्या तुम्हारा यह खयाल ठीक नहीं उतरा? अब बोलो, तुम क्या चाहते हो? मैं समझता हूँ कि तुम कोई चीज चाहते होगे और वह तुम्हें नहीं मिली होगी, यह उसी की भूमिका है।"

टॉम - "प्रभु, इस दास पर तो आपकी सदा ही कृपा बनी रहती है। अपने विषय में मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं करनी है, किंतु एक आदमी से आपका बर्ताव अच्छा नहीं होता?"

सेंटक्लेयर - "क्यों, मैंने किससे बुरा बर्ताव किया? अपना मतलब खोलकर कहो।"

टॉम - "कल रात की घटना का स्मरण करने से मुझे बड़ा खेद होता है। आप सब पर तो दया करते हैं, केवल अपने ऊपर आप बड़े निर्दयी हैं।"

सेंटक्लेयर ने मुस्कराकर कहा - "ओह, यह बात है!"

टॉम ने सिर झुकाकर बड़ी नम्रता से आँखों में आँसू भरकर, पैरों पर पड़कर कहा - "प्रभु, यही बात थी, जो मैं आपसे कहना चाहता था। मेरे प्यारे नवयुवा प्रभु! मुझे भय है कि यह सबकुछ, सबकुछ, शरीर-आत्मा का सत्यानाश कर देगा। बाइबिल में लिखा है कि यह बला सर्प से भी भयंकर और बुरी है, मेरे प्यारे प्रभु!"

टॉम का गला भर आया और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

सेंटक्लेयर की भी आँखें भर आईं। उसने कहा - "टॉम, उठो। तुम भी कितने नासमझ हो। तुम्हें जरा भी अक्ल नहीं है। मैं इस योग्य नहीं कि मेरे लिए कोई रोए।"

पर टॉम नहीं उठा। वह सेंटक्लेयर की ओर इस तरह ताकने लगा, मानो उसके नेत्र विनती कर रहे हों।

टॉम की यह दशा देखकर कोमल-हृदय सेंटक्लेयर बोला - "टॉम, लो, मैं आज से प्रतिज्ञा करता हूँ कि फिर कभी इतनी शराब नहीं पीऊँगा। फिर कभी बुरों का साथ नहीं करूँगा। मैं अपने चरित्र से स्वयं घृणा करता हूँ। मैं अपने जीवन को पापमय समझता हूँ। तुम बेफिक्र रहो, मैं अब फिर बुरा काम नहीं करूँगा।"

इतना कहकर सेंटक्लेयर ने टॉम का हाथ पकड़कर उसे उठाया।

सेंटक्लेयर की प्रतिज्ञा सुनकर टॉम को बड़ा संतोष हुआ और आँखों का पानी पोंछता हुआ चला गया।

टॉम के चले जाने पर सेंटक्लेयर कहने लगा कि मैंने आज जो प्रतिज्ञा की है, उसे कभी नहीं तोड़ूँगा।

सचमुच उस दिन से सेंटक्लेयर ने मद्यपान छोड़ दिया। वह स्वभावतः इन्द्रियासक्त अथवा कृप्रवृत्ति के अधीन न था। लड़कपन से ही लोग उसे सच्चरित्र समझते थे। पर इधर संसार से उसे विराग-सा हो गया था। संसार की टेढ़ी गति देखकर किसी काम में उसका मन न लगता था। उसके जीवन का कोई लक्ष्य न था। उसका यह लक्ष्य-शून्य जीवन घटना-चक्र के अनुसार चलता था। इसी से समय काटने के लिए उसे जब जैसा संग मिलता, वह उसी में रम जाता और हँसी-खुशी मनाता था। महीनों की कौन कहे, लगातार वर्ष-के-वर्ष यों ही बिना कष्ट के बीत जाते थे।

## 22. आपसी चर्चाएँ

कुछ दिनों बाद बुढ़िया प्रू की जगह एक दूसरी स्त्री बिस्कुट और रोटियाँ लेकर आई। उस समय मिस अफिलिया रसोईघर में थी। दीना ने उस स्त्री से पूछा - "क्यों री, आज तू रोटी कैसे लाई है? प्रू को क्या हुआ?"

"प्रू अब नहीं आएगी", उस स्त्री ने यह बात ऐसे ढंग से कही, जैसे इसमें कुछ रहस्य हो। दीना ने पूछा - "क्यों नहीं आएगी? क्या वह मर गई?"

उस स्त्री ने मिस अफिलिया की ओर देखते हुए कहा - "हम लोगों को ठीक-ठीक मालूम नहीं है। वह नीचे के तहखाने में है।"

मिस अफिलिया के रोटियाँ ले लेने के बाद दीना उस स्त्री के पीछे-पीछे दरवाजे तक गई। उससे पूछा - "प्रू है कहाँ? कुछ तो कह!"

वह स्त्री कहना चाहती थी, पर डर से नहीं कह रही थी। अंत में दबी जबान से चुपके-चुपके बोली - "अच्छा देख, तू किसी से कहना मत। प्रू ने एक दिन फिर शराब पी ली, इस पर उन लोगों ने उसे नीचे के तहखाने में बंद करके दिन भर रख छोड़ा। फिर मैंने लोगों को कहते सुना कि उसके शरीर पर मक्खियाँ भिन-भिना रही हैं और वह मरी पड़ी है।"

यह सुनकर दीना ने विस्मय से हाथ उठाया और पीछे हट गई। तभी देखती क्या है कि इवान्जेलिन उसके पास खड़ी है। इवा की आँखें स्थिर हैं, मुँह सूख गया है, गालों और होंठों की सुर्खी गायब होकर सफेदी छा रही है। दीना चिल्ला उठी - "बाप-रे-बाप! भगवान बचाएँ! इवा

बेहोश हो रही है। अरे, हम लोगों को क्या पड़ी थी जो उसे ये सब बातें सुनने दीं? मालिक को पता लगने से वह बहुत नाराज होंगे।"

बालिका ने दृढ़ता से कहा - "मुझे बेहोशी नहीं होगी। और मुझे ये बातें सुननी क्यों नहीं चाहिए? कष्ट की बातें सुनने में मुझे उतनी पीड़ा नहीं होगी, जितनी प्रू को कष्ट सहने में।"

दीना ने कहा - "नहीं, तुम-सरीखी कोमल नन्हीं बालिकाओं को ये कष्ट-कथाएँ नहीं सुननी चाहिए। इन बातों से तुम्हें बड़ी पीड़ा होती है।"

इवा ने फिर ठंडी साँस ली, और बड़े वितृष्ण चित्त से पैर धरती हुई दुमंजिले कमरे में चली गई।

मिस अफिलिया ने प्रू के बारे में बड़ी सरगर्मी से पूछताछ की। दीना से जो कुछ सुना था, उसे खूब नमक-मिर्च लगाकर कह सुनाया। टॉम ने अपने पहले दिन की तहकीकात सुनाई।

सेंटक्लेयर जिस कमरे में बैठा अखबार पढ़ रहा था, उसमें जाकर पैर रखते ही मिस अफिलिया ने कहा - "ओफ, कैसा बीभत्स कांड है! कैसा जघन्य व्यापार है!"

सेंटक्लेयर ने पूछा - "जीजी, आज कौन-सा अधर्म का पहाड़ टूट पड़ा?"

मिस अफिलिया बोली - "तुम्हारे लिए कोई बात ही नहीं है। मैंने तो ऐसी बात कभी नहीं सुनी। उन लोगों ने मारे कोड़ों के प्रू को मार डाला।" मिस अफिलिया ने बहुत विस्तार से वह बात कह सुनाई।

सेंटक्लेयर ने अखबार पढ़ते-पढ़ते कहा - "मैंने तो पहले से समझ रखा था कि किसी दिन यही होना है।"

अफिलिया बोली - "तुमने समझ रखा था और इसके प्रतिकार का कोई उपाय नहीं किया! क्या तुम्हारे यहाँ ऐसे पाँच भलेमानस नहीं हैं, जो मिलकर इन निष्ठुरताओं का निवारण करने का यत्न करें।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "जो अपने दास-दासियों की जान लेता है, वह स्वयं अपना माल नष्ट करता है। इसमें दूसरे को बोलने का कोई अधिकार नहीं। अपना नफा-नुकसान हरेक आदमी दूसरे की अपेक्षा अच्छी तरह समझता है। भरसक अपने दास-दासियों को मारकर अपना नुकसान कोई नहीं करता, पर प्रू पैसे चुरा-चुराकर शराब पीती थी, इससे उसके मालिक का बहुत नुकसान होता था, इसी से उसे मार डाला होगा।"

मिस अफिलिया ने कहा - "अगस्टिन, वास्तव में यह बड़ा ही भयंकर धंधा है। निश्चय ही



इसके लिए तुम्हें ईश्वर का कोप-भाजन बनना पड़ेगा।"

सेंटक्लेयर बोला - "प्यारी जीजी, मैंने कभी ऐसा नहीं किया, पर मैं दूसरों को नहीं रोक सकता। यदि नीच पशु के जैसे मनुष्य अपनी इच्छानुसार यह अत्याचार करते हैं तो बताओ, मैं उसमें क्या करूँ? कानूनन हर आदमी अपने-अपने दास-दासियों पर पूर्ण अधिकार रखता है। दास-दासियों को जान से मारकर भी कोई दंड नहीं पा सकता। जब कानून ने उन्हें इतना अधिकार दे रखा है तो कोई क्या कर सकता है? इसलिए सबसे भली बात चुप रहना है। उधर से अपने आँख-कान बंद किए बैठे हैं। जो होता है सो होता है।"

मिस अफिलिया ने कहा - "तुम कैसे अपनी आँखों और कानों को इधर से बंद कर लेते हो? तुम कैसे चुपचाप ये अत्याचार होने देते हो? इस भयंकर आचरण की कैसे उपेक्षा की जा सकती है?"

सेंटक्लेयर बोला - "बहन, तुम क्या आशा करती हो? देखो, यह एक मूर्ख, आलसी, भले-बुरे का ज्ञान न रखने वाली, चिर-पराधीन मनुष्य-जाति दूसरी बहुत ही स्वार्थ-परायण, अर्थ-पिशाच मनुष्य-जाति के पंजों में फँसी हुई है। इन स्वार्थियों को जब इतनी बेहिसाब ताकत दे दी गई है, तब ऐसे भयंकर और कठोर आचरणों का होना अवश्यंभावी है। ऐसे समाज में एकाध सज्जन होकर ही क्या कर सकते हैं? मेरी अकेले की ऐसी बिसात नहीं कि इस देश भर के गुलामों को खरीदकर उन्हें दुःख से मुक्त कर दूँ।"

यह कहते-कहते सेंटक्लेयर का सदा प्रफुल्ल मुख कुछ देर के लिए कुम्हला गया। उसकी आँखें डबडबाई-सी जान पड़ीं, पर तुरंत उसने अपने मनोभाव को छिपाकर मुस्कराते हुए कहा - "बहन, तुम वहाँ यमराज की नानी का-सा मुँह बनाए क्या खड़ी हो? इधर आओ। तुमने अभी देखा क्या है? इस संसार भर के पाप, अत्याचार और सख्तियों का हिसाब लगाकर सोचा जाए तो जीवन मुश्किल हो जाए। इस संसार में कुछ भी अच्छा न लगे।"

यह कहकर सेंटक्लेयर लेट गया और अखबार पढ़ने लगा।

मिस अफिलिया जमीन पर बैठी-बैठी उदासी के साथ मोजा बुनने लगी। उसके हाथ चलते थे, पर जब वह उन बातों को सोचने लगी तो अकस्मात् उसके हृदय में आग भभक उठी और अंत में वह फूट पड़ी। उसने कहा - "अगस्टिन, मैं तुम्हारी भाँति इस विषय की उपेक्षा नहीं कर सकती। मेरा मत है कि इस प्रथा का समर्थन करना तुम्हारे लिए बहुत ही घृणाजनक है।"

सेंटक्लेयर बोला - "क्यों बहन, तुमने फिर वही पचड़ा छोड़ा।"

अफिलिया ने और तेजी के साथ कहा - "मैं कहूँगी कि इस प्रथा का समर्थन करना तुम्हारे लिए बहुत ही घृणाजनक है।"

सेंटक्लेयर बोला - "प्यारी बहन, मैं इसका समर्थन करता हूँ? किसने कहा कि मैं इसका समर्थन करता हूँ।"

अफिलिया ने कहा - "निस्संदेह तुम इसका समर्थन करते हो - तुम सब जितने दक्षिणी हो वे सब। नहीं, तो बताओ कि तुमने दासों के लिए क्या किया?"

सेंटक्लेयर बोला - "क्या तुम मुझे संसार में कोई ऐसा निर्दोष मनुष्य बताओगी, जो किसी काम को बुरा समझ लेने पर फिर उसे नहीं करता? क्या तुमने कभी ऐसा काम नहीं किया या नहीं करती हो, जिसे तुम बिल्कुल ठीक नहीं समझती?"

अफिलिया ने कहा - "यदि कभी करती हूँ तो मैं उसके लिए पश्चाताप करती हूँ।"

सेंटक्लेयर ने नारंगी छीलते-छीलते कहा - "मैं भी ऐसा ही करता हूँ। सारा समय इस पश्चाताप ही मैं बीतता हूँ।"

अफिलिया बोली - "पश्चाताप करने के बाद आखिर उस को क्यों करते जाते हो?"

सेंटक्लेयर ने कहा - "बहन, तुम क्या अनुमान करने के बाद फिर उस बुरे काम को नहीं करती?"

अफिलिया ने उत्तर दिया - "केवल ऐसी दशा में जब मैं बहुत लोभ में पड़ जाती हूँ।"

सेंटक्लेयर बोला - "हाँ, तो मैं बड़े लोभ ही में फँसा हुआ हूँ। जो मुश्किल तुम्हें पड़ती है, वही मुझे भी पड़ती है।"

अफिलिया ने कहा - "पर मैं सदा अपने दोष को दूर करने की चेष्टा किया करती हूँ।"

सेंटक्लेयर बोला - "बहुत ठीक। मैं भी तो दस वर्षों से चेष्टा कर रहा हूँ, पर अभी तक मैं अपने कितने ही दोष दूर नहीं कर पाया। कहो बहन, तुम क्या सब पापों से छुटकारा पा चुकी हो?"

इस बार मिस अफिलिया ने बड़ी गंभीरता से बुनने के काम को किनारे रखकर कहा - "भाई अगस्टिन, मुझमें अनेक दोष हैं, उनके लिए तुम मेरी भर्त्सना कर सकते हो। तुम्हारा कथन यथार्थ है। अपनी कमजोरी के विषय में मुझसे अधिक कोई दूसरा अनुभव नहीं कर सकता। पर मैं तुमसे कहूँगी कि अपना यह दाहिना हाथ काटकर फेंक सकती हूँ, पर अपने दोष की उपेक्षा कभी नहीं कर सकती। जिस काम को मैं बुरा समझती हूँ, उसे सदा कभी नहीं करती रह सकती।"

अगस्टिन ने कहा - "बहन, क्या तुम्हें मेरी बात पर गुस्सा आ गया? तुम तो जानती हो

कि मैं बराबर दृष्ट लड़का था। मुझे तुम्हें खिझाने में हमेशा आनंद आया करता था। तुम्हारा स्वभाव कितना पवित्र है, सो क्या मैं जानता नहीं! तुम्हारी सहृदयता क्या मैं भूल गया हूँ? पर तुम जरूरत से ज्यादा भली हो - इतनी भली कि तुम्हारे मरने का खयाल करके मुझे बड़ा दुःख होता है।"

अफिलिया ने माथे पर हाथ रखकर कहा - "अगस्ट, यह बड़ी गंभीर बात है। हँसी-मजाक की नहीं।"

सेंटक्लेयर बोला - "हाँ, हिसाब से गंभीर है सही, पर मैं इतनी गर्मी में तो गंभीर होने से रहा। गर्मी तो गर्मी, उस पर मच्छरों का उपद्रव अलग परेशान किए हुए है। इस समय कोई भी इतनी ऊँचाई की नैतिक आलोचना नहीं कर सकता।"

सेंटक्लेयर ने एकाएक अपने आप उठकर कहा - "मैंने अब समझा कि तुम्हारे यहाँ के उत्तरवाले लोग हम दक्षिणवालों से यों अधिक धार्मिक होते हैं। इसका कारण यह जान पड़ता है कि तुम्हारे वहाँ यहाँ के जैसी गर्मी नहीं पड़ती। लो, मुझे इस नए आविष्कार के लिए बधाई दो।"

अफिलिया बोली - "अगस्टिन, तुम बड़े ही खफती दिमाग के हो।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "मैं खफती दिमाग का हूँ! ठीक है, होऊँगा, कोई ताज्जुब की बात थोड़े ही है। पर अब मैं एक बार गंभीर बनता हूँ। तुम जरा यह नारंगी की टोकरी मुझे उठा देना। देखो, तुम मेरे लिए थोड़ा कष्ट करो, मैं भी तो गंभीर बनने में कितना कष्ट उठाऊँगा।"

इतना कहने के बाद सचमुच ही उसका चेहरा गंभीर हो आया। वह बड़ी संजीदगी से, अपने भाव प्रकट करने लगा - "बहन जहाँ तक मेरा खयाल है, इस दासत्व-प्रथा के खयाल पर कोई मतभेद नहीं हो सकता। पर हमारे यहाँ के अर्थलोभी गोरे जमींदार, स्वार्थवश, दासत्व प्रथा को न्यायसंगत बताते हैं और उनके टुकड़ों पर बसर करनेवाले खुशामदी पादरी इन्हें खुश रखने के लिए इसे बाइबिल से साबित करने को तैयार रहते हैं। वकील और नीति के पंडित अपना मतलब गाँठने के लिए आडंबर फैलाकर इस भयंकर रीति का समर्थन करते हैं। ये लोग अपने मतलब के लिए भाषा, नीति और धर्मशास्त्र का मनमाना अर्थ लगाते हैं। इस काम में इनकी अक्ल की दौड़ देखकर हैरान होना पड़ता है। पर सच तो यह है कि चाहे इसे बाइबिल से सिद्ध किया जाए, अथवा कानून की द्वाड़ा दी जाए, या कितनी युक्तियाँ क्यों न दिखाई जाएँ, किंतु दुनिया कभी उनपर विश्वास नहीं कर सकती। यह घृणित दास-प्रथा नरकीय प्रथा है, नरक से निकली हुई है।"

अगस्टिन बड़ी उत्तेजना से ये बातें कह रहा था। मिस अफिलिया को इस पर बड़ा विस्मय हुआ। वह अपना बुना छोड़कर सेंटक्लेयर का मुँह देखने लगी। उसे विस्मित देखकर सेंटक्लेयर फिर कहने लगा - "तुम मेरी बात पर विस्मित-सी जान पड़ती हो, पर मैं आज जब कहने ही बैठा हूँ तब सारी बातें खोलकर कहता हूँ। गुलामी की इस घृणित प्रथा का मूल कारण देखना चाहिए, इसके ऊपर के सारे आवरणों को अलग करके देखना चाहिए कि यह क्या है? वास्तव में,

हम भी इंसान हैं और कुएशी (जो लोग दास बनाए जाते थे) भी इंसान हैं। पर वे बेचारे मूर्ख और निर्बल हैं और हम बुद्धिमान और सबल हैं। हम छल-बल में पक्के हैं, इससे हम उनका सब कुछ हर लेते हैं और उसमें से जितना हमारा जी चाहता है, उन्हें लौटा देते हैं। जो काम गंदा, कठिन और अप्रिय जान पड़ता है, उसे हम कुएशियों से कराते हैं, क्योंकि हमें मेहनत करना पसंद नहीं, इसलिए कुएशी हमारे लिए पिसेंगे। हमें धूप अखरती है, कुएशी धूप में जलेगा। कुएशी रुपए कमाएगा और हम उसे खर्च करेंगे। हमारे जूतों में कीचड़ न लगे, इसके लिए कुएशी अपने हाथ से कीचड़ उठाकर रास्ता साफ रखेगा। यहाँ तो कुएशी को हमारी इच्छा के अनुसार चलना ही है, किंतु उसके परलोक के स्थान के निर्णय का ठेका भी हमी लोगों के हाथ में है। हमारी कोई स्वार्थ-सिद्धि होती हो तो उसे अवश्य नरक में जाना पड़ेगा। हमारे देश के कानून का मतलब इसके सिवा और कुछ नहीं है। गुलामी की प्रथा के दुर्यवहार करने का हल्ला मचाना पागलपन है। इतनी बड़ी कुप्रथा का और क्या दुरुपयोग हो सकता है? इस घृणित रिवाज का जारी होना ही मनुष्य-शक्ति का घोरतर दुरुपयोग है। इस पाप से यह पृथ्वी रसातल को क्यों नहीं चली जाती? इसका कारण यह है कि हम में से सब जंगली जानवर ही नहीं है, कोई-कोई आदमी बनकर पैदा हुए हैं। हम में से कुछ के हृदय में थोड़ी बहुत दया भी है। कानून ने गुलामों पर अत्याचार करने की जो शक्ति प्रदान की है, उसका भी हम पूरा-पूरा प्रयोग नहीं करते। इस देश का नीच-से-नीच दास-स्वामी गुलामों के साथ चाहे जितना बुरा बर्ताव करता हो, चाहे जितने अत्याचार करता हो, सब कानून की सीमा के अंदर ही हैं।"

इतना कहते-कहते सेंटक्लेयर बेहद उत्तेजित हो गया। वह उठकर फर्श पर जल्दी-जल्दी टहलने लगा। उसका सुंदर चेहरा सुर्ख हो गया, और उसके विशाल नेत्रों से आग-सी निकलने लगी। इसके पहले मिस अफिलिया ने कभी उसकी ऐसी भावभंगिमा नहीं देखी थी। इससे विस्मित होकर वह चुपचाप उसकी ओर देखती रही। सेंटक्लेयर ने एकाएक मिस अफिलिया के सामने रुककर कहा - "इस विषय पर कुछ कहने या सोचने का कोई नतीजा नहीं है। पर मैं तुमसे कहता हूँ, एक समय था जब मैं सोचता था कि सारी पृथ्वी रसातल में चली जाए और यह भीषण अन्याय और अविचार निबिड़ अंधकार में लुप्त हो जाए, तो मैं सानंद इसके साथ रसातल को चला जाऊँगा। जब-जब मैं जहाज की यात्रा में या अपने खेतों के दौरे के समय सैकड़ों नीच, निष्ठुर पशुप्रकृति गोरों को अन्याय से प्राप्त किए गए धन द्वारा उन अनगिनत स्त्री-पुरुषों और बालक-बालिकाओं को खरीदकर उनपर मनमाना अत्याचार करते देखता हूँ तब मेरी छाती फट जाती है। मैं मन-ही-मन अपने देश को कोसता हूँ और सारी मनुष्य-जाति को शाप देता हूँ।"

मिस अफिलिया बोली - "अगस्टिन, अगस्टिन, मैं समझती हूँ कि तुमने बहुत-कुछ कह डाला। मैंने अपने जीवन में गुलामी की प्रथा के विरुद्ध ऐसे ओजस्वी घृणापूर्ण वाक्य कभी उत्तर प्रदेश में भी नहीं सुने।"

यह सुनकर सेंटक्लेयर के मुँह का भाव बदल गया। उसने स्वाभाविक व्यंग्य के साथ कहा - "उत्तर प्रदेश में? तुम्हारे उत्तर प्रदेशीय लोगों का खून बहुत ही सद् है। तुम लोग हर बात में ठंडे हो। हृदय के आवेग द्वारा उत्तेजित होकर उत्तर प्रदेशवाले हम लोगों की भाँति अन्याय के

विरुद्ध जोरदार आंदोलन करके आकाश-पाताल नहीं गुँजा सकते। तुम्हारे उत्तर प्रदेश में निम्नश्रेणी के लोगों से क्या सच्ची सहानुभूति रखी जाती है?"

पाठक जरा ध्यान से देखेंगे तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि गुलामी की यह प्रथा संसार भर में फैली हुई है। संसार में कोई स्थान ऐसा नहीं है, कोई जाति ऐसी नहीं है, जहाँ और जिसमें यह घृणित प्रथा किसी-न-किसी रूप में प्रचलित न हो। मनुष्य-समाज के मानसिक भावों की जाँच कीजिए और देखिए कि प्रत्येक व्यक्ति के अंदर क्या भाव काम कर रहे हैं। दूसरों पर प्रभुत्व रखना, दूसरों को नीचे रखकर स्वयं ऊपर जाना, यही मनुष्यों के मन का एक सार्वभौमिक भाव है। इसी लिए समाज में, जहाँ देखिए, वहीं सबल निर्बल को सताता है, पंडित मूर्ख पर प्रभुत्व जमाता है। बड़े आदमी अपने से छोटी श्रेणी के मनुष्यों का खून चूस-चूसकर मोटे बन रहे हैं। अपने से ऊपरवाली श्रेणी के कारण निम्न श्रेणी के लोग बड़े दुःख से दिन बिता रहे हैं।

मिस अफिलिया ने उत्तर प्रदेश की बात सुनकर कहा - "ठीक है, पर यहाँ एक प्रश्न उठता है।"

सेंटक्लेयर बोला - "मैं तुम्हारे प्रश्न को समझ गया। तुम यही कहना चाहती हो न कि यदि मैं गुलामी की प्रथा का अनुमोदन नहीं करता, तो फिर क्यों इन दास-दासियों को रखकर अपने सिर पाप की गठरी लादता हूँ? ठीक है, मैं तुम्हारे ही शब्दों में इसका उत्तर दूँगा। तुम बचपन में मुझे बाइबिल पढ़ाने के समय कहा करती थीं कि हमारे पाप पुरुष-परंपरा से हमारे पीछे लगे हुए हैं। वही बात इन दासों के संबंध में भी है। ये पुरुष-परंपरा से मुझे मिले हैं। मेरे दास मेरे पिता के थे। और तो क्या, मेरी माता के भी थे। अब वे मेरे हैं। तुम जानती हो कि मेरे पिता पहले न्यू इंग्लैंड से यहाँ आए थे और उनकी प्रकृति बिल्कुल तुम्हारे पिता के समान ही थी। वह सब तरह से प्राचीन रोमनों की भाँति न्यायी, तेजस्वी, महानुभाव और दृढ़-प्रतिज्ञ मनुष्य थे। तुम्हारे पिता न्यू इंग्लैंड में ही रहकर पत्थरों और चट्टानों पर शासन करते हुए कमाने-खाने लगे और मेरे पिता लुसियाना आकर अगणित नर-नारियों पर प्रभुत्व फैलाकर उन्हीं के परिश्रम से अपनी जीविका का निर्वाह करने लगे। मेरी माता..."

कहते-कहते सेंटक्लेयर उठ खड़ा हुआ और कमरे में दूसरे सिरे पर लटकती हुई माता की तस्वीर के पास जाकर खड़ा हो गया और बड़े भक्ति-भाव से उस चित्र की ओर देखकर कहने लगा - "वह देवी थी... मेरी ओर इस तरह क्या देखती हो? तुम जानती हो कि मेरे कहने का तात्पर्य क्या है। यद्यपि माता ने मानव का तन धारण किया था तथा जहाँ तक मेरा अनुभव है, मैंने देखा और समझा है, उनमें मानसिक दुर्बलता और भ्रम का लेश तक न था। क्या अपने, क्या पराए, और क्या दास-दासी, सभी की यही राय है। बहन, माता ने ही मुझे कट्टर नास्तिकता के भाव से उबारा। मेरी माता एक जीती-जागती धर्मशास्त्र थीं और मैं उस धर्मशास्त्र की सत्यता में संदेह नहीं कर सकता।"

यह कहते हुए सेंटक्लेयर का हृदय एकदम उछल उठा। वह अपने को भूलकर हाथ जोड़कर

माता के चित्र की ओर देखते हुए, 'माँ, माँ' कहकर पुकारने लगा और फिर सहसा अपने को सँभालकर वह लौट आया। अफिलिया के पास एक कुर्सी पर बैठकर उसने फिर कहना आरंभ किया - "मेरा भाई और मैं, दोनों जुड़वा पैदा हुए थे। लोग कहा करते हैं कि जुड़े हुए पैदा होनेवाले दो भाइयों में विशेष समानता होती है; पर हम दोनों में सब विषयों में भिन्नता थी। उसकी गठन रोमनों की भाँति दृढ़ थी, आँखें दोनों काली और ज्योतिपूर्ण थीं, सिर के बाल घने और छल्लेदार थे, शरीर का रंग भी गोरा था। मेरी आँखें नीली, बाल सुनहरे, देह की गठन ग्रीकों की-सी और रंग सफेद है। वह कामकाजी और चतुर था; मैं भावुक था, पर कामकाज में बिल्कुल निकम्मा। वह बराबरवालों तथा मित्रों के साथ बड़ी सज्जनता का व्यवहार करता था; पर अपने से छोटे लोगों पर बड़ा रौब रखता था। अपनी इच्छा के विरुद्ध काम करनेवाले पर वह कभी दया नहीं करता था। हम दोनों ही सत्यवादी थे। उसकी सत्य-प्रियता साहस और अहंकार से उत्पन्न हुई थी, और मेरी सत्यनिष्ठा भावुकता से। हम दोनों एक-दूसरे को चाहते थे। वह पिता का प्यारा था और मैं माता का दुलारा। मैं बड़ा भावुक था। मैं हर बात की बारीकी से छान-बीन करता था, जरा-सी बात से मेरा हृदय टूट जाता था। मेरे इस भाव से उसकी और पिता की जरा भी सहानुभूति न थी, पर माता मेरे हृदय को समझती थी और मेरे भाव से पूरी हमदर्दी रखती थी। इसी कारण अलफ्रेड से झगड़ने पर जब पिता मुझे तीखी निगाह से देखते थे, तब मैं माता के कमरे में आकर उसके पास बैठ जाता था। माँ की उस समय की वह स्नेह-भरी दृष्टि मुझे आज भी याद आती है। वह हमेशा सफेद कपड़े पहना करती थीं। मैं जब कभी बाइबिल के 'रेवेलेशन' अंश में निर्मल, शुभवस्त्रधारी देवताओं का वर्णन पढ़ता हूँ तब मुझे अपनी माता की याद आ जाती है। अनेक विषयों में माता बड़ी पारदर्शनी थी। संगीत में उनकी बड़ी पहुँच थी। माँ जब आर्गन बाजे पर अपने देवोपम कंठ से गातीं, तब मैं उनकी गोद में सिर रखकर कितना विह्वल हो जाता, कितने स्वप्न देखता, कितना सुख पाता - इसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।..."

"उन दिनों दास-प्रथा का विषय इतने वाद-विवाद का विषय नहीं था। कोई व्यक्ति स्वप्न में भी इसे हानिप्रद नहीं समझता था।"

"मेरे पिता जन्म से ही जात्यभिमानि थे। जान पड़ता है कि इस लोक में जन्म होने के पूर्व वे आध्यात्मिक जगत की किसी उच्च श्रेणी में थे और वहीं से अपनी कुल-मर्यादा और अहंकार को साथ लेकर उतरे थे, नहीं तो दरिद्र और उच्च-कुल से रहित व्यक्ति के घर में जन्म लेकर भी कुल का ऐसा अभिमान होना पूर्वसंस्कार के सिवा और क्या कहा जा सकता है? मेरे भाई ने पिता की प्रकृति पाई थी।"

"तुम जानती हो, जाति-कुलाभिमानियों के हृदय में सार्वभौम प्रेम का स्थान नहीं हो सकता। उनकी सहानुभूति समाज की एक निर्दिष्ट-सीमा के पार नहीं जा सकती। इंग्लैंड में सीमा की यह रेखा एक जगह टिकी हुई है, तो ब्रह्मदेश में दूसरी जगह, अमरीका में तीसरी जगह; पर इन सब देशों के जाति-कुलाभिमानियों की दृष्टि इससे आगे कभी नहीं बढ़ती। इस श्रेणी के लोग केवल अपने बराबरवालों से ही सहानुभूति रखते हैं। वे अपनी श्रेणीवालों के लिए जिन बातों को

अत्याचार और अन्याय में गिनते हैं, उन्हीं बातों को दूसरी श्रेणी वालों के लिए कुछ भी नहीं समझते। पिता की दृष्टि में 'रंग' सीमा-निर्देशक था। गोरों को वह अपनी श्रेणी का समझते थे और उनके साथ उनका व्यवहार भी न्याय-संगत और आदर्श था। पर इन बेचारे गुलामों को वह मनुष्य नहीं समझते थे - इन्हें तो वे मनुष्यों और पशुओं के बीच की श्रेणी का जीव मानते थे। मैं समझता हूँ कि अगर कोई उनसे पूछता कि इन गुलामों में आत्मा है या नहीं, तो वह बड़े संदेह में पड़कर, 'हाँ' में इसका उत्तर देते। मेरे पिता आध्यात्मिक आलोचना की कुछ भी परवा नहीं करते थे। धर्म पर भी उनकी वैसी श्रद्धा न थी। वह समझते थे कि कोई ईश्वर है तो जरूर, पर वह भी उच्चजाति के लोगों का ही रक्षक है।"

"मेरे पिता के कपास के खेतों में कम-से-कम पाँच सौ गुलाम काम करते थे। इनके काम की देखरेख के लिए स्टव नाम का एक नर-पिशाच रखवाला था। वह गुलामों को दिन-रात सताया करता था। वह व्यक्ति माता को और मुझे फूटी-आँख न सुहाता था, पर पिता उसे चाहते और उसका विश्वास करते थे, इससे गुलामों को वह खूब सताता और मारता-पीटता था..."

"मैं उस समय बच्चा ही था, पर उसी समय से मामूली आदमियों पर मेरा बड़ा प्रेम हो गया था। मैं सदा खेत और घर के गुलामों की झोंपड़ियों में जाया करता, उनकी सब तरह की शिकायतें सुनकर आता और माता से कहता। फिर हम दोनों मिलकर उनका दुःख दूर करने के उपाय साचते थे। हम लोगों की कोशिश से जुल्म कुछ कम होने लगे। हम जब कभी गुलामों का दुःख थोड़ा भी दूर करने में सफल हो जाते, तो हमारे हर्ष की सीमा न रहती। इन सब बातों को देखकर एक दिन स्टव ने जाकर मेरे पिता से शिकायत की कि उससे प्रबंध नहीं हो सकेगा, उसका इस्तीफा मंजूर कर लिया जाए। मेरी माता पर पिता का बड़ा अनुराग था, पर वह जिस काम को आवश्यक समझते थे, उसमें कभी पीछे नहीं हटते थे। सो उन्होंने सम्मानसूचक पर स्पष्ट शब्दों में मेरी माता से कहा कि घरेलू दास-दासियों पर उनका पूरा अधिकार है, किंतु खेत के गुलामों के संबंध में उनकी कोई बात न मानी जाएगी। वह कहा करते कि मेरी माता ही क्या, स्वयं ईसा की माता मेरी भी आकर उनके काम में व्याघात डालें तो वह ऐसी ही खरी-खरी सुनाएँगे।"

"इसके बाद भी माता कभी-कभी पिता से स्टव के अत्याचारों की बातें कहा करती थी। पिता अविचलित मन से उन बातों को सुन लेते और अंत में कह देते कि क्या करें, स्टव को नहीं छड़ा सकते। उसके जैसा काम मैं होशियार और बुद्धिमान आदमी दूसरा नहीं मिलेगा। स्टव इतना ज्यादा सख्त भी नहीं है। यों कभी-कभी थोड़ी-बहुत सख्ती कर लेता है, उसके लिए उसे दोष नहीं दिया जा सकता। बिना शासन के काम बिगड़ जाता है। कहीं की शासन-प्रणाली देख लो, कोई भी निर्दोष नहीं मिलेगा। आदर्श शासन-प्रणाली इस संसार में है ही नहीं। जिनका हृदय मेरी माता की भाँति कोमल और ममतामय है, जिनकी प्रकृति महान है, वे जब चारों ओर अत्याचार-अविचार और दुःख यंत्रणाएँ देखते हैं तथा उन्हें दूर नहीं कर सकते, तब उन्हें जैसी मानसिक वेदना होती है, इसका हाल अंतर्दामी के सिवा दूसरा नहीं जान सकता। वे जिसे अन्याय समझते हैं उसे दूसरा कोई अन्याय नहीं कहता; वे जिसे भीषण निष्ठुर समझते हैं, उसे दूसरे दस निष्ठुरता नहीं



मानते। इसी से लाचार होकर वे चुपचाप अपने मन के दुःख को मन ही में दबाए बैठे रहते हैं। इस पाप-संताप-कलुषित पृथ्वी पर उनका जीवन सदा दुःखों का आधार बना रहता है। मेरी माता ने जब देखा कि वह दुःखी दासों का दुःख दूर नहीं कर सकतीं तब वह निराश हो गई। लेकिन हम दोनों भाइयों को भविष्य में निष्ठुर न होने देने के विचार से अपने विचारों और भावों की शिक्षा देने लगीं। शिक्षा के संबंध में तुम चाहे जो कुछ क्यों न कहो, पर मैं समझता हूँ कि जन्म से मनुष्य की जैसी प्रकृति होती है, वह सहज में नहीं बदलती। अलफ्रेड जन्म से ही हूकूमत-पसंद और जात्याभिमानी था। उस पर माता के उपदेशों और अनुरोधों का कोई असर न होता था। मानो संस्कारवश अलफ्रेड की युक्तियाँ और तर्क दूसरा पक्ष समर्थन करते थे, परंतु मेरे हृदय में माता की कथनी अच्छी तरह जमने लगी। उनका जीता-जागता विश्वास और उनके हृदय की गाढ़ी भक्ति, उनके प्रत्येक उपदेश के साथ-साथ मेरे हृदय में प्रवेश करती थी। वह मुझे समझाया करती थी कि 'मनुष्य धनी हो या दरिद्र, उसके धनी या दरिद्र होने से उसकी आत्मा का महत्व नष्ट नहीं हो जाता। एक दिन आकाश में तारे दिखाकर मुझे कहने लगीं, 'बेटा अगस्टिन! आकाश में जो लाखों तारे दिखाई दे रहे हैं, किसी समय इनका नाम-निशान मिट जाए ऐसा हो सकता है; सारा संसार भी नष्ट हो सकता है, और सूर्य का पूर्व से पश्चिम में उदय हो सकता है; पर एक आत्मा का चाहे वह कितना ही दीन और दरिद्र क्यों न हो, नाश नहीं हो सकता। धनी, निर्धन, पंडित, मूर्ख, सब अमर रहेंगे और मंगलमय ईश्वर की गोद में सदा सुख-शांति पाएँगे। प्रत्येक दीन-दरिद्री के लिए उसकी भुजाएँ सदा फैली रहती हैं।'...

"माता के कमरे में बहुत-सी तस्वीरें थीं। उनमें एक वह तस्वीर थी, जिसमें ईसा मसीह का अंधे को आँखें देने का दृश्य दिखाया गया था। उस तस्वीर को दिखाकर माता कहा करतीं, 'देखो अगस्टिन, परम धार्मिक यीशु की दीन पर कितनी दया है। वह अपने हाथों से बेचारे अंधे की सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं। अंधे को आराम पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।' यदि मुझे अधिक दिन तक ऐसी स्नेहमयी दयालु जननी की छत्रछाया का सौभाग्य रहता तो मैं अवश्य उच्च कोटि का मनुष्य होता। यदि जवानी तक भी मुझे माता का साथ मिला होता तो मेरा जीवन ऐसा सुगठित हो जाता कि फिर मैं इन दास-दासियों के उद्धार के लिए अपने प्राणों की मोह-माया तज सकता था। देश-सुधार का व्रत ले सकता था। पर मेरा दुर्भाग्य कि मुझे तेरह वर्ष की अवस्था में ही उत्तर की ओर जाना पड़ा और जननी का साथ छोड़ना पड़ा। यही कारण है कि मैं जैसा चाहता था, वैसा जीवन प्राप्त नहीं कर सका।"

सेंटक्लेयर सिर पर हाथ रखकर जरा देर तक चुप रहा। वह फिर कहने लगा - "इस संसार के कामों में क्या कहीं सत्य धर्म-भाव, न्यायसंगत आचरण और निःस्वार्थ प्रेम दिखाई पड़ता है? मैंने लड़कपन में भूगोल में पढ़ा था कि सब जगह की जलवायु भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है, इसी से भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़-पौधे होते हैं। यही हाल मनुष्य-समाज के आचरण और मतामत का है। जिस देश का जैसा आचार-व्यवहार होता है वहाँ के लोगों का, सामाजिक दशा के अनुसार, वैसा ही चरित्र बन जाता है। हमारे देश में दास-प्रथा प्रचलित है, इसी से यहाँ के लोग इस दास-प्रथा में कोई बुराई नहीं समझते। पर इंग्लैंड वालों के कानों में जब



इस प्रथा की कठोरता की भनक पहुँचती है तब उनकी छाती दहल जाती है। इस संसार में क्या शिक्षित और क्या गँवार, अधिकतर लोग ऐसे ही होते हैं कि जिनका निज का कोई स्वतंत्र मत नहीं होता। वे प्रवाह के साथ बहते हैं। वे अवस्था के दास होते हैं। देश में प्रचलित अवस्था उन्हें जिस ओर ले जाती है उसी ओर आँख-कान बंद करके बहे चले जाते हैं...।"

"किसी विषय की भलाई-बुराई की स्वाधीनतापूर्वक परख करने की शक्ति उनमें नहीं होती। तुम्हारे पिता उत्तर की दास-प्रथा के विरोधी संप्रदाय के साथ रहते थे, इससे दासत्व-प्रथा के विरोधी हो गए थे; और मेरे पिता इस दास-प्रथा के चलनेवाले देश में रहते थे, इससे इस प्रथा के पक्षपाती थे। पर इस देश और संग-भेद से उत्पन्न हुई भिन्नता के सिवा उनमें और किसी प्रकार की भिन्नता नहीं थी। और बातों में उनकी प्रकृति में पूरी समता थी। दोनों में ही अपनी जाति का अभिमान था और शासन को पसंद करते थे।"

मिस अफिलिया सेंटक्लेयर की इस बात का प्रतिवाद करने जा रही थी, पर सेंटक्लेयर ने उसे रोककर कहा - "तुम जो कहना चाहती हो, उसे मैं जानता हूँ। मैं यह नहीं कहता कि वे बिल्कुल एक से-ही थे। मैं मुक्त कंठ से स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारे और मेरे पिता के कामों में भिन्नता थी, पर इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वभाव दोनों का एक ही-सा था। इस संसार में दो तरह के आदमी होते हैं। एक तो जो वृथाभिमान में फूलकर लोगों के साथ बात तक नहीं करते, मनुष्यों को मनुष्य नहीं गिनते; अपने को सबसे बड़ा और दूसरों को अपने से छोटा समझते हैं। और दूसरे वे जो इन सब दुर्गुणों के रहते हुए भी लोगों के सामने यह साबित करने की फिक्र में लगे रहते हैं कि उनमें अहंकार की छूत भी नहीं है। इसी लिए वे छोटे-बड़े सबका ऊपर से आदर-सत्कार करते हैं, खुले दिल से आत्माभिमानियों की निंदा करते हैं, वे भी वैसे ही कुलाभिमानी हैं जैसे पहली श्रेणी वाले। एक खुल्लमखुल्ला दूसरों से घृणा करके अपने हार्दिक अभिमान को तृप्त कर लेते हैं और दूसरी श्रेणीवाले वैसे अवसर न पाने के कारण अपने अभिमान को तृप्त करने के लिए दूसरे उपाय की शरण लेते हैं। इन दो श्रेणियों के मनुष्यों में जितना भेद है, उतना ही भेद तुम्हारे और मेरे पिता के आचरणों में भी था। तुम्हारे पिता जाति के अभिमान से घृणा दिखाकर हृदय के महत्व का परिचय देते थे और मेरे पिता हजारों मनुष्यों के मस्तक पर पैर रखकर अपनी श्रेष्ठता साबित करते थे। दोनों अगर लूसियाना के जमींदार होते तो बिल्कुल ही एक प्रकृति के होते, इसमें कोई संदेह नहीं।"

अफिलिया ने कहा - "अगस्टिन, तुम कैसे आदमी हो!"

अगस्टिन बोला - "मैं पिता या चाचा की निंदा की नीयत से ये बातें नहीं कहता, लेकिन किसी पर मेरी झूठी भक्ति भी नहीं है, विशेषकर मुझे अपने जीवन की घटनाओं के प्रसंग में इन बातों का उल्लेख करना पड़ा है। पर अब फिर मैं अपने रामकहानी चलाता हूँ। पिता मरते समय सारी संपत्ति हम दोनों भाइयों के लिए छोड़ गए और उसको आपस में बाँट लेने का भार हमीं लोगों पर रहा। हम दोनों भाइयों ने बड़ी सफाई से आपस में बँटवारा कर लिया। मैं कहूँगा कि आपसवालों के साथ उत्तम व्यवहार करने में अल्फ्रेड-सरीखा आदमी इस संसार में शायद ही

दूसरा होगा। हम दोनों ने खेत का काम उठा लिया। थोड़े ही दिनों में अल्फ्रेड खेत के काम में बड़ा पक्का अनुभवी और पारदर्शी मनुष्य बन गया। पर मैंने दो वर्षों के परिश्रम से समझ लिया कि मुझसे यह काम पार नहीं पड़ेगा, क्योंकि कम-से-कम सात सौ कुली हमारे खेतों में काम करते थे। उन्हें पीट-पीटकर काम लेना, उनकी देख-रेख के लिए शैतान से बढ़कर देखभाल करनेवाला रखना, इत्यादि सैकड़ों तरह के ऐसे काम थे, जिनसे मुझे बड़ी घृणा थी। यह पैशाचिक व्यवहार मुझे असह्य हो उठा। मुझे अपनी जननी के वचनों का ध्यान आने लगा कि इन काले दीन-दुःखी गुलामों में भी हमारी-जैसी आत्मा है, ये भी उसी मिट्टी के बने हैं, जिसके हम। इन्हें सताने से उतना ही दुःख मिलता है, जितना हमें। ये सब बातें सोचकर तथा दास-दासियों की यंत्रणा देखकर मेरा हृदय पिघल जाता था। मैं ईश्वर से प्रार्थना किया करता था कि इस पाप-भरे संसार से मुझे शीघ्र उठाकर माता के पास पहुँचा दो। भला ऐसी मानसिक दशा में क्या कभी किसी का काम में जी लग सकता है? धीरे-धीरे मेरे दिल में यह खयाल पक्का होने लगा कि इन गुलामों का सत्यानाश हम लोगों के हाथों से हो रहा है। ईश्वर ने इन्हें मनुष्य बनाया है, पर हमने इन्हें पशुओं से बदतर बना डाला है। वास्तव में ऐसी पराधीन अवस्था में रहकर मनुष्य क्या मनुष्यत्व को पहुँच सकता है? मनुष्य की स्वाधीन इच्छा में बाधा पड़ते ही वह मनुष्यत्व-विहीन हो जाता है। यह सब सोचते-सोचते मैंने खेत का काम छोड़ने का संकल्प कर लिया।"

अफिलिया ने कहा - "अगस्टिन, मेरा सदा से यह विश्वास था कि तुम सब लोग दास-प्रथा को बाइबिल से सिद्ध सचाई मानते हो। और तुम लोगों की दृष्टि में दास-प्रथा ईश्वरीय विधान है।"

अगस्टिन बोला - "हम लोगों का अभी यहाँ तक पतन नहीं हुआ है। अल्फ्रेड इतना सख्त आदमी है कि बाध्य होने पर दासों की जान लेने में संकोच नहीं करता। दासों को किसी प्रकार के मानुषिक अधिकार हैं - इस बात तक को वह स्वीकार नहीं करता, किंतु इस दास-प्रथा को तो वह भी बाइबिल-अनुमोदित या ईश्वर-सम्मत विधान नहीं समझता। इस विषय में उसका यह मत है कि जब तक एक श्रेणी के मनुष्य आत्मविहीन होकर पशुओं की भाँति काम न करें, तब तक मनुष्य-समाज की उन्नति नहीं होती, संसार की सभ्यता आगे नहीं बढ़ती। उसका कथन है कि मनुष्य-समाज के अधिकार उन्नत बनाने के लिए बलवान और बुद्धिमानों का निर्बल मूर्खों पर प्रभुत्व रहना आवश्यक है, अपने इस मत के समर्थन में वह कह सकता है कि दास-प्रथा कहाँ नहीं, सारे विश्व में तो छाई हुई है। अमरीका के जमींदार अपने गुलामों से जैसा सख्त बर्ताव करते हैं, इंग्लैंड के बड़े आदमी और महाजन लोग दूसरी तरह से अपने देश के मजदूरों से ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं कि मानव-समाज की व्यवस्था को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि जब तक एक श्रेणी के लोगों का दासत्व न करें तब तक किसी प्रकार सामाजिक-उन्नति और सभ्यता का विकास संभव नहीं है। उसके मतानुसार संसार की समता-वृद्धि के लिए निर्बल और मूर्खों को सदा बलवान और बुद्धिमानों के अधीन रहना पड़ेगा; आजन्म उन्हें पशुवत्-कार्य करना पड़ेगा और बलवान तथा बुद्धिमानों के आराम के लिए अपने शरीर को कष्ट देना पड़ेगा। पर मैं अल्फ्रेड की इन युक्तियों में सार नहीं देखता। स्वार्थी मनुष्य ही अपने मन को समझाने के लिए

ऐसी युक्तियों का सहारा लेते हैं।"

अफिलिया बोली - "भला इंग्लैंड के मजदूरों के साथ तुम्हारे यहाँ के गुलामों की तुलना कैसे हो सकती है? तुम्हारे यहाँ की तरह न वे बेचे ही जाते हैं, न उनका सौदा ही किया जाता है, और न वे अपने कुटुंब से अलग ही किए जाते हैं। उन्हें दोष भी नहीं लगाए जाते।"

अगस्टिन ने कहा - "बहन, हम कोड़ों की मार से गुलामों को मारते हैं, पर इंग्लैंडवाले क्या करते हैं कि मजदूरों का सारा धन चूसकर उन्हें भूखों मारते हैं। हम लोग गुलामों के बाल-बच्चों को उनके माता-पिता से अलगकर बेचते हैं; पर इंग्लैंड के मजदूरों के बाल-बच्चे बिना भोजन के भूखों मरते हैं। इसमें कौन बुरा और अच्छा है, यह नहीं कहा जा सकता।"

अफिलिया ने कहा - "पर तुम्हारी इस युक्ति से दास-प्रथा का पाप दूर नहीं होता। दूसरी जगह कोई बुराई होती हो, तो क्या उसका उल्लेख करके तुम अपने यहाँ के अत्याचार का समर्थन कर सकते हो?"

अगस्टिन बोला - "मैंने दास-प्रथा के समर्थन के अभिप्राय से इस विश्वव्यापी अत्याचार का उल्लेख नहीं किया। मैंने तो उन्हीं युक्तियों को दोहराया है, जिनके बल पर अल्फ्रेड दास-प्रथा का समर्थन करता है। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि हमारे यहाँ की गुलामी की चाल हद से ज्यादा घृणित है। यह भी सही है कि अन्य देशों में निम्न श्रेणी के मनुष्यों पर जो अत्याचार होते हैं, उनसे हजार गुना भारी अत्याचार और उत्पीड़न हमारे यहाँ के गुलामों को सहना पड़ता है। हमारे देश के गोरे इन कालों को निरा पशु समझते हैं। क्रीत-दासियों के गर्भ से संतान पैदा करके उन्हें भेड़-बकरियों की भाँति बेचते हैं। ऐसा हृदय कँपानेवाला व्यापार और कहीं नहीं दिखाई पड़ता। और देशों में निर्बल को सताने के लिए छल-बल की दरकार होती है, पर यहाँ कोई जरूरत नहीं। जैसे जी चाहे, निर्बल को सताया जा सकता है, उनके प्राण तक लेने में कोई कानून किसी तरह की बाधा नहीं डालता।"

अफिलिया ने कहा - "आज मैंने दास-प्रथा के संबंध में तुमसे बहुत-सी नई बातें सुनीं। मैंने इस विषय में कभी इतना नहीं सोचा था।"

अगस्टिन बोला - "मैंने इंग्लैंड के अनेक स्थानों की सैर करके वहाँ की निचली श्रेणी के लोगों की अवस्था का खूब अनुभव किया है। उनकी दर्दशा देखकर हृदय पिघल जाता है। अल्फ्रेड सदैव बड़े अहंकार से कहा करता है कि उसके गुलाम इंग्लैंड के मजदूरों से अधिक सुखी हैं। वह सचमुच अपने दास-दासियों को खाने-पहनने का कष्ट नहीं देता। यों उसकी प्रकृति बहुत कठोर भी नहीं है। कोई उसका कहा नहीं मानता, तभी वह आग-बबूला होकर उसकी जान तक लेने में नहीं हिचकता। उसके कहे पर चलने से वह किसी को कभी नहीं पीटता। जब हम दोनों भाई साथ-साथ खेत का काम करते थे तब मैंने अल्फ्रेड से बड़ा अनुरोध किया कि इन दास-दासियों की शिक्षा के लिए एक पादरी रख दो। अल्फ्रेड का खयाल था कि कृत्ते-बिल्लियों के लिए पादरी

रखने से जो नतीजा होता है, वही इन गुलामों के लिए पादरी रखने से होगा। फिर भी उसने मेरी प्रसन्नता की खातिर गुलामों की शिक्षा के वास्ते एक पादरी रख दिया। हर रविवार को पादरी साहब आकर उन्हें धर्म-शिक्षा दिया करते थे, लेकिन गुलामी में पड़े-पड़े इन गुलामों की आत्माएँ जड़ हो गई हैं। अच्छे-अच्छे उपदेश और शिक्षा का इनके जड़ हृदय पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता। बहन, तुम मुझे इन गुलामों को शिक्षा देने के संबंध में अक्सर कहा करती हो। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक इन्हें गुलामी की जंजीर मुक्त करके स्वाधीनता नहीं दी जाएगी, तब तक इन्हें शिक्षा देने का कोई नतीजा न होगा। इनमें कुछ धर्म जीवित जरूर दीखता है, पर उस धर्म-भाव में किसी प्रकार की वीरता व निर्भीकता का भाव नहीं है। यह भयभीत प्रकृति से उत्पन्न धर्म है।"

अफिलिया बोली - "हाँ, तुमने खेती के काम से कब संबंध छोड़ा, सो तो बताया ही नहीं।"

अगस्टिन ने कहा - "हाँ, दो बरस तक मैंने अल्फ्रेड के साथ खेत का काम किया। पर इतने दिनों के अनुभव से ही मुझे मालूम हो गया कि मेरे लिए यह काम बड़ा मुश्किल है और अल्फ्रेड ने भी जान लिया कि मुझसे कोई काम नहीं होता। मेरे संतोष के लिए वह क्लियों को नाना प्रकार की सुविधाएँ भी देने लगा, पर मेरा मन किसी तरह राजी न हुआ। मुख्य बात यह थी कि मैं क्लियों के साथ जैसा बर्ताव करने को कहता था, वैसा करने से काम में पूरी हानि होने की संभावना थी। मैं क्लियों से पशुओं की भाँति काम लेना बिल्कुल नहीं चाहता था। मनुष्य को पशु बनाकर धन बटोरने की फिक्र करना मुझे अत्यंत घृणित मालूम होने लगा। मैं स्वयं बड़ा आलसी हूँ, इससे स्वभावतः मुझे आलसी क्लियों पर भी तरस आ जाता था। आलस्य करने पर भी मैं उन्हें कभी मारने नहीं देना चाहता था। ऐसी दशा में मैंने सोचा तो यही उचित जान पड़ा कि मुझसे कुछ होना-जाना तो है नहीं, मेरे द्वारा अल्फ्रेड के काम में उल्टे और अड़चन पड़ती है, इससे उस काम को मैंने बिल्कुल छोड़ दिया। अल्फ्रेड ने सब खेत ले लिए और मैंने मकान और नकद संपत्ति ले ली।"

अफिलिया बोली - "इसके बाद फिर अपने दासों को तुमने क्यों नहीं छोड़ दिया?"

अगस्टिन ने कहा - "मेरा दिल इतना ऊँचा नहीं था। मैंने सोचा कि इन्हें रुपए कमाने की कल न बनाना ही काफी है, घर रखकर इनका भरण-पोषण करने से कोई दोष न होगा, खासकर इनमें से बहतेरे हमारे पुराने नौकर हैं। मैं उन्हें बहुत चाहता था, और वे भी मुझे बहुत चाहते थे। जिन नए लोगों को तुम देखती हो, ये सब उन्हीं पुराने गुलामों के वंशज हैं। ये हमारे घर से किसी तरह हटना नहीं चाहते। ये यहीं पैदा हुए, यहीं बड़े हुए, इससे मुझसे इनकी बड़ी ममता हो गई है। बहन, मेरे जीवन में भी कोई समय था जब मैं बड़े-बड़े खयाली प्लाव बनाता था। मैं सोचा करता था कि इस संसार में मैं कुछ-न-कुछ करूँगा जरूर। यों ही निकम्मा जीवन नहीं बिताऊँगा। देश-सुधारक बनकर जन्म-भूमि से दास-प्रथा का कलंक दूर करने की मेरी बड़ी इच्छा थी, पर कोई भी इच्छा पूरी न हुई। जान पड़ता है, युवावस्था में सबके मन में ऐसी ही तरंगे उठा करती हैं। पर जब संसार की बेड़ी पाँव में पड़ जाती है तो जवानी के सब मंसूबे जहाँ-के-तहाँ

रह जाते हैं।"

अफिलिया ने पूछा - "तुमने अपने जीवन के इस महान उद्देश्य को छोड़ क्यों दिया? अभी क्या बिगड़ा है। अब से तुम अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए यत्न कर सकते हो।"

अगस्टिन बोला - "युवा-अवस्था के आरंभ में ही मेरी आशा-लता पर पाला पड़ गया। मैं जैसे जीवन की आशा करता था, उसे प्राप्त नहीं कर सका। इसी से किसी काम में मेरा उत्साह नहीं रह गया। अब तो घटना-स्रोत के साथ बह रहा हूँ। पूर्णरूप से अवस्था का दास बन गया हूँ। संसार की वर्तमान अवस्थाओं और घटनाओं के पीछे खिंचा चला जा रहा हूँ। सच तो यह है कि अल्फ्रेड मुझसे सौगुना मजे में है। वह अर्थ-संग्रह को ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य समझता है और अपने उसी विश्वास के अनुसार काम भी कर रहा है। पर मेरा जीवन व्यर्थ ही जा रहा है। वही मसल हुई कि 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का'।"

अफिलिया ने कहा - "भैया, यों लक्ष्यहीन जीवन बिताकर क्या तुम शांति प्राप्त कर सकते हो?"

"शांति! कहाँ है शांति? अपने इस पाप-भरे जीवन में मुझे स्वयं से घृणा है। अपने आचरण और व्यवहार से मैं स्वयं संतुष्ट नहीं हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्र ही यहाँ से उठाकर जननी से मिला दे। मैं इस दास-प्रथा के संबंध में कभी अपना मत प्रकट नहीं करता, पर आज तुमने बड़े आग्रह से बार-बार पूछा, तब मुझे अपने मन की इतनी बातें तुमसे कहनी पड़ीं। इस देश में ऐसे बहूत से आदमी हैं, जो मेरी ही तरह गुलामी की प्रथा से हृदय से घृणा करते हैं। इस प्रथा के कारण सारे देश का सत्यानाश हुआ जा रहा है। तरह-तरह के पाप और व्यभिचार हमारे समाज में घुसते जाते हैं। नैतिक वायु दूषित होकर नाना प्रकार के मानसिक रोग उत्पन्न कर रही है। इस घृणित दास-प्रथा के कारण गुलामों का ही बुरा नहीं हो रहा है, बल्कि जो लोग इन्हें अपने घर में रखते हैं, इन पर प्रभुत्व करते हैं, उनकी इनसे भी अधिक क्षति हो रही है। मानसिक रोग भी, कई शारीरिक रोगों की भाँति, संक्रामक होते हैं। इन गुलामों की गिरी हुई मानसिक अवस्था संक्रामक रोग की भाँति हमारे सभ्य समाज का नाश कर रही है। यह निश्चित बात है कि जहाँ कहीं अथवा जिस किसी जाति में किसी एक श्रेणी के लोग बिल्कुल गिरी हुई दशा में जीवन बिताते हैं, वहाँ अथवा उस जाति के सब लोगों की अंतरात्माएँ उन गिरी हुई दशावाले लोगों की छूत से धीरे-धीरे कलुषित हो जाती हैं। समाज में एक श्रेणी के लोगों की अवनति दूसरी श्रेणी के लोगों को भी अवनति की ओर आकर्षित करती है। पर हमारे यहाँ इन गुलामों की गिरी हुई अवस्था सभ्य लोगों के जीवन को जितना कलुषित करती है, वैसी दशा और कहीं नहीं है। कारण यह है कि हमें दिन-रात इनके साथ रहना पड़ता है, क्योंकि इन्हें आठ पहर चौंसठ घड़ी घर में ही रखना पड़ता है, पर इंग्लैंड में यह बात नहीं। वहाँ गरीब मजदूरों के साथ रईस, जमींदार और महाजनों को रहना नहीं पड़ता। वहाँ काम लिया, दाम लिया और छुट्टी। यहाँ तो ये दिन-रात घर में बने रहते हैं। इसलिए इनके जीवन के बुरे उदाहरण, इनसे मालिकों का कठोर व्यवहार हमारे बाल-बच्चे दिन-रात देखते रहते हैं। इन बुरे उदाहरणों का प्रभाव उनके

जीवन पर पड़े बिना नहीं रह सकता। इससे उनके चरित्र बिगड़ जाते हैं और मन विकृत हो जाते हैं। इवा यदि जन्म से ही देव-बाला सरीखी निर्मल प्रकृति की न होती तो अवश्य इनके साथ बरबाद हो जाती। हैजे के रोगी के पास रहने से जैसे हैजा होने का डर रहता है, वैसे ही इन्हें घर में रखकर सदैव अपना बुरा होने का डर है। हमारे यहाँ के राज-कर्मचारी इन्हें शिक्षित नहीं बनाना चाहते। वे कहते हैं कि शिक्षा पाते ही इनकी आँखें खुल जाएँगी और फिर ये तत्काल अपनी स्वाधीनता के लिए विद्रोही बन खड़े होंगे। पर इन अक्ल के अंधों को यह बात नहीं सूझती कि शिक्षा पाने से तो ये स्वाधीनता के लिए विद्रोही होंगे और दासता की बेड़ी काटने की चेष्टा करेंगे, पर बिना शिक्षा के कौन-सी भलाई हो रही है? भीतर-ही-भीतर उससे भी अधिक नाश हुआ जा रहा है, इसका उन्हें ख्याल ही नहीं। सचमुच इन कानून बनानेवालों और वकीलों से मनुष्य-समाज का जितना नुकसान हो रहा है, उतना और किसी श्रेणी के लोगों से नहीं।"

अफिलिया बोली - "गुलामी की इस प्रथा का अंतिम परिणाम क्या होगा?"

अगस्टिन ने कहा - "पता नहीं। पर एक बात निश्चित है; इनकी आँखें खुल रही हैं और इनकी दृष्टि स्वाधीनता की ओर बढ़ रही है। स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि थोड़े ही दिनों में बड़ा भारी सामाजिक विप्लव होनेवाला है। संसार के सभी देशों में निम्नश्रेणी के लोगों में नवजीवन का संचार दिखाई दे रहा है। मेरी माता कभी-कभी कहा करती थी कि जगत में शीघ्र ही स्वर्ग का राज्य होगा। उस समय ईसा मुकुट धारण करके इस संसार में राज्य करेंगे। तब संसार में दुःख, कष्ट और यंत्रणा का नाम भी न रहेगा। सारे संसार में शांति छा जाएगी। मेरी माता ने जो प्रार्थना मुझे सिखलाई थी, उसमें यह वाक्य भी था-'हे पिता! संसार में आपका राज्य हो।' कभी-कभी मैं इन बेचारे गुलामों की आँहें और उत्तेजित भाव देखकर, सोचता हूँ कि अब शीघ्र ही संसार में वह राज्य होनेवाला है। पिछले फ्रांसीसी विप्लव की आलोचना करने से सहज ही मालूम हो जाता है कि संसार में बहुत थोड़े ही दिनों में समानाधिकार की दुंदुभि बजनेवाली है।"

अफिलिया ने अपना बुनने का काम छोड़कर कहा - "मैं तो कभी-कभी सोचती हूँ कि तुम इसी स्वर्ग-राज्य में विचरते हो।"

अगस्टिन बोला - "हाँ, मेरी बातों से यही जान पड़ेगा, पर कार्य देखकर मालूम होगा कि मैं घोर नरक में पड़ा हुआ हूँ।"

ये बातें हो ही रही थीं कि भोजन की घंटी हुई।

भोजन के समय मेरी ने पू की घटना का उल्लेख करके कहा - "दीदी, मैं समझती हूँ कि तुम हम सब लोगों को जंगली जानवर समझती हो।"

अफिलिया बोली - "पू के साथ जैसा व्यवहार हुआ है, उसे मैं अवश्य पशु-तुल्य व्यवहार समझती हूँ। लेकिन मैं तुम सब लोगों को जंगली जानवर नहीं समझती।"

मेरी ने कहा - "तुम्हें नहीं मालूम कि इस गुलाम-जाति में कोई-कोई ऐसे पाजी होते हैं कि वे किसी तरह वश में नहीं आते। ऐसे पाजियों का मरना ही भला है। मुझे ऐसे लोगों से जरा भी हमदर्दी नहीं होती। मालिक के कहने पर चलें और भले बनने का यत्न करें तो इन लोगों को मार खाकर कभी न मरना पड़े।"

इवा ने कहा - "माँ, वह बेचारी बड़ी दुःखी थी। अपना दुःख भूले रहने के लिए शराब पीती थी।"

मेरी बोली - "तू रहने दे दुःख की बातें। दास-दासियों को दुःख क्या? मैं तो दिन-रात शारीरिक दुःख में पड़ी रहती हूँ, पर शराब नहीं पीती। मुझसे अधिक दुःख उसे क्या होगा? पर सच तो यह है कि गुलामों की जाति बड़ी पाजी होती है। कितने तो ऐसे भी होते हैं कि हजार बेंत मारो, तब भी वे सीधे नहीं होते। मुझे याद है कि मेरे पिता के यहाँ एक गुलाम बड़ा ही आलसी था। वह काम से बहाना करके दलदल में रहता था। चोरी करता था, और भी कितने ही बुरे-बुरे काम करता था। उस पर बहुत मार पड़ती, पर उसका चाल-चलन तनिक भी न सुधरा। अंत में एक दिन कोड़ों की मार से उसकी चमड़ी उधड़ गई, फिर भी वह भटकते-भटकते दलदल में चला गया और वहीं मर गया। अब कोई क्या करे, पिता तो दासों के साथ बड़ी दया का बर्ताव करते थे।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "मैंने एक बार बदमाश गुलाम को सीधा किया था। कितने ही मालिक और खेतों की देखभाल करनेवाले उससे हार चुके थे।"

मेरी बोली - "अच्छा, बताओ, तुमने भी इस जन्म में कभी कोई ऐसा काम किया था?"

सेंटक्लेयर ने कहा - "मैंने जिसे वश में किया था वह आदमी बड़ा बलवान था, सूरत-शक्ल में दैत्स-सा था। बड़ा स्वतंत्रता-प्रिय और तेजस्वी था। किसी से नहीं दबता था। ठीक अफ्रीकी सिंह-सा था। लोग उसे सीपिओ कहते थे। बहूतों के हाथ के नीचे वह रहा, पर किसी से सीधा न हुआ। अंत में अल्फ्रेड ने उसे खरीदा, क्योंकि उसने सोचा कि वह उसे दुरुस्त कर लेगा। एक दिन सीपिओ खेत के ओवरसियर को लात मारकर जंगल में भाग गया। मैं उसी समय अल्फ्रेड से मिलने गया था। यह बात मेरे खेत का साझा छोड़ देने के बाद की है। इस घटना से अल्फ्रेड बड़ा क्रुद्ध हो रहा था। मैंने उससे कहा कि उसके निज के दोष से ऐसा हुआ है। मैं उसे सहज ही वश में कर सकता हूँ। और यह तय हुआ कि उसे पकड़कर दुरुस्त होने के लिए मुझे सौंप दिया जाएगा। उसे पकड़ने के लिए पाँच-छः आदमी, शिकारी कुत्ते और बंदूकें लेकर चले। हिरन का शिकार करने में मनुष्य जैसे उत्साही रहता है, वैसा ही मनुष्य का शिकार चालू रहने पर शिकार में भी मनुष्य का उत्साह हो जाता है। मैं भी थोड़ा उत्साही हो गया था, पर मेरा भाव उसे शिकारियों से बचाकर ही वश में करने का था। खैर, हम लोगों के इस दल ने उसका पीछा किया। कुछ देर तक तो वह भागा और उछला, पर थोड़ी ही देर में एक बेंत के झाड़-झंकार में उलझ गया और पकड़ा गया। तब उसने घुँसों से लड़ना आरंभ किया, और मैं तुमसे कहता हूँ कि



वह बड़ी ही भयंकरता से लड़ा। उसने केवल घूँसों की मार से तीन कूत्तों को मार गिराया, पर अंत में हम लोगों की गोली की चोट खाकर वह धरती पर, मेरे पैरों के पास, गिर पड़ा। उसका सारा शरीर लहू-लुहान हो गया। उसने आँख उठाकर मेरी ओर देखा। उसकी आँखों में वीरता की ज्योति और निराशा का अंधकार, दोनों दिखाई पड़ते थे। मैंने अल्फ्रेड के आदमियों को उसे मारने से मना किया और मैं अल्फ्रेड से उसे खरीदकर ले आया। यहाँ वह पंद्रह दिन में ही इतना सीधा हो गया कि मेरे लिए जान तक दे सकता था।"

मेरी ने कहा - "तुमने उस पर ऐसा कौन-सा जादू कर दिया था?"

सैंटकलेयर बोला - "मुझे उसके लिए कुछ अधिक नहीं करना पड़ा। मैं उसे साथ लेकर अपने निजी कमरे में गया और उसके लिए अच्छा बिछौना लगा दिया, उसकी मरहम-पट्टीकर दी और अपने हाथों से उसकी सेवा करता रहा। जब वह ठीक हो गया, तब मैंने उसे मुक्ति-पत्र देकर कहा कि जहाँ जी चाहे, वहाँ चला जा।"

अफिलिया ने पूछा - "क्या वह चला गया?"

सैंटकलेयर ने जवाब दिया - "नहीं। उस मूरखराज ने उस कागज के दो टुकड़े करके फेंक दिए और मुझे छोड़कर जाने से इनकार कर दिया। ऐसा साहसी और विश्वासी नौकर मुझे फिर कभी नहीं मिला। थोड़े दिनों बाद वह ईसाई हो गया, और बच्चों की तरह सीधा हो गया। एक बार हैजे का बड़ा प्रकोप हुआ। मैं भी उसके चक्कर में आ गया। उस समय उसने मेरे लिए अपनी जान की बाजी लगा दी, क्योंकि मेरे बचने की आशा न देखकर घर के जितने लोग थे सब भाग गए, पर वह निर्भीक होकर जी-जान से मेरी सेवा करता रहा। उसी के यत्न और परिश्रम से मैं जीवित बच गया। पर अफसोस, कुछ ही दिनों बाद उसे भी हैजा हो गया और बहुत कोशिश करने पर भी वह मृत्यु के पंजे से न बच सका। उसकी मृत्यु से मुझे जितना दुःख हुआ, उतना कभी नहीं हुआ।"

सैंटकलेयर जब ये बातें कह रहा था, उस समय इवा धीरे-धीरे उसके पास आकर खड़ी हो गई थी। वह बड़ी उत्सुकता से आँखें फाड़कर एकाग्रता से पिता की ओर देख रही थी। सैंटकलेयर की बात समाप्त होते ही वह उससे लिपटकर रोने लगी। उसका सारा शरीर काँपने लगा।

सैंटकलेयर ने कहा - "इवा, प्यारी बच्ची, क्या हुआ?" और फिर कहा - "तुमको ये बातें नहीं सुननी चाहिए। तुम बहुत ही कमजोर हो।"

तब इवा ने आत्मसंयम करके कहा - "नहीं बाबा, मैं कमजोर नहीं हूँ; पर ये बातें मेरे हृदय में बहुत चुभती हैं।"

सैंटकलेयर बोला - "इवा बेटा, तुम्हारे कहने का क्या मतलब है?"



इवा ने कहा - "बाबा, मैं तुम्हें समझा नहीं सकती। मेरे मन में बहते-विचार चक्कर लगाया करते हैं। शायद किसी दिन मैं तुमसे कहूँगी।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "बेटी, चाहे जितना सोचती-विचारती रहो, केवल रोकर अपने बाबा का जी मत दुखाना। लो, यह देखो, तुम्हारे लिए मैं कैसा सेब लाया हूँ।"

पिता के हाथ से सेब लेकर इवा मुस्कराई, किंतु उस समय भी उसके होठ काँप रहे थे। सेंटक्लेयर उसका हाथ पकड़कर उसे बरामदे में ले गया और तरह-तरह की चीजें दिखाकर उसे बहलाने लगा। कुछ ही क्षणों के बाद दोनों को हँसी सुनाई दी, मानो दोनों खेल रहे हों।

बड़ों की बातें कहते-कहते हम अपने मित्र टॉम की बात भूल जा रहे हैं, पर यदि आप हमारे साथ अस्तबल की कोठरी में चले तो टॉम की कुछ खबर पा सकते हैं। टॉम की यह कोठरी बहुत ही साफ-सुथरी है। उसमें एक चारपाई, एक कुर्सी और एक मेज रखी है। उस पर एक बाइबिल और भजनों की एक पुस्तक है। टॉम इसी कोठरी में बैठा हुआ किसी गहरी चिंता में डूबा है। सामने एक स्लेट है। स्त्री, पुत्र और कन्या आदि के लिए उसका मन व्याकुल हो रहा है। उनका समाचार जानने के लिए उसने इवा से चिट्ठी लिखने का एक कागज माँग लिया है और पत्र लिखने के कठिन काम में जुट गया है। पहले के मालिक के लड़के जार्ज से टॉम ने थोड़ा-थोड़ा लिखना सीखा था; लेकिन सब अक्षर अब उसे याद नहीं हैं। जो याद हैं, उनमें भी कोई कहाँ लिखना चाहिए, यही समझ में नहीं आता। टॉम बड़ी कठिनाई से स्लेट पर पत्र-रचना कर रहा था, इसी समय चिट्ठियों की तरह फुदकती हुई इवा चुपके से आकर उसके पीछे खड़ी हो गई और कंधे पर से झाँककर बोली - "अहा टॉम काका! यह तुम क्या तमाशा कर रहे हो?"

टॉम ने कहा - "मिस इवा! मैं अपनी बेचारी बुढ़िया पत्नी तथा अपने छोटे बच्चों को पत्र लिखने की कोशिश कर रहा हूँ, पर मैं देखता हूँ कि यह काम मुझसे होगा नहीं।"

इवा ने कहा - "टॉम, मैं तुम्हारी सहायता करना चाहती हूँ। मैंने कुछ लिखना सीखा था। पिछले साल मैं सब अक्षर जानती थी, पर जान पड़ता है, अब मैं सब भूल गई हूँ।"

इसके बाद दोनों पास बैठकर एक मन से पत्र लिखने में लग गए। दोनों की विद्या की दौड़ बराबर ही है। बड़े परिश्रम और एक-दूसरे से सलाह करने के बाद एक-एक शब्द लिखा जाने लगा। अंत में इवा ने उत्साह से कहा - "टॉम काका, खूब अच्छी चिट्ठी बन गई। तुम्हारी पत्नी और बच्चे इसे पाकर बड़े खुश होंगे। ओह, बड़े दुःख की बात है कि इन लोगों को छोड़कर तुम्हें आना पड़ा। मैं किसी दिन बाबा से कहूँगी कि वह तुम्हें उन लोगों के पास लौट जाने दें।"

टॉम ने कहा - "मेरी मालकिन ने कहा है कि रुपया ज़ुटते ही वह मुझे फिर खरीद लेंगी। मालिक के बेटे जार्ज ने कहा है कि वह खुद आकर मुझे ले जाएँगे। यह देखो, उन्होंने अपनी याद की निशानी के रूप में मुझे यह मुद्रा दी है।"

उसने कपड़ों के भीतर से मुद्रा निकालकर दिखलाई।

इवा बोली - "हाँ-हाँ, तब वह जरूर आकर तुम्हें ले जाएँगे। मुझे बड़ी खुशी होती है।"

टॉम ने कहा - "इसी से मैं पत्र लिखकर उन्हें अपना पता बता देना चाहता हूँ और अपनी कुशल लिख देना चाहता हूँ। इससे मेरी पत्नी लोई को बड़ा संतोष होगा। चलते समय वह मेरे लिए बहुत रोई थी।"

इतने में सेंटक्लेयर ने दरवाजे से आते हुए आवाज दी - "टॉम!"

टॉम और इवा दोनों चौंक पड़े।

सेंटक्लेयर ने अंदर आकर और स्लेट देखकर कहा - "क्या हो रहा है यह?"

इवा बोली - "यह टॉम की चिट्ठी है। मैं लिखने में इसकी मदद कर रही हूँ। क्या यह अच्छी बात नहीं हुई?"

सेंटक्लेयर ने कहा - "मैं तुम्हारा साहस भंग नहीं करना चाहता। पर मेरी समझ में अच्छा होता कि टॉम मुझसे चिट्ठी लिखवा लेता। मैं घूमकर आऊँगा तो लिख दूँगा।"

इवा बोली - "यह जरूर चिट्ठी लिखवाएगा क्योंकि उसकी मालकिन ने उसे रुपया भेजकर फिर खरीद लेने का वादा किया है। वह अभी मुझे बता रहा था।"

सेंटक्लेयर ने मन-ही-मन सोचा कि यह केवल फुसलाने की बात है। जो लोग कुछ दयालु होते हैं, वे दासों को बेचने के समय ऐसी ही बातें कहकर झूठमूठ उसे समझा देते हैं। लेकिन उसने मुँह से कुछ कहा नहीं, केवल टॉम को घोड़ा कस लाने की आज्ञा दी।

शाम को लौटकर सेंटक्लेयर ने टॉम की चिट्ठी लिखकर डाक में डलवा दी।

इधर मिस अफिलिया घर के कामों में लगी रहती थी। दीना से लेकर दास बच्चे तक सब कहते थे कि मिस अफिलिया अजब किसम की स्त्री है, क्योंकि उसके नियमों के कारण सब तंग आ रहे थे।

उच्च श्रेणी के दास-दासियों अर्थात् एडाल्फ, रोजा और जेन की तो राय थी कि वह भली औरत नहीं है, क्योंकि उसके हावभाव बड़े आदमियों के-से नहीं हैं। इस पर उन्हें बड़ा अचरज होता था कि वह सेंटक्लेयर की चचेरी बहन है। मेरी का कहना था कि अफिलिया दीदी जिस तरह दिन-रात काम में जुटी रहती हैं, उसे देखने से ही आदमी को थकावट हो जाती है।

## 23. अफिलिया की परीक्षा

एक दिन सवेरे जब मिस अफिलिया घर के कामज-काज में लगी हुई थी, उसी समय सेंटक्लेयर ने सीढ़ी के पास खड़े होकर उसे पुकारा - "बहन, नीचे आओ, मैं तुम्हें दिखाने के लिए एक चीज लाया हूँ।"

मिस अफिलिया ने नीचे आकर पूछा - "कहो, क्या दिखाते हो?"

सेंटक्लेयर ने आठ-नौ वर्ष की एक हल्की लड़की को खींचकर उसके सामने कर दिया।

लड़की बहुत ही काली थी। अपने चंचल नेत्रों से वह कमरे की चीजों को बड़े कौतूहल से देख रही थी। जिस प्रकार अत्याचार से पीड़ित होकर हृदय की नीचता और दृष्टता बाहरी गंभीर भाव के आवरण से ढकी रहती है, उसी प्रकार बाहरी गंभीर भाव और विनय उसके मुँह पर झलक रही थी। उसके कपड़े बड़े मैले-कुचैले और फटे-पुराने थे; शरीर उसका दबला-पतला और बड़ा ही गंदा था। उसे देखकर मिस अफिलिया ने पूछा - "अगस्टिन, क्या सोचकर तुमने इसे खरीदा है?"

सेंटक्लेयर बोला - "यही कि तुम इसे सिखाओ-पढ़ाओ और कर्तव्य का ज्ञान कराओ। इसका नाम टप्सी है। यह खूब नाचती-गाती है।"

इसके बाद सेंटक्लेयर ने टप्सी से कहा - "यह तेरी नई मालकिन हैं। मैं इनके हाथ में तुझे सौंपता हूँ। देखना, इन्हें खुश रखना।"

टप्सी गंभीरता का भाव धारण करके बोली - "जो आज्ञा!"

सेंटक्लेयर ने फिर कहा - "टप्सी, तुझे भला बनना पड़ेगा।"

उसने फिर कहा - "जो आज्ञा!"

मिस अफिलिया ने सेंटक्लेयर से कहा - "अगस्टिन, तुम्हारा घर यों ही इन गुलामों और इनके बच्चों से भरा पड़ा है। इनके मारे घर में पैर रखने की तो जगह नहीं है। सवेरे उठ कर देखती हूँ, कोई दरवाजे के पास पड़ा है तो दो-एक मेज के नीचे से सिर निकाल रहे हैं, कोई सीढ़ी पर पड़ा हुआ है तो कोई नहीं। फिर इतनों के होते हुए भी यह एक और नई आफत क्यों

मोल ले आए?"

अगस्टिन बोला - "मैंने तुमसे कहा न कि सिखाने-पढ़ाने के लिए। तुम शिक्षा पर बहुत भाषण दिया करती हो। इससे मैंने सोचा कि इसे तुमको दूँगा, जिससे तुम इसे खूब पढ़ा-लिखाकर अपने साँचे में ढालो और इसे कर्तव्य का ज्ञान कराओ।"

अफिलिया ने कहा - "मैं इस नहीं चाहती। पहले से ही जितने हैं, कम नहीं हैं। उन्हीं के लिए कुछ कर सकूँ तो बहुत है।"

अगस्टिन बोला - "बस, यही तुम ईसाइयों का धर्म है! एक सभा बना ली और दो-चार गरीब लड़कों को, (जो दरिद्रता के मारे पढ़ नहीं सकते) पादरी बनाकर धर्म-प्रचार करने को विदेश में भेज दिया। इन बेचारों को जन्म भर विदेश में गला फाड़-फाड़कर मरना पड़ता है। तुम लोग दो-एक को सिखा-पढ़ाकर ईसाई बनाओ तो जानूँ कि अलबत्ता तुम लोग धर्म पर श्रद्धा रखते हो। पर तुमसे परिश्रम नहीं होगा, मुँह से चाहे जो कह लो, काम पड़ने पर कहोगी कि ये मैले हैं, बड़े गंदे हैं, इन्हें देखकर घिन आती है।"

अफिलिया बोली - "मेरे कहने का मतलब यह नहीं था। इसे पढ़ाना धर्म का काम जरूर है, पर तुम्हारे घर में तो यों ही बेहिसाब दास-दासी भरे पड़े हैं। मेरा समय और दिमाग चाटने के लिए वही काफी हैं। एक नए को और लाए बिना आखिर क्या बिगड़ रहा था?"

सेंटक्लेयर ने कहा - "खैर बाबा, तुम रास्ते पर आई, यही बहुत है। सुनो, मैं इसे केवल शिक्षा दिलाने के लिए नहीं लाया हूँ। पड़ोस में हमारे एक साहब हैं। वह मर्द-औरत दोनों-के-दोनों बड़े शराबी हैं। यह लड़की उन्हीं के यहाँ रहती थी। वे दिन-रात इसे पीटते थे और यह चिल्लाया करती। इसकी चीखों के मारे घर के सामने से गुजरना मुश्किल था, इसी से मैंने इसे खरीद लिया। इसमें कुछ अक्ल जान पड़ती है। कोशिश करके देखो कि तुम इसे सिखा-पढ़ाकर आदमी बना सकती हो कि नहीं। मैं इसे तुम्ही को सौंप दूँगा। तुम इसे अपना ईसाई धर्म सिखलाओ। मुझमें तो शिक्षा देने की योग्यता नहीं है। तुम कुछ कर सको तो यत्न करके देखो!"

जैसे कोई दुर्गंधित और सड़ी हुई चीज को उठाने के लिए बेमन से आगे बढ़ता है, वैसे ही मिस अफिलिया उस बालिका के पास जाकर बोली - "ओह, कितनी गंदी है! आधे बदन पर कपड़ा ही नहीं है।"

वह उसे नीचे रसोईघर के पास ले गई। उसे देखकर दीना बोली - "मेरी तो अक्ल ही काम नहीं करती कि मालिक ने इसे किसलिए खरीदा है। मैं इसे अपने पास नहीं रहने दूँगी।"

जेन और रोजा ने मुँह बनाकर कहा - "हम इसे कभी अपने पास न आने देंगी।"

मिस अफिलिया ने देखा कि उस बालिका का बदन धोना और कपड़े पहनाना तो दूर की

बात है, कोई उसको छूना भी नहीं चाहता। तब ईसाई धर्म के अनुरोध से लाचार होकर वह स्वयं ही उसका शरीर साफ करने लगी। बड़ी अनिच्छा से जेन ने उसकी कुछ मदद की।

लड़की की पीठ और कंधों पर कोड़ों की मार के दाग और घाव देखकर मिस अफिलिया को उस बच्ची पर बड़ी दया आई।

साफ कपड़े पहनाकर अफिलिया ने कहा - "अब यह जरा ईसाई-सी जान पड़ती है।" फिर मन ही मन उसका शिक्षाक्रम निश्चय करके पूछने लगी - "टप्सी, तू कितने बरस की है?"

टप्सी ने दाँत निपोरकर कहा - "मालूम नहीं।"

अफिलिया बोली - "अरी, तू अपनी उम्र नहीं जानती? तुझे कभी किसी ने नहीं बताई। तेरी माँ कहाँ है?"

टप्सी ने फिर खीस निकालकर कहा - "मेरे माँ कभी नहीं थी।"

"तेरे माँ कभी नहीं थी! इसके क्या माने? तू कहाँ पैदा हुई थी?"

"मैं कभी पैदा नहीं हुई थी।"

"मेरी बातों का जवाब इस तरह नहीं देना चाहिए। मैं तेरे साथ खेल नहीं कर रही हूँ। तू बता कहाँ जन्मी थी और तेरे माँ-बाप कौन थे?"

"मैं कभी नहीं जन्मी थी। एक व्यापारी के यहाँ बूढ़ी मौसी ने मुझे कुछ और लड़कों के साथ पाला था।"

जेन दाँत निकालकर बोली - "मिस साहब, आप जानती नहीं कि गुलामों का व्यापार करनेवाले लोग बकरी के बच्चों की तरह छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों को खरीद लाते हैं और कुछ दिन उन्हें पालकर बड़े होने पर बाजार में बेचते हैं। शायद इसे भी किसी व्यापारी ने दो-तीन बरस की उम्र में खरीदा होगा, इसी से यह अपने माँ-बाप की बाबत कुछ नहीं जानती।"

अफिलिया ने पूछा - "इस मालिक के घर तू कितने दिनों से थी?"

"मालूम नहीं!"

जेन बोली - "हब्शी बच्चे ये सब बातें नहीं बता सकते। इन्हें न गिनती आती है और न यही जानते हैं कि बरस किसे कहते हैं।"

अफिलिया ने पूछा - "टप्सी, तुने कभी ईश्वर का नाम सुना है?"

टप्सी को इस सवाल पर अचरज हुआ, पर वह अपने स्वभाव के अनुसार खीस निकालकर हँसने लगी।

"तू जानती है, तुझे किसने बनाया है?" अफिलिया ने अगला सवाल किया।

"किसी ने नहीं बनाया। मुझे लगता है, मैं अपने-आप बड़ी हो गई।"

"तू सीना जानती है?"

"नहीं।"

"तू क्या कर सकती है? अपने मालिक के यहाँ तू क्या करती थी?"

"पानी भरती थी, बरतन माँजती थी, छुरी-काँटा साफ करती थी।"

"क्या वे तुझसे भलमनसी का बर्ताव करते थे?"

अफिलिया की ओर एकटक देखकर वह बोली - "जान पड़ता है, वे अच्छे थे।"

इसी समय सेंटक्लेयर ने आकर मिस अफिलिया की कुर्सी के पीछे से कहा - "जीजी, इसे पढ़ाने में बड़ी सुविधा रहेगी। इसके मन में कोई पूर्व संस्कार नहीं है। इसका मन एकदम कोरे कागज की तरह है। तुम्हें इसके किसी तरह संस्कार दूर करने का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा।"

मिस अफिलिया के शिक्षा-संबंधी विचार भी उसके और विचारों की भाँति एकदम नपे-तुले हुए थे। उसके ये विचार वैसे ही थे, जैसी शिक्षा सौ बरस पहले इंग्लैंड में प्रचलित थी। छात्रों के लिए जो जरूरी हो, उसे मन लगाना सिखलाना; सवाल-जवाब के ढंग से बालकों को यह बताना कि ईश्वर ने ही इस जगत को रचा है और वही पालन कर रहा है; पुस्तक-पाठ, सीना-पिरोना और झूठ बोलने पर सड़ासड़ बेटों की मार! अफिलिया ने इन्हीं नियमों के अनुसार टप्सी को शिक्षा देने का निश्चय किया।

सेंटक्लेयर के परिवार में सब टप्सी को मिस अफिलिया की लड़की कहते और समझते थे। सताए हुए लोग इतने गिर जाते हैं कि एक-दूसरे के लिए उनकी कुछ भी सहानुभूति नहीं होती, इसी से सेंटक्लेयर के घर का कोई दास-दासी टप्सी को स्नेह की दृष्टि से नहीं देखता था। सब उसे एक बला समझते थे। इसी कारण मिस अफिलिया उसे अपने ही सोने के कमरे में रखती थी और उसे बिस्तर बिछाने का काम दे रखा था। पर टप्सी से मिस अफिलिया को कितना कष्ट मिल रहा था, इसे उसका जी ही जानता था। लेकिन उसमें हद दर्जे की सहिष्णुता भी थी, इससे

वह घबराई नहीं।

पहले दिन मिस अफिलिया ने टप्सी को बिछौना करने का ढंग और उसकी बारीकियाँ बताना आरंभ किया।

"टप्सी, मैं तुझे बताती हूँ कि मेरा बिछौना इस तरह बिछाना। देख ले, अच्छी तरह सीख ले।"

टप्सी ने बड़े उत्साह से कहा - "जो आज्ञा!"

अफिलिया बोली - "टप्सी, इधर देख, यह चादर की सीधी परत है, यह उल्टी। तुझे याद रहेगा न? उल्टी ओर से मत बिछाना।"

बड़े ध्यान से देखते हुए टप्सी ने कहा - "जो आज्ञा!"

जिस समय मिस अफिलिया उसे बिछौना बिछाने का ढंग सिखा रही थी, उसी समय टप्सी ने धीरे-धीरे उसके फीते और दस्ताने चुराकर अपनी आस्तीन में छिपा लिए। अफिलिया ने कहा - "अच्छा, अब बिछाकर दिखला।"

टप्सी बड़ी चतुराई से बिस्तर बिछाने लगी। अफिलिया बड़ी प्रसन्न हुई। लेकिन तभी दुर्भाग्यवश टप्सी की आस्तीन से अकस्मात् फीता बाहर निकल आया। यह देखकर अफिलिया बोली - "अरी, यह क्या? तू बड़ी खोटी है। तूने चोरी करना भी सीखा है?"

यह कहकर उसकी आस्तीन से फीता निकाल लिया। लेकिन टप्सी इससे जरा भी नहीं झेंपी। बड़ी गंभीर बनकर खड़ी रही और जरा देर बाद मानो कोई बात ही न हो, बोली - "मेम साहब का फीता मेरी आस्तीन में कैसे आ गया?"

अफिलिया ने कहा - "तु बड़ी दुष्ट है। मुझसे झूठ मत बोल। तूने फीता चुराया था।"

टप्सी बोली - "मेम साहब, मैं सच कहती हूँ कि मैंने इससे पहले कभी ऐसा फीता नहीं देखा था।"

"टप्सी, तू नहीं जानती कि झूठ बोलना कितना बड़ा पाप है।"

"मेम साहब, मैं कभी झूठ नहीं बोलती। मैं सच-ही-सच कहती हूँ।"

"टप्सी, इस तरह झूठ बोलेगी तो मैं तुझे कोड़े लगाऊँगी।"

"दिन भर बेंत लगाने से भी कोई दूसरी बात नहीं हो सकेगी। मैंने कभी यह फीता नहीं

देखा था। आपने बिछौने पर रखा था, सो मेरी आस्तीन में चला गया।"

टप्सी के यों लगातार झूठ बोलने से मिस अफिलिया को ऐसा गुस्सा आया कि उसने कुर्सी से उठकर उसे पकड़कर झकझोरा और कहा - "फिर कभी मुझसे झूठ मत बोलना।"

अफिलिया का झकझोरना था कि टप्सी की दूसरी आस्तीन से दस्ताने निकल पड़े?

अफिलिया ने कहा - "अब बोल, अब भी कहेगी कि तूने दस्ताने नहीं चुराए? फीता तो अपने-आप आस्तीन में चला गया! ये दस्ताने किसने तेरी आस्तीन में ठूस दिए?"

टप्सी ने दस्तानों की चोरी स्वीकारकर ली, पर फीते की चोरी से इनकार करती गई।

अफिलिया ने कहा - "टप्सी, अगर तू अपनी गलती मान ले तो तुझे चाबुक नहीं लगाऊँगी।"

टप्सी ने सब चीजों की चोरी स्वीकार कर ली और अपनी भूल के लिए बहुत पछतावा करने लगी।

अफिलिया ने कहा - "मैं जानती हूँ कि तूने घर की और भी चीजें चुराई होंगी। कल मैंने तुझे घर में बहुत बार इधर-उधर फिरते देखा था। अगर और कोई चीज चुराई हो तो सही-सही बता दे, मैं तुझे नहीं मारूँगी।"

"मेम साहब, मैंने इवा के गले का हार चुराया है।"

"अरी दुष्टा, और बोल!"

"रोजा के कान की बाली चुराई है।"

अफिलिया ने संयत स्वर में कहा - "जा, अभी दोनों चीजें ला।"

"मेरे पास नहीं हैं। मैंने फूँक डाली।"

"फूँक डाली! झूठ बोलती है। जा, झटपट ला, नहीं तो कोड़े खाएगी।"

टप्सी ने रोते और सिसकते हुए कहा कि वह नहीं ला सकती। सब चीजें जल गईं।

"तूने उन चीजों को जलाया क्यों!"

"मैं बड़ी पापिन हूँ, दुष्टा हूँ, इसी से ऐसा किया।"

ठीक इसी समय इवा अपना हार गले में पहने हुए वहाँ आई। अफिलिया ने कहा - "क्यों



इवा, तुमने अपना हार कहाँ पाया?"

इवा विस्मय से बोली - "पाया! खोया कहाँ था! यह तो मेरे गले ही में पड़ा है।"

"कल तूने इसे पहन रखा था?"

"हाँ बुआ, यह सारी रात मेरे गले ही में रहा है। सोते समय मैं इसे उतारकर रखना भूल गई थी।"

अफिलिया अब बड़े चक्कर में पड़ी। इतने में रोजा भी अपनी बाली झूलाती हुई आ पहुँची। उसे देखकर अफिलिया को और भी अचरज हुआ। उसने बड़ी निराशा से कहा - "हे राम, मैं इस लड़की को लेकर क्या करूँगी?" फिर बोली - "टप्सी, तूने जो चीजें नहीं चुराई, उनके लिए कैसे कह दिया कि तूने चुराई हैं?"

टप्सी ने आँखें मलते हुए कहा - "मेम साहब, आपने मुझे सब स्वीकार करने को कहा था, इसी से मैंने सब स्वीकार कर लिया।"

"लेकिन मैंने तुझसे यह तो नहीं कहा था कि जो नहीं लिया है उसे भी स्वीकार कर ले। यह भी वैसा ही बड़ा झूठ है, जैसा दूसरा।"

टप्सी ने बड़े सरल और आश्चर्य भाव से कहा - "अच्छा यह बात है?"

इस पर रोजा ने टप्सी की ओर तीव्र दृष्टि से देखकर कहा - "भला यह सच कहेगी? मैं इसकी मालिक होती तो मारे कोड़ों के इसकी चमड़ी उधेड़ देती।"

इवा ने आज्ञा के ढंग से कहा - "चुप रहो रोजा, मैं तुम्हारी ऐसी बातें सुनना पसंद नहीं करती।"

रोजा ने कहा - "मिस इवा, तुम बड़ी दयालु हो। इन शैतानों से व्यवहार करना नहीं जानती हो। ये जितने ही काटे जाएँ, उतने ही सीधे रहते हैं।"

इवा ने क्रुद्ध होकर कहा - "रोजा, खबरदार जो ऐसी बात मुँह से फिर कभी निकाली।"

रोजा सकपका गई।

इवा खड़ी टप्सी को देखती रही। आमने-सामने खड़ी ये बालिकाएँ पराधीनता और स्वाधीनता के दो जीत-जागते उदाहरण हैं। स्वाधीनता के उत्तम और पराधीनता के बुरे फल का कैसा अच्छा चित्र है! स्वाधीनता की गोद में पली हुई इवान्जेलिन उमंग से उमड़े हुए सरल और स्नेह भाव से टप्सी को उपदेश दे रही है और टप्सी शुष्क हृदय से बनावटी विनय दिखलाकर संदिग्ध चित्त से

उसकी बातें सुन रही है। कितना भेद है! इवा ने कहा - "टप्सी, तू चोरी क्यों करती है? तुझे जो चीज चाहिए, मैं दूँगी। तू फिर चोरी मत करना।"

यह पहला अवसर था जब टप्सी ने ऐसे मधुर और स्नेह-पूर्ण वचन सुने। इस स्नेह-संभाषण से उसका हृदय पिघलने लगा। उसकी आँखों से दो बूँद आँसू गिर पड़े, पर तुरंत ही उसके कठोर भाव ने आकर फिर उसके हृदय पर अधिकार कर लिया। उसने दाँत दिखलाकर इवा की बात हँसी में उड़ा दी। उसे इस बात का बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ कि इवा उसे अपनी चीजें दे सकती है।

टप्सी के मन में ऐसे भावों का उदय होना स्वाभाविक था। उसे इस जन्म में न किसी ने प्यार किया, न उसके प्रति दया दिखलाई। उसे कोड़ों की मार और ऊपर से तिरस्कार के सिवा कभी और कुछ नसीब नहीं हुआ। भला ऐसी दशा में पली हुई लड़की इवा की उन सरलतापूर्ण बातों पर सहसा कैसे विश्वास कर सकती थी? उसे इवा की बातें मजाक-सी जान पड़ीं। अफिलिया ने टप्सी को पढ़ाने-लिखाने के अनेक ढंग सोचे, अनेक उपाय किए, पर कोई विधि कारगर न हुई। टप्सी की दुष्टता किसी तरह कम न हुई। हारकर एक दिन अफिलिया ने सेंटक्लेयर से कहा - "मेरी तो समझ में ही नहीं आता कि बिना कोड़े लगाए मैं कैसे उसे राह पर लाऊँ?"

सेंटक्लेयर बोला - "तब तुम अपने दिल के संतोष के लिए उसे कोड़े ही लगाओ। मैं तुम्हें उस पर पूरा अधिकार देता हूँ। जो चाहो, सो करो।"

"लड़के बिना मार के सीधे नहीं होते, पिटने से ही उनकी अक्ल दुरुस्त होती है।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "हाँ-हाँ, जरूर। जो तुम ठीक समझो, करो। पर, मैं तुमसे एक बात कहता हूँ। मैंने देखा है कि इस लड़की पर खूब कोड़े पड़ते थे, लोहे की छड़ को गर्म करके इसे दागा जाता था, इसकी लात-घुँसों से ठुकाई होती थी, फिर भी इसका स्वभाव दुरुस्त नहीं हुआ। इसी लिए जब तक इसकी और ज्यादा मरम्मत न होगी, तब तक कुछ न होगा।"

"तब बोलो, क्या उपाय हो? अफिलिया ने पूछा।"

"तुम्हारा सवाल टेढ़ा है।" सेंटक्लेयर बोला - "मैं चाहता हूँ कि तुम अपने-आप ही इसका उत्तर सोच लो। मुझे ऐसे लोगों की दवा नहीं मालूम, जिन्हें कोड़े खाने पड़ते हैं और जो कोड़े खाकर भी नहीं सुधरते।"

अफिलिया बोली - "मेरी तो अक्ल ही काम नहीं करती। मैंने कभी ऐसी लड़की नहीं देखी।"

"क्यों? बस मुझको ही दोष देने के लिए हो? मेरी तो तुम बहुत लानत-मलामत किया करती हो - दास-दासियों को शिक्षा नहीं देते, इनका सत्यानाश कर रहे हो! अब क्या हो गया? तुमसे एक छोटी-सी आत्मा का भी उद्धार करते नहीं बनता? मैं तुमसे यह भी कह देता हूँ कि

कोड़ों की मार से इनका सुधार कभी नहीं हो सकता। कोड़ों की मार अफीम की खुराक की तरह होती है। रोज-रोज खुराक बढ़ानी पड़ती है, अंत में बढ़ते-बढ़ते उसका ठिकाना नहीं रहता। प्रू की मौत क्यों हुई? रोज उसके मालिक को कोड़ों की संख्या बढ़ानी पड़ती थी। यों ही बढ़ाते-बढ़ाते आखिर कोड़ों ने ही उसकी जान ले ली। इसी से मैं अपने दास-दासियों को कोड़े नहीं लगाता। मेरे यहाँ के दास-दासी भी बिगड़े हुए हैं। पर कोड़ों की मार से ये नहीं सुधारे जा सकते। इन्हें मारकर और तो कुछ होना नहीं है, अपनी भी प्रकृति पशुओं जैसी बना लेनी है।"

"तुम्हारे यहाँ की दास-प्रथा की बलिहारी!"

"बेशक मैं तो खुद कहता हूँ। पर अब तो ये बुरे बन गए। अब इनके लिए क्या होना चाहिए।"

अफिलिया बोली - "यह तो मैं नहीं कह सकती, लेकिन मैंने अब इनके सुधार को अपना कर्तव्य मान लिया है। अब मैं जी-जान से टप्सी के सुधार का यत्न करूँगी।"

इसके बाद अफिलिया टप्सी के सुधार के लिए बड़ा परिश्रम करने लगी। वह अपने कई घंटे इस काम में लगा देती थी। कैसी भी हैरानी हो, वह परवा नहीं करती थी। इस मेहनत का नतीजा यह हुआ कि टप्सी ने जल्दी ही किताब पढ़ना सीख लिया। पर और कामों में उसका नटखटपन ज्यों-का-त्यों रहा। सिलाई सीखने के समय कभी वह सुई तोड़ डालती, कभी तागे का गोला नोच डालती और कभी कूदकर पेड़ पर चढ़ जाती। ये सब उत्पाद देखकर अफिलिया ने सोचा कि कहीं इसके संग का बुरा प्रभाव इवा पर न पड़े। उसने सेंटक्लेयर से इसकी चर्चा की तो सेंटक्लेयर ने इसे हँसी में उड़ा दिया और कहा कि इवा पर किसी की संगत का बुरा प्रभाव नहीं पड़ सकता। कमल पर जैसे जल असर नहीं कर सकता, वैसे ही इवा के हृदय को कोई भी बुराई नहीं छू सकती।

शुरू में घर के दास-दासी टप्सी से घृणा करते थे। वह उनके पास नहीं फटकने पाती थी, पर अब उससे सब चौंकते थे। वह बड़ी धूर्त थी। जो कोई उसे नाखुश करता, उसका वह नाक में दम कर देती। चुपके से उसके कपड़े कैंची से या दाँतों से काट देती, नहीं तो स्याही ही पोत देती, या उसकी कोई चीज ही चुरा लेती। किसी से छिपा नहीं था कि यह टप्सी की ही करतूत है। कोई उससे कुछ कह भी नहीं सकता था, क्योंकि उसके विरुद्ध कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिलता था, और बिना प्रत्यक्ष प्रमाण के, संदेह का लाभ अपराधी को उठाने देने की पक्षपातिनी अफिलिया दंड न देती थी। टप्सी दास-दासियों को ही तंग नहीं करती थी, वह अफिलिया को भी बहुत परेशान करती थी। एक दिन अफिलिया अपने कपड़ों के संदूक की कुंजी बाहर भूल गई। वह टप्सी के हाथ लग गई। उसने किया क्या कि संदूक से अफिलिया का बहुत बढ़िया दुशाला निकालकर उसे सिर पर लपेट लिया और कुर्सी पर बैठकर आईने में मुँह देखने लगी। अफिलिया ने कमरे में आकर जब यह हाल देखा तो गुस्से में भरकर बोली - "यह तू क्या कर रही है?"

टप्सी ने जवाब दिया - "मैं कुछ नहीं जानती। मैं बड़ी दुष्ट हूँ।"

अफिलिया ने झुँझलाकर कहा - "मेरी समझ में नहीं आता कि तेरे साथ किस तरह पेश आऊँ?"

टप्सी बिना झिझक के बोली - "मेम साहब, मुझे बेंत मारिए, मेरे पहले मालिक भी मुझे बेंत लगाते थे।"

"टप्सी", अफिलिया ने दया से प्रेरित होकर कहा - "मैं तुझे बेंत नहीं लगाना चाहती, तू अपनी इच्छा से ही सुधर सकती है। तू इस तरह की दुष्टता छोड़ क्यों नहीं देती?"

"मेम साहब, मैंने बेंत खाए हैं। मैं समझती हूँ कि मेरे लिए वही ठीक दवा होगी।" टप्सी ने कहा।

अफिलिया अब कभी-कभी टप्सी को बेंत जमाने लगी। बेंतों की मार खाते समय वह बहुत चीखती और तरह-तरह के स्वाँग रचती पर छूटते ही दूसरे लड़कों से जाकर कहती - "मिस अफिलिया का बेंत मारने का ढंग अच्छा नहीं है। उनकी मार तो मुझे मालूम ही नहीं होती। मेरे पहले मालिक की मार से तो चमड़ी निकल आती थी, वह बेंत मारना खूब जानते थे।"

मिस अफिलिया हर रविवार को टप्सी को धर्म-शिक्षा दिया करती थी। टप्सी की स्मरण-शक्ति बड़ी अच्छी थी। वह अनायास सब यादकर लेती थी।

अफिलिया के सामने खड़ी होकर अब टप्सी अपना धर्म-पाठ सुनाने लगी :

"हम लोगों के आदि-पुरुष, आदम और हौआ, पूर्ण स्वाधीनता के साथ उच्च-प्रदेश में बिचरने लगे। फिर ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण वे वहाँ से गिरा दिए गए।"

इतना कहकर टप्सी कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखने लगी।

अफिलिया ने कहा - "टप्सी, चुप क्यों हो गई?"

"मेम साहब, क्या हमारे आदि-पुरुष कैंटाकी में रहते थे?"

"क्या मतलब?"

"क्या वे कैंटाकी से गिराए गए थे? मेरे पहले मालिक कहा करते थे कि वे हम लोगों को कैंटाकी से खरीदकर लाए थे।"

सेंटक्लेयर जोर से हँस पड़ा। बोला - "बहन, इन्हें जाकर समझाओ। इसका अर्थ जब तक न

समझा दोगी, तब तक ये यों ही अपना अर्थ लगाते रहेंगे।"

अफिलिया ने झुँझलाकर कहा - "तुम रहने दो! तुम्हारे हँसने से पढ़ाने में गड़बड़ होती है।"

"अच्छा अब माफ करो, अब मैं हँसकर कोई गड़बड़ नहीं करूँगा।"

यह कहकर सेंटक्लेयर अखबार पढ़ने लगा। पर मिस अफिलिया की शिक्षा-प्रणाली ऐसी अनोखी थी कि सेंटक्लेयर को बीच-बीच में हँसी आए बिना नहीं रहती थी और अफिलिया उसके हँसने पर बहुत चिढ़ती थी।

टप्सी अफिलिया से धर्मशास्त्र और लिखना-पढ़ना सीखती रही, पर उसकी दृष्टता जरा भी कम न हुई। दूसरे सब दास-दासी उस पर बहुत चिढ़ते थे, पर कोई कभी उसे मारने आता तो वह दौड़कर सेंटक्लेयर की कुर्सी के नीचे छिप जाती थी। दयालु सेंटक्लेयर किसी को उसे मारने नहीं देता था।

## 24. शेल्वी की प्रतिज्ञा

गर्मी के दिन थे। दोपहर की सख्त गर्मी के कारण शेल्वी साहब अपने कमरे की खिड़कियाँ खोले हुए बैठे चरुट पी रहे थे। उनकी मेम पास बैठी हुई सिलाई का बारीक काम कर रही थीं। बीच-बीच में मेम के बड़ी उत्सुकतापूर्वक शेल्वी साहब की ओर देखने से प्रकट हो रहा था, जैसे वह अपने मन की कोई बात कहने के लिए मौका ढूँढ़ रही हों। थोड़ी देर बाद मेम ने कहा - "तुम्हें मालूम है, क्लोई के पास टॉम की चिट्ठी आई है?"

शेल्वी बोला - "हाँ, चिट्ठी आई है? जान पड़ता है, टॉम को वहाँ दो-एक भाई मिल गए हैं।"

मेम ने कहा - "मेरा अनुमान है कि किसी बहुत अच्छे परिवारवालों ने उसे खरीदा है। वे टॉम के साथ बड़ी मेहरबानी का बर्ताव करते हैं। और उसे कुछ ज्यादा करना-धरना नहीं पड़ता।"

"यह बड़े आनंद की बात है। मैं समझता हूँ, अब टॉम दक्षिण छोड़कर मुश्किल से यहाँ आना चाहेगा।"

"वहाँ रहने की कहते हो! वह तो यहाँ आने के लिए बेचैन हो रहा है। उसने दरियाफ्त किया है कि उसके खरीदने के लिए रुपए जुट गए या नहीं?"

"मुझे तो रुपए जूटने की आशा नहीं जान पड़ती। कर्ज बड़ी बुरी बला है। एक बार हो जाने के बाद फिर उसका चुकाना पहाड़ हो जाता है। एक का लिया दूसरे को दिया, दूसरे से तीसरे को, इसी उलटफेर में पड़ा हुआ हूँ।"

"मैं समझती हूँ, कर्ज चुकाने का एक उपाय हो सकता है - मान लो, हम अपने सब घोड़े बेच डालें और खेत का कुछ हिस्सा भी बेच दें।"

शेल्वी ने कहा - "एमिली यह बड़े शर्म की बात होगी, कैटाकी भर में तुम अच्छी समझी जाती हो, लेकिन तुम दुनियादारी की बातें नहीं समझ सकती। स्त्रियाँ कभी दुनियादारी की बातें नहीं समझती हैं।"

मेम बोली - "खैर, मैं समझूँ या न समझूँ, इससे कोई मतलब नहीं। तुम मुझे अपने कर्ज की एक सूची दो तो मैं देखूँ कि कोई रास्ता निकल सकता है या नहीं।"

"एमिली, मुझे नाहक तंग मत करो। मैं कहता हूँ कि तुम दुनियादारी की बाबत कुछ नहीं जानती।"

स्वामी की बात सुनकर मेम फिर कुछ न बोली। ठंडी साँस लेकर चुप हो गई। पर शेल्वी साहब अपनी स्त्री की सलाह पर चलते, तो सहज में कर्ज से उनका छुटकारा हो जाता। उनकी स्त्री बड़ी होशियार और किफायतशार थी। उन्होंने काम-काज का भार स्त्री को सौंप दिया होता तो कभी उनकी यह दुर्दशा न होती। पर वह तो सदा यही मानकर चलते थे कि स्त्रियों में काम-काज की बातें समझने की अकल ही नहीं होती।

मेम मन ही मन सोचने लगी कि मैंने टॉम को फिर खरीदकर अपने यहाँ रखने का वचन दिया है, अब भला मैं कैसे उस प्रतिज्ञा से भ्रष्ट होऊँ। कहा है कि सज्जन अपने वचन से पीछे नहीं हटते। इन्हीं विचारों में गोते खाती हुई फिर बोली - "बेचारी क्लोई स्वामी के शोक में बहुत दुख पा रही है। उसका दिल बैठा जाता है। उसे देखकर मेरा जी भर आता है। क्या इन रुपयों को इकट्ठा करने की कोई सूरत नहीं हो सकती?"

"तुम्हारी शोचनीय दशा देखकर मुझे दुःख होता है, पर हम लोगों का इस तरह वचन देना ही अन्याय है। टॉम वहाँ एक-दो बरस में कोई दूसरी स्त्री रख लेगा। तुम क्लोई से कह दो कि अच्छा होगा, वह भी यहाँ किसी से अपना संबंध जोड़ ले।"

"मिस्टर शेल्वी" मेम बोली - "मैंने अपने यहाँ के नौकरों को सीख दी है कि उनका भी विवाह-बंधन उतना ही पवित्र है, जितना हमारा। मैं क्लोई को ऐसी सलाह देने का विचार भी मन में नहीं ला सकती।"

"प्यारी, तुमने इन्हें ठीक शिक्षा नहीं दी। इनकी दशा को ध्यान में न रखकर इन पर नैतिक

शिक्षा का बोझ लाद दिया है।"

"मैंने इन्हें बाइबिल की नीति सिखलाई है। उसमें मैंने कौन-सी बुराई की?"

"एमिली, मैं तुम्हारी धर्म-संबंधी बातों में दखल नहीं देना चाहता। मेरा केवल इतना ही कहना है कि ये लोग उस शिक्षा के बिल्कुल ही अनुपयुक्त हैं। इनकी दशा उस शिक्षा का भार उठाने योग्य नहीं है।"

मेम ने गंभीर होकर कहा - "वास्तव में इन लोगों की दशा बहुत खराब है और यही कारण है कि मैं दिल से गुलामी की प्रथा से घृणा करती हूँ, पर यह बात पक्की समझो कि मैं इन निराश्रितों को वचन देकर कभी उसे भंग न करूँगी। मैं गाना सिखाने का काम करके रुपए इकट्ठा करूँगी और उससे टॉम को फिर से बुलाने की अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करूँगी।"

"एमिली, तुम अपने को इतना मत गिराओ। मैं तुम्हारे इस कार्य का कभी समर्थन नहीं कर सकता।"

मेम ने दुःख के साथ कहा - "गिराने की कहते हो, और प्रतिज्ञा-भंग करने से मेरा पतन नहीं होगा? उससे सौगुना पतन होगा।"

"रहने दो अपने स्वर्गीय नैतिक भाव!"

शेल्वी और उनकी स्त्री में ये बातें हो रही थीं कि इसी बीच क्लोई ने आकर पुकारा - "मेम साहब, जरा इधर तो आइए।"

मेम ने बाहर जाकर पूछा - "क्लोई, क्या बात है?"

उसने कहा - "कहिए तो आज एक मुर्गी का शोरबा बना दूँ।"

मेम ने कहा - "जो तुम्हारी इच्छा हो, बना लो। किसी भी चीज से काम चल जाएगा।"

क्लोई को जब मेम साहब से कोई बात कहनी होती थी, तब वह अच्छे भोजन की बात उठाकर भूमिका बाँधती थी। आज भी उसने आपनी कोई बात कहने के लिए यह भूमिका बाँधी थी। हँसते हुए बोली - "मेम साहब, आप रुपया इकट्ठा करने के लिए गाने का काम सिखाने की तकलीफ क्यों उठाएँगी? इससे साहब की बदनामी होगी। कितने ही लोग अपने दास-दासियों को किराए पर देकर रुपए वसूल करते हैं। इतने दास-दासियों को बैठे-बिठाए मुफ्त में भोजन देने से क्या फायदा?"

"अच्छा क्लोई, किसे किराए पर देना चाहिए?"

"मैं और किसी को किराए पर देने को नहीं कहती। साम कहता था कि लूविल नगर में एक हलवाई है, वह मिठाई बनाने के लिए किसी अच्छे आदमी की खोज में है। मैं वहाँ जाऊँ तो वह हर हफ्ते मुझे चार डालर देगा। यहाँ का काम सैली चला लेगी। वह सब तरह का भोजन बनाना सीख गई है।"

"अपने बच्चों को छोड़कर वहाँ जाओगी?"

"दोनों लड़के तो बड़े हो गए हैं। अब वे काम-काज कर लेते हैं। रही छोटी बच्ची, सो उसे सैली पाल लेगी।"

"लूविल दूर बहुत है।"

"उसी के पास शायद कहीं मेरा बूढ़ा है।"

"नहीं क्लोई, टॉम लूविल से बहुत दूर है, दो-तीन सौ कोस परे है। पर तुम लूविल जाना चाहो तो मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं है। मिठाईवाले के यहाँ तुम्हें जो कुछ तनख्वाह मिले वह सब अपने स्वामी को फिर खरीदने के लिए जमाकर रखना। उसमें से मैं तुम्हें कौड़ी भी खर्च नहीं करने दूँगी।"

क्लोई ने कहा - "मेम साहब, मैं आपके गुणों का बखान नहीं कर सकती। मैंने यही सोचा है कि बूढ़े को छुड़ाने के लिए सब रुपया जमा करती जाऊँगी। हफ्ते पीछे चार डालर मिलेंगे। मेम साहब, साल भर मैं कितने हफ्ते होते हैं?"

"बावन।"

"तो साल भर मैं चार डालर हफ्ते के हिसाब से कितने डालर होंगे?"

"दो सौ आठ डालर।"

"तो कितने बरस काम करने से बूढ़े के दामों जितने रुपए होंगे?"

"चार-पाँच बरस। पर चार-पाँच बरस तुझे काम नहीं करना पड़ेगा। कुछ डालर मैं भी दे दूँगी।"

क्लोई ने कातर भाव से कहा - "पर मेरे हाथ-पाँव रहते आप डालरों के लिए गाना सिखाने का काम क्यों करेंगी?"

"अच्छा, तुम कब जाना चाहती हो?"



"कल, साम उधर जाने को है। मैं उसी के साथ जाना चाहती हूँ। आप 'पास' लिख दें तो चली जाऊँ।"

मेम ने बड़ी दयालुता से कहा - "मैं अभी लिखे देती हूँ।"

यह कहकर मेम अपने स्वामी के पास गई और उनकी अनुमति से 'पास' लिखकर क्लोई को दे दिया। क्लोई बड़ी खुशी से अपना सामान बाँधने लगी। वहाँ शेल्वी साहब का लड़का खड़ा था। उसे देखकर बोली - "जार्ज मैं लूविल जा रही हूँ। वहाँ चार डालर हफ्ते में मिलेंगे। वे सब मैं तुम्हारी माता के पास बूढ़े को छोड़ा लाने के लिए अमानत की तरह जमा करती जाऊँगी।"

"कब जाओगी?"

"कल साम के साथ जाऊँगी। मास्टर जार्ज, तुम अभी बूढ़े को जो जवाब दो, उसमें ये सब बातें साफ-साफ लिख देना।"

"मैं अभी लिख दूँगा। अपने नए घोड़े की खरीद की बात भी लिख दूँगा।"

"जरूर-जरूर लिख देना। अच्छा चलो, मैं तुम्हारे खाने के लिए कुछ लाती हूँ। अब न मालूम फिर कितने दिनों बाद तुम्हें अपने हाथ का बनाया खाना खिलाना नसीब होगा!"

## 25. पुष्पी की कुम्हालाहट

दिनों के बाद महीने और महीनों के बाद वर्ष, देखते-देखते सेंटक्लेयर के यहाँ टॉम के दो वर्ष यों ही बीत गए। टॉम ने अपने घर जो पत्र भेजा था, कुछ ही दिनों बाद उसके उत्तर में मास्टर जार्ज का पत्र आ पहुँचा। इस पत्र को पाकर टॉम को बड़ा आनंद हुआ। टॉम के छुटकारे के निमित्त क्लोई के लूविल में नौकरी करने जाने, टॉम के दोनों पुत्र मोज और पिटे बड़े आनंद में हैं और कुछ काम-काज करने लायक हो गए हैं, उसकी छोटी कन्या का भार सैली को सौंपा गया है, ये सब बातें इस चिट्ठी में लिखी हुई थीं। जार्ज अपने नए घोड़े की खरीद की बात भी लिखना नहीं भूला था। पत्र पाने के बाद से टॉम को जब फ़र्सत मिलती, तभी वह उसे सामने रखकर बड़ी चाह से पढ़ने की चेष्टा करता था। इवा और टॉम में बड़ी देर तक इस बात पर आलोचना होती रही कि इस पत्र को शीशे के साथ एक सुंदर चौखटे में जड़वाकर दरवाजे पर लटकाना ठीक होगा या नहीं। अंत में बहुत सोच-विचार के बाद तय हुआ कि ऐसा करने से पत्र के दोनों हिस्से दिखाई नहीं पड़ेंगे, इससे चौखटे में जड़वाना ठीक नहीं।

टॉम और इवा का स्नेह दिन-दिन बढ़ता गया। टॉम इवा को बहुत प्यार करता था। जब बाजार जाता, उसके मन-बहलाव के लिए कोई अच्छी-सी चीज खरीद लाता। इवा को वह कभी फूलों का सुंदर गुच्छा, कभी सुंदर-सुंदर फूल चुनकर उसकी माला बना कर देता। इवा जब टॉम के पास बैठकर बाइबिल पढ़ती और धर्म-चर्चा करती, उस समय वह उसे मनुष्य-लोक की न मानकर, देव-लोक की कन्या समझकर, मन-ही-मन उसकी आराधना करता था।

गर्मी की ऋतु आ जाने के कारण सेंटक्लेयर शहर छोड़कर, वहाँ से कुछ दूर झील के किनारे अपने उद्यान में सपरिवार जाकर रहने लगा। वहाँ रोज शाम के समय इवा और टॉम बैठकर बाइबिल की चर्चा किया करते थे।

एक दिन रविवार को संध्या-समय वहीं टॉम के पास बैठी हुई इवा बाइबिल पढ़ रही थी। उसमें उसने पढ़ा - "स्वर्ग का राज्य बहुत पास है।" यह पढ़कर उसने कहा - "टॉम काका, मैं जाऊँगी।"

"कहाँ?"

"स्वर्ग के राज्य में।"

"स्वर्ग कहाँ है?"

इवा ने आकाश की ओर अंगुली उठाकर कहा - "वह स्वर्ग है। मैं जल्दी ही जाऊँगी।"

यह सुनकर टॉम के मन को बड़ा धक्का लगा। इवा का शरीर सूखते देखकर टॉम के हृदय में बड़ी चिंता रहा करती थी, खासकर इस बात से कि मिस अफिलिया कहा करती थी, इवा को जिस ढंग की खाँसी की बीमारी हो रही है, वह बीमारी किसी दवा से आराम नहीं होती। इस समय वह बात भी टॉम के मन में जाग उठी। टॉम इवा को देवकन्या समझता था। उसका खयाल था कि उसके मुँह से कभी कोई असत्य वचन नहीं निकलता। इससे आज की बात सुनकर टॉम के हृदय में किस भाव का उदय हुआ होगा, इसका सहज में अनुमान किया जा सकता है।

क्या कभी किसी के घर इवा-सरीखे बच्चे हुए हैं? हाँ, हुए हैं; पर उनका नाम समाधि के पत्थरों पर ही खुदा हुआ मिलता है। उनकी मधुर मुस्कान, उनके स्वर्गीय सुधावर्षी नयन, उनके साधारण वाक्य और आचरण गुप्त धन की भाँति केवल उनके स्नेही आत्मीयों ही के मन-मंदिर में छिपे पड़े रहते थे। कितने ही घरों की बात सुनी जाती है कि उस से एक बच्चा जाता रहा। उसका रंग-ढंग ऐसा सुंदर था कि उसके सामने और बालकों के रूप-गुण फीके थे। जान पड़ता है, मानो विधाता ने मनुष्यों के पापी मन को स्वर्ग की ओर खींचने के लिए वहाँ एक विशेष श्रेणी के देवदूतों का दल रख छोड़ा है। वे थोड़े दिनों के लिए शिशु के रूप में जन्म लेकर मृत्यु-लोक में आते हैं, और चारों ओर के विपथगामी हृदयों को अपने स्नेह-बंधन में इस तरह जकड़ लेते हैं

कि जब वे अपने स्वदेश-स्वर्ग-को जाने लगे तो वे विपथगामी हृदय भी उन्हीं के साथ स्वर्ग को जा सकें। जिस शिशु के नेत्रों में यह आध्यात्मिक ज्योति दीख पड़े; या उसकी बातों में साधारण शिशुओं से कुछ विशेषता, मधुरता और विज्ञता का आभास मिले, तब जान लो कि वह इस जगत् में घर बनाने नहीं आया है, उसके बहुत दिनों तक पृथ्वी पर रहने की आशा में मत रहो; क्योंकि उसके ललाट में बिधना के अक्षर हैं, उसके नेत्रों में अमृत की किरणें हैं। इसी से तो स्नेह-धन इवा, घर की एकमात्र उज्ज्वल तारा, तू भी चली जा रही है; पर जो तुझे प्राणों से अधिक प्यार करते हैं, वे इस बात को नहीं जानते।

मिस अफिलिया के अकस्मात् झील के किनारे आकर इवा को पुकारने पर टॉम और इवा की बातें बंद हो गईं। मिस अफिलिया ने कहा - "इवा बेटी, बड़ी ओस गिर रही है। यह बाहर बैठने का समय नहीं है।"

इवा और टॉम दोनों अंदर चले गए।

बच्चों के पालन-पोषण के काम में मिस अफिलिया की निगाह बड़ी तेज थी। बच्चों के रोग बड़े सहज में जान लेती थी। इवा की सूखी खाँसी देखकर उसके मन में बड़ा खटका लग गया था। ऐसे रोग से उसने कितने ही बच्चों का जीवन नष्ट होते देखा था। वह अपनी आशंका कभी-कभी सेंटक्लेयर पर भी प्रकट करती थी, लेकिन वह उसकी बात पर ध्यान नहीं देता था, उल्टा कभी-कभी असंतुष्ट होकर कहता - "बहन, तुम्हारी ये आशंकाएँ मुझे नहीं भातीं। यों ही जरा-सी बात देखकर तुम लोग जमीन-आसमान एक करने लगती हो। इवा बढ़ रही है, इसी से वह दूबली जान पड़ती है। बच्चे जब बढ़ते हैं, तब हमेशा कमजोर हो जाते हैं।"

पर अफिलिया ने फिर कहा - "अगस्टिन, उसकी खाँसी बहुत बुरी है। इस रोग से जेन, ऐलेन, और सेंडर तीन को तो मैंने मरते देखा है।"

सेंटक्लेयर ने खीझकर कहा - "तुम अपनी ये फालतू बातें रहने दो। उसे रात को बाहर न निकलने दिया करो, बहुत ज्यादा खेलने भी मत दिया करो। इसी से वह अच्छी हो जाएगी।"

कहने को उसने अफिलिया को इस प्रकार कहकर टाल दिया, पर उसके मन में खटका लग गया और बेचैनी छा गई। उसने मन-ही-मन, 'रोग न सही, पर इसका यह धर्म-संबंधी गंभीर विषयों की बातें करना बड़े आश्चर्य में डालता है और मन में शंका उत्पन्न कर देता है।' वह सोचता - यह कैसे आश्चर्य की बात है कि इतनी बड़ी बालिका को जहाँ अपने खेल-कूद में ही मस्त रहना चाहिए, वहाँ अभी से दूसरे का दुःख देखकर उसका हृदय विदीर्ण होने लगता है। संसार में व्याप्त अत्याचार और उत्पीड़न की बात सोचकर जब इवा बड़ी दुःखी होती और रोने लगती, उस समय सेंटक्लेयर उसे जोर से अपनी छाती से चिपटा लेता।

इवा ने एक दिन एकाएक अपनी माँ से कहा - "हम लोग अपने गुलामों को पढ़ना क्यों

नहीं सिखाते?"

मेरी बोली - "यह क्या सवाल है। कोई भी उन्हें पढ़ना नहीं सिखाता।"

"क्यों नहीं सिखाते?"

"इसलिए कि उससे उनका कोई मतलब सिद्ध नहीं होगा। वे संसार में केवल काम करने के लिए बनाए गए हैं। पढ़ाई से उन्हें किसी तरह की मदद न मिलेगी।"

इवा ने कहा - "माँ, मेरी समझ में हर एक इंसान को बाइबिल पढ़ना आना चाहिए। वे पढ़ लेंगे तो बाइबिल तथा और? आप ही पढ़ते रहेंगे।"

"इवा, तू बड़ी अनोखी लड़की है।"

"बुआ ने टप्सी को बाइबिल सिखाया है।"

मेरी ने कहा - "हाँ, पर तू देखती है कि टप्सी क्या बाइबिल पढ़कर सुधर गई?" उस-जैसी तो पाजी लड़की ही मैंने नहीं देखी।

इवा बोली - "मामी को बाइबिल से बड़ा प्रेम है, वह चाहती है कि उसे पढ़ ले...। और जब मैं उसे पढ़कर नहीं सुना सकूँगी तब वह क्या करेगी।"

इवा जब ये बातें कर रही थी, उसी समय उसकी माँ एक संदूक की चीजें ठीक कर रही थी। इवा की बातें समाप्त होने पर उसकी माँ ने कहा - "इवा, ये बातें जाने दे। तू जन्म भर इन नौकरों के सामने बाइबिल ही नहीं पढ़ती रहेगी। बड़ी होने पर सज-धजकर समाज में आना-जाना पड़ेगा। तब फिर तूझे बाइबिल पढ़ने का समय न रहेगा। यह देख, यह हीरे का हार मैं तूझे बाहर आने-जाने लगने पर दूँगी। मैं पहले-पहल जिस दिन यह हार पहनकर दावत में गई थी, उस दिन, मैं तुझसे कहती हूँ इवा, कितनों की आँखें मैंने चकाचौंध कर दी थीं।"

इवा ने उस हार को हाथ में लेकर अपनी माँ से पूछा - "माँ, क्या यह हार बहुत कीमती है?"

मेरी बोली - "निश्चय ही बड़ा कीमती है। पिता ने यह फ्रांस से मँगवाया था। एक साधारण गृहस्थ की सारी संपत्ति भी इसके सामने कुछ नहीं।"

इवा ने कहा - "मैं इसे इस शर्त पर लेना चाहती हूँ कि जो मेरे जी में आएगा, इसका करूँगी।"

"तू इसका क्या करना चाहती है?"

"मैं इसे बेचूँगी और स्वतंत्र देश में जमीन खरीदूँगी। फिर वहाँ अपने सब गुलामों को लेकर मास्टर रखकर उनको पढ़ना-लिखना सिखाऊँगी।"

इवा की बात से उसकी माँ को इतनी हँसी आई कि आगे की बातें बीच में ही रह गईं।

"बोर्डिंग स्थापित करेगी। उन्हें तू पिआनो बजाना और मखमल पर बेल-बूटे काढ़ना नहीं सिखलाएगी?"

इवा ने बड़ी दृढ़ता से कहा- "मैं उन्हें बाइबिल पढ़ना, पत्र लिखना और पत्र पढ़ना सिखाऊँगी। माँ, मैं जानती हूँ कि वे अपने पत्र अपने हाथ से नहीं लिख सकते, और अपने पत्र अपने आप पढ़ भी नहीं सकते, इससे उनके मन को बड़ा कष्ट होता है। टॉम को, मामी को, बहुतों को इससे बड़ा दुःख होता है।"

मेरी ने कहा - "चुप रह! तू अजीब ही लड़की है। इन बातों के विषय में कुछ जानती-बूझती नहीं है। तेरी बातों से तो मेरा सिर दुखने लगता है।"

इवा चुप हो गई। मेरी की आदत थी कि जब कोई उसकी मर्जी के खिलाफ बातें करने लगता, तब उसका सिर दुखने लगता था।

## 26. हेनरिक का संकल्प

जब अगस्टिन अपने झीलवाले मकान में था, उस समय सेंटक्लेयर का भाई अल्फ्रेड अपने बारह वर्ष की उम्र के बड़े बेटे हेनरिक को साथ लेकर वहाँ आया और दो-तीन दिन रहा। यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि इन दोनों भाइयों में परस्पर किसी तरह की समानता - न रंग-रूप में, न विचार ही में होने पर भी आपस में बड़ा स्नेह था। प्रकट में ये दोनों सदा एक-दूसरे का मजाक उड़ाया करते थे, पर इनमें आंतरिक प्रेम कम न होता था। दोनों हाथ मिलाकर बाग में टहलते और खूब बातें किया करते थे।

अल्फ्रेड का बड़ा पुत्र हेनरिक बड़ा सभ्य और तेजस्वी बालक जान पड़ता था। कोमल-हृदया इवान्जेलिन को देखते ही उस पर उसका बड़ा स्नेह और प्रेम हो गया।

इवा के पास एक सफेद रंग का बड़ा अच्छा टटू था। संध्या के समय इवा को घुमाने के लिए टॉम ने वह टटू लाकर बरामदे के पास खड़ा किया, इधर डड़ो नामक तेरह वर्ष का बालक

हेनरिक के लिए काला अरबी टट्टू लेकर आया।

हेनरिक ने घोड़ा देखकर डडो पर लाल-लाल आँखें निकालकर डाँटते हुए कहा - "क्यों बे यह क्या? आज सवेरे तूने मेरे घोड़े को मला नहीं?"

डडो ने बड़े विनीत भाव से उत्तर दिया - "सरकार, वह आप ही लोटकर धूल से भर गया।"

हेनरिक ने चाबुक उठाकर बड़े क्रोध से कहा - "चुप रह! जबान चलाता है। चाबुक से चमड़ी उधेड़ दूँगा।" इतना कहकर उसने तुरंत डडो के मुँह पर पाँच-सात चाबुक जड़ दिए।

वह "सरकार-सरकार" कहकर चीखने लगा। पर हेनरिक ने एक न सुनी और बराबर कोड़े लगाता गया। फिर एक हाथ पकड़कर ऐसी ठोकर मारी कि वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। तब उसे छोड़कर बोला - "मेरे सामने मुँह खोलने का मजा पा गया। घोड़ा ले जा, उसे ठीक से साफ करके ला। मैं तेरी अच्छी तरह खबर लूँगा।"

टॉम ने कहा - "हज़ूर, वह आपसे कहना चाहता था कि सवेरे मैंने घोड़े को मला था, इस वक्त रास्ते में आते समय वह जोश में था, इससे जमीन पर लोट गया। मैंने सवेरे उसे घोड़ा साफ करते देखा था।"

हेनरिक ने ऊँची आवाज में कहा - "तुम चुप रहो। तुमसे कौन पूछता है। फिजूल अपनी बक-बक लगाए हो।"

इतना कहकर हेनरिक इवा के पास जाकर बोला - "प्यारी बहन, मुझे बड़ा खेद है कि उस पाजी के कारण तुम्हें भी इंतजार करना पड़ा। आओ, जब तक वह आए तब तक यहाँ बैठ जाँ। पर यह क्या बहन! तुम इतनी उदास क्यों हो?"

इवा ने कहा - "तुमने बेचारे डडो के साथ बड़ा ज़ुल्म किया। तुम बड़े ही बेरहम और पापी हो।"

हेनरिक ने बड़े आश्चर्य से कहा - "बेरहम! पापी! यह तुम क्या कह रही हो, प्यारी इवा?"

इवा बोली - "जब तुम ऐसी बेरहमी का काम करते हो, तो मैं नहीं चाहती कि तुम मुझे 'प्यारी इवा' कहकर पुकारो।"

हेनरिक ने कहा - "प्यारी बहन, तुम डडो को नहीं जानती। बिना मार खाए वह सीधा नहीं रह सकता। वह बड़ा झूठा और बहानेबाज है। इन लोगों को दुरुस्त करने का यही ढंग है। इनको मुँह नहीं खोलने देना चाहिए। बाबा इसी ढंग से इन पर शासन करते हैं।"

"पर टॉम काका ने तो कहा कि उसका कसूर नहीं था। आकस्मिक बात थी। टॉम काका

कभी झूठ नहीं बोलता।"

हेनरिक बोला - "वह बूढ़ा तो हब्सियों में एक साधारण आदमी है। डडो तो बेहिसाब झूठ बोलता है।"

"मार के डर से वह झूठ बोलना सीखता है।"

"इवा, तुम डडो पर बड़ी कृपा दिखाती हो, इससे मेरा मन बड़ा दुःखी होता है।"

"पर तुम उसे बिना कसूर मारते हो!"

"अच्छा, तुम्हें दुःख होता है तो मैं आगे से उसे तुम्हारे सामने नहीं मारूँगा। मुझे नहीं मालूम था कि काले गुलाम को मार खाते देखकर तुम्हें कष्ट होता है।"

इवा को संतोष नहीं हुआ, पर उसने देखा कि अपने विचार को हेनरिक को समझाने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। कोई फल नहीं होगा।

डडो घोड़ा लेकर शीघ्र ही आ पहुँचा।

हेनरिक ने बड़ी कृपा की दृष्टि से कहा - "डडो, इस बार तू बड़ी जल्दी घोड़ा ले आया। इधर आ, मिस इवा का घोड़ा पकड़ ले। मैं उसे सवारी करा दूँ।"

इवा के घोड़े पर चढ़ते समय देखा कि बालक शारीरिक पीड़ा से रो रहा है। उसने डडो को घोड़ा पकड़ने के लिए धन्यवाद दिया और कहा - "तुम बड़े अच्छे लड़के हो।"

मार का यह दृश्य बाग में घूमते हुए सेंटक्लेयर और अल्फ्रेड ने भी देखा। यह देखकर अगस्टिन का चेहरा लाल हो गया। उसने अल्फ्रेड से बड़े व्यंग्य से कहा - "अल्फ्रेड, मैं समझता हूँ कि यही वह शिक्षा है, जिसे हम लोग साधारण तंत्र-प्रणाली की शिक्षा कहा करते हैं।"

अल्फ्रेड ने कहा - "जब हेनरिक को जोश आ जाता है, तब वह शैतान हो जाता है।"

अगस्टिन बोला - "मेरे खयाल से तुम समझ रहे हो कि वह यह बहुत अच्छा काम सीख रहा है।"

अल्फ्रेड ने कहा - "मेरे किए से यह सब दूर नहीं हो सकता। मैं या मेरी स्त्री, दोनों इस विषय में चुप रहते हैं। पर यह डडो छोकरा भी बड़ा बदमाश है। इसे चाहे जितना मारो, सीधा नहीं होता।"

अगस्टिन बोला - "और मैं समझता हूँ कि हेनरिक को साधारण तंत्र-प्रणाली की शिक्षा देने

का यही ढंग है, क्योंकि उस प्रणाली का पहला सूत्र है - सब मनुष्य जन्म से स्वतंत्र और समान हैं।"

अल्फ्रेड ने कहा - "ये फिजूल की बातें हैं। फ्रांस में भी एक बार ऐसा ही आंदोलन उठा था। समान अधिकार की बात केवल शिक्षित और उच्च श्रेणी के लोगों में ही चल सकती है, इन नीचों में नहीं।"

अगस्टिन बोला - "पर आँखें खुलने पर वे सब बदला चुका लेते हैं। फ्रांसीसी क्रांति का मूल कारण जानते हो? हाँ, इन निम्न श्रेणी के लोगों की कभी आँखें न खुलने पाएँ, तो बात दूसरी है।"

अल्फ्रेड ने बड़े जोर से पृथ्वी पर पैर पटककर, मानो वह निम्न-श्रेणी के लोगों के सिर पर ही लात मार रहा हो, कहा - "जरूर इन लोगों को गिराकर रखना होगा।"

अगस्टिन बोला - "जब ये अत्याचार-पीड़ित निम्न श्रेणी के लोग उठ खड़े होंगे, तब देश को मिट्टी में मिला देंगे। रईसों और बड़े आदमियों का प्रभुत्व जड़ से उखाड़ देंगे। तूम्हें क्या सेंट डोमिंगो की हकीकत मालूम नहीं है?"

अल्फ्रेड ने कहा - "ओफ, कहाँ की बात करते हो! हम लोग यहाँ सब ठीक कर लेंगे। इन 'जन-साधारण की शिक्षा', 'मजदूरों की शिक्षा' के नारों पर ध्यान न देने से यहाँ विप्लव की कोई संभावना न रहेगी। इन सबको शिक्षा न देने से फिर कोई अड़चन नहीं होने की।"

अगस्टिन बोला - "अब वे दिन गए। अब शिक्षा का प्रवाह किसी के रोके भी नहीं रुक सकता। तुम लोगों को उचित है कि उन्हें शिक्षा देकर उनका नैतिक जीवन ऊँचा कर दो।"

अल्फ्रेड ने कहा - "रहने दो, अपना यह ऊँचा नैतिक जीवन! ये लोग सदा इसी हालत में रहेंगे।"

अगस्टिन बोला - "यह ठीक है, पर इन्हें अच्छी शिक्षा नहीं मिलेगी तो ये कभी-न-कभी उत्तेजित होकर खून की नदी बहा देंगे। क्या तुम नहीं जानते कि सोलहवें लुई की हत्या के बाद फ्रांस की क्या हालत हुई? अल्फ्रेड, मैं कहे देता हूँ कि वह समय अब दूर नहीं, जब ये निम्न श्रेणी के लोग खड़े होकर संसार को अराजकता से भर देंगे। रईसों और बड़े लोगों को अपने रक्त द्वारा जगत् में हो रहे अत्याचारों और उत्पीड़न का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।"

अल्फ्रेड ने हँसते हुए कहा - "अगस्टिन, तुम तो अच्छे-खासे वक्ता हो गए। मैं कहता हूँ, तुम जगह-जगह घूमकर इस विषय पर व्याख्यान देना शुरू कर दो। इससे पेंगबर की तरह लोग तूम्हें पूजेंगे। लेकिन लगता है कि तुम्हारे इस कल्पित स्वर्ग-राज्य के आने के पहले ही मैं मर



जाऊंगा। मुझे यह सब देखना नसीब न होगा।"

अगस्टिन बोला - "फ्रांस के रईस लोग निम्न-श्रेणीवालों से बड़ी घृणा करते थे। पर अंत में उन्होंने निम्न श्रेणीवालों ने उन लोगों पर आधिपत्य जमाया था। जरा खयाल करो। अभी उस दिन हाइटी में क्या हो गया था!"

अल्फ्रेड ने कहा - "हाइटीवालों का क्या जिक्र कर रहे हो! वे भी क्या अंग्रेज हैं? वे अंग्रेज होते तो भला उनकी ऐसी दुर्दशा हो सकती थी? संसार में सब तरफ अंग्रेजों का दबदबा रहेगा। अंग्रेज सब लोगों पर हुकूमत करेंगे। भला हम लोगों (अंग्रेजों) के साथ किसी जाति की तुलना हो सकती है?"

अगस्टिन ने तेज होकर कहा - "बहुत 'अंग्रेज-अंग्रेज' करके मत कूदो। एक बार इन काले हथियारों की आँख खुलने दो। देखना, तुम लोगों को अपने अत्याचारों का प्रायश्चित्त करना पड़ता है या नहीं। तब फिर लाचार होकर तुम लोगों को यहाँ से दब दबाकर भागना पड़ेगा। यहाँ छिपने को तुम्हें जगह न मिलेगी।"

अल्फ्रेड बोला - "तुम्हारी ये सब पागलपन की बातें हैं।"

अगस्टिन ने कहा - "पागलपन की बातें! क्या बाइबिल की बात का तुम्हें स्मरण नहीं है? लिखा है, 'मनुष्य स्वप्न में भी विपदा का खयाल न करता था, पर अकस्मात् एक दिन बाढ़ आई और इन लोगों को बहाकर मृत्यु के मुँह में डाल दिया।' मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि बाइबिल की इस बात को सदा याद रखना!"

अल्फ्रेड ने हँसते हुए कहा - "अगस्टिन, तुम पैगंबरों का जामा पहनकर जगह-जगह व्याख्यान देते फिरो तो अच्छा होगा। हम लोगों की फिक्र मत करो। हममें बहुत सामर्थ्य है। हम अपनी रक्षा आप कर लेंगे। इन निम्न श्रेणी के लोगों को सदा इस गिरी हुई हालत में ही रहना पड़ेगा। ये लोग सदा हमारे पैरों-तले ही रहेंगे। हममें इन पर शासन करने के लिए पूरी शक्ति है।"

अगस्टिन बोला - "क्यों नहीं, तुम्हारा लड़का इसी शक्ति की शिक्षा पा रहा है। पर तुम लोगों की शक्ति तो क्रोध के साथ काफूर होकर उड़ जाती है। तुम नहीं जानते कि ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है। जो अपने को नहीं सम्हाल सकता, वह दूसरों पर शासन क्या करेगा?"

अल्फ्रेड ने कहा - "मैं मानता हूँ कि शिक्षा-प्रणाली कुछ बुरी है। लड़कपन से ही हमारी संतानें इन काले दासों पर शासन करना सीख जाती हैं। दूसरों को भी कोई अधिकार है, यह समझने का मौका ही नहीं मिलता। पर किसी-किसी विषय में हमारे यहाँ की शिक्षा बहुत अच्छी भी होती है। बच्चे बचपन से ही खूब साहसी और तेजस्वी होते हैं। क्रीत-दासों के बहुत से ऐब

उनको छू नहीं पाते। हृदय में भरा हुआ प्रभुत्व का भाव उन्हें अनेक दोषों से दूर रखता है।"

अगस्टिन ने व्यंगोक्ति के भाव से पूछा - "इस प्रकार प्रभुत्व करने की इच्छा क्या ईसाई धर्म के अनुकूल है?"

अल्फ्रेड बोला - "अनुकूल है या प्रतिकूल, इस बारे में मैं बहस नहीं करना चाहता। पर इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे देश की सामाजिक अवस्था लोगों को साहसी और तेजस्वी बना देती है।"

अगस्टिन ने कहा - "यह हो सकता है।"

अल्फ्रेड बोला - "अगस्टिन, ये सब फिजूल की बातें हैं, इनसे नतीजा कुछ नहीं निकलता। कम-से-कम हम लोग पाँच सौ बार तो इस पुराने विषय पर तर्क-वितर्क कर चुके होंगे। चलो, बैठकर शतरंज खेलें।"

दोनों भाई बरामदे में आकर बैठ गए और शतरंज खेलना आरंभ कर दिया। खेलते समय अल्फ्रेड ने कहा - "मैं तुमसे कहता हूँ अगस्टिन, यदि तुम्हारे जैसे विचार मेरे होते तो मैं अपने विचारों के प्रचार के लिए कुछ प्रयत्न अवश्य करता।"

अगस्टिन ने कहा - "हाँ, मैं कह सकता हूँ कि तुम करते। तुम काम-काजी आदमी हो, लेकिन मैं?"

अल्फ्रेड चुटकी लेकर बोला - "अपने दास-दासियों ही की दशा क्यों नहीं सुधारते?"

अगस्टिन ने कहा - "क्या यह भी संभव है? एक बड़ा भारी पहाड़ उनके सिर पर रख दो तो भी उनका सीधे खड़े रहना संभव है, पर हम लोगों के समाज में फैली हुई बुरी शिक्षा, असदाचरण और अत्याचारों के नीचे रहकर उनका सुधारना कभी संभव नहीं। समाज में फैले हुए पापों और बुराइयों से नैतिक वायु दूषित हो जाती है। इसलिए जब तक नैतिक वायु शुद्ध न हो, तब तक किसी एक आदमी के किए-धरे लोगों का सुधार नहीं हो सकता। कितनी ही विजित जातियों को उच्च शिक्षा मिलती है, पर उस शिक्षा से क्या पराजित जाति कभी उन्नत हो सकती है?"

अल्फ्रेड बोला - "तुम देश-सुधार का व्रत ले लो।"

इसके बाद दोनों खेल में तल्लीन हो गए। कुछ देर बाद हेनरिक और इवा घोड़ों पर लौटे। घोड़ों के तेज आने के कारण इवा कुछ थक-सी गई थी, पर उसके क्लांत मुख-कमल पर अनुपम सौंदर्य विकसित हो रहा था। ऋतु बदलने पर जिस प्रकार प्रकृति नए रूप में सज-धजकर मनुष्यों के हृदय में नए-नए भाव उत्पन्न करती है, उसी राग-द्वेष और हिंसा से रहित तथा धार्मिक पवित्रता से पूर्ण निर्मल चरित्रवाली रमणियों के मुख-कमल से एक-एक अवस्था में एक-एक प्रकार

के अलौकिक सौंदर्य का भाव विकसित होता है। इवा के इस थके मुखमंडल से शांति और प्रेम का भाव टपक रहा था।

अल्फ्रेड ने उसे इस भाव में देखते ही विमोहित होकर कहा - "क्या अपूर्व रूप-माधुरी है! अगस्टिन, तुम्हारी इवा के सौंदर्य पर संसार रीझ उठेगा।"

लेकिन अगस्टिन ने निराश हृदय से कहा - "हाँ, वह सर्वगुण-संपन्न है, पर कौन जाने, ईश्वर के मन में क्या है? यह कहते हुए उसने दो-चार कदम आगे बढ़कर इवा को घोड़े से गोदी में उतारकर पूछा - "बेटी इवा, तुम बहुत थक तो नहीं गई?"

बालिका ने कहा - "नहीं बाबा!" पर उसके जोर से साँस लेने से उसके पिता को खटका हुआ। उसने कहा - "बेटी, तुम घोड़ा इतना तेज क्यों चलाती हो? तुम जानती हो कि यह तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।"

यह कहकर उसने उसे एक कोच पर लिटा दिया।

सेंटक्लेयर ने कहा - "हेनरिक, तुम इवा को देखना। देखो, जब इवा तुम्हारे साथ हुआ करे, तब घोड़ा इतना तेज मत दौड़ाया करो।"

हेनरिक ने इवा के पास बैठकर अपने हाथ में उसका हाथ लेते हुए कहा - "मैं फिर कभी ऐसी भूल नहीं करूँगा।"

इवा शीघ्र ही स्वस्थ हो गई। उसके पिता और चाचा इन दोनों बच्चों को छोड़कर खेल में लग गए। हेनरिक ने कहा - "इवा, मुझे बड़ा खेद है कि बाबा बस अब यहाँ दो ही दिन ठहरेंगे, फिर हम लोग चले जाएँगे। तुमसे न मालूम फिर कब भेंट होगी। यदि मैं तुम्हारे पास रहता तो भला बनने का प्रयास करता और डडो को कभी न मारता। मैं डडो से बुरा बर्ताव नहीं करता। उसे कभी-कभी पैसे भी दे देता हूँ। तुम देखती हो कि वह अच्छे कपड़े पहनता है। मैं समझता हूँ, कुल मिलाकर डडो बड़े मजे में है।"

इवा ने कहा - "तुम्हें केवल खाना-कपड़ा और पैसे दिए जाएँ, पर संसार में कोई तुम्हें स्नेह करनेवाला न हो, तो क्या तुम अपने को सुखी समझोगे?"

"नहीं।"

"तो तुम देखते हो कि तुम डडो को उसके सारे आत्मीयों से अलग करके ले आए हो और अब उसे कोई भी प्यार करनेवाला नहीं है। ऐसी दशा में पड़कर तो कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता।"

हेनरिक ने कहा - "इसमें हम क्या कर सकते हैं? मैं उसकी माँ को तो ला नहीं सकता, और न मैं स्वयं ही उसे प्यार कर सकता हूँ।"

इवा बोली - "तुम प्यार क्यों नहीं कर सकते?"

खिलखिलाकर हँसते हुए हेनरिक ने कहा - "डडो को प्यार! उस पर मैं थोड़ी दया करूँ, यही काफी है। तुम क्या अपने नौकरों को प्यार करती हो?"

इवा बोली - "जी हाँ, मैं करती हूँ।"

"कैसी अनोखी बात है!"

"क्या बाइबिल हम लोगों को यह नहीं बताती कि हमें हर एक आदमी को प्यार करना चाहिए?"

हेनरिक ने खिन्नभाव से कहा - "बाइबिल की बात क्या कहती हो! बाइबिल में तो ऐसी-ऐसी कितनी ही बातें लिखी पड़ी हैं; लेकिन कोई उन्हें करने का विचार भी करता है? तुम जानती हो इवा, कोई आदमी बाइबिल का कहा नहीं करता।"

इवा कुछ देर तक बोली नहीं। उसकी आँखें स्थिर और चिंतायुक्त हो गईं। फिर वह बोली - "प्यारे भाई, मेरी एक बात मानो। जैसे भी हो, तुम गरीब डडो को प्यार करना, उस पर दया करना।"

हेनरिक ने कहा - "प्यारी बहन, तुम्हारे अनुरोध से मैं किसी भी चीज को प्यार कर सकता हूँ। तुम सरीखी प्रेममय, शांत और मधुर बालिका मैंने नहीं देखी। मैं अब कभी डडो को नहीं मारूँगा।"

इवा को उसकी इस बात से शांति मिली। उसने कहा - "मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम ऐसा अनुभव करते हो। प्यारे हेनरिक, मैं आशा करती हूँ कि तुम्हें अपनी बात याद रहेगी।"

तभी भोजन की घंटी हुई और सब लोग भोजन के लिए उठ गए।

## 27. मृत्यु के पूर्व-लक्षण

दो दिन के बाद अल्फ्रेड पुत्र सहित सेंटक्लेयर से बिदा होकर अपने घर गया। जब तक अल्फ्रेड वहाँ था, तब तक सब लोग हँसी-खुशी में भूले हुए थे। इस बीच में इवान्जेलेन के स्वास्थ्य की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। एक तो वह पहले ही से अस्वस्थ थी, इधर हेनरिक के साथ खेल-कूद में उस पर बहुत अधिक श्रम पड़ने के कारण वह और भी थक गई। उसका शरीर इतना निर्बल हो गया कि उसमें चलने-फिरने की शक्ति न रही। अब तक तो सेंटक्लेयर ने मिस अफिलिया की बातों पर ध्यान न दिया था, पर अब उसने डाक्टर को बुलाकर इवा को दिखलाया और उसके हृदय में भी भाँति-भाँति की आशंकाएँ उठने लगीं।

सेंटक्लेयर की स्त्री, मेरी, कभी भूल से भी अपनी लड़की के स्वास्थ्य के संबंध में कुछ न पूछती थी। इधर उसने मुहल्ले की स्त्रियों से दो-तीन नए रोगों की चर्चा सुनी थी। बस, अब वह उन्हीं नए रोगों के सब लक्षण अपने शरीर में देखने लगी। वह इन अपने ही कल्पित रोगों में इतनी अधिक उलझी रहती थी कि उसे किसी और के अच्छे या बीमार होने की खोज करने की फ़र्सत ही नहीं थी। उसे कन्या की खबर लेने का भी तनिक अवकाश न था। वह तो अपने ही रोगों की चिंता में लगी रहती थी कि कैसे उनसे पिंड छूटेगा। साथ ही एक और बात थी, वह समझती थी कि संसार में किसी भी व्यक्ति को उसके जितनी पीड़ा नहीं हो सकती और रोग जितने होते हैं, उसी के होते हैं दूसरे किसी के रोगों को तो वह एक काम न करने का बहाना और आलस्य भर समझती थी। उसका ख्याल था कि असल रोग उसी को होते हैं।

मिस अफिलिया ने इवा के रोगों के संबंध में कई बार मेरी की आँखें खोलने की चेष्टा की, पर सब व्यर्थ गई। वह कहती थी - "मेरी समझ में तो उसे कुछ नहीं हुआ है। वह मजे से खेलती-कूदती है।"

"तुम उसकी खाँसी नहीं देखती हो?"

"खाँसी के संबंध में आपके कहने की आवश्यकता नहीं है। मैं खुद उस विषय में बहुत जानती हूँ। मैं जब इवा के बराबर थी, तब मेरे घरवाले समझते थे कि मुझे तपेदिक हो गया है। रात-रात भर मामी मेरे पास बैठी रहती थी। इवा की खाँसी मेरी खाँसी के मुकाबले कुछ भी नहीं है।"

अफिलिया कहती - "लेकिन वह दिन-प्रति-दिन कमजोर होती जा रही है।"

"मैं वर्षों ऐसी कमजोर थी। वह कोई खास बात नहीं है।"

"रात को रोज उसका शरीर गरम हो जाता है उसे रात को बराबर बुखार चढ़ता है।"

"वैसा तो मुझे दस साल तक था। बुखार के मारे रात को इतना पसीना आता था कि सारे कपड़े तरबतर हो जाते थे। सवेरे घंटों बैठकर मामी उन्हें सुखाती थी। इवा को कोई वैसा बुखार नहीं है।"

अफिलिया ने इसके बाद मेरी से इवा के संबंध में कुछ भी कहना बंद कर दिया, पर जब इवा इतनी कमजोर हो गई कि चारपाई से भी नहीं उठ सकती और उसके लिए डॉक्टर बुलाया गया, तब एकाएक मेरी का अपनी बच्ची के लिए प्रेम उमड़ पड़ा।

मेरी कहने लगी - "मैं तो पहले ही जानती थी कि सेंटक्लेयर की उदासीनता का यह फल मुझे भोगना पड़ेगा। मुझे संतान-शोक देखना पड़ेगा। एक तो मैं अपने ही रोगों के मारे मर रही हूँ, उस पर यह संतान-शोक! आदमी के इससे ज्यादा और क्या फूटे भाग्य होंगे! न सात न पाँच, मेरे यह एक बच्ची है और उसका यह हाल हुआ।"

ये बातें कहकर वह दास-दासियों पर अपने दिल का गुबार निकालने लगी। मामी ने इवा की देखभाल में लापरवाही की है, यह कहकर उसे खूब कोसा। फिर अभिमान से मुँह फुलाकर मेरी सेंटक्लेयर के सामने रोने लगी।

सेंटक्लेयर ने कहा - "प्यारी मेरी, ऐसी बातें मुँह से न निकालो। इवा को अवश्य आराम हो जाएगा। उसे ऐसा क्या हुआ है?"

मेरी बोली - "सेंटक्लेयर, तुम्हें माँ की ममता का क्या पता? तुम मेरा हृदय कभी नहीं समझ सके। अब भी तुम नहीं जान सकते कि अपनी संतान के लिए मेरा जी कितना छटपटा रहा है।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "पर ऐसी बातें मत करो, इस तरह छटपटानेवाली कोई बात नहीं है।"

मेरी बोली - "यह दशा देख-सुनकर मेरा जी तो तुम्हारी तरह नहीं मान सकता। सब बातों में तुम जैसे पत्थर दिल के हो, मैं तो वैसी नहीं हूँ। संतान के नाम से यही एक लड़की है, इसकी बीमारी देखकर क्या मैं बरदाश्त कर सकती हूँ?"

"घबराओ मत! इवा का शरीर बड़ा कोमल है, इसी से अधिक गर्मी और हेनरिक के साथ खेल-कूद में अधिक श्रम पड़ने के कारण उसकी तबीयत खराब हो गई है। डाक्टर साहब कहते हैं कि वह शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी।"

मेरी ने कहा - "मेरा यह हृदय इस बात को जानकर भी नहीं समझना चाहता। मैं भी चाहती हूँ कि तुम्हारी तरह बिना घबराए सुख से रह सकती तो अच्छा था, पर क्या करूँ, यह जी तो नहीं मानता।"

दो-तीन हफ्ते तक इवा को कुछ आराम लगा। वह उठकर फिर चलने-फिरने लगी। कभी-

कभी पहले की भाँति बाग में जाकर टॉम के साथ बैठती थी। उसके पिता को यह देखकर बड़ा आनंद हुआ। पर मिस अफिलिया और चिकित्सक की दृष्टि में बीमारी कुछ भी न घटी थी। इवा स्वयं भी मन-ही-मन समझती कि इस पाप और अत्याचारपूर्ण संसार को उसे शीघ्र ही छोड़ना पड़ेगा।

मनुष्य के हृदय में मृत्यु का संवाद कौन पहुँचाता है? मरणासन्न के कान में कौन कह जाता है कि अब इस संसार में तुम्हारी घड़ियाँ पूरी हो चुकी हैं? इवा को किसने कहा कि अब शीघ्र ही उसे यह संसार छोड़ना पड़ेगा? यदि कहिए कि मनुष्य के अंदर बैठा हुआ अनंत सुख का अभिलाषी, ईश्वर-सामीप्य का प्रयासी, अमृत का अधिकारी, अविनाशी आत्मा पहले ही से मृत्यु का आगमन जान जाता है, तो फिर सब लोग क्यों नहीं जान लेते? कोई जानता है, बहुत-से नहीं जानते, इसका क्या कारण है? इसके उत्तर में इतना ही कहा जा सकता है कि विषयासक्त सांसारिक जीवों के कान विषय-कोलाहल के बहरे हुए रहते हैं। उनकी आँखें मोहंधकार से ढकी रहती हैं। इस पाप से भरे संसार में रहने की उत्कट इच्छा मृत्यु-चिंता को उनके हृदय में प्रवेश नहीं करने देती; इसी से विषयासक्त जीव पहले से मृत्यु का आगमन नहीं जान सकते। मृत्यु के आगमन की ध्वनि उन्हें कभी नहीं सुनाई देती। किंतु पर-दुःख-कातर, पवित्र-हृदया इवान्जेलिन के कान सांसारिक कोलाहल से बहरे नहीं हुए थे, अपने सुख की इच्छा कभी उसके हृदय में स्थान नहीं पाती थी। यह संसार उसे दुःखमय जान पड़ता था, इसी से उसे परम पिता जगदीश्वर का, उसके दुःख-निवारण करने के लिए अपने धाम को बुलाने का संदेशा साफ सुनाई पड़ा। उसे इसका तनिक भी खेद न हुआ कि यह संसार छोड़ना पड़ेगा। उसके हृदय को कुछ आघात पहुँचानेवाली बात थी तो इतनी ही कि उसे अपने स्नेहमय पिता को छोड़ना होगा, और उसकी मृत्यु से उसके पिता शोक में पागल हो जाएँगे।

एक दिन टॉम को बाइबिल सुनाते हुए इवा ने कहा - "टॉम काका, मैं जान गई कि ईसा ने क्यों हम लोगों के लिए प्राण दिए हैं।"

टॉम ने पूछा - "कैसे?"

"ऐसे कि मेरे हृदय में भी उस भाव का अनुभव होता है।"

"वह अनुभव क्या और कैसा है, मिस इवा? यह बात ठीक से मेरी समझ में नहीं आई।"

"मैं तुम्हें समझाकर नहीं बता सकती, लेकिन मैंने जब उस जहाज में तुम्हें तथा जंजीर से जकड़े हुए दूसरे दास-दासियों को, जिनमें कोई अपने बच्चों से, कोई अपने पतियों से, और कोई अपनी माताओं से बिछड़ने के कारण विलाप कर रहे थे, देखा और जब मैंने बेचारी प्रू की बात सुनी... ओफ, वह कैसा भयंकर कांड था, तब और अन्य बहुत-से अवसरों पर मैंने इस बात का अनुभव किया कि यदि मेरे मरने से ये सब दुःख-दर्द से छूट सकें तो मैं आनंद से मर जाऊँ।"

इवा ने अपना दुबला-पतला हाथ टॉम पर रखते हुए भावावेश में कहा - "टॉम काका, यदि मेरे मरने से इनका दुःख दूर हो जाए, तो मैं खुशी से मर जाऊँगी।"

टॉम विस्मित होकर उसका मुख निहारने लगा। पर अपने पिता के पाँवों की आहट पाकर इवा उठकर बरामदे में चली गई।

थोड़ी देर के बाद टॉम जब मामी से मिला तो उसने कहा - "मामी, अब इवा को इस संसार में रखने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। उसके भाल पर विधना का लेख है।"

मामी ने अपने हाथ को ऊपर उठाते हुए कहा - "हाँ-हाँ, यह तो मैं हमेशा से कहती आई हूँ। वह लड़की बचनेवाली नहीं है। ऐसे होनहार बच्चे बहुत दिन नहीं जीते। वह हम सब लोगों को अनाथ कर जाएगी।"

इवा अपने पिता के पास आई। उसके पिता ने उसे स्नेहपूर्वक हृदय से लगाकर कहा - "इवा बेटी, आजकल तो तुम अच्छी हो न!"

इवा ने आकस्मिक दृढ़ता से कहा - "बाबा, बहुत दिनों से मैं तुमसे कुछ कहना चाहती थी। अब अधिक निर्बल होने से पहले ही मैं उन बातों को कह डालना ठीक समझती हूँ।"

सेंटक्लेयर का हृदय काँप उठा। इवा ने पिता की गोद में बैठकर कहा - "बाबा, अब मेरे यहाँ रहने के सब उपाय व्यर्थ हैं। तुम्हें छोड़ जाने का समय अब बहुत निकट आ रहा है। मैं वहाँ जा रही हूँ, जहाँ से फिर कभी नहीं लौटा जाता।" कहकर उसने ठंडी साँस ली।

इवा की ये बातें सेंटक्लेयर के हृदय में बरछी की तरह पार हो गईं पर ऊपर से उसने प्रसन्नता का भाव रखकर कहा - "इवा बेटी, तुम्हें झूठा संदेह हो गया है। इन चिंताओं को छोड़ो! यह देखो, मैं तुम्हारे लिए कैसा अच्छा खिलौना लाया हूँ।"

इवा ने खिलौने को हाथ में रखकर कहा - "बाबा, तुम अपने को धोखे में मत रखो। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि मैं ठीक नहीं होऊँगी। बाबा, मुझे यह संसार छोड़ने में जरा भी कष्ट नहीं जान पड़ता। बस, तुम्हारी और घर के दूसरे लोगों की बात सोचकर बुरा लगता है, नहीं तो मैं यहाँ से जाने में बड़ी खुश हूँ। बहुत दिनों से मैं इस दुनिया को छोड़ने की इच्छा कर रही हूँ।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "प्यारी बच्ची, तेरे इस छोटे से मन में इतनी उदासीनता क्यों भरी हुई है? अपनी प्रसन्नता के लिए तुझे जो चाहिए, वह सब हमारे घर में है और वह तुझे मिल सकता है।"

"बाबा, मैं स्वर्ग में ही जाकर रहना चाहती हूँ। बाबा, यहाँ ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जो मेरे जी



को दुखाती हैं, जो मुझे बड़ी भयंकर जान पड़ती हैं।"

सेंटक्लेयर ने पूछा - "वे कौन-सी बातें हैं, जो तुझे दुःख देती हैं और भयंकर लगती हैं?"

इवा ने कहा - "बाबा, नित्य ही तो वे बातें होती हैं। मुझे अपने इन दास-दासियों के लिए बड़ा कष्ट होता है। ये मुझे बड़ा प्यार करते हैं, मुझे बहुत चाहते हैं। मैं चाहती हूँ कि ये सब आजाद हो जाएँ।"

सेंटक्लेयर बोला - "क्या तुम समझती हो कि वे हमारे यहाँ आराम से नहीं हैं?"

"हाँ, बाबा, पर तुम्हें कुछ हो जाए तो उनका क्या होगा? बाबा, तुम्हारे सरीखे आदमी दुनिया में कम होते हैं। अल्फ्रेड चाचा तुम्हारे जैसे नहीं है। माँ तुम्हारे जैसी नहीं है। बेचारी प्रू के मालिक की बात सोचो। ओफ, लोग अपने दास-दासियों पर कितना अत्याचार करते हैं, और कर सकते हैं।" इतना कहते-कहते इवा थरथराने लगी।

सेंटक्लेयर ने कहा - "बेटी, तुम्हारा हृदय कोमल है। दूसरों के दुःख देखकर तुम्हारे दिल को बड़ी चोट लगती है। मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें ऐसी बातें सुनने दीं।"

इवा बोली - "ओफ बाबा, तुम्हारी इस बात से मेरा कलेजा फटा जाता है। संसार में दूसरे लोग जब केवल कष्ट और दुःख सह-सहकर ही जी रहे हैं तब तुम मुझे सुखी बनाकर जीवित रखना चाहते हो? ऐसे कष्ट से बचाना चाहते हो कि किसी के कष्ट की कहानी भी नहीं सुनने देना चाहते! यह तो बड़ी भारी खुदगर्जजी है कि न तो मुझे ऐसी बातें जाननी चाहिए और न ही अनुभव करनी चाहिए कि जो मेरे हृदय में चुभ जाती हैं। इन बातों के बारे में मैंने बहुत सोचा है। बाबा, क्या इन सब दासों को आजाद कर देने का कोई उपाय नहीं है?"

सेंटक्लेयर ने कहा - "बेटी, यह बड़ा कठिन प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह प्रथा बहुत बुरी है। बहुत-से लोग इसे बुरी-से-बुरी प्रथा समझते हैं। मैं स्वयं इसे बहुत बुरा मानता हूँ। हृदय से चाहता हूँ कि इस पृथ्वी पर एक भी मनुष्य गुलाम न रहे। सब स्वतंत्रता का सुख भोगें पर इसका कोई सरल उपाय मेरी समझ में नहीं आता।"

"बाबा, क्या लोगों के घर घूम-घूमकर सबको नहीं समझा सकते कि यह प्रथा बड़ी घृणित है, इसे तुरंत उठा देना चाहिए? बाबा, मैं जब मर जाऊँगी, तब तुम मेरा खयाल करके मेरे लिए इसे करोगे? मुझसे यह होता तो मैं ही करती।"

इवा की बात सुनकर सेंटक्लेयर ने कहा - "इवा, तुम मरोगी! बेटी, तुम मुझसे ऐसी बातें मत कहो। तुम्हारे सिवा इस संसार में मेरा और है ही क्या?"

इवा बोली - "बाबा, उस बेचारी प्रू के पास उस लड़के के सिवा और क्या था? संतान के

शोक में वह पागल हो गई थी। उसके मरने के बाद भी वह उसका रोना सुनती थी। बाबा, तुम मुझे जितना प्यार करते हो, उतना ही ये ग़लाम भी अपने बच्चों से करते हैं। ओफ, उनके लिए कुछ करो। हमारे यहाँ मामी है, वह अपने बच्चों को प्यार करती है। जब वह उनकी चर्चा करती है तब मैंने उसकी आँखों से आँसू झरते देखे हैं। और टॉम भी अपने बच्चों को प्यार करता है। बाबा, ये बड़ी भयंकर बातें हैं और मुझसे सहन नहीं होती।"

सेंटक्लेयर ने अत्यंत दुःखित होकर कहा - "इवा बेटा, तुम रो-रोकर अपने जी को परेशान मत करो। मरने की बात मुँह से न निकालो। तुम जो चाहती हो, सो मैं करूँगा।"

इवा ने तत्काल कहा - "बाबा, तुम मुझसे प्रतिज्ञा करो कि टॉम को मेरी मृत्यु होते ही मुक्त कर दोगे।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "बेटा, जो कुछ तुम कहोगी वह मैं अवश्य कर दूँगा।"

सेंटक्लेयर इवा को छाती से चिपटाए चुपचाप बैठा रहा। देखते-देखते संध्या का आगमन हुआ। चारों ओर से इवा की प्रशान्त मूर्ति और विशाल नेत्रों पर घोर अंधकार छा गया। उसका चेहरा अब सेंटक्लेयर को नहीं दिखाई दे रहा था। पर उसकी सूरिली मधुर वाणी देववाणी की भाँति उसके कर्ण-क्हरों में गूँज रही थी। उसे अपने विगत जीवन की संपूर्ण बातें स्मरण हो आईं, अपनी माता की प्रार्थना याद आई। अपने बाल्य जीवन की बातें, संसार में प्रवेश करने के बाद जगत के हित-साधन की इच्छा के जड़ से उखड़ जाने की बातें, एक-एक करके याद आने लगीं। यों ही देर तक बैठे-बैठे सेंटक्लेयर बहुत-सी बातें याद करता और सोचता रहा, पर मुँह से कुछ न बोला।

अंत में जब बहुत अँधेरा हो गया तब इवा को गोद में उठाकर अपने सोने के कमरे में ले गया। उसे अपने ही साथ लिटाकर उस समय तक गीत गाकर सुनाता रहा, जब तक कि नींद ने उसे आ नहीं घेरा।

## 28. प्रेम का चमत्कार

रविवार का दिन था। दोपहर बीत चुका था। सेंटक्लेयर अपने घर के बरामदे में बैठा सिगरेट पी रहा था। बरामदे के सामनेवाले कमरे में उसकी स्त्री मेरी एक गद्दीदार कुर्सी पर बैठी हुई थी। मेरी के हाथ में एक बड़ी सुंदर भजनों की जिल्ददार पुस्तक थी। मेरी का खयाल है कि रविवार के दिन धर्म-पुस्तक पढ़ी न जा सके तो कम-से-कम हाथ ही में रहे। खुली हुई पुस्तक सामने

थी। उस समय मेरी उसे पढ़ नहीं रही थी। केवल कभी-कभी आँख उठाकर देख लेती थी।

इवा को साथ लेकर मिस अफिलिया मेथीडिस्टों के किसी गिरजे में गई थी, अतः अगस्टिन और मेरी के सिवा वहाँ और कोई न था। कुछ देर बाद मेरी ने कहा - "अगस्टिन, मुझे हृदयरोग-सा हो गया जान पड़ता है। मैं समझती हूँ अपने उस पुराने डाक्टर पोसी साहब को बुलवाने से ही काम चलेगा।"

अगस्टिन ने कहा - "उसको बुलाने की क्या जरूरत है? जो डाक्टर इवा की दवा करता है, वह भी तो बड़ा अच्छा जान पड़ता है।"

मेरी बोली - "मैं ऐसी नाजूक बीमारी में नए डाक्टर पर विश्वास नहीं कर सकती। मैं देखती हूँ, रोग दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। दिन भर बदन दर्द किया करता है, और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।"

"यह तुम्हारा खाली संदेह ही है, मेरी समझ में तुम्हें ऐसा कोई रोग नहीं है।"

मेरी झुँझलाकर बोली - "यह तो मुझे पहले से ही पता था कि तुम्हारी समझ में कुछ नहीं होगा। इवा को जरा-सी खाँसी या मामूली-सा रोग हो जाता है तो तुम घबरा जाते हो, पर मेरा तुम्हें कभी खयाल तक नहीं होता।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "यदि तुम चाहकर हृदय-रोग को बुलाना चाहती हो तो मैं उसमें बाधा नहीं डालूँगा। तुम्हारी निगाह में अगर यह रोग बड़े आदर की चीज है तो ठीक है, मेरा इसमें क्या नुकसान है?"

मेरी बोली - "तुम्हें विश्वास हो या न हो, मैं पक्के तौर पर कहती हूँ कि इधर कई दिनों तक इवा की बीमारी की झंझट में पड़े रहने के कारण मेरा यह रोग बहुत बढ़ गया है।"

सेंटक्लेयर कुछ नहीं बोला। वह चुरट में दम लगाने लगा और मन-ही-मन कहने लगा - "तुम इवा की बीमारी के झंझट में पड़े रहने की कहती हो? कभी एक दिन भूल से भी तो उसकी खबर नहीं ली!"

इसके कुछ देर बाद मिस अफिलिया इवा को साथ लेकर घर लौटी। वह गाड़ी से उतरते ही सीधी अपने कमरे में चली गई। इवा अपने पिता की गोद में जाकर बैठ गई और गिरजे के उपदेश की चर्चा करने लगी।

तभी मिस अफिलिया के कमरे से बड़ा शोर सुनाई दिया।

सेंटक्लेयर ने कहा - "टप्सी ने न जाने आज कौन-सा नया उत्पात कर दिया। बहन बहुत

बिगड़ रही है।"

मिस अफिलिया बड़ी गुस्से में भरी टप्सी का गला पकड़कर घसीटती हुई लाई।

सेंटक्लेयर ने पूछा - "कहो, आज क्या मामला है?"

अफिलिया ने कहा - "यह है कि अब मैं इस आफत से अधिक परेशान नहीं होना चाहती, इसे बरदाश्त करना मेरे बूते से बाहर है। कहीं खेलने भाग जाएगी, यह सोचकर इसे भजनों की पुस्तक देकर दरवाजे में ताला लगा गई थी, लेकिन मेरे जाने के बाद इसने मेरी चाबी निकाल ली और मेरे बक्स से रेशमी कपड़े निकालकर उन्हें कूट-कूटकर गुड़ियों के कपड़े बना डाले। मैंने जिंदगी में ऐसी पाजी लड़की नहीं देखी।"

फिर सेंटक्लेयर की ओर तिरस्कृत दृष्टि से देखकर बोली - "अगर मेरा वश चलता तो मैं इसे बाहर निकलवाकर इतने कोड़े लगवाती कि इसको छठी का दूध याद आ जाता।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "मुझे जरा भी संदेह नहीं है। वास्तव में स्त्रियों का शासन बड़ा ही प्रेम-पूर्ण और मृदुल होता है। मैं अपने इस देश में ऐसी दस स्त्रियाँ भी नहीं देखता कि उनका वश चले तो वे एक घोड़े या एक गुलाम को अधमरा न कर डालें। पुरुषों की मैं क्या कहूँ!"

मेरी बोली - "सेंटक्लेयर, तुम्हारी इस बेढंगी प्रणाली से नौकरों को शिक्षा देने का कोई फल न होगा। दीदी बुद्धिमान स्त्री हैं और वह समझती हैं कि मैंने जो कहा, सो ठीक है या नहीं।"

दूसरी स्त्रियों की भाँति अफिलिया को भी कभी-कभी गुस्सा आ जाता था, विशेषतः टप्सी उसे जितना हैरान करती थी, उससे क्रोध आना स्वाभाविक ही था। पर मेरी जब उनकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करने लगी तब उसे लज्जा मालूम हुई और उसका क्रोध कम हो गया। उसने कहा - "नहीं, इस लड़की के साथ ऐसा कठोर बर्ताव करने की मेरी कभी इच्छा नहीं होगी। पर अगस्टिन, मेरी अकल काम नहीं करती। इस लड़की का क्या करूँ? मैंने इसे बहूँ-सिखाया-पढ़ाया, समझाते-समझाते हार गई। हर तरह से सजा देकर भी देख चुकी, पर यह जैसी-की-तैसी बनी हुई है।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "टप्सी, इधर आ!"

टप्सी उसके सामने आकर, काली-काली आँखें निकालकर, टुकुर-टुकुर ताकने लगी। उसकी आँखों से भय और धूर्तता टपकती थी।

सेंटक्लेयर ने कहा - "क्यों री टप्सी, तू इतना पाजीपन क्यों करती है?"

टप्सी बोली - "जान पड़ता है, मेरा मन बड़ा खराब है। मिस फीली तो यही कहती हैं।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "तू नहीं देखती कि मिस अफिलिया ने तेरे लिए कितनी परेशानी उठाई है? वह कहती है कि वह जो कर सकती थी, सब-कुछ करके देख लिया।"

"जी हाँ, पुरानी मालकिन भी यही कहा करती थीं। वह मुझे बहुत कोड़े लगाती थीं, मेरे बाल नोच लेती थीं, दरवाजे से मेरा सिर टकरा देती थीं, पर उससे मैं जरा भी नहीं सुधरी। मैं समझती हूँ, अगर मेरे सिर का बाल-बाल नोच लिया जाए तो भी मेरा कुछ सुधार न होगा। मैं बड़ी पाजी हूँ। मैं हब्शी के सिवा और कुछ नहीं हूँ। कोई उपाय नहीं है।"

अफिलिया ने उत्तेजित होकर कहा - "अब मैं इसे सुधारने की आशा छोड़े देती हूँ। जितना सह चुकी हूँ वही बहुत है। अब और क्लेश नहीं सह सकती।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "अच्छा, मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ।"

"क्या?"

"यही कि जब तुम्हारे धर्मशास्त्र में इतनी भी ताकत नहीं कि अपने पास रखकर एक अज्ञानी बालिका का उद्धार कर सको, तब ऐसे-ऐसे हजारों अज्ञानियों के उद्धार के लिए बेचारे दो-एक पादरियों के इधर-उधर भेजने से क्या मतलब सिद्ध होता है?"

मिस अफिलिया ने तत्काल इसका उत्तर नहीं दिया। इवा ने, जो वहाँ चुपचाप खड़ी हुई सब बातें सुन रही थी, टप्सी को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया। फिर वे दोनों पास ही के उस शीशे के कमरे में चली गईं, जिसमें बैठकर सेंटक्लेयर पढ़ा करते थे।

उन दोनों के आँख से ओझल हो जाने पर सेंटक्लेयर ने कहा - "देखना चाहिए, इवा क्या करती है।"

यह कहकर वह आगे बढ़ा और शीशे पर जो पर्दा पड़ा हुआ था, उसका एक कोना उठाकर झाँकने लगा। एक क्षण के बाद उसने अपने होठों पर अंगुली रखकर इशारे से मिस अफिलिया को भी बुलाया। वे दोनों बालिकाएँ फर्श पर आमने-सामने बैठी हुई थीं। टप्सी के चेहरे पर उसकी स्वाभाविक बेपरवाही और अन्यमनस्कता का भाव दिखाई दे रहा है, पर इवा की आँखें आँसुओं से भरी थीं।

इवा बोली - "टप्सी, तेरा स्वभाव क्यों इतना खराब हो गया? तू सुधारने की कोशिश क्यों नहीं करती? टप्सी, क्या तू किसी आदमी को प्यार नहीं करती?"

टप्सी ने कहा - "मुझे नहीं मालूम, प्यार किस चीज को कहते हैं। मैं चीनी को प्यार करती हूँ और ऐसी ही चीजों को, जो मीठी होती हैं।"

"तू अपने बाप-माँ को प्यार करती है?"

"मेरा कोई नहीं है।"

"क्या तुम्हारा कोई नहीं है - भाई, बहन, चाचा, चाची या..."

"नहीं-नहीं, कोई नहीं। मेरा कभी कोई हुआ ही नहीं।"

"पर टप्सी, यदि तू सुधरने की कोशिश करे तो सुधर सकती है।"

"मैं हब्शी के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। अगर मेरी यह काली चमड़ी उतरकर सफेद आ जाए तो मैं सुधरने की कोशिश करूँ।"

"टप्सी, काली होने से क्या हुआ, लोग तुझे अब भी प्यार कर सकते हैं। अगर तू अच्छी बन जाए तो मिस अफिलिया तुझे बहुत चाहेगी।"

यह बात सुनकर टप्सी ने स्वाभाविक रीति से मुँह फाड़ दिया। इसके माने यह थे कि तुम्हारी इस बात पर विश्वास नहीं होता।

इवा ने पूछा - "क्या तू इस बात पर विश्वास नहीं करती?"

"नहीं मुझे देखकर ही उन्हें घृणा आती है, क्योंकि मैं हब्शी हूँ। मुझे छूने से वह ऐसा चौंकती हैं, जैसे उनपर कोई मँढक गिर पड़ा है। कोई भी ऐसा नहीं है, जो हब्शियों को प्यार कर सके, और हब्शी भी कुछ हो नहीं सकते, ऐसे-के-ऐसे ही रहेंगे वे। (सीटी बजाना आरंभ करके) उसने कहा: मैं परवा नहीं करती।"

इवा का हृदय द्रवित हो उठा। उसने अपना दुबला सफेद हाथ टप्सी के कंधे पर रखकर कहा - "टप्सी-अभागी टप्सी, मैं तुझे प्यार करती हूँ। मैं तुझे इसलिए प्यार करती हूँ कि तू अनाथ है, तेरे माता-पिता नहीं हैं, न भाई-बहन हैं। मैं तुझे इसलिए प्यार करती हूँ कि तू बड़ी ही दुःखी और सताई हुई है। मैं तुझे प्यार करती हूँ और चाहती हूँ कि तू भली बन जा। टप्सी, मेरी तबियत बड़ी खराब है। मैं अब अधिक दिन नहीं रहूँगी। तेरा यह हाल देखकर मेरा जी बहुत ही दुःखता है। मैं अब बहुत थोड़े ही दिनों की मेहमान हूँ। मैं चाहती हूँ कि और न सही, मेरा खयाल करके ही तू सुधरने की कोशिश कर!"

बालिका की आँखें आँसुओं से भर आईं और इवा के हाथ पर टप-टप बड़ी-बड़ी बूँदें गिरने लगीं। उसी क्षण सत्य विश्वास की एक किरण स्वर्गीय प्रेम की एक किरण, उस अज्ञानी अविश्वासपूर्ण बालिका की आत्मा में प्रविष्ट हुई। टप्सी दोनों घटनों के बीच सिर रखकर रो रही थी और वह लावण्यमयी बालिका झुककर स्नेह-भरे नेत्रों से उसे देख रही थी। मानो कोई

ज्योतिर्मय देवदूत झुककर किसी पापात्मा का पाप-पंक से उद्धार कर रहा हो।

इवा ने कहा - "टप्सी, क्या तू नहीं जानती कि ईश्वर हम सबको एक बराबर प्यार करते हैं? वह जितना मुझे प्यार करते हैं, उतना ही तुझे भी। वह ठीक वैसे ही तुझे प्यार करते हैं, जैसे मैं करती हूँ, बल्कि मुझसे अधिक, क्योंकि वे मुझसे बढ़कर हैं। वे सुधरने में तेरी मदद करेंगे। अंत में तू स्वर्ग में पहुँच सकती है और सदा के लिए देवदूत हो सकती है। तेरी काली चमड़ी इसमें बाधा नहीं डालेगी। सफेद चमड़ीवालों के लिए जैसे ये सब बातें हैं, वैसे ही तेरे लिए हैं। टप्सी, इन बातों को सोच! टॉम काका जिन ऊँची आत्माओं के भजन गाता है, तू भी उन आत्माओं की भाँति एक आत्मा हो सकेगी।"

टप्सी ने भरे कंठ से कहा - "मिस इवा, प्यारी इवा, मैं कोशिश करूँगी। मैंने पहले कभी इसकी परवा नहीं की थी।"

सेंटक्लेयर ने पर्दा छोड़कर मिस अफिलिया से कहा - "यह दृश्य देखकर इस समय मुझे अपनी माता की याद आती है। उन्होंने मुझसे ठीक ही कहा था - अगर हम अंधे को आँख देना चाहते हैं तो हमें ईसा के रास्ते पर चलना पड़ेगा। उन्हें अपने पास बुला लो और अपने हाथ उनपर रखो।"

मिस अफिलिया ने कहा - "हब्शियों से मुझे सदा से एक प्रकार की घृणा-सी है, और यह सच्ची बात है कि मैं कभी इस बालिका से अपना शरीर छुआने के लिए तैयार नहीं हो सकती। पर मैंने नहीं सोचा था कि वह मेरे मन के भाव को ताड़ती है।"

सेंटक्लेयर बोला - "ये बच्चे बड़ी जल्दी मन की बात जान लेते हैं। उनसे मन के भाव छिपाना कठिन है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी बालक को यदि तुम मन से घृणा करती हो तो ऊपर से उसके उपकार की चाहे कितनी कोशिश क्यों न करो, उसकी चाहे कितनी भलाई क्यों न करो, वास्तव में जब तक उस पर तुम्हारा स्नेह-भाव न होगा, तब तक वह तुम्हारा रत्ती भर भी कृतज्ञ न होगा।"

अफिलिया ने कहा - "समझ में नहीं आता कि मैं इस भाव को कैसे दूर करूँ। ये हब्शी मुझे अच्छे नहीं लगते, और खासकर यह लड़की।"

सेंटक्लेयर बोला - "मालूम होता है, इवा ने इस भाव को दूर कर दिया है।"

अफिलिया ने गदगद होकर कहा - "हाँ, वह कैसी प्रेममयी है, मानो प्रेम का अवतार ही है। उसने ईसा की-सी प्रकृति पाई है। मेरी इच्छा होती है कि मैं भी उसकी जैसी होती। इवा से मैं बहुत-कुछ सीख सकती हूँ।"

सेंटक्लेयर बोला - "हाँ, बड़े हो जाने से ही आदमी सब बातों का पंडित नहीं बन जाता।"

बच्चों से भी उसे बहुतेरी बातें सीखने को रह जाती हैं।"

## 29. इवा की मृत्यु

इस संसार में सच्चा वीर कौन है? जिसने अपनी दृढ़ भुजाओं के प्रताप से अनेक राजाओं का गर्व चूर किया है, सहस्रों नर-नारियों पर आधिपत्य जमाया है, क्या वह सच्चा वीर है? जिसके बल से निर्बल सदा थरथराते, काँपते रहते हैं, जिसकी निर्दयता को स्मरणकर रोमांच हो आता है, क्या वह सच्चा वीर है? नहीं, कभी नहीं! वीर वह है, जो मौत से जरा भी नहीं डरता, सदा सुख-शांति से मरने को तैयार रहता है। वीर वह है, जो संसार की भलाई के निमित्त, जन-साधारण के हितार्थ, अपने जीवन का बलिदान करने में जरा भी संकोच नहीं करता। सच्चा वीर तो वही है, जो कभी किसी को सताता नहीं, और जगत में प्रेम का प्रवाह बहाकर मनुष्यों के अदम्य हृदयों को अपने वश में कर सकता है।

इस छोटी नन्हीं बालिका को देखिए। यह अपने रोग की यंत्रणा से अत्यंत पीड़ित है, पर इसे अपना दुःख नहीं है। दूसरों का दुःख देखकर आँसू बहा रही है; दूसरों के दुःख के ध्यान में अपनी पीड़ा भूल गई है। क्या इसके जीवन में सच्ची वीरता के लक्षण नहीं दिखाई देते?

तीसरे पहर का समय है। इवा अपनी चारपाई पर पड़ी हुई है। सामने उसकी छोटी बाइबिल रखी है। उसे कभी खोलती है, कभी बंद करती है, कभी थोड़ी देर तक पढ़ती है। इसी समय एकाएक उसे बरामदे से अपनी माता की कर्कश आवाज सुनाई देती है:

"क्यों री लड़की, यहाँ खड़ी क्या उत्पात मचा रही है? बता, तूने फूल क्यों तोड़े?" इसी के बाद इवा को एक जोर के तमाचे की आवाज सुनाई दी। फिर उसने टप्सी को बोलते हुए सुना - "मेम साहब, ये सब मिस इवा के लिए..."

बीच में ही उसे रोकती हुई वह बोली - "मिस इवा का नाम लेकर कैसा बहाना बनाती है! तू समझती है, वह तेरे फूल चाहती है। तू किसी काम की नहीं है, हब्बिश भाग, यहाँ से!"

शक्ति के न रहने पर भी क्षण भर में इवा अपनी खाट से उठकर बरामदे में आ पहुँची। बोली - "आह, माँ, उसे मत भगाओ! मुझे फूल बड़े अच्छे लगते हैं। ये सब मुझे दे दो। मैं फूल चाहती हूँ।"

मेरी ने कहा - "क्यों इवा, तेरा कमरा तो इस समय फूलों से भरा पड़ा है?"



"मुझे और भी चाहिए। टप्सी, वे सब फूल यहाँ ले आ।"

टप्सी अब तक हाथ से सिर पकड़े खड़ी थी। इवा की बात सुनकर उसने धीरे-धीरे जाकर बड़े संकोच से फूल इवा के हाथ में दिए। उसके चेहरे पर अब पहले का-सा निस्संकोच, बेलाग और बेपरवाही का भाव दिखाई नहीं देता था।

इवा ने उन फूलों को देखकर कहा - "बड़ा सुंदर गुलदस्ता बनाया है।"

वास्तव में टप्सी ने बड़े जतन से भाँति-भाँति के फूल और पत्तियाँ चुनकर वह गुलदस्ता बनाया था। इवा की बात सुनकर उसका मुख प्रफुल्लित हो उठा।

इवा ने कहा - "टप्सी, तू बड़ी अच्छी तरह से फूल सजाती है। मेरा एक खाली फूलदान पड़ा है। मैं चाहती हूँ कि तू इसके लिए फूलों का एक गुलदस्ता रोज बना दिया करे।"

मेरी ने तुनककर कहा - "बड़ी अनोखी बात है! वह क्या गुलदस्ता बनाएगी?"

इवा बोली - "माँ, तुम्हारा इसमें क्या बिगड़ता है? जैसा टप्सी का जी चाहेगा, बना लेगी। तुम उसे रोको मत।"

टप्सी सिर झुकाकर खड़ी रही। फिर जब वह जाने लगी तो इवा ने देखा, उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं।

इवा ने अपनी माँ से कहा - "माँ, बेचारी टप्सी मेरे लिए कुछ करना चाहती है।"

"करना-धरना क्या चाहती है, वह खाली उत्पात करना चाहती है। वह जानती है कि फूल तोड़ने की मनाही है, इसी से वह तोड़ती है। पर तुम्हें यदि उसका फूल तोड़ना अच्छा लगता है, तो ठीक है।"

"माँ, मेरी समझ में टप्सी में पहले से अब बहुत फर्क है, वह सुधरने की बड़ी कोशिश कर रही है।"

मेरी ने उदासीनता से हँसकर कहा - "अभी उसे सुधरने में बहुत देर लगेगी। कोशिश करने से यदि सुधारा जा सकता है तो अभी उसे बहुत दिनों तक सिर खपाना पड़ेगा।"

इवा बोली - "माँ, तुम जानती हो कि हर एक चीज हमेशा उसके खिलाफ रही है।"

"नहीं, यहाँ आने के बाद तो उसके लिए सब-कुछ अनुकूल है। उसे कितना समझाया गया, कितने सदुपदेश दिए गए। आदमी किसी के लिए जहाँ तक कर सकता है, किया गया, फिर भी

वह जैसी थी वैसी ही है, और वैसी ही रहेगी; तुम उसे सुधार नहीं सकती हो।"

इवा बोली - "माँ, हम लोग बड़े स्नेह और यत्न से पलते हैं। हमारे माता-पिता, भाई-बंधु हम सबको प्यार करते हैं, इसी से हमें भले बनने का मौका रहता है; पर उस बेचारी को बचपन से ही कोई प्यार करनेवाला नहीं था। फिर वह कैसे सुधरती?"

मेरी ने जम्हाई लेते हुए कहा - "यही होगा। जाने दो। देखो, आज कैसी गर्मी है?"

इवा ने कहा - "माँ, क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता कि टप्सी भी कभी भली बनकर स्वर्गीय प्रकृति प्राप्त कर सकती है?"

मेरी हँसकर बोली - "स्वर्गीय प्रकृति! तुम्हारे सिवा और कोई इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता।"

"पर माँ, क्या ईश्वर ने उसे नहीं रचा है? हम लोगों की भाँति टप्सी भी क्या ईश्वर की संतान नहीं है?"

"हाँ, यह हो सकता है। मैं मानती हूँ कि ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को बनाया है। अच्छा, मेरी सूँघनेवाली शीशी कहाँ है?"

माँ के मुँह से ऐसी बात सुनकर इवा ने अर्ध-स्फुट स्वर से कहा - "ओफ, कैसे दुःख की बात है!"

मेरी ने सुन लिया। बोली - "दुःख की क्या बात है?"

"माँ, ये हब्शी भी अच्छी शिक्षा मिलने से, प्यार का व्यवहार पाने से स्वर्गीय प्रकृति प्राप्त कर सकते हैं। पर ये लोग बाल-बच्चों सहित नरक की ओर जा रहे हैं। नित्य इनका पतन हो रहा है। कोई इनकी सहायता करनेवाला नहीं है।"

"हम लोग इनकी सहायता नहीं कर सकते। इनकी चिंता करके मरना बेकार है। मैं नहीं जानती कि इनके प्रति हमारा क्या कर्तव्य है? हमें अपने सुख-वैभव के लिए ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए। नाहक औरों की चिंता करना व्यर्थ है।"

इवा ने बड़े दुःखी स्वर में कहा - "मैं तो अपने सुख से संतुष्ट नहीं रह सकती। मुझे इन दीन-दुखियों की दशा देखकर बड़ी पीड़ा होती है।"

मेरी व्यंग्य से बोली - "तुम्हारी यह बड़ी अनोखी पीड़ा है। मेरा विश्वास है कि अपने धर्म के अनुसार यही ठीक है कि हम अपने सुख के लिए ईश्वर का उपकार मानें।"

जान पड़ता है, मेरी ने ऐंग्लो-इंडियन संहिता से क्रिश्चियन धर्म की शिक्षा पाई थी, इसी से उसने बाइबिल की दस आज्ञाओं (टेन कमांडमेंट्स) पर एकदम हरताल फेर दी थी।

इवा ने अपनी माता से कहा - "माँ, मैं अपने सिर के कुछ बाल कटवाना चाहती हूँ।"

मेरी ने पूछा "क्यों?"

"मैं अपने प्रेमियों को इनमें से कुछ बाल अपने हाथ से दे जाना चाहती हूँ। क्या तुम बुआ को बुलाकर मेरे बाल नहीं कटवा दोगी?"

मेरी ने दूसरे कमरे से मिस अफिलिया को पुकारकर बुलाया।

अफिलिया के आने पर इवा ने अपने घुँघराले बालों को हाथ में लेकर उन्हें हिलाते हुए कहा - "बुआ, आओ, भेड़ को मूँड़ दो।"

सेंटक्लेयर उसी समय इवा के निमित्त कुछ फल लिए हुए कमरे में आया और बोला - "यह क्या हो रहा है?"

इवा ने कहा - "बाबा, मैं बुआ से अपने सिर के बाल कटवा रही हूँ - बहुत बढ़ गए हैं। इससे मेरे सिर में गर्मी बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त मैं कुछ बाल बाँट भी जाना चाहती हूँ।"

मिस अफिलिया अपनी कैंची लेकर आई।

सेंटक्लेयर ने कहा - "देखना जीजी, बड़ी होशियारी से बाल काटना, बालों की शोभा मत बिगाड़ देना। नीचे-नीचे के जो दिखाई नहीं पड़ते हैं, सो काट दो। इवा के घुँघराले बालों पर मुझे अभिमान है।"

इवा ने उदासी से कहा - "यह क्यों?"

सेंटक्लेयर बोला - "हाँ, तुम्हारे बाल उस समय सुंदर रहने चाहिए, जब मैं तुम्हें अपने साथ लेकर तुम्हारे चाचा के खेत पर हेनरिक को देखने चलूँगा।"

इवा ने कहा - "वहाँ मैं कभी नहीं जाऊँगी। बाबा, मैं उससे अच्छे देश को जा रही हूँ। तुम मेरी बात का विश्वास करो। बाबा, तुम क्या देखते नहीं हो कि मैं दिन-प्रति-दिन थकती जा रही हूँ।"

सेंटक्लेयर ने दुःख-भरे स्वर में कहा - "इवा, मुझे दबाकर ऐसी भयंकर बात पर क्यों विश्वास दिलाना चाहती हो?"

इवा बोली - "केवल इसलिए कि यह बात सत्य है, बाबा! यदि तुम इस पर विश्वास कर लोगे, तो शायद इसके संबंध में मेरी तरह ही अनुभव करोगे।"

सेंटक्लेयर चुप होकर व्यथित-हृदय से कटे हुए सुंदर बालों की ओर देखने लगा। बालों का एक-एक गुच्छा उठाकर इवा भी उत्सुकता से देख रही थी और उन्हें अँगुलियों के चारों ओर लपेट रही थी। बीच-बीच में शंकित होकर पिता के मुख की ओर भी देख लेती थी।

मेरी ने कहा - "मुझे जिसका खटका था, अंत में वही हुआ। जिस सोच में दिन-दिन मेरा शरीर गिरता जाता है, मेरी उम्र कम होती जाती है, वही हुआ। मेरे दुःख-दर्द का कोई साथी नहीं है। सेंटक्लेयर, बहुत जल्दी तुम देखोगे कि मैं ठीक कहती थी।"

सेंटक्लेयर ने बड़े तीखे और रूखेपन से कहा - "निस्संदेह तुम्हें शांति मिलेगी।"

मेरी रूमाल से आँखें ढककर लेट गई।

इवा की नीली चमकीली आँखें एक बार पिता पर और फिर माता पर पड़ने लगीं। यह दृष्टि शांत दृष्टि थी। जीवनमुक्त आत्मा की गूढ़दर्शी दृष्टि थी। आज उसे अपने पिता और माता की प्रकृति का पूर्ण अनुभव हुआ। उसने हाथ के इशारे से पिता को अपने पास बुलाया। वह आकर उसके पास बैठ गया।

इवा ने कहा - "बाबा, मेरी शक्ति दिन-पर-दिन कम होती जा रही है, और मैं जानती हूँ कि मुझे शीघ्र ही इस संसार को छोड़ना पड़ेगा। कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हें मैं तुमसे कहना चाहती हूँ और कुछ काम ऐसे हैं, जिन्हें करना मेरा कर्तव्य है। उन्हें करने के लिए भी मैं तुमसे प्रार्थना करनेवाली हूँ। तुम इस बात से ऐसे नाराज हो कि मुझे एक शब्द भी मुँह से नहीं निकालने देते। पर मेरे जी को ये बातें बहुत खलती हैं। मैं कहे बिना नहीं रह सकती। तुम अब प्रसन्नता से मुझे कहने की आज्ञा दो।"

सेंटक्लेयर ने एक हाथ से अपनी आँखें पोंछते हुए और दूसरे से इवा का हाथ पकड़ते हुए कहा - "मेरी प्यारी बच्ची, जो कहना हो, कहो।"

इवा बोली - "अच्छा बाबा, यदि तुम मेरी बात मानते हो, तो मैं अपने सब नौकरों को अपने पास इकट्ठा देखना चाहती हूँ। मुझे उनसे कुछ बातें कहनी हैं।"

सेंटक्लेयर ने बड़ी सहिष्णुता से कहा - "अच्छा।"

मिस अफिलिया ने सब दास-दासियों को बुला भेजा। थोड़ी देर में सारे दास-दासी उस कमरे में आकर इकट्ठे हो गए।

इवा तकिए के सहारे लेटी हुई थी। उसके खूले बाल मुँह के चारों ओर बिखरे हुए थे। दोनों आँखों में कुछ ललाई आ जाने से दुर्बल शरीर और भी पीला दिखाई दे रहा था। नेत्रों से मानो आत्मा की उज्ज्वल ज्योति निकल रही थी। बालिका एकाग्रता से प्रत्येक दास-दासी का मुख देख रही थी।

दास-दासियों का जी सहसा उमड़ पड़ा। वह ममतापूर्ण कांतिमय मुख, पास पड़े कतरे हुए लंबे बाल, सैंटकलेयर का शोक-संतप्त मुख, मेरी की आह- ये सब बातें उनके कोमल हृदय में घुस गईं। वे सब घोर विषाद से ठंडी साँस लेने लगे। थोड़ी देर के लिए वहाँ शमशान जैसा सन्नाटा छा गया।

इवा ने अपना सिर उठाया और घुमाकर बड़े आग्रह से एक नजर सब पर डाली। सबके मुँह पर उदासीनता और भय की रेखाएँ थीं। दासियाँ कपड़ों से मुँह ढाँक-ढाँककर सिसकने लगीं।

इवा ने कहा - "मेरे प्यारे भाइयो, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, इसी लिए मैंने तुम सबको यहाँ बलवाया है। तुम सबको मैं हृदय से चाहती हूँ। आज मुझे तुम लोगों से कुछ बातें कहनी हैं... मैं चाहती हूँ कि तुम लोग सदा उन्हें याद रखो, क्योंकि मैं तुम्हें छोड़ रही हूँ। अब मैं बहुत ही थोड़े दिनों की मेहमान हूँ।"

इतना कहने के बाद सेवकों-सेविकाओं के सुबकने और सर्द आँहें भरने से वह कमरा इस तरह भर गया कि उस बालिका की कमजोर आवाज सुनने की संभावना न रही। वह कुछ देर चुप रही, फिर ऐसे स्थिर कंठ से बोली कि वे सब शांत-मौन हो गए। वह कहने लगी:

"यदि तुम लोगों का मुझपर हार्दिक प्रेम है तो तुम्हें मेरे बोलने में विघ्न नहीं डालना चाहिए। मेरी बातें ध्यान से सुनो। मैं तुमसे तुम्हारी आत्माओं के संबंध में कुछ कहना चाहती हूँ। मुझे दुःख है कि तुममें से बहूतरे बड़े लापरवाह हैं। तुम लोग केवल इस जगत् की बातें सोचते रहते हो। मैं चाहती हूँ कि तुम लोग इस बात को भी ध्यान में रखो कि इस जगत् के अलावा एक और सुंदर जगत् है, जहाँ ईसा रहते हैं। मैं वहाँ जाती हूँ, तुम्हें भी वहाँ जाने का अधिकार है। पर यदि तुम वहाँ जाना चाहते हो तो तुम्हें अपना आज के जैसा व्यर्थ निरुद्देश्य और आदर्शहीन जीवन नहीं बिताना चाहिए। तुम्हें अपने जीवन में अब कुछ सुधार करना चाहिए। तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुममें से प्रत्येक व्यक्ति दिव्य जीवन का सुख प्राप्त कर सकता है। तुम भले बनने की कोशिश करोगे तो ईश्वर तुम्हारी सहायता करेंगे। ईश्वर सदा भले कामों का सहायक होता है। तुम्हें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए और तुम्हें पढ़ना चाहिए।"

इतना कहने के बाद बालिका कुछ देर को रुकी। वह उन्हें करुण दृष्टि से देखती रही। फिर दुःखित हृदय से बोली - "हाय प्यारे भाइयों, कितने दुःख की बात है कि तुम पढ़ना नहीं जानते! और इससे तुम्हें कितना दुःख है!"

उसका गला भर आया, उसने तकिए में मुँह छिपा लिया और सिसकने लगी। जिन्हें सुनाकर

इवा ये बातें कह रही थी, वे उसे चारों ओर से घेरे खड़े थे। उसको बिलखते देखकर वे सब-के-सब भी रो पड़े।

उन लोगों को इस प्रकार रोते देख इवा ने अपने को सँभाला और अपना अश्रुपूर्ण मुख उठाकर उज्ज्वल, मृदुल मुस्कान से बोली - "कोई चिंता नहीं... मैंने सदा तुम लोगों के लिए दयालु प्रभु से प्रार्थना की है, और मैं जानती हूँ कि तुम्हारे पढ़ना न जानने पर भी तुम्हारा सुधार करने में ईश्वर तुम लोगों की सहायता करेंगे। तुम उस ईश्वर से सहायता माँगो, और अपने सुधार की चेष्ट करो! तुमसे जब भी बन सके, धर्म-पुस्तक पढ़ो। मुझे आशा है कि मैं तुम सबों को स्वर्ग में देखूँगी।"

इवा की बात समाप्त होने पर टॉम, मामी और कुछ पुराने सेवकों ने धीरे-धीरे कहा - "परम पिता की इच्छा पूर्ण हो!"

इनमें जो बहुत छोटी उम्र के और चिंताहीन थे, उनका हृदय भी इस समय दुःख से भर गया। वे घुटनों में सिर रखकर सिसकने लगे।

इवा ने कहा - "मैं जानती हूँ, तुम सब मुझे प्यार करते हो।"

इसके बाद उन सभी के लिए उसने अपनी शुभकामना भेंट की।

इवा बोली - "हाँ, मैं जानती हूँ, खूब जानती हूँ, कि तुम सब मुझे प्यार करते हो। तुममें से एक भी ऐसा नहीं, जिसने मुझे अपना हार्दिक स्नेह न दिया हो। मैं चाहती हूँ कि तुम्हें कोई ऐसी चीज दे जाऊँ कि उसे जब तुम देखो, तभी मुझे याद करो। मैं तुम सबको अपने बालों की एक-एक लट देती हूँ। और जब तुम इसे देखो, तो सोचना कि मैं तुम लोगों से प्यार करती थी, मैं स्वर्ग में चली गई हूँ और मैं चाहती हूँ कि तुम सब को वहाँ देखूँ।"

रोते और सिसकते हुए सब सेवक-सेविकाओं ने उस नन्हीं बालिका के कोमल हाथों से उसके निर्मल प्यार की वह यादगार बड़ी श्रद्धा के साथ अपने हाथों में सँभाल ली। उस हृदय-द्रावक दृश्य को कैसे बताया जाए! कोई रोता हुआ जमीन पर औंधे मुँह पड़ा था, कोई मन-ही-मन दयालु ईश्वर से बालिका के मंगल की प्रार्थना कर रहा था, और कोई उसके कपड़ों का सिरा चूम रहा था। जिसके मन में जैसे आता था, बालिका के लिए अपना शोक और प्रेम दिखलाता था।

जब वे सब लोग प्यार की भेंट-स्वरूप बालों की लटें पा चुके, तब मिस अफिलिया ने यह समझकर कि भीड़ रहने से रोगी को बेचैनी होगी, उन सबको संकेत से बाहर जाने को कहा। सब चले गए। केवल टॉम और मामी दो रह गए।

इवा ने कहा - "टॉम काका, यह एक सुंदर गुच्छा मैंने तुम्हारे लिए रख छोड़ा है। यह सोचकर बड़ा ही हर्ष होता है कि मैं तुम्हें स्वर्ग में देखूँगी। मुझे इसका पूर्ण विश्वास है।" फिर

स्नेह के साथ अपनी बूढ़ी धाय मामी से लिपटकर वह बोली - "मामी, तुम बड़ी सीधी और दयालु हो। मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम भी स्वर्ग में पहुँचोगी।"

मामी ने जोर से रोते हुए कहा - "मेरी प्यारी बच्ची, तेरे बिना मैं कैसे जीऊँगी? तुझे छाती से लगाकर मैं अपनी संतान का दुःख भूले हुए थी।"

मिस अफिलिया ने मामी और टॉम को धीरे-धीरे वहाँ से बाहर कर दिया। सोचा कि सब चले गए; पर जैसे ही वह घूमी, उसने देखा कि टप्सी वहाँ खड़ी थी। मिस अफिलिया ने एकाएक कहा - "तू किधर से आ टपकी?"

टप्सी ने आँखों से आँसू पोंछते हुए कहा - "मैं यहाँ ही तो थी। मिस इवा, मैं सदा से बुरी लड़की हूँ; पर क्या आप मुझे भी अपने बालों की एक लट नहीं देंगी?"

इवा बोली - "हाँ, टप्सी, तुझे जरूर दूँगी। यह ले, तू जब-जब भी इन बालों को देखना, तब-तब अपने मन में यही सोचना कि मैं भी तुझे बहुत चाहती थी और मेरी इच्छा थी कि तू भली लड़की बन जाए।"

टप्सी ने रुद्ध कंठ से कहा - "मिस इवा, मैं भली बनने की बराबर कोशिश कर रही हूँ। पर भला बनना बड़ा कठिन काम है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इसमें किसकी मदद लूँ।"

इवा ने कहा - "इसे ईश्वर जानते हैं, टप्सी, वे तुझे प्यार करते हैं, वे ही तेरी सहायता करेंगे।"

टप्सी रोते-रोते चुपचाप वहाँ से चली गई! बालों के गुच्छे को उसने अपनी छाती में आदर से छिपा लिया।

सबके चले जाने पर मिस अफिलिया ने किवाड़ बंद कर लिए। जब ये सारी बातें हो रही थीं, तब मिस अफिलिया की आँखों से भी लगातार आँसुओं की धारा बह रही थी, पर वह बुद्धिमानी रमणी अपने शोक को रोककर रोगी को आराम पहुँचाने की चिंता कर रही थी और चारों ओर से इस शोक-प्रदर्शन से कहीं रोगी का कष्ट बढ़ न जाए, इस डर से वह स्वयं चुप बैठी थी।

सेंटक्लेयर भी एक हाथ से आँखें ढाँपे चुपचाप लड़की के पास बैठा था। सबके चले जाने पर भी वह उसी तरह बैठा रहा।

इवा के पिता के हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा - "बाबा!"

सेंटक्लेयर सहसा चौंक उठा। उसका सारा शरीर रोमांचित हो गया, लेकिन वह कुछ बोला नहीं।

इवा ने फिर पुकारा - "बाबा!"

सेंटक्लेयर ने तीव्र यंत्रणा से छटपटाते हुए कहा - "अब नहीं सहा जाता - विधाता मुझपर बड़ा निर्दयी है।..."

मिस अफिलिया ने कहा - "वह ईश्वर की चीज है - उसकी इच्छा है कि इसका जो चाहे, करे।"

"शायद ऐसा ही हो, लेकिन इससे कष्ट सहना कुछ सहज तो नहीं होता।" बड़े सूखे और भारी स्वर से सेंटक्लेयर ने यह बात कहकर मुँह फेर लिया। उसकी आँखों से आँसू भरे हुए थे। इवा ने उठकर पिता की गोद में अपना सिर रखते हुए कहा - "बाबा, तुम्हारी बातें सुनकर मेरा हृदय फटा जाता है। तुम इतना दुःख मत करो।" और वह फफक उठी।

इवा को रोते देखकर पिता को बड़ा भय हुआ। उसकी चिंता-धारा दूसरी ही ओर बह चली।

सेंटक्लेयर ने कहा - "मेरी बेटी इवा, अब शांत हो जा। मुझे भ्रांति हो गई थी, मैंने अन्याय किया है। तुम जो सोचने या करने को कहोगी, मैं वहीं सोचूँगा और वही करूँगा। तुम मेरे लिए दुःख मत करो। मैं ईश्वर को आत्म-समर्पण करूँगा। ईश्वर को दोष देकर मैंने बड़ा अन्याय किया है। अब फिर ऐसी बात मुँह से नहीं निकालूँगा।"

इवा बहुत थकी-सी होकर अपने पिता की गोद में पड़ी रही और वह उसे प्यारे-प्यारे शब्दों से सांत्वना देने लगा।

मेरी वहाँ से उठकर अपने सोने के कमरे में चली गई। वहाँ उसे बार-बार मूर्च्छा आने लगी।

इवा के पिता ने विषाद से मुस्कराकर कहा - "इवा बेटी, मुझे तो तुमने अपने बालों की एक भी लट नहीं दी।"

इवा ने हँसकर कहा - "बाबा, तुम्हारे तो सभी हैं। तुम्हारे और माँ के ही हैं। हाँ, बुआ जितनी लटें चाहें, उन्हें तुम दे देना। मैंने तो बस अपने दास-दासियों को अपने हाथ से दिए हैं, क्योंकि बाबा, तुम जानते हो, मेरे चले जाने के बाद उन्हें शायद कोई न देता... और मुझे आशा है कि इन बालों को देखकर वे मेरी याद जरूर करेंगे।..."

"बाबा, तुम क्रिश्चियन हो या नहीं?" इवा ने कुछ संदेह से पूछा।

सेंटक्लेयर ने जवाब दिया - "तुम ऐसा क्यों पूछती हो?"

इवा ने कहा - "तुम ऐसे भलेमानस होकर भी क्रिश्चियन नहीं हो, इस पर मुझे आश्चर्य है।"



सेंटक्लेयर ने पूछा - "क्रिश्चियन के क्या गुण होते हैं, इवा?"

इवा बोली - "जो क्राइस्ट को सब चीजों से अधिक प्यार करे।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "क्या तुम ऐसा करती हो, बेटी?"

इवा बोली "निःसंदेह!"

सेंटक्लेयर ने कहा - "तुमने तो कभी उसे देखा भी नहीं..."

इवा ने उत्तर दिया - "नहीं, देखने से क्या बनता-बिगड़ता है! मेरा उस पर विश्वास है, और कुछ दिनों में मैं उसे देख लूँगी।"

यह कहते-कहते इवा का मुख एक दिव्य आनंद से खिल उठा। सेंटक्लेयर ने फिर कुछ नहीं कहा। यह भाव उसने पहले अपनी माता में देखा था, पर स्वयं उसके हृदय में कोई ऐसा भाव नहीं था।

इसके बाद इवा का रोग दिन-दिन बढ़ता ही गया। अब उसके जीने की कोई आशा न रही।

मिस अफिलिया दिन-रात सिरहाने बैठी उसकी सेवा-शुश्रूषा करती थी। इस विपत्ति के समय उसकी असाधारण धीरता, बुद्धिमत्ता और शुश्रूषा में तत्परता को देखकर कोई भी उसे मन-ही-मन सराहे बिना नहीं रह सकता था।

टॉम अधिकतर इवा के कमरे में रहता था। वह कभी इवा को गोद में उठाकर बरामदे में टहलाता, कभी सवेरे की साफ ताजा हवा में घुमाने के लिए उसे बाग में ले जाता और कभी किसी पेड़ की छाया में बैठकर पहले की तरह इवा को उत्तम भक्ति के भजन सुनाता।

इवा का पिता भी प्रायः उसे गोद में लेकर घुमाता था, पर उसका शरीर विशेष सबल न होने के कारण वह जल्दी थक जाता था। तब इवा कहती - "बाबा मुझे टॉम की गोद में दे दो। वह मुझे गोद में लेना चाहता है, मेरे लिए कुछ भी करने में वह बड़ा प्रसन्न होता है।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "बेटी ऐसा ही मैं भी अनुभव करता हूँ।"

इवा की सेवा करने की इच्छा केवल टॉम ही को नहीं रहती थी, बल्कि घर के सभी सेवक उसके लिए हृदय से कुछ करना चाहते थे और उन बेचारों से जो-कुछ हो सकता था, करते भी थे।

इवा की सेवा करने के लिए मामी बहुत छटपटाती थी, पर उसे कोई अवसर ही नहीं मिलता था, क्योंकि दिन-रात मेरी उसे अपनी ही टहल-चाकरी से फुर्सत नहीं होने देती थी। मेरी कहती

कि कन्या की पीड़ा के कारण उसका मन बड़ा बेचैन हो गया है। उसकी यंत्रणा के मारे कोई चैन नहीं लेने पाता था। रात को भी मामी को कम-से-कम बीस बार जगाकर तंग करती थी - कभी पैर दबवाती, कभी सिर पर पानी डलवाती; कभी रूमाल ढुंढवाती। कभी कहती - जा, देखकर आ, इवा के कमरे में कैसा शोर हो रहा है। कभी कहती - रोशनी आ रही है, परदा डाल दे। कभी कहती - अँधेरा है, परदा उठा दे! वह दिन में भी मामी को, इवा के कमरे के अलावा इधर-उधर चारों ओर दौड़ाती ही रहती थी। इससे मामी कभी-कभी छिपकर पल भर के लिए इवा को देख आती थी।

एक दिन मेरी ने कहा - "इस समय अपने शरीर के विषय में विशेष सावधान रहना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। एक तो यों ही कमजोर हूँ, उस पर इवा की सेवा-शुश्रूषा और भार-सँभालने का सारा बोझ मुझपर है।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "अच्छा, क्या सचमुच ऐसा है? मैं तो समझता था कि बहन ने तुम्हें इससे छुट्टी दे रखी है।"

मेरी बोली - "ठीक है, तुम मर्द हो, अतः मर्दों की-सी बातें करते हो। तुम्हें पता ही नहीं कि संतान की पीड़ा माता के मन पर कैसा असर डालती है। भला ऐसी दशा में माँ का मन कैसे बेफिक्र हो सकता है? हाय, मेरे मन की दशा कोई नहीं समझता। सेंटक्लेयर, मैं तुम्हारी तरह बेपरवाह बनकर नहीं रह सकती।"

सेंटक्लेयर को मेरी की बात पर हँसी आ गई। इस दुःख के अवसर पर भी हँसी आने से सेंटक्लेयर को निर्दयी न समझा जाए। ऐसी उज्ज्वल शक्ति की लहरों में उसकी आत्मा की परलोक-यात्रा आरंभ हुई थी। ऐसी शीतल-मंद-सुगंध वायु के झोंके खाती हुई वह जीवन की क्षुद्र नौका स्वर्ग की ओर जा रही थी कि इस बात का ध्यान तक न आता था कि यह सब उसकी मौत के समान है। बालिका को कोई विशेष शारीरिक यंत्रणा न थी। अदृष्ट रीति से शनैः-शनैः उसकी निर्बलता बढ़ती जाती थी। शांति और पवित्रता की एक मधुर लहर बालिका के चारों ओर उछालें ले रही थी। उसके मुख की वह सात्त्विक ज्योति, हृदय की वह गंभीर स्नेह-राशि, आत्मा का वह जीवित विश्वास और प्राणों की वह स्थिर प्रफुल्लता देखकर किसी के भी हृदय में एक अद्भुत और नवीन शांति का विकास हो सकता था। यह शांति ईश्वर-निर्भरता के भाव से उत्पन्न शांति न थी, तो क्या आशा थी? असंभव! यह भूत-भविष्य से सर्वथा निराली, वर्तमान की एक शांतिमय अवस्था थी, यह शांति सेंटक्लेयर के मन को ऐसी सांत्वना देती कि अब उसे भयावह भविष्य को सोचने की इच्छा ही न होती।

अपनी आसन्न मृत्यु के संबंध में इवा के हृदय में जो पूर्वाभास था, उसे उसके विश्वासी परिचारक टॉम के सिवा और कोई न जानता था। पिता का हृदय दुखने के डर से इवा उससे अपनी दशा छिपाती ही थी, पर टॉम से वह अपनी कोई बात कहने में संकोच नहीं करती थी। मृत्यु के कुछ ही पूर्व जब शरीर से आत्मा का बंधन ढीला पड़ने लगता है तब हृदय को आप-ही-

आप मौत के पैरों की आहट मिल जाती है। इवा ने जब यह जान लिया कि मृत्यु बहुत निकट आ गई है तब उसने टॉम को यह बात बताई। उसी दिन से टॉम ने अपनी कोठरी में सोना छोड़ दिया। अब वह इवा के कमरे से लगे बरामदे में लेटा रहता था, जिससे कोई जरूरी काम हो तो वह तुरंत वहाँ पहुँच सके।

मिस अफिलिया ने एक दिन उससे कहा - "टॉम, तुम कूत्ते की तरह इधर-उधर क्यों पड़े रहते हो? मैं तो समझती थी कि तुम सभ्य आदमी की भाँति अपनी कोठरी में सोते होगे।"

टॉम बोला - "हाँ, मैं हमेशा अपने कमरे में ही सोया करता हूँ, पर अब..."

अफिलिया ने कहा - "अब क्या?"

टॉम ने उत्तर दिया - "जी, जरा धीरे बोलिए, कहीं सेंटक्लेयर साहब न सुन लें। आप जानती हैं कि दुलहे की खबर रखने के लिए किसी को जागना चाहिए।"

अफिलिया ने कहा - "तुम्हारे कहने का क्या मतलब है?"

टॉम बोला - "आप जानती हैं, बाइबिल में लिखा है, आधी रात के समय वहाँ बड़ा शोर-गुल हुआ - देखो, दुलहा आ पहुँचा। मिस फीली, मैं हर रात को उसी की बाट देखा करता हूँ। मैं यहाँ से हटकर नहीं सो सकता।"

अफिलिया ने कहा - "क्यों टॉम काका, तुम ऐसा क्यों सोचते हो?"

टॉम ने जवाब दिया - "मिस इवा मुझसे बहुत-सी बातें कहती हैं। आत्मा के पास परमात्मा अपना दूत भेजते हैं। मिस फीली, यह पवित्र बालिका जब स्वर्ग में जाने लगेगी तब स्वर्ग के द्वार खुल जाएँगे, हम सब लोग स्वर्ग की उज्ज्वल प्रभा का दर्शन पाकर कृतार्थ होंगे। मैं उस समय उसके पास ही रहना चाहता हूँ।"

अफिलिया बोली - "टॉम काका, क्या मिस इवा ने तुमसे कहा है कि और दिनों के बजाय आज उसे अधिक तकलीफ है?"

टॉम ने कहा - "नहीं, पर आज सवेरे उन्होंने मुझसे यह कहा कि मैं परलोक के बहुत पास पहुँच गई हूँ, देवदूत उन्हें संदेशा सुना गए हैं।"

रात के कोई दस बजे होंगे। उस समय मिस अफिलिया और टॉम के बीच ये बातें हुई। मिस अफिलिया बाहर का दरवाजा बंद करने आई थी।

मिस अफिलिया घबरानेवाली स्त्री न थी। सहज में उनका मन अधीर होनेवाला न था। पर टॉम की गंभीर विश्वासपूर्ण बात सुनकर वह बड़ी घबराई। और दिनों के बजाय उस दिन शाम से

ही इवा अधिक प्रसन्न और स्वस्थ दीख पड़ती थी। वह बिछोने पर बैठी सोच रही थी कि अपने गहने किसे देगी तथा अपनी पसंद की और-और चीजें किसे देगी। उस दिन बहुत दिनों के बाद इवा के शरीर में थोड़ी-सी फुर्ती दीख रही थी।

उस दिन शाम को कमरे में आने पर सेंटक्लेयर ने उसे और दिनों से स्वस्थ और सबल देखकर कहा - "इवा, आज बहुत अच्छी जान पड़ती है। बीमारी के बाद ऐसी प्रसन्न वह किसी दिन नहीं दिखाई दी थी।"

फिर रात को सोने के लिए जाते समय सेंटक्लेयर ने मिस अफिलिया से कहा - "बहन, ईश्वर की कृपा से आज इवा और दिनों से काफी अच्छी जान पड़ती है। आशा है, जल्दी ही ठीक हो जाएगी।" इतना कहकर सेंटक्लेयर अपने कमरे में जाकर बेफिक्री की नींद सो गया।

आधी रात हुई। सब सो रहे थे, पर अफिलिया की आँखों में नींद का नाम न था। वह बड़ी एकाग्रता से इवा के मुँह को निहार रही थी। पल-पल बदलते मुख के भाव देख रही थी। एकाएक इवा के चेहरे का भाव ऐसा बदला, मानो उसे लेने को स्वर्ग-दूत आ पहुँचे हों। यह अवस्था देखते ही मिस अफिलिया तत्काल दरवाजा खोलकर बाहर आई। टॉम बाहर बैठा था। रात को उसने पल भर के लिए भी आँखें बंद नहीं की थीं। अफिलिया ने उसे देखते ही कहा - "टॉम, जल्दी से डाक्टर को लाओ।"

टॉम उधर डाक्टर के यहाँ गया, इधर मिस अफिलिया ने आकर सेंटक्लेयर के दरवाजे की कुंडी हिलाई।

उसने कहा - "भैया, जल्दी बाहर आओ।"

इन शब्दों के कान में पड़ते ही सेंटक्लेयर को अपना दिल बैठता-सा मालूम हुआ। उसने समझ लिया कि सर्वनाश की घड़ी आ पहुँची। वह झटपट इवान्जेलिन के कमरे में पहुँचा। वहाँ जाकर देखा तो इवान्जेलिन के मुँह पर दुःख की कोई रेखा नहीं थी। सदा का-सा एकाग्र तथा मधुर भाव बालिका के मुख पर विराज रहा था। तब क्यों ऐसा लगा कि आज इवा की घड़ियाँ पूरी हो गई हैं? उसके शरीर में एकदम सूस्ती दौड़ गई थी, हाथ-पैर बर्फ के जैसे ठंडे हो गए थे। बस मुख-कमल, आध्यात्मिक ज्योति के कारण, ज्यों-का-त्यों खिला हुआ था, तनिक भी नहीं मुरझाया था।

टॉम जल्दी ही डाक्टर को लेकर पहुँच गया। डाक्टर ने मिस अफिलिया से पूछा - "यह हालत कब से है?"

अफिलिया ने जवाब दिया - "आधी रात के बाद से।"

सारे घर में शोर मच गया। सब लोग जाग उठे। बरामदे में भीड़ लग गई। घर में दौड़-धूप

की आवाजें सुनाई देने लगीं, परंतु सेंटक्लेयर ने किसी से न कुछ कहा, न सुना। वह चुपचाप एकटक निद्रित बालिका के मुँह की ओर ही ताकता रहा।

थोड़ी देर के बाद आप-ही-आप बोला - "बेटी एक बार जाग पड़ती... मैं एक बार और इस मुख की मधुर वाणी सुन लेता..."

यह कहकर उसने इवा के कान के पास मुँह ले जाकर कहा - "बेटी इवा!"

ये शब्द सुनकर उन दोनों सुधावर्षी सुदीर्घ नेत्रों का पर्दा हट गया। उसने सिर उठाकर बोलने की चेष्टा की, पर शरीर बेदम था।

सेंटक्लेयर ने कहा - "इवा, तू मुझे पहचानती है?"

बालिका ने अस्फुट स्वर में कहा - "बाबा।"

बड़े कष्ट से उसने अपनी छोटी-छोटी भुजाएँ उठाकर पिता के गले में डाल दीं। देखते-ही-देखते वे दोनों कोमल हाथ लटक गए। पल भर के लिए उसके चेहरे का भाव बदला। बस, यह अंतिम घड़ी थी। आत्मा देह को छोड़कर जाने की तैयारी में थी।... इवा के मुख-कमल पर पल भर के लिए यंत्रणा के चिह्न देखकर सेंटक्लेयर का धीरज जाता रहा। उसे कष्ट से साँस लेते देखकर बोल उठा - "अरे टॉम, यह सब सहा नहीं जाता... मेरे प्राण इवा का कोई भी दुःख नहीं सह सकते!... मेरी जान गई... तुम प्रार्थना करो, जिससे यह घड़ी टल जाए।"

टॉम की आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी। अपने मालिक की यह दयनीय दशा देखकर वह आकाश की ओर मुँह करके परमेश्वर से प्रार्थना करने लगा। विश्वास और भक्ति में भी कैसी अद्भुत शक्ति होती है! टॉम की प्रार्थना सुनी गई, पल भर में इवा की वह यंत्रणा दूर हो गई। टॉम बोल उठा - "धन्य भगवन्! धन्य पिता! सारी यंत्रणाओं के अंत का समय आ गया है!"

बालिका के वे दोनों सुदीर्घ नेत्र स्वर्ग की ओर देख रहे थे, मानो वह विशाल और स्थिर दृष्टि से पुकारकर कह रही थी - "संसार के सारे दुःख दूर हो गए।"

सेंटक्लेयर ने धीरे से कहा - "इवा!"

किंतु उसने नहीं सुना।

फिर उसके पिता ने कहा - "बेटी, तुम क्या देख रही हो?"

वह मुख कमल मधुर हास्य से जैसे खिल उठा। बालिका ने अस्फुट स्वर से कहा - "अहा, प्रेम-आनंद-शांति!" और उसके बाद देह जीवन-शून्य हो गई। आत्मा ने मृत्यु को पार करके अमरत्व प्राप्त कर लिया। निर्मल-प्रकृति देव-बाला ने पाप और अत्याचारपूर्ण संसार से कूचकर

भगवान की गोद में सहारा ले लिया।

### 30. मृत्यु के उपरांत

इवान्जेलिन की निर्मल आत्मा मंगलमय के मंगल-धाम को चली गई। जीवन से शून्य शरीर घर में पड़ा हुआ है। उसके शयनागार में रखी पत्थर की मूर्तियों और चित्र आदि को सफेद वस्त्रों से ढक दिया जाता है। घर में गहरा सन्नाटा है। बीच-बीच में पैरों की मंद-मंद आहट सुनाई पड़ जाती है। बंद खिड़कियों से बाहर की धुंधली रोशनी अंदर आकर घर के सन्नाटे को और भी बढ़ा रही है।

बिस्तर सफेद चादर से ढका पड़ा है और उसी पर वह नन्हें सोयी हुई है - ऐसी नींद में, जो कभी खुलने की नहीं।

बालिका की देह लतिका पहले की तरह श्वेत वस्त्रों में लिपटी हुई है। उषा की किरणें यवनिका को पार करके मृत्यु के पंजे में पड़े, शीत से जड़ शरीर पर प्रभा बिखेर रही हैं। सिर एक ओर को झुका हुआ है, मानो बालिका सचमुच सो रही हो। समग्र आनंद-व्यापिनी शोभा, आनंद और शांति की अपूर्व सम्मिलन-श्री देखने से ही पता लगता है कि यह नींद क्षणिक नहीं है। यह लंबी नींद आत्मा का अनंत-पवित्र विश्राम है।

इवा, तुम-सरीखी देवियों की मृत्यु नहीं होती, न मृत्यु की छाया है और न अंधकार। जिस प्रकार प्रातःकाल के प्रकाश में शुक तारा छिप जाता है, उसी प्रकार तुम लोगों की आँखों से ओझल हो गई हो। बिना युद्ध किए ही तुमने गढ़ जीत लिया है, बिना विरोध के राजमुकुट प्राप्त कर लिया है।

सेंटक्लेयर शय्या के पास खड़ा हुआ एकटक उसकी ओर देख रहा है, मानो वह किसी विचार में मग्न होकर कुछ सोच रहा हो, पर कौन जाने, क्या सोच रहा है... उसे चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार दिखाई दे रहा है।

रोडाल्फ और रोजा, दोनों मृत बालिका के कमरे और शय्या को भाँति-भाँति के फूलों से सजा रहे हैं। उनकी आँखों से आँसुओं की धार बह रही है।

कमरे में अब भी पहले दिन के फूलों के ढेर पड़े हैं। इवा की मेज पर यत्नपूर्वक सजाए

गुलदस्ते में केवल एक गुलाब की कली है। तभी रोजा एक डलिया भर फूल लेकर घर में आई, किंतु सेंटक्लेयर को सामने देखकर सम्मान से पीछे हट गई। सेंटक्लेयर ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, यह देखकर वह फिर आगे बढ़ी और मृत देह के चारों ओर फूलों को बड़ी सुघड़ता से सजा दिया। बालिका के सुंदर हाथ में एक सुगंधित पुष्प देकर वह चली गई। सेंटक्लेयर ऐसे देखता रहा, मानो कोई स्वप्न देख रहा हो।

इतने में टप्सी अपने अंचल में एक फूल छिपाए हुए वहाँ आई। रोते-रोते उसकी दोनों आँखें सूज गई थी। उसे देखते ही रोजा ने चुपके से कहा - "भाग-भाग, यहाँ तेरा क्या काम?"

टप्सी ने अंचल से एक अधखिला गुलाब का फूल निकालकर कातरता से कहा - "देखो, मैं यह कैसा सुंदर फूल लाई हूँ... मुझे जाने दो... मैं इसे वहाँ रखूँगी।"

रोजा ने दृढ़ता से कहा - "भाग जा!"

सहसा सेंटक्लेयर ने टोककर कहा - "उसे मत रोको, आने दो!"

रोजा पीछे हट गई। टप्सी ने धीरे-धीरे बिस्तर के पास आकर वह फूल उसके पैरों पर रख दिया और धरती पर लोटकर जोर-जोर से रोने-चीखने लगी। मिस अफिलिया वहाँ गई और उसे उठाकर समझाने की चेष्टा करने लगी, पर उसको सफलता न मिली। टप्सी रो-रो कहती थी - "मिस इवा, मिस इवा, मैं भी तुम्हारे साथ चलना चाहती हूँ... मुझे भी ले चलो।"

बालिका का मर्म-भेदी क्रंदन सुनकर सेंटक्लेयर का पथराया हुआ सफेद चेहरा एकदम सुर्ख हो गया। इवा की मृत्यु के बाद अब उसकी आँखों से आँसू गिरे।

मिस अफिलिया ने बड़े स्नेह से कहा - "टप्सी, रो मत। मिस इवा स्वर्ग में गई है।"

टप्सी ने सिसकते हुए कहा - "मुझे तो वह नहीं दिखाई पड़ती हैं।... अब मुझे वह कभी नहीं दिखाई पड़ेगी।"

पल भर के लिए सब चुप हो गए।

टप्सी ने फिर कहा - "मिस इवा मुझे प्यार करती थीं। उन्होंने स्वयं कहा था कि वह मुझे प्यार करती हैं। हाय, अब तो मेरा कोई भी नहीं रहा! अब मुझे कौन प्यार करेगा?"

सेंटक्लेयर ने ठंडी साँस लेकर मिस अफिलिया से कहा - "बहन, इवा टप्सी को सचमुच प्यार करती थी। तुम इस बेचारी बालिका को समझाकर शांत करो।"

मिस अफिलिया अश्रु-पूर्ण नेत्रों से टप्सी को घर से बाहर ले गई और उससे कहने लगी - "टप्सी, तू दुःखी मत हो, मैं तुझसे प्यार करूँगी। इवा ने मुझे प्यार करना सिखाया है। मैं उसके

जैसे दिल की तो नहीं हूँ, तो भी तुझे प्यार करूँगी, तुझे प्यार की निगाह से देखूँगी, अच्छी सीख दूँगी और अच्छे रास्ते पर लाने की चेष्टा करूँगी।"

मिस अफिलिया को सरलता और स्नेह से यों बोलते देखकर आज टप्सी का हृदय उसकी ओर खिंच गया। वास्तव में स्नेह की पहचान बहुत जल्दी हो जाती है। निश्छल प्रेम और सहज स्नेह के प्रभाव से पत्थर का हृदय भी मोम हो जाता है। टप्सी का परिवर्तन देखकर सेंटक्लेयर अपने-आप कहने लगा - "हाय, मेरी इवा! इस संसार में बहुत थोड़े दिन ही रहकर तूने कितना अच्छा काम कर दिखाया! पत्थर-से दिल को कोमल बना दिया। पर मैंने अपनी इतनी बड़ी जिंदगी बेकार ही गँवाई, कुछ भी नहीं किया! मैं ईश्वर के सामने ऐसे जीवन के लिए क्या जवाब दूँगा?"

दिन अच्छी तरह चढ़ आया। चारों ओर से आत्मीय जन आए, पड़ोसी आए, सारा घर भर गया। मधुर प्रतिमा इवान्जेलिन की देह को ताबूत में रखकर उसका मुँह बंद किया गया। बगीचे में जहाँ बैठकर इवा और टॉम बाइबिल पढ़ा करते थे, वहाँ उस ताबूत को दफन कर दिया गया। सेंटक्लेयर खड़ा होकर देखने लगा। वह सोचता था, यह स्वप्न है या सच्ची घटना! क्या सचमुच आज मेरी प्राणाधार इवा धरती में समा गई! नहीं, वह देवकन्या धरती में नहीं समाई। यह तो उसकी काया..., पुराना कपड़ा था। आज इवा ने पुराना चोला त्यागकर नए चोले में स्वर्ग को कूच किया है। कौन है, जो उसका अमरत्व मिटा सके? इवा मर नहीं सकती। अंतिम क्रिया पूरी हुई।

इवा की जननी मेरी विलाप करने लगी। घर के सारे दास-दासियों को असह्य शोक हुआ था, पर उन्हें अपने शोक में रोने-पीटने की फुरसत ही नहीं मिलती थी। मेरी सबका नाकों दम किए रहती थी। शायद वह समझती थी कि संसार में दुःख, शोक तथा प्यार और किसी के हृदय में प्रवेश नहीं कर सकता। यह सब केवल उसी की बपौती है। जब-तब मेरी कहा करती थी कि उसके स्वामी की आँखों से एक बूँद आँसू तक तो गिरा ही नहीं। वह एक बार भी उसे धीरज बँधाने नहीं आया। उसने एक बार भी उसके इस शोक में सहानुभूति प्रकट नहीं की, उसके स्वामी-जैसा कठोर हृदय आदमी इस संसार में दूसरा नहीं है।

कभी-कभी ये आँखें और कान मनुष्य को बड़ा धोखा देते हैं। ये दोनों इंद्रियाँ केवल बाहरी चीजों को देखती हैं। अंतःकरण का गूढ़ भाव नहीं देख पातीं। इसलिए जो लोग केवल बाहरी बातों पर दृष्टि डालकर भले-बुरे का फैसला कर लेते हैं, वे सहज में धोखा खा जाते हैं। मेरी का यह बाहरी रुदन सुनकर टॉम और अफिलिया के सिवा सेंटक्लेयर के घर के कई दास-दासी समझते थे कि इवा की मृत्यु का मेरी को ही सबसे अधिक दुःख है। सेंटक्लेयर के हृदय के गहरे शोक को टॉम सहज में जान गया। इसी से वह इवा की मृत्यु के उपरांत कभी अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ता था। कभी-कभी वह बड़े उदास भाव से इवा के कमरे में बैठता, उसकी छोटी बाइबिल को उठाकर खोलता और फिर बंद करता। यद्यपि उसमें से वह कुछ भी पढ़ता नहीं था, तथापि उस समय उसके हृदय में जैसी विकट यंत्रणा होती थी, इसे टॉम के सिवा और कोई नहीं समझ सकता था। ऐसे निःशब्द आंतरिक शोक से हृदय जितना जलता था, उसका शतांश भी मेरी की



बाहरी चिल्लाहट से नहीं जलता था।

कुछ दिनों बाद सेंटक्लेयर अपने बागवाले घर को छोड़कर परिवार सहित नगरवाले मकान में आ गया। अपने हृदय की असह्य शोक-यंत्रणा को घटाने के लिए वह हर समय किसी-न-किसी काम में लगा रहता। वह पहले की भाँति सब से हँसता-बोलता था। यदि वह शोक-चिह्न धारण न किए होता तो कोई जान भी नहीं सकता था कि उसकी संतान की मृत्यु हो गई है।

एक दिन मिस अफिलिया से मेरी ने शिकायत के ढंग से कहा - "बहन, सेंटक्लेयर भी क्या अजीब आदमी है! मैं समझा करती थी कि संसार में यदि सेंटक्लेयर किसी को सबसे अधिक प्यार करते हैं तो बस इवा को; पर वह उसे भी बड़ी जल्दी भूल गए जान पड़ते हैं। कभी भूलकर भी उसका नाम नहीं लेते। मैंने सोचा था कि उन्हें इसका बहुत दुःख होगा, पर मेरा यह खयाल गलत निकला।"

अफिलिया बोली - "बात यह है कि अथाह जल अंदर-ही-अंदर जोरों से बहा करता है।"

मेरी ने प्रतिवाद किया - "मैं इन बातों को नहीं मानती। ये सब कोरी बातें-ही-बातें हैं। यदि मनुष्य के मन में दुःख होगा तो वह उसे अवश्य प्रकट करेगा। बिना प्रकट किए रहा ही नहीं जाएगा। पर मनुष्य के मन में किसी बात के लिए दुःख होना दुर्भाग्य की निशानी है। भगवान ने यदि मुझे भी सेंटक्लेयर की भाँति निर्दयी बनाया होता तो मैं क्यों दुःख सहती। मुझमें थोड़ी ममता है, यही मेरी जान लिए लेती है।"

मामी ने कहा - "मेम साहब, आप यह क्या कहती हैं! बेचारे साहब दिन-ब-दिन शोक में सूखे जा रहे हैं। इवा की मृत्यु के उपरांत किसी दिन पेट भर भोजन नहीं किया।" फिर उसने आँसू बहाते हुए कहा - "मैं जानती हूँ कि साहब मिस इवा को कभी भूल नहीं सकते; साहब ही क्या, उस नन्हीं प्यारी बालिका को कोई भी नहीं भूल सकता।"

मेरी बोली - "यह सब होने पर भी वह मेरा कभी खयाल नहीं करते। उन्होंने मुझसे कभी सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं कहा। वह यह बात नहीं जानते कि पिता की अपेक्षा माँ को संतान का कितना अधिक दुःख होता है।"

मिस अफिलिया ने गंभीरता से कहा - "हर एक का हृदय ही अपने-अपने दुःख हो जानता है। दूसरे के दुःख को और कोई क्या समझेगा?"

मेरी बोली - "मैं भी यही समझती हूँ। मुझे जितना दुःख है, उसे दूसरा कौन समझेगा? इवा समझती थी, सो चली गई।" इतना कहकर वह अपने पलंग पर लेट गई और बड़ी बेसब्री से सिसकने लगी।

इधर ये बातें हो रही थीं, उधर सेंटक्लेयर की लाइब्रेरी के कमरे में और चर्चा चल रही थी।

पहले कहा जा चुका है कि इवा की मृत्यु के बाद टॉम सदा अपने मालिक के पीछे-पीछे लगा रहता था। आज सेंटक्लेयर अपनी लाइब्रेरीवाले कमरे में गया। टॉम बाहर बैठा बाट देखता रहा। जब देर होने पर भी वह बाहर न निकला तब टॉम धीरे-धीरे कमरे के अंदर गया। वहाँ जा कर देखा कि मालिक इवा की नन्हीं बाइबिल को मुख पर रखे हुए पड़े हैं। टॉम चुपचाप उनकी आराम-कुर्सी के पास जाकर खड़ा हो गया। सेंटक्लेयर उसे देखते ही उठ बैठा। टॉम के मुख की ओर आँखें फेरते ही दयालु सेंटक्लेयर का हृदय भर आया। सरलता और साधुता से परिपूर्ण टॉम का मुख-मंडल स्वामी के दुःख से एकदम मलिन पड़ गया। उस मुँह से कोई वाक्य नहीं निकला, पर मुख की कातरता और करुणा का भाव प्रभु के दुःख में स्पष्ट रूप से सहानुभूति प्रकट कर रहा था।

कुछ देर बाद सेंटक्लेयर ने कहा - "टॉम, इस संसार में सब-कुछ असार है।"

टॉम बोला - "मैं जानता हूँ प्रभु, सब-कुछ असार है, पर स्वर्ग की ओर, जहाँ इस समय हम लोगों की इवा है, ईश्वर की ओर निगाह रखने से कल्याण होगा।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "टॉम, मैं स्वर्ग की ओर निगाह डालता हूँ और ईश्वर की ओर देखने की चेष्टा करता हूँ, पर मुझे कुछ नहीं दिखाई देता। यदि कुछ दीख पड़ता तो मन को संतोष दिला सकता।"

टॉम ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा।

सेंटक्लेयर ने फिर कहा - "टॉम, मैं समझता हूँ कि निर्मल चरित्र शिशुओं को और तुम-सरीखे सरस और साधु-प्रकृति के लोगों को ही ईश्वर दिव्य दृष्टि देता है, हम-जैसों को नहीं; इसी से तुम लोग स्वर्ग की बातें जान सकते हो।"

टॉम बोला - "प्रभु, बाइबिल का मत है कि जो ज्ञान का अभिमान करते हैं और कानून की द्हाई देते हैं उन्हें ईश्वर के दर्शन नहीं होते। जिनका चित्त बालक की भाँति सरल है, उन्हीं को भगवान के दर्शन मिलते हैं।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "टॉम, बाइबिल पर मेरा विश्वास नहीं है। अपनी शंकालु प्रकृति के कारण किसी बात पर मेरा विश्वास नहीं जमता। मैं चाहता तो हूँ कि बाइबिल पर मेरा विश्वास जम जाए, पर ऐसा होता नहीं।"

टॉम ने कहा - "प्रभु, आप ईश्वर से प्रार्थना कीजिए कि हे भगवान! मेरे मन के संदेहों को दूर कर दो।"

टॉम की यह बात सुनकर सेंटक्लेयर स्वप्न में पड़े हुए मनुष्य की भाँति बोला - "कोई बात समझ में नहीं आती। क्या संसार का यह प्रेम, विश्वास और भक्ति सभी निरर्थक हैं? क्या मृत्यु

के साथ-साथ इन सबका नाश हो जाता है? क्या मेरी इवा नहीं? क्या स्वर्ग नहीं है? क्या ईश्वर नहीं? क्या कुछ नहीं है?"

टॉम ने घुटने टेककर कहा - "प्रभु, सब-कुछ है। मैं भली-भाँति जानता हूँ कि सब कुछ है। आप इन सब पर विश्वास करने की चेष्टा कीजिए, चेष्टा कीजिए।"

सेंटक्लेयर बोला - "तुमने कैसे जाना कि ईश्वर है? तुमने तो कभी ईश्वर को देखा नहीं।"

टॉम ने कहा - "मैंने अपनी आत्मा के अंदर उसे जाना है। इस समय भी वह मेरे अंदर है। प्रभु, जब मैं अपने बाल-बच्चों से अलग करके बेच डाला गया, उस समय एकदम निराश हो गया था। मेरे मन में तनिक भी बल न रहा और तब मैंने निराश होकर ईश्वर को पुकारा। इससे अकस्मात् मेरे मन में शक्ति पैदा हो गई और मेरे अंदर से आवाज आई कि 'टॉम, डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ।' इससे मेरे सारे दुःख दूर हो गए और हृदय में आशा जाग उठी। प्रभु, क्या अपने-आप मन में ऐसा भाव आ सकता है? अंदर बैठे हुए परमात्मा ने ही मेरे मन को बल दिया था।"

ये बातें कहते समय टॉम का हृदय भक्ति और प्रेम से भर गया। उसकी आँखों से पानी की गंगा-यमुना बहने लगीं। सेंटक्लेयर ने उसके कंधे पर सिर रखकर और उसके काले हाथ पकड़कर कहा - "टॉम, तुम मुझे प्यार करते हो?"

टॉम बोला - "प्रभु, यदि मेरे प्राण देने से भी ईश्वर में आपकी भक्ति और विश्वास हो जाए, तो यह दास अभी खुशी-खुशी अपने प्राण देने को तैयार है।"

सेंटक्लेयर ने द्रवित होकर कहा - "मेरे भोले भाई, मेरे लिए प्राण दोगे? मैं तो तुम्हारे-जैसे साधु और सहृदय मनुष्य के स्नेह के योग्य भी नहीं हूँ।"

टॉम बोला - "प्रभु, मेरी अपेक्षा ईश्वर आपको हजार गुना ज्यादा प्यार करते हैं।"

सेंटक्लेयर ने पूछा - "टॉम, यह तुम कैसे जानते हो?"

टॉम ने कहा - "मेरी आत्मा में इसका अनुभव होता है। प्रभु, मिस इवा मुझे बड़ी अच्छी तरह बाइबिल पढ़कर सुनाया करती थी। उसके बाद किसी ने नहीं सुनाई। आप थोड़ा-सा पढ़कर सुनाइए।"

सेंटक्लेयर ने बाइबिल में से लाजरस के उद्धार का वृत्तांत पढ़ा। टॉम भक्ति-भाव से हाथ जोड़कर उसे सुन रहा था। समाप्त होने पर सेंटक्लेयर ने पूछा - "टॉम, क्या तुम्हें ये सब बातें सच्ची जान पड़ती हैं?"

टॉम बोला - "प्रभु, मुझे ये सब बातें साफ दिखाई पड़ रही हैं।"

सेंटक्लेयर ने विभोर होकर कहा - "टॉम, मुझे तुम्हारी आँखें मिल जाती तो अच्छा होता।"

टॉम ने बड़ी विनम्रता से जवाब दिया - "ईश्वर आप पर अवश्य दया करेंगे।"

"लेकिन टॉम, तुम जानते हो कि तुमसे मेरा ज्ञान कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा है। मैं यदि तुमसे कहूँ कि मैं इस बाइबिल पर विश्वास नहीं करता तो इससे क्या तुम्हारे हार्दिक विश्वास को कुछ ठेस पहुँचेगी?"

"रत्ती भर भी नहीं।" टॉम ने कहा।

सेंटक्लेयर बोला - "क्यों टॉम, तुम तो जानते हो कि मैं तुमसे अधिक पढ़ा-लिखा हूँ।"

टॉम बोला - "प्रभु, अभी आप ही ने तो कहा है कि ईश्वर को वे लोग नहीं देख सकते, जिन्हें अपने ज्ञान का अभिमान है। बालकों-जैसे विश्वासियों को ही भगवान के दर्शन मिलते हैं। ज्ञान पड़ता है, आप मेरे हृदय की परीक्षा ले रहे हैं। ये आपके हृदय के सच्चे भाव नहीं हैं।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "हाँ, मैंने तुम्हारी परीक्षा के लिए ही ऐसा कहा था। मैं बाइबिल पर अविश्वास नहीं करता। इसमें शक नहीं कि धर्म-शास्त्र युक्ति-संगत है। पर खेद है कि मेरा स्वभाव बिगड़ा हुआ है।"

"प्रभु, प्रार्थना से सुधर जाएगा।" टॉम ने धीमे स्वर में कहा।

"टॉम, तुम कैसे जानते हो कि मैं प्रार्थना नहीं करता?" सेंटक्लेयर ने पूछा।

टॉम बोला - "प्रभु, क्या आप प्रार्थना करते हैं?"

"मैं अवश्य करता, पर किसके सामने करूँ, कुछ भी तो नहीं दिखाई देता। किंतु टॉम, तुम इस समय प्रार्थना करो, मैं सुनता हूँ।" सेंटक्लेयर ने एक साँस में कहा।

टॉम बड़े भक्ति-भाव से ईश्वर की प्रार्थना करने लगा। उसकी सरल प्रार्थना से सेंटक्लेयर का हृदय भर आया। प्रार्थना की धारा में उसका मन स्वर्ग की ओर बह चला। उसने प्रत्यक्ष ही अनुभव किया कि इवा अमृतमय की अमृत-गोद में विराज रही है।

टॉम की प्रार्थना समाप्त होने पर सेंटक्लेयर ने कहा - "टॉम, तुम जब-तब मेरे सामने ऐसे ही प्रार्थना किया करो। परंतु इस समय तुम मुझे थोड़ी देर एकांत में रहने की छुट्टी दो। मैं और किसी समय तुमसे अधिक बातें करूँगा।"

टॉम चुपचाप उस कमरे से चला गया।

### 31. पिता-पुत्री का पुनर्मिलन

समय किसी की बाट नहीं देखता। हफ्तों-पर-हफ्ते, महीनों-पर-महीने और वर्षों-पर-वर्ष निकले जा रहे हैं। संसार भर के नर-नारियों को अपनी छाती पर लादकर काल का प्रवाह अनंत-सागर की ओर दौड़ा जा रहा है। इवा की नन्हीं-सी जीवन-नौका भी अनंत-सागर में समा गई। दो-चार दिन घर-बाहर सभी ने शोक मनाया और आँसू बहाए, पर ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, लोग अपने दुःख को भूलते गए। सब अपने-अपने धंधों में लग गए। गाना-बजाना, खाना-पीना, सभी ज्यों-के-त्यों होने लगे। पर देखना यह है कि क्या सभी एक-से हैं? क्या सेंटक्लेयर के जीवन की गाड़ी भी उसी चाल से चल रही है?

इस संसार में केवल इवा ही सेंटक्लेयर के जीवन की सर्वस्व थी। इवा के लिए ही उसका जीना, इवा के लिए ही धन-संग्रह करना, इवा के लिए ही काम-काज, और इवा ही के लिए उसका सब-कुछ था। इवा के चले जाने से सेंटक्लेयर का जीवन लक्ष्य-शून्य हो गया। अब वह संसार में किसके लिए जिए और दुनिया के झंझटों में किसके लिए फँसे?

आशाएँ टूट जाने पर मनुष्य संसार में क्या सचमुच उद्देश्यहीन हो जाता है? क्या सांसारिक तृच्छ आशाओं के अतिरिक्त मानव-जीवन का अन्य कोई महान उद्देश्य नहीं है? नहीं यह बात नहीं। इन्हीं उद्देश्यों से आगे भी बहुत-कुछ है।

मानव-जीवन के महान उद्देश्य से सेंटक्लेयर अनभिज्ञ न था। इसी से उसका जीवन सर्वथा लक्ष्य-हीन नहीं हुआ, विशेषकर इवा के अंतिम शब्द हर घड़ी उसके कानों में गूँजते थे। सोते-जागते, उठते-बैठते, हर घड़ी इवा का वह स्मधुर वाक्य उसे याद आता। उसे हर समय यही दिखाई पड़ता, मानो इवा अपने नन्हें-नन्हें हाथों की अँगुलियों के इशारे से उसे जीवन-मार्ग का स्वर्गपथ दिखा रही है। पर उसका चिर-सहचर आलस्य और उसका वर्तमान शोक उसे कर्तव्य-मार्ग के स्वर्ग की ओर अग्रसर होने में बाधा डालता था। उसमें इन सब विघ्न-बाधाओं को पार करके जीवन के महान उद्देश्य की पूर्ति करने की शक्ति थी। यद्यपि वह देश में प्रचलित किसी प्रकार की धर्मोपासना में योग न देता था, तथापि वह बचपन से ही बड़ा सूक्ष्मदर्शी और भावुक था। उसके मन में सदा नए-नए भाव उठते रहते थे। वास्तव में इस संसार में कभी-कभी ऐसा होता है कि जो लोग लोक और परलोक की तनिक भी परवाह नहीं करते, बल्कि काम पड़ने पर उनके माननेवालों की निंदा तक करने से नहीं चूकते, उन्हीं के मुख से कभी-कभी धर्म के ऐसे

गूढ़-तत्त्व सुनने में आते हैं कि दंग रह जाना पड़ता है। मूर, बायरन और गेटे जन्म भर धर्म पर अपनी अनास्था ही दिखलाते रहे, पर उन्होंने धर्म के कई ऐसे जटिल तत्वों की, जिन्हें बहुत से धर्म-गुरुओं ने भी नहीं समझा, ऐसी सुंदर व्याख्या की कि देखते ही बनती है।

धर्म से सेंटक्लेयर को कभी द्वेष न था। पर वह जानता था कि धर्म-पालन खांडे की धार पर चलने के समान है। दुर्बल मन के मनुष्यों के लिए वह सर्वथा असाध्य है। धर्म को ग्रहण करके उसका पालन न करने की अपेक्षा तो यही अच्छा है कि धर्म के पचड़े में ही न पड़ा जाए। यही सोचकर वह सदा इन धर्म-चर्चाओं से अलग रहता था। पर अब उस धर्म के अनुसरण के सिवा उसके जीवन का और लक्ष्य ही क्या रह गया? अब वह इवा की छोटी बाइबिल को बड़े प्रेम से पढ़ने लगा। और दास-दासियों के विषय में अपने कर्तव्य की बात भी सोचने लगा। उसने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया कि इवा का कहना बिल्कुल सच था कि इन दास-दासियों को गुलामी की जंजीर से मुक्त कर देना ही ठीक है। अपने नगरवाले मकान में आते ही उसने सबसे पहले टॉम को दासत्व से मुक्त करने का पक्का निश्चय किया। इसके लिए उसने अपने वकील से मुक्तिपत्र का मसविदा बनाने को कहा। टॉम आजकल हर समय उसी के साथ लगा रहता था। टॉम इवा को बड़ा प्यारा था, इसलिए उसे देखकर जितनी जल्दी सेंटक्लेयर को इवा का स्मरण होता था, उतना और किसी को देखने से नहीं। इसी से टॉम को इवा के स्मृति-चिह्न की भाँति सेंटक्लेयर हर घड़ी अपने साथ रखता था।

एक दिन सेंटक्लेयर ने कहा - "टॉम, मैं तुम्हें दासता की बेड़ी से मुक्त कर दूँगा। तुम कैंटाकी के लिए तैयार रहना। अपना सामान ठीककर रखना।"

यह बात सुनते ही टॉम का चेहरा प्रफुल्लित हो गया। वह हाथ उठाकर बोला - "भगवान आपका भला करें!"

पर टॉम की इस प्रसन्नता के भाव से सेंटक्लेयर मन-ही-मन दुःखी हुआ। उसने यह नहीं सोचा था कि टॉम उसे छोड़कर जाने के लिए इतनी खुशी दिखाएगा।

उसने शुष्क स्वर में कहा - "टॉम, तुम्हें तो हमारे यहाँ कभी कोई तकलीफ नहीं हुई, फिर हमारा घर छोड़कर जाने की बात पर इतने खुश क्यों हुए?"

टॉम ने गंभीर होकर कहा - "प्रभु, यह आप का घर छोड़कर जाने की प्रसन्नता नहीं है। यह प्रसन्नता इस बात की है कि मैं स्वाधीन हो जाऊँगा।"

सेंटक्लेयर बोला - "स्वाधीन हो जाने की अपेक्षा क्या इस समय तुम यहाँ अधिक सुखी नहीं हो?"

टॉम ने कहा - "कभी नहीं!"

"टॉम," सेंटक्लेयर बोला - "जैसा अच्छा तुम यहाँ खाते-पीते हो और जिस आराम से रहते हो, उतने आराम से रहने के लिए तुम स्वाधीन होकर कमाई नहीं कर सकोगे।"

टॉम ने कहा - "स्वामी, किंतु स्वाधीनता स्वाधीनता ही है।... स्वाधीनता में मोटा-महीन, बुरा-भला जो कुछ मिले, सब अच्छा है। पराधीनता की मेवा-मिठाई भी किस काम की! इसी से कहा है, 'पराधीन सपनेहु सुख नाही।' यह मनुष्य का स्वाभाविक भाव है।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "मैं मानता हूँ, यही बात होगी; पर तुम्हें अभी यहाँ एक महीना और ठहरना होगा।"

"स्वामी, मैं आपको कष्ट में छोड़कर नहीं जाऊँगा। आप जब तक रखना चाहें, यह दास आपकी सेवा में रहेगा। यदि मेरा यह शरीर आपके किसी काम आ जाए, तो इससे अधिक सौभाग्य की बात मेरे लिए और क्या होगी?"

सेंटक्लेयर ने उदासीनता से बाहर की ओर नजर डालते हुए कहा - "टॉम, तुम मेरे इस कष्ट के दूर होने पर जाना। मेरा यह कष्ट कब मिटेगा?"

"जब ईश्वर में आपकी भक्ति होगी और धर्म में मन लगेगा।"

"तब तक तुम यहाँ ठहरना चाहते हो? नहीं-नहीं, मैं तब तक तुम्हें यहाँ नहीं रोक्कूँगा। तुम्हें शीघ्र ही छुट्टी दे दूँगा। तुम अपने घर पहुँचकर बाल-बच्चों से मिलना और उन्हें मेरा आशीर्वाद कहना।"

टॉम ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा - "स्वामी, मेरा अटल विश्वास है कि वह दिन शीघ्र ही आएगा और आप के हाथ से ईश्वर अपना कोई काम कराएगा।"

सेंटक्लेयर ने गद्गद होकर कहा - "मुझसे, ईश्वर का काम! अच्छा टॉम, बताओ, तुम्हारी समझ में वह कौन-सा काम है?"

"स्वामी, मैं तो निपट मूर्ख हूँ, किंतु परमेश्वर ने मुझे भी अपना काम करने को सौंपा है। फिर आप तो बहूत होशियार हैं, ऐश्वर्यवान हैं, बंधु-बांधवोंवाले हैं - चाहें तो ईश्वर के कितने ही प्रिय कार्य कर सकते हैं।" टॉम ने बड़ी भावना से कहा।

सेंटक्लेयर मुस्कराते हुए बोला - "टॉम, तुम्हारी समझ में क्या ईश्वर को अपने कुछ काम मनुष्य से कराने की जरूरत पड़ा करती है?"

"जरूर। हम जब किसी मनुष्य के लिए कुछ करते हैं तब वह ईश्वर के लिए ही करते हैं, क्योंकि सभी मनुष्य उसी प्रभु की संतान हैं।"

सेंटक्लेयर यह सुनकर अभिभूत हो उठा। बोला - "टॉम, तुम्हारा यह धर्म-शास्त्र हमारे यहाँ के पादरियों के मत से कहीं अच्छा जान पड़ता है।"

तभी कुछ लोग सेंटक्लेयर से मिलने आ गए। इससे उसकी और टॉम की बातें यहीं रुक गईं।

इवा के शोक में मेरी बड़ी ही अधीर हो गई थी। पर उसमें एक बहुत बड़ी बुराई थी कि जब वह किसी शोक के कारण दुःख से स्वयं अधीर होती थी, तब दास-दासियों को उससे सौगुना अधीर कर देती थी। इवा जीते-जी इस अत्याचार से दास-दासियों की रक्षा करने की चेष्टा किया करती थी; पर अब इन बेचारे निस्सहायों की रक्षा कौन करेगा? इसी से इवा के लिए दास-दासी बहुत दुःखित होते थे, विशेषकर मामी अपने बाल-बच्चों से अलग पड़े रहने के दुःख को इवा के कारण भूली हुई थी। अब इवा की मृत्यु के बाद वह दिन-रात चुपचाप रोया करती थी। इस दशा में उससे कभी-कभी मेरी की टहल में कुछ चूक हो जाती तो उसके लिए मेरी उसे सदा डाँटा करती थी।

मिस अफिलिया को इवा की मृत्यु बहुत दुःख दे रही थी; पर वह चुपचाप गंभीर-भाव से उस दुःख को सहन कर रही थी। वह पहले की भाँति सदा काम में लगी रहती थी। वह पहले की अपेक्षा अब अधिक यत्न से टप्सी को पढ़ाने-लिखाने लगी। वह अब टप्सी को अपनी कन्या की भाँति प्यार करती है, हल्की जानकर उससे घृणा नहीं करती। टप्सी का चरित्र भी धीरे-धीरे सुधरने लगा। यह नहीं कि वह एक ही दिन में भली बन गई हो। हाँ, इवा के आचरण से उसका मन बहुत-कुछ पलट गया था। पहले उसकी मानसिक जड़ता इस प्रकार की थी कि उस पर कोई उपदेश असर ही नहीं करता था, पर अब यह भाव दूर हो गया।

एक दिन, जब वह तेजी से अपने कपड़ों में कोई चीज छिपाए चली आ रही थी, रोजा ने तत्काल उसे पकड़कर कहा - "बोल इसमें क्या है? लगता है, तूने कोई चीज चुराई है! कपड़ों में जल्दी-जल्दी क्या छिपा रही थी?"

टप्सी अपनी छिपाई हुई चीज को दोनों हाथों से मजबूती से पकड़े हुए थी। हाथ छुड़ाने के लिए रोजा जोर से उसे खींचने लगी, पर टप्सी ने हाथ नहीं छोड़ा। वह जमीन पर लोटकर चिल्लाने लगी और साथ ही रोजा को एक लात जमा दी। टप्सी की चीख सुनकर अफिलिया और सेंटक्लेयर दोनों नीचे आए तो रोजा ने बताया कि इसने कुछ चुराया है। टप्सी ने सिसकते हुए कहा - "मैंने कुछ भी नहीं चुराया।"

मिस अफिलिया ने दृढ़ता से कहा - "तेरे हाथों में जो कुछ है, मुझे दे दे।"

पहले तो टप्सी ने देने में आनाकानी की, पर दुबारा माँगने पर उसने अपने कपड़ों में से एक फटे हुए मोजों की पोटली निकालकर उसके हाथ में पकड़ा दी। उसमें इवा की दी हुई एक



छोटी-सी पुस्तक और इवा के बालों की एक लट निकली। ये चीजें देखकर सेंटक्लेयर की आँखें भर आईं।

टप्सी रो-रोकर कहने लगी - "मेरी ये चीजें मुझसे मत छीनिए!"

सेंटक्लेयर की आँखों से आँसू बहने लगे। वह टप्सी को सांत्वना देकर बोला - "तेरी ये चीजें कोई नहीं लेगा।" इतना कहकर और वे चीजें उसे लौटाकर अफिलिया सहित वह तेजी से चला गया।

उसने अफिलिया से कहा - "बहन, मुझे जान पड़ता है कि अब तुम टप्सी का चरित्र सुधारने में सफल होवोगी। जिस हृदय में शोक और आघात लगता है, उसे सहज ही अच्छे रास्ते पर लाया जा सकता है। तुम्हें अब इसके साथ खूब कोशिश करनी चाहिए।"

अफिलिया ने कहा - "पहले से टप्सी बहुत सुधर गई है। मुझे अब इसके विषय में पूरी आशा हो गई है, पर मैं तुमसे एक बात पूछती हूँ कि यह है किसकी? तुम्हारी या मेरी?"

"क्यों? मैं तो इसे तुम्हें सौंप चुका हूँ!" विस्मय से सेंटक्लेयर ने कहा।

अफिलिया बोली - "नहीं, कानूनन वह मेरी नहीं है। मैं कानूनन उसे अपना बनाना चाहती हूँ।"

"बहन, तुम इसे कानूनन लेना तो चाहती हो, पर तुम्हारे यहाँ का दास-प्रथा विरोधी दल इसके लिए तुम्हारी निंदा करेगा।"

"इसमें क्या है, मैं वहाँ जाकर इसे स्वाधीन कर दूँगी। मैं इसके लिए इतना परिश्रम कर रही हूँ, यदि इसे अपने साथ न ले जा सकी तो मेरी सारी मेहनत बेकार चली जाएगी।"

"बहन, बाद को अच्छा नतीजा हासिल करने के लिए पहले एक बुरा काम करने का मैं तो अनुमोदन नहीं कर सकता।" सेंटक्लेयर ने विनोद भाव से कहा।

अफिलिया बोली - "हँसी-मजाक छोड़कर जरा सोचो! यदि उसे गुलामी से छुटकारा न दिया जा सके तो सारी धर्म-शिक्षा देना व्यर्थ है। तुम अगर इसे सचमुच मुझे देना चाहते हो तो एकदम पक्की लिखा-पढ़ी कर दो।"

सेंटक्लेयर ने कहा - "अच्छा-अच्छा, कर दूँगा।" यह कहकर उसने समाचार-पत्र पढ़ना आरंभ कर दिया।

अफिलिया बोली - "मैं चाहती हूँ, यह काम अभी हो जाए।"

"तुम्हें इतनी जल्दी क्या है?"

"जो काम करना है, उसके लिए यही उचित समय है। उसमें फिर देर का क्या काम? कहा भी है - 'काल्हि करै सो आजकर आज करै सो अब। पल में परलय होवेगी, बहुरि करेगा कब?' यह लो कलम-दवात और लिखना है सो अभी लिख दो।"

सेंटक्लेयर का स्वभाव आलसी था। उसने कुछ आना-कानी की, पर अफिलिया के सामने उसकी एक न चली। उसने तुरंत एक दान-पत्र लिखा और मिस अफिलिया को सौंपकर कहा - "लो, कहो, अब तो कुछ करना बाकी नहीं रहा?"

पर, इस पर किसी की गवाही भी तो होनी चाहिए।

"ओफ, मुसीबत का पार नहीं।" इतना कहकर सेंटक्लेयर ने दरवाजा खोलकर पुकारा - "मेरी, बहन तुम्हें गवाह बनाना चाहती है। जरा यहाँ आकर इस कागज पर दस्तखत तो कर देना।"

मेरी ने उस कागज को पढ़कर कहा - "यह कैसी मजाक की बात है! इसकी भी लिखा-पढ़ी! लेकिन मैं समझती थी कि दीदी अपनी धर्मभीरुता के कारण दास रखने जैसा बुरा काम नहीं करेंगी। पर खैर, अगर इसके लिए इनकी इच्छा है तो हम लोग बड़ी प्रसन्नता से इनके मन की बात पूरी करेंगे।"

इतना कहकर मेरी ने कागज पर हस्ताक्षर कर दिए और चली गई।

सेंटक्लेयर ने वह कागज अफिलिया को सौंपते हुए कहा - "आज से टप्सी के शरीर और आत्मा पर तुम्हारी मिलकियत हुई।"

अफिलिया बोली - "वह तो जैसी तब थी वैसी ही अब भी है। ईश्वर के सिवा और किसी की क्षमता नहीं कि उसे मुझे दे सके, पर अब मैंने उसकी रक्षा करने का अधिकार हासिल कर लिया है।"

"खैर, अब वह बनावटी कानून के अनुसार तुम्हारी चीज हुई।" यह कहकर सेंटक्लेयर अपने कमरे में चला गया। मिस अफिलिया उस कागज को यत्न से अपने संदूक में बंद करके सेंटक्लेयर के कमरे में चली गई। उसे मेरी के साथ देर तक बैठकर बातचीत करना अच्छा नहीं लगता था।

वहाँ जाकर मिस अफिलिया बुनने का सामान लेकर बैठ गई। उसने सहसा सेंटक्लेयर से कहा - "अगस्टिन, तुम्हारे बाद तुम्हारे गुलामों की क्या स्थिति होगी, इसका भी तुमने कोई बंदोबस्त किया है?"

"नहीं।"

"तब तुम्हारा उन्हें इस समय यह सब आराम देना व्यर्थ है, उल्टा यह उनके साथ बदसलूकी करना है।"

सेंटक्लेयर प्रायः इस विषय को स्वयं सोचा करता था; पर अभी तक उसने कोई बंदोबस्त नहीं किया था। उसने कहा - "मैं, इन लोगों के लिए कोई प्रबंध करूँगा।"

"कब?"

"इसी बीच में किसी दिन।"

"मान लो, यदि पहले ही तुम चल बसो तो?"

सेंटक्लेयर ने अपने हाथ का अखबार रखकर उसकी ओर देखते हुए कहा - "बहन, आखिर ऐसा क्या हुआ है? मेरे शरीर में क्या तुम्हें हैजे या प्लेग के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, जो तुम मेरे बिल्कुल अंतिम समय का बंदोबस्त किए जा रही हो?"

सेंटक्लेयर उठा और अखबार को किनारे रखकर धीरे-धीरे बरामदे की ओर चला गया। उसे ऐसी बातें अच्छी नहीं लगती थीं। इसी से वह उठ गया था। लेकिन आप-ही-आप यंत्र की भाँति उसके मुँह से 'मृत्यु' शब्द निकलने लगा। वह सोचने लगा कि जगत में कोई ऐसा आदमी नहीं, जिसकी मृत्यु न होगी। यह एक साधारण बात है फिर भी हम मृत्यु को भूले हुए हैं, यह बड़े आश्चर्य का विषय है। आज मनुष्य बड़ी-बड़ी आशाओं के पुल बाँध रहा है, घमंड से पागल हुआ जा रहा है। कल ही उसे मौत ने आ दबोचा, तो सदा के लिए छुट्टी। सारे विचार यों ही रखे रह जाएँगे।...

यह सब सोचते हुए जाते-जाते उसने बरामदे के दूसरी ओर टॉम को देखा। अपने सामने बाइबिल रखे हुए टॉम बड़े ध्यान से उसका एक-एक शब्द पढ़ रहा था। सेंटक्लेयर ने अलमस्त की तरह टॉम के पास बैठकर कहा - "टॉम, कहो तो मैं तुम्हें बाइबिल पढ़कर सुनाऊँ?"

टॉम ने कहा - "यदि प्रभु कृपा करके पढ़ें तो बहुत अच्छी बात है। आपके पढ़ने से बहुत साफ-साफ समझ में आएगी।"

सेंटक्लेयर ने पुस्तक उठा ली और उस स्थल को पढ़ने लगा, जहाँ टॉम ने बड़े-बड़े निशान लगा रखे थे। विषय था: "सारे देवदूतों से घिरे हुए ईश्वर-पुत्र जब सिंहासन पर बैठकर विचार करने लगेंगे, उस समय सब जातियाँ उनके सामने इकट्ठी होंगी। तब वह पुण्यात्माओं में से पापियों को छाँटेंगे। फिर उन पापियों को समुचित दंड लेकर कहेंगे, 'मृदु से दूर हो जाओ। मृदु प्यास लगने पर तुमने पानी नहीं दिया, भूखे होने पर अन्न नहीं दिया, नंगे होने पर वस्त्र नहीं

दिया और जेल में पड़े रहने पर मेरी सूध नहीं ली।' यह सुनकर पापी लोग कहेंगे, 'भगवान, हमने कब आपको भूखे, प्यासे, नंगे और जेल में पड़े देखकर आपकी सूध नहीं ली?' यह सुनकर वह कहेंगे, 'हमारे इन अत्यंत दीन-हीन भाइयों पर तुम लोगों ने जो अत्याचार किए हैं, सख्तियाँ की हैं, वे सब मुझपर ही हुई हैं।"

बाइबिल से ये बातें पढ़ते हुए सेंटक्लेयर का मन द्रवित हो उठा। उसने इन पंक्तियों को मन-ही-मन पढ़ा और एकाग्रता से सोचने लगा। फिर बोला - "टॉम, मेरे ही जैसे आनंद और सुख के जीवन बितानेवाले लोग, जो स्वयं मौज में हैं, मस्त हैं और भूख-प्यास से तड़प-तड़पकर मरनेवाले अपने दीन बंधुओं की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते, वही तो ईश्वर के विचार से दंड पाएँगे?"

टॉम ने इसका उत्तर नहीं दिया।

सेंटक्लेयर चिंता में डूबा हुआ बरामदे में इधर-उधर टहलने लगा। वह विचारों में इतना खो गया कि उसे चाय की घंटी की आवाज भी सुनाई नहीं दी। टॉम ने दो बार घंटी की याद दिलाई, तब जाकर वह चाय पीने गया। चाय पीने के समय भी वह चिंता-मग्न था। चाय के बाद वह, उसकी स्त्री और मिस अफिलिया चुपचाप बैठक में आए।

आते ही मेरी पलंग पर लेट गई और देखते-देखते सो गई। अफिलिया बुनने में लग गई। सेंटक्लेयर पियानो के पास जाकर धीरे-धीरे एक करुण धुन बजाने लगा। वह उस समय भी चिंता-शून्य न था। उसे देखकर जान पड़ता था, मानो वह बाजे के अंदर बैठकर स्वयं बोल रहा है। कुछ देर बाद उसने दराज से एक पुरानी पुस्तक निकाली और उसके पन्ने उलटते-उलटते मिस अफिलिया से बोला - "इधर आओ, यह मेरी माँ की पुस्तक है। यह देखो, मेरी माताजी के हस्ताक्षर हैं।"

अफिलिया उठकर उसके निकट आई।

सेंटक्लेयर ने कहा - "माँ यह गीत प्रायः गाया करती थी। ऐसा जान पड़ता है, मानो इस समय मैं माँ का गीत सुन रहा हूँ।" इतना कहकर सेंटक्लेयर ने एक पुराना, बड़ा गंभीर, लैटिन गीत गाया।

टॉम बरामदे में बैठा था। गाना सुनकर वह दरवाजे के पास आकर खड़ा हो गया। गाने का अर्थ कुछ भी उसकी समझ में नहीं आया, पर गाने और बजाने की धुन पर उसका हृदय रीझ उठा, विशेषतः उस समय जब सेंटक्लेयर उस गीत का करुण अंश गाने लगा। फिर तो वह एकदम मोहित हो गया।

गीत समाप्त होने पर सेंटक्लेयर सिर पर हाथ रखकर स्थिर चित्त से कुछ सोचने लगा। कुछ देर बाद उठकर घर में टहलने लगा। फिर मिस अफिलिया के पास आकर बोला - "बहन,

परलोक-संबंधी विश्वास मनुष्य के हृदय में कैसी अनोखी शांति ला देता है। केवल शांति ही नहीं, यह विश्वास मनुष्य को संसार के अत्याचार, अन्याय और सब प्रकार के कष्ट सहने में समर्थ बनाता है। इस विश्वास के बल पर आशा लगी रहती है कि कभी तो एक दिन आएगा जब सारे दुःखों का अंत होगा।"

अफिलिया ने कहा - "पर, हम लोगों-जैसे पापियों के लिए यह भयंकर वस्तु है।"

सेंटक्लेयर बोला - "हाँ, मेरे लिए तो सचमुच ही भयंकर है। मैं आज टॉम को बाइबिल से परलोक के विचार के संबंध में पढ़कर सुना रहा था। पढ़ते-पढ़ते मेरा कलेजा थर्रा उठा। मेरा खयाल था कि बुरा काम करना ही पाप है, और बहुत बुरे कामों के फल से ही लोग स्वर्ग से वंचित रहते हैं, पर बाइबिल का यह मत नहीं है। वास्तव में अच्छे काम न करना ही घोर पाप है, इसी पाप के लिए परलोक में दंड भोगना पड़ता है।"

अफिलिया ने कहा - "मैं समझती हूँ कि जो अच्छा काम नहीं करता, उसे बुरा काम करना ही पड़ेगा। सत् और असत्-दो ही मार्ग ठहरे, तीसरा कोई मार्ग ही नहीं है। इच्छा हो, सन्मार्ग से जाओ, नहीं तो असन्मार्ग से जाना ही पड़ेगा।"

सेंटक्लेयर व्याकुल-चित्त से आप-ही-आप कहने लगा - "तो-तो जिस आदमी ने समाज के अभावों को जानने और जोरों से उनका बखान करते हुए भी अपने मन और अपनी उच्च शिक्षा को समाज की भलाई में नहीं लगाया, जिसने बिल्कुल उदासीन दर्शक की भाँति सैकड़ों मनुष्यों की यंत्रणा और दुर्दशा देखकर भी कार्य-क्षेत्र में पैर नहीं रखा, और जो स्वप्न-सागर में बह रहा है, उसके संबंध में क्या कहा जाएगा?"

अफिलिया ने कहा - "मैं तो कहती हूँ कि उसे अपनी पिछली बातों को भूलकर इसी क्षण कर्म में लग जाना चाहिए।"

सेंटक्लेयर ने मुस्कराकर फिर कहा - "बहन, तू ठीक-ठिकाने पर असल काम की बात को कहती हो। तू मुझे सोचने-विचारने का जरा भी समय नहीं देना चाहती। तू मेरी भावी चिंता के प्रवाह को घुमा-फिराकर वर्तमान की ओर ले आती हो, तुम्हारी आँखों के सामने एक विराट वर्तमान पड़ा हुआ है।"

अफिलिया बोली - "मेरा तो यह मत है कि जो कुछ करना हो, वह अभी कर डालना चाहिए। जो घड़ी सामने है, उसके सिवा और किसी घड़ी पर मनुष्य का अधिकार नहीं है।"

सेंटक्लेयर ने धीरे से कहा - "उस प्यारी नन्हीं इवा ने, मुझे काम में लगाने के लिए, मेरी भलाई के लिए, जी जान से यत्न किया था।"

इवा की मृत्यु के संबंध में सेंटक्लेयर ने कभी अधिक चर्चा नहीं की थी; पर आज अत्यंत

गहरे शोक को बलपूर्वक दबाकर ये बातें कह ही डालीं। फिर कहा - "धर्म के विषय में मेरा यह मत है कि कोई मनुष्य उस समय तक धर्मात्मा कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता, जब तक कि वह सब प्रकार के सामाजिक और राजनैतिक अत्याचारों, दुःखों और कष्टों को दूर करने के लिए अपना उत्सर्ग नहीं करता, जब तक देश में प्रचलित सारी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने का यत्न नहीं करता और संसार का दुःख-दारिद्र्य दूर करने की चेष्टा नहीं करता। मनुष्य तभी धर्मात्मा कहा जा सकता है, जब वह संसार के समस्त नर-नारियों को समान अधिकार दिलाने के संग्राम के लिए कमर कस ले और उस संग्राम में जीवन की मोह-ममता छोड़कर प्राण-विसर्जन करने को तैयार हो जाए। पर यहाँ तो जो धर्म-प्रचारक कहलाते हैं, जिन्होंने लोगों को धर्मात्मा बना देने का बीड़ा उठा रखा है, वे निर्बलों पर सबलों के अत्याचारों एवं अन्यायों की तथा सारी सामाजिक बुराइयों की उपेक्षा करते हैं। यही कारण है कि समझदारों को उनके कार्यों पर आस्था नहीं रहती।"

मिस अफिलिया बोली - "यदि तू यह सब जानते-बूझते हो, तो फिर तूम्हीं ये सब काम क्यों नहीं करते?"

सेंटक्लेयर ने कहा - "मैं जानता-बूझता सब हूँ, पर मेरी सहृदयता यहीं तक है कि मैं स्वयं कुछ करूँगा-धरूँगा नहीं। दूध से सफेद बिस्तर पर पड़ा रहूँगा और पादरियों की, चाहे वे सब-के-सब धर्मवीर ही क्यों न हों, चाहे वे सत्य के लिए प्राण ही देनेवाले क्यों न हों, निंदा करता रहूँगा और उनपर वाक्य-बाण बरसाता रहूँगा। दूसरों को कर्तव्य के पीछे, धर्म के पीछे, प्राण तक दे डालने चाहिए, इसे मैं खूब समझता हूँ; और जो अपना कर्तव्य-पालन नहीं करते, उनकी निंदा भी खूब करना जानता हूँ। पर कुछ भी कहो, मुझसे वह नहीं होने का।"

अफिलिया ने कहा - "अब आगे से क्या तुम्हारे जीवन का दूसरा ढंग होगा?"

सेंटक्लेयर बोला - "आगे की भगवान जाने! हाँ, पहले से अब साहस बढ़ गया है, क्योंकि अब सोने-खाने को कुछ रहा नहीं, सब कुछ हार चुका और जिसका हाथ खाली है उसे विपत्ति का क्या डर?"

"तो तुम क्या करना चाहते हो?"

"मैं अपने दास-दासियों को दासता से मुक्त करके उनकी उन्नति की चेष्टा करूँगा। फिर धीरे-धीरे ऐसा उपाय सोचूँगा जिसमें देश भर से यह बुरी प्रथा उठ जाए।"

"क्या तुम सोचते हो कि पूरा देश अपनी इच्छा से इस प्रथा को छोड़ देगा?"

"यह तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन हाँ, आजकल स्वेच्छा से त्याग और निःस्वार्थ प्रेम के दृष्टांत बहुत जगह देखे जाते हैं। उस दिन यूरोप में हंगरी के जमींदारों ने लाखों की हानि सहकर प्रजा का कर माफ कर दिया। उनकी प्रजा बिल्कुल पराधीन थी। उसे स्वाधीनता दे दी गई। क्या

हमारे देश में ऐसे दो-चार सहृदय मनुष्य नहीं मिलेंगे, जो जातीय गौरव और न्याय के लिए अर्थ की हानि को सहर्ष सहन कर लें?"

मिस अफिलिया ने गंभीर होकर कहा - "मुझे विश्वास नहीं होता। अंग्रेज जाति बड़ी अर्थ-पिशाच होती है, बल्कि फ्रेंच इनसे अधिक सहृदय होते हैं।"

सैंटकलेयर बोला - "न मालूम क्यों, मुझे बार-बार अपनी माता की याद आ रही है। ऐसा लग रहा है, मानो वह मेरे बहुत पास है।"

यह कहकर वह कुछ देर घर में टहला, फिर हाथ में टोपी लेकर यह कहता बाहर निकल गया - "जरा बाहर घूम आऊँ और आज की खबरें भी सुनता आऊँ।"

टॉम तुरंत उसके पीछे-पीछे हो लिया। सैंटकलेयर ने उसे देखकर कहा - "तुम्हारे साथ जाने की जरूरत नहीं है। मैं जल्दी ही लौटूँगा।"

टॉम बरामदे में आकर बैठ गया। उस समय रात के नौ बजे थे। चांद की शीतल चांदनी धरती पर चारों ओर छिटकी हुई थी। टॉम वहीं बैठा-बैठा सोचने लगा - अब उसकी गुलामी की बेड़ी टूटने में ज्यादा देर नहीं है। वह दस-पाँच दिनों में ही घर चला जाएगा। सोचते-सोचते उसे अपने स्त्री-पुत्रों की याद हो आई, मन में नई-नई आशाएँ उठने लगीं। सोचने लगा कि अपने शरीर की मेहनत से धन कमाकर वह अपने पत्नी और बच्चों को भी गुलामी से छुड़ा लेगा। इस विचार के आते ही उसके हृदय में आनंद की लहरें उठने लगीं। फिर अपने मालिक सैंटकलेयर की सहृदयता का स्मरण करके उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया। इसके कुछ देर बाद उसे इवा की याद आई। जान पड़ा, मानो स्वर्ग की देव-बालाओं से घिरी हुई इवा उसके सामने खड़ी है। यों ही सोचते-विचारते टॉम को नींद ने आ घेरा। स्वप्न में उसे दिखाई पड़ने लगा कि नाना प्रकार की पुष्प-मालाएँ धारण किए इवा उसके पास आ रही है। उसका मुख-कमल चमक रहा है, उसकी दोनों आँखों से अमृत की वर्षा हो रही है, पर ज्योंहि उसने उसके मुख की ओर देखा, वह स्वर्ग की ओर उड़ी, उसके कपोलों पर लालिमा छा गई। उसकी आँखों से दैवी ज्योति निकलने लगी और पल भर में वह अंतर्ध्यान हो गई।

तभी उसकी आँख खुल गई। जागते ही उसने घर के द्वार पर बहुत से लोगों का शोरगुल सुना। उसने सपाटे से जाकर दरवाजा खोला। देखा, कुछ लोग कपड़ों से ढकी हुई एक लाश लिए खड़े हैं। मृत व्यक्ति के मुख की ओर दृष्टि जाते ही टॉम निराशा और दुःख के मारे चीख उठा। जो लोग उस व्यक्ति को कंधे पर लादकर लाए थे, उन्होंने घर में जाकर, जहाँ अफिलिया बैठी थी, वहाँ से उतारकर लिटा दिया।

संध्या के समाचार-पत्र पढ़ने के लिए सैंटकलेयर किसी चाय-खाने में गया था। वहाँ बैठकर जब वह पत्र पढ़ रहा था तो उसने देखा कि दो भलेमानस शराब के नशे में मतवाले हुए आपस

में मार-पीट कर रहे हैं। सेंटक्लेयर तथा और दो-एक अन्य व्यक्ति उन्हें छुड़ाने की चेष्टा करने लगे। इनमें से एक के हाथ में तेज छुरा था। वह छुरा एकाएक सेंटक्लेयर की बगल में घुस गया। वह तत्काल मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। कुछ लोगों ने उसे कंधे पर उठाकर उसके घर पहुँचा दिया।

सेंटक्लेयर की यह दशा देखकर घर के सारे दास-दासी रोने-चीखने लगे। सबकी बुद्धि चकरा गई। कोई जमीन पर लोट-लोटकर रोने लगा। कोई पागल की तरह चीखता हुआ इधर-से-उधर दौड़ने लगा। केवल मिस अफिलिया और टॉम मन को साधकर सेंटक्लेयर को होश में लाने के लिए भाँति-भाँति के उपाय करने लगे। अफिलिया के कहने से टॉम ने तत्काल बिस्तर बिछा दिया और सेंटक्लेयर को उस पर लिटाकर दवा दे दी। कुछ देर के बाद सेंटक्लेयर को चेत हुआ। वह आँखें मलकर एक-एक करके सबको देखने लगा। अंत में कमरे में टँगी अपनी माता की तस्वीर पर जाकर उसकी दृष्टि अटक गई। वह एकटक उसी की ओर देखने लगा।

शीघ्र ही डॉक्टर आया और घावों की जाँच करने लगा। डॉक्टर के चिंतित चेहरे को देखकर लोगों ने समझ लिया कि उसके जीने की कोई आशा नहीं है। डॉक्टर घावों पर पट्टी बाँधने लगा। टॉम और मिस अफिलिया दोनों बड़े धीरज से सेंटक्लेयर की सहायता करने लगे। सब दास-दासी वहीं बैठे-बैठे रोते रहे। डॉक्टर ने कहा कि बीमार के पास शोरगुल नहीं होना चाहिए। इन दास-दासियों को कमरे से बाहर करके इसको एकांत में रखना चाहिए।

इसी समय सेंटक्लेयर ने फिर आँखें खोलीं। जिन दास-दासियों को डॉक्टर और अफिलिया ने बाहर चले जाने को कहा था, उनके चेहरों की ओर देखते हुए ठंडी साँस लेकर उसने कहा - "अभागो गुलामों!"

ये शब्द मुँह से निकलते समय ऐसा जान पड़ता था, मानो उसके हृदय में आत्मग्लानि की आग धधक रही है। एडाल्फ नाम का दास वहाँ से किसी तरह जाने को राजी न हुआ, वहीं धरती पर लोट गया। दूसरे दास-दासियों को जब मिस अफिलिया ने बहुत समझाया, तब वे अनिच्छापूर्वक वहाँ से हटे।

सेंटक्लेयर की बोली एकदम रुक गई। वह आँखें बंद किए पड़ा रहा। उसके चेहरे से मालूम हो रहा था, मानो दुःसह अनुताप की आग में उसका हृदय जल रहा है। टॉम उसकी बगल में घुटने टेककर बैठा हुआ था। सेंटक्लेयर ने कुछ देर बाद टॉम के हाथ पर हाथ रखकर कहा - "टॉम! दुःखी टॉम!"

टॉम ने बड़ी व्याकुलता से कहा - "स्वामी, क्या चाहते हैं?"

सेंटक्लेयर ने उसका हाथ दबाते हुए कहा - "मेरे जाने का समय आ गया है। प्रार्थना करो।"



यह सुनकर डाक्टर ने कहा - "किसी पादरी को क्यों न बुला लिया जाए?"

सेंटक्लेयर ने सिर हिलाकर असहमति प्रकट की और टॉम से फिर कहा - "टॉम, प्रार्थना करो।"

परलोकगामी आत्मा के कल्याण के लिए टॉम भारी हृदय से बड़ी व्याकुलतापूर्वक प्रार्थना करने लगा। टॉम की प्रार्थना समाप्त होने पर भी सेंटक्लेयर उसका हाथ पकड़े हुए उसकी ओर देखता रहा, पर कुछ बोल न सका। धीरे-धीरे उसकी आँखें मूँदने लगीं, लेकिन टॉम का हाथ वह थामे ही रहा। अंतिम साँस तक स्नेह के साथ वह काले हाथ को पकड़े रहा।

उसका शरीर एकदम निस्तेज हो गया, मृत्यु की मलिन छाया ने उसके मुख-मंडल को ढक लिया, किंतु इस मलिन छाया के साथ-साथ उसके मुख पर मधुर कांति छा गई। ऐसा जान पड़ा मानो स्वर्ग से किसी दयालु आत्मा ने अकस्मात् उतरकर शांति की मृदुल प्रभा से उसके मुख-मंडल को अनुरंजित कर दिया है।

अंतिम समय सेंटक्लेयर के मुँह से कोई बात नहीं निकली। बस 'माँ' कहते ही उसके प्राण निकल गए। लगा, जैसे अपनी माता को सामने देखकर दुधमुँहा बच्चा उसकी गोद में कूद पड़ा।

## 32. मेरी की क्रूरता

गुलामों के मालिक के मर जाने पर या कर्जदार हो जाने पर गुलामों पर बड़ी विपत्ति आया करती है। इस दशा में पहले मालिक के उत्तराधिकारी या उनके महाजन इन अभागों, असहाय तथा अनाथ गुलामों को प्रायः नीलाम कर डालते हैं। उस समय माता की गोद से बालक को और स्वामी के पास से स्त्री को अलग होना पड़ता है।

जिस बच्चे के माँ-बाप मर जाते हैं और उनका पालन-पोषण उसके आत्मीय जन करते हैं, उसे देशप्रचलित कानून के अनुसार, मनुष्य के अधिकारों से वंचित नहीं होना पड़ता। पर क्रीत दासों को किसी प्रकार के मानवीय स्वत्व प्राप्त नहीं है। घर की दूसरी वस्तुओं की भाँति इनका भी क्रय-विक्रय होता है।

सेंटक्लेयर की मृत्यु से उसके दास-दासी बहुत सोच में पड़ गए। सभी के मन में चिंता होने लगी कि आगे न जाने कैसे निर्दयी के हाथ में पड़ना पड़ेगा। सेंटक्लेयर का-सा दयालु मालिक दास-प्रथा के चलन के इस देश में मिलना एकदम मुश्किल है। ऐसे सहृदय मालिक को खोकर

दास-दासियों को कितना शोक हुआ होगा, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

मेरी सेंटक्लेयर ने अपने को छूट दे-देकर शरीर और मन को बिल्कुल निकम्मा कर लिया था। अतः स्वामी की मृत्यु के समय धीरे-धीरे उसकी परिचर्या करना तो दूर, उसके सामने खड़ी भी न हो सकी। भय के कारण वह बार-बार बेहोश होने लगी। जिसके साथ मेरी पवित्र बंधन में बँधी थी, वह पत्नी से कुछ कहे बिना ही सदा के लिए बिदा हो गया।

मिस अफिलिया ने अंतिम समय तक तन-मन से सेंटक्लेयर की सेवा-शुश्रूषा की। अफिलिया के सिवा इन बेचारे गुलामों पर और कोई करुणा की दृष्टि डालनेवाला न था। इसी से सब-के-सब अब व्याकुल-चित्त से मिस अफिलिया की ओर देखते थे।

जिस समय सेंटक्लेयर की लाश कब्र में दफनाई जाने लगी, उस समय उसकी छाती पर एक स्त्री का छोटा-सा चित्र और उसी के पीछे एक गुच्छा बालों का लगा हुआ मिला। गाड़ने के समय वह सैकड़ों आशाओं का, स्वप्नमय तरुण जीवन का, स्मृति-चिह्न उसके निष्प्राण वक्षस्थल पर ही रख दिया गया।

टॉम का मन परलोक की चिंता में डूब गया। एक बार भी उसके मन में यह बात न आई कि सेंटक्लेयर की आकस्मिक मृत्यु के कारण अब उसे जन्म भर के लिए दासता की बेड़ियों में ही जकड़े रहना पड़ेगा। उसने मालिक की मृत्यु के समय बड़े भक्ति-भाव और विश्वास के साथ परमात्मा की प्रार्थना की। उसे इस बात का विश्वास हो गया कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। इससे उसे अंदर-ही-अंदर बड़ी शांति प्राप्त हुई।

काले वस्त्रों के आडंबर, पादरियों की अभ्यस्त प्रार्थना और बाह्य गंभीरता के साथ सेंटक्लेयर की अंत्येष्टि-क्रिया समाप्त हुई। फिर सदा से जो होता आया है, वही प्रश्न सबके सामने आया - इसके बाद क्या करना होगा?

उदास दास-दासियों से घिरे, शोकसूचक काले वस्त्रों के नमूने देखते हुए, मेरी के मन में यही सवाल पैदा हुआ। मिस अफिलिया के मन में यह बात उठी तो उसने उत्तर में अपने पिता के घर लौट जाने की ठानी। पर उन अनाथ गुलामों के मन में यह प्रश्न उठते ही उनकी जान सूख गई। अब जिसके हाथ में उनकी लगाम आई थी, उसकी कठोरता किसी से छिपी न थी। वे खूब जानते थे कि अब तक वह सेंटक्लेयर के कारण ही उनपर अत्याचार नहीं करने पाती थी, पर अब जान बचने की कोई सूरत न रही।

सेंटक्लेयर की अंत्येष्टि-क्रिया के पंद्रह दिन बाद की बात है। एक दिन मिस अफिलिया अपने कमरे में बैठी हुई कुछ काम कर रही थी, इतने में किसी ने धीरे-से उसका दरवाजा खटखटाया। उसने दरवाजा खोल कर देखा कि बाहर वर्ण-संकर सुंदरी युवती रोजा खड़ी है। उसके बाल बिखरे हुए थे और रोते-रोते उसकी आँखें सूज गई थीं।

रोजा मिस अफिलिया के पैरों पर गिर पड़ी और उसके कपड़े का कोना पकड़कर रोते-रोते कहने लगी - "मिस फीली, मेरी तरफ से मेरी मालकिन को कुछ कहिए, मेरी जान बचाइए। वह बेंत लगवाने के लिए मुझे दंड-गृह भेज रही हैं। यह देखिए!" इतना कहकर उसने मिस अफिलिया के हाथ में एक कागज थमा दिया। इस कागज में दंड-गृह के अध्यक्ष को लिखा गया था कि रोजा को पंद्रह कोड़े लगाए जाएँ।

मिस अफिलिया ने कहा - "बात क्या थी?"

रोजा बोली - "मिस फीली, आप जानती हैं, मेरा मिजाज बड़ा खराब है। मुझे जरा सी बात में गुस्सा आ जाता है। मैं मालकिन का कपड़ा अपने बदन पर पहन कर देख रही थी। इस पर उन्होंने मेरे गाल पर एक थप्पड़ जमा दिया। इससे मुझे गुस्सा आ गया। बिना सोचे-विचारे जो भला-बुरा मेरे मुँह से निकला, मैं बक गई। इस पर मालकिन ने कहा, 'देख, अब तेरा सिर चढ़ना कैसे उतारती हूँ। तब तू समझेगी कि मैं कौन हूँ। तेरा यह घमंड अधिक दिन तक नहीं टिकेगा।'।"

कागज हाथ में लिए हुए खड़ी मिस अफिलिया सोचने लगी।

रोजा ने कहा - "मिस फीली, देखिए, मैं मार से नहीं डरती। यदि मालकिन या आप घर बिठाकर पचास बेंत लगावें तो कोई शर्म नहीं। पर मर्द के पास भेजना, और वह भी ऐसे भयंकर नीच के पास - कैसी शर्म की बात है!"

मिस अफिलिया ने पहले भी यह सुन रखा था कि गुलामी की प्रथावाले प्रदेशों में, दासों के मालिक युवती दासियों को बड़ी नीच प्रकृतिवाले पुरुषों के पास दंड देने को भेजते हैं। इन अभागिनों को इस तरह दंड मिलने में लज्जा, शील और यहाँ तक कि मनुष्यता को भी तिलांजलि दे देनी पड़ती थी। पर इस प्रकार दंड मिलने से स्त्रियों को कैसा भयंकर कष्ट होता था, यह बात कानों से सुनकर भी हृदय में बैठी नहीं थी। आज भय और दुःख से थर-थर काँपती हुई रोजा को देखकर सब बातें हृदय में अंकित हो गईं।

घृणा से मिस अफिलिया का चेहरा लाल हो गया। किंतु उसने कागज को मजबूती से अपने हाथ में थाम रख रोजा से कहा - "बच्ची, तुम यहाँ बैठो। मैं तुम्हारी मालकिन के पास जाती हूँ।"

अफिलिया ने मेरी के पास जाकर देखा, वह कुर्सी पर बैठी हुई है, उसकी आँखें अधखुली हैं। मामी पीछे खड़ी उसके बाल झाड़ रही है और जेन जमीन पर बैठी उसके पैर दबा रही है।

मिस अफिलिया ने उससे पूछा - "कहिए, आज आपकी तबीयत कैसी है?"

सुनते ही मेरी ने ठंडी साँस लेकर आँखें बंद करते हुए कहा - "जैसी हमेशा रहती हूँ वैसी ही हूँ।" यह कहकर उसने एक बढ़िया रूमाल से आँखें पोंछीं।

मिस अफिलिया ने इस ढंग से, जैसे कोई मुश्किल बात कहता हो, सूखे गले से कहा - "मैं रोजा के बारे में तुमसे कुछ कहने आई हूँ।"

अब मेरी की आँखें खुल गईं, मुँह लाल हो गया। कर्कश स्वर में बोली - "रोजा के बारे में क्या कहना है?"

"वह अपने अपराध के लिए बहुत पछता रही है।"

"पछता रही है! पछता रही है? इसका क्या माने! अभी उसे बहुत पछताना पड़ेगा। मैं थोड़े में छोड़नेवाली नहीं हूँ। मैंने बहुत दिनों तक इस छोकरी की धृष्टता सही है। अब मैं इसे दुरुस्त करूँगी, धूल में मिला दूँगी।"

"क्या तुम उसे और किसी प्रकार की सजा नहीं दे सकती हो, जो इससे कम लज्जाजनक हो?"

"मेरा तो मतलब ही उसे शर्म दिलाने से है।... यही तो मैं चाहती हूँ। यह छोकरी जन्म से ही शेखी के मारे ऐँठकर अपनी असलियत को भूल गई है। अब मैं इसकी सारी शेखी और अकड़ निकाल दूँगी।"

"पर बहन, सोचकर देखने की बात है। किसी जवान लड़की की लज्जा नष्ट करना, उसके पतित होने के मार्ग को साफ कर देना है।"

घृणा के साथ हँसकर मेरी ने कहा - "लज्जा! मैं उसे बताऊँगी कि फटे कपड़े पहनकर राह में जो स्त्रियाँ ठोकरें खाती फिरती हैं, उनसे वह किसी तरह अच्छी नहीं है... मेरे सामने उसकी अब शेखी नहीं चलेगी।"

मिस अफिलिया ने जोर के साथ कहा - "इस निर्दयता के लिए तुम्हें ईश्वर के यहाँ जवाब देना पड़ेगा।"

"निर्दयता? मुझे बताओ, इसमें क्या निर्दयता है? मैंने तो बस पंद्रह कोड़े लगाने को लिखा है, सो भी हल्के-हल्के। मैं इसमें कुछ भी निर्दयता नहीं देखती।"

मिस अफिलिया ने कहा - "निर्दयता नहीं है? मेरा विश्वास है कि इस दंड की अपेक्षा स्त्रियाँ मृत्यु को कहीं अच्छा समझेंगी।"

मेरी बोली - "तुम्हारे जैसा दिल जिसका है, उसमें ऐसा भाव आ सकता है, पर इन दासियों को ऐसा दंड भोगने का अभ्यास है। उनकी अकल को ठिकाने रखने का यही एकमात्र उपाय है। एक बार माफ कर देने से तो ये सिर पर चढ़ जाते हैं। मैं अब तक इन्हें छोड़ती रही हूँ, इसी से

ये बिगड़ गए। मैं अब इन्हें ठीक करूँगी। जो कसूर करेगा, उसे तुरंत दंड-गृह में कोड़े लगवाने भेज दूँगी।"

जेन, जो मेरी के पैर दबा रही थी, यह बात सुनकर एकदम चौंक उठी। उसने सोचा, यह अंतिम बात उसी को सुनाकर कही गई है। शायद रोजा के बाद उसी की बारी आए।

मिस अफिलिया को मेरी की बात पर बड़ा क्रोध आया। उसका शरीर काँपने लगा। पर उसने सोचा, उसके साथ झगड़ा करने का कोई नतीजा न होगा। वह वहाँ से उठकर अपने कमरे में चली गई। रोजा के दुःख से वह इतनी दुखी हुई कि लौटकर रोजा से यह बात नहीं कह सकी कि मेरी ने उसकी बात नहीं मानी।

कुछ देर के बाद एक काला गुलाम मेरी की आज्ञा से रोजा को पकड़कर दंड-गृह में ले गया। रोजा रोई-चिल्लाई, पर मेरी का वज्र-हृदय न पसीजा।

एडाल्फ पर मेरी खार खाए हुई थी। परंतु सेंटक्लेयर की वजह से किसी दास-दासी पर उसका बस न चलता था, इसी से अब तक एडाल्फ को किसी प्रकार का दंड न दे सकी थी। सेंटक्लेयर की मृत्यु से एडाल्फ एकदम निराशा के सागर में डूब गया। अब वह हरदम मेरी के डर से काँपा करता था। मेरी ने सेंटक्लेयर के भाई अल्फ्रेड और अपने वकील से सलाह करके निश्चय किया कि वह सेंटक्लेयर के मकान और सब गुलामों को बेच डालेगी। बस उन गुलामों को जो उसके निजी हैं, अपने साथ लेकर पिता के घर जा कर रहेगी। एडाल्फ ने यह बात सुन ली। इसलिए एक दिन टॉम से जाकर कहा - "टॉम, क्या तुम्हें मालूम है कि मालकिन हम लोगों को बेच डालेंगी?"

टॉम ने पूछा - "तुमने किससे सुना?"

एडाल्फ बोला - "मेरी जब वकील से बातें कर रही थी, तब मैंने पर्दे की ओट से सब बातें सुनी थीं। टॉम, अब कुछ ही दिनों में हम लोग नीलामघर भेज दिए जाएँगे।"

टॉम ने ठंडी साँस लेकर कहा - "जो ईश्वर की मर्जी होगी।"

एडाल्फ बोला - "अब ऐसा दयालु मालिक नहीं मिलेगा। लेकिन इस मालकिन के पास रहने से तो दूसरे के हाथ बिकना ही अच्छा है।"

टॉम घूमकर खड़ा हो गया। उसका हृदय विषाद से भरा हुआ था। कहाँ तो वह स्वाधीन होने की खुशियाँ मना रहा था, और शीघ्र ही अपने बाल-बच्चों से मिलने की आशा में फूले न समाता था और कहाँ यह एकाएक विपत्ति का पहाड़ उस पर टूट पड़ा! नाव किनारे लगते-लगते डूब गई! आजाद होने की जो आशाएँ उसने सँजो रखी थीं, वे धूल में मिल गईं। टॉम स्वाधीनता को बड़ा मूल्यवान समझता था, फिर भी ईश्वर के भरोसे उसने धीरज न छोड़ा। उसने ऊपर को सिर

उठाया और हाथ जोड़कर कहने लगा - "प्रभो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो!" पर यह वाक्य कहते समय उसका हृदय विदीर्ण होने लगा।

कुछ देर बाद वह मिस अफिलिया के कमरे में गया। इवा की मृत्यु के उपरांत मिस अफिलिया टॉम पर विशेष स्नेह रखती थी।

टॉम ने कहा - "मिस फीली! मालिक सेंटक्लेयर ने मुझे गुलामी से मुक्त कर देने का वचन दिया था। वकील से इस मामले में उन्होंने मसविदा बनाने को भी कह दिया था। अब आप मालकिन से कहें तो वह मालिक के वचनों को पूरा कर सकती हैं।"

मिस अफिलिया बोली - "टॉम, मैं तुम्हारे लिए कहूँगी, भरसक प्रयत्न करूँगी, पर मुझे आशा नहीं कि मेरी कुछ करेंगी। कोशिश बेकार ही होगी।"

टॉम को विदा करके मिस अफिलिया सोचने लगी कि शायद रोजा के लिए अनुरोध करते समय मेरे मुँह से कुछ कठोर बातें निकल गई थीं। इसी से उसने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। आज मैं उसे मीठी-मीठी बातों से राजी करूँगी। शायद इस तरह वह टॉम को छोड़ने पर राजी हो जाए। यह सोचकर वह मेरी के कमरे में गई।

मेरी खाट पर लेटी हुई थी और जेन उसे तरह-तरह के काले कपड़ों के नमूने दिखा रही थी। मेरी ने उन नमूनों में से एक चुनकर कहा - "यह ठीक है, लेकिन मैं कह नहीं सकती कि यह पूरी तरह शोकसूचक होगा या नहीं।"

जेन ने कहा - "आप क्या कहती हैं? अभी उस दिन जनरल डरबन के मरने पर उनकी मेम ने यही कपड़ा पहना था। पहनने पर साहब यह बहुत जोरदार लगता है। इससे दर्शकों का मन खिंच उठता है।"

मेरी ने मिस अफिलिया से कहा - "आपकी समझ में यह कपड़ा कैसा है?"

मिस अफिलिया बोली - "यह अपने-अपने यहाँ की रीति पर निर्भर है। मेरी अपेक्षा तुम इस बात को अच्छी तरह जानती हो।"

मेरी ने कहा - "असल में मेरे लायक एक भी पोशाक नहीं है, पर अगले ही हफ्ते मैं जानेवाली हूँ। इससे कोई एक पसंद कर लेना है।"

मिस अफिलिया ने कहा - "तुम इतनी जल्दी जाओगी?"

मेरी बोली - "हाँ, अल्फ्रेड और वकील की राय है कि घर का माल-असबाब तथा दास-दासी सबको नीलाम कर डालना ही ठीक है।"

मिस अफिलिया ने गंभीर स्वर में कहा - "मैं तुमसे एक बात कहनेवाली थी। अगस्टिन ने टॉम को आजाद कर देने का वचन दिया था, यहाँ तक कि उसके लिए मसविदा बनवाने की भी बातचीत हो गई थी। मैं आशा करती हूँ कि तुम वकील से जल्दी ही आजादी की सनद लिखवा लोगी।"

"नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं करूँगी। टॉम के पूरे दाम आएँगे। वह इस तरह कैसे भी नहीं छोड़ा जा सकता। फिर उसे आजादी की ऐसी जरूरत ही क्या है? आजाद होने पर वह मौजूदा हालत से अच्छा तो रह न सकेगा।"

"पर आजाद होने की उसकी बड़ी इच्छा है, और उसके मालिक ने उसे आजाद कर देने का वचन दिया था।"

"हाँ, टॉम की यह इच्छा हो सकती है। ये लोग तो जन्म भर असंतुष्ट ही बने रहते हैं। जो इन्हें नहीं मिलता, उसकी ये बराबर इच्छा किया करते हैं। मैं सदा से गुलामी को खत्म करने के खिलाफ हूँ। जब तक ये हब्शी किसी मालिक की अधीनता में रहते हैं तब तक अच्छे रहते हैं। लेकिन आजादी मिलते ही ये आलसी हो जाते हैं। शराब पीना आरंभ कर देते हैं। नीचे गिरते चले जाते हैं। मैंने सैकड़ों बार यही बात देखी है। इन्हें आजाद करने में इनका भला नहीं, उल्टे इनका बिगाड़ करना है।"

मिस अफिलिया बोली - "पर टॉम तो भलामानस, मेहनती और धार्मिक है।"

"ओह, मुझे तुम्हारे समझाने की जरूरत नहीं है। मैंने ऐसे सैकड़ों देख डाले हैं। सौ बात की एक बात यह है कि वे गुलामी में ही अच्छे रहते हैं।"

"पर खयाल करो, जब तुम इसे नीलाम करोगी तब हो सकता है कि कोई बेरहम आदमी इसे खरीद ले जाए।"

"ये सब फिजूल की बातें हैं। नौकर अच्छा हो तो सैकड़ों में एक भी मालिक बुरा नहीं मिलता। मालिकों की लोग नाहक झूठी शिकायत करते हैं। मैं जन्म से इसी दक्षिणी क्षेत्र में हूँ। पर अब तक ऐसा एक भी मालिक नहीं देखा, जो अपने दासों के साथ अच्छा व्यवहार न करता हो। मैं इस पर विश्वास नहीं करती कि टॉम का होनेवाला मालिक उससे बेरहमी का बर्ताव करेगा।"

अफिलिया ने कहा - "खैर, मैं जानती हूँ कि तुम्हारे पति की अंतिम इच्छा टॉम को मुक्त कर देने की थी। उसने इवा की मृत्यु के समय उससे भी इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि टॉम को बहुत शीघ्र आजाद कर दिया जाएगा। कोई कारण नहीं कि तुम अपने स्वामी और कन्या की इच्छा को इस तरह ठुकरा दो।"

मेरी ने रूमाल से अपना चेहरा ढक लिया और सिसक-सिसककर रोने लगी। बेहोशी के डर से बार-बार एमोनिया की शीशी सूँघते-सूँघते भरे हुए गले से कहने लगी - "जो आता है, मूँझसे ही लड़ने चला आता है। कोई मेरे दुःख का खयाल नहीं करता। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम मुझे शोक की याद दिलाकर कटे पर नमक छिड़कने आओगी। तुम्हें भी मुझे ही सताने की सूझी। तुम्हें मेरा जी दुखाने में तनिक भी दया नहीं आई! पर मेरी सोचता कौन है? मेरी दशा को समझता कौन है? सबको अपने-अपने सुख की पड़ी है। मेरी एक लड़की थी, उसे भी भगवान ने उठा लिया। उसके बाद मेरे पति चल बसे। तुम्हारे मन में जरा भी मोह-माया नहीं है। इसी से तुमने भी मेरी बेटी और स्वामी की मौत की बात कहकर मेरे दुःख की आग में घी डाल दिया।"

मेरी और जोर-जोर से रोने लगी। बेहोशी के लक्षण दिखाई देने लगे। वह मामी से कहने लगी - "अरे खिड़की खोल दे! कपूर की शीशी ला! मेरे सिर पर पानी डाल। मेरे कपड़े ढीले कर दे।"

चारों ओर बड़ा शोर मचा। इसी बीच मिस अफिलिया किसी तरह जान बचाकर अपने कमरे की ओर भागी।

मिस अफिलिया ने देखा कि मेरी से बहस करना फिजूल है। बेहोशी बुलाने की उसमें अदभुत क्षमता है। इसके बाद जब कभी दास-दासियों के संबंध में सेंटक्लेयर और इवा की इच्छा की चर्चा की जाती, वह बखेड़ा कर देती थी। मिस अफिलिया ने टॉम के छुटकारे का कोई उपाय न देखकर मिसेज शेल्वी को टॉम के दुःख की सारी बातें साफ-साफ लिख दीं और उसे शीघ्र छुड़ा ले जाने का विशेष अनुरोध किया।

इसके दूसरे ही दिन, टॉम, एडाल्फ तथा दूसरे छः दास नीलाम करने के लिए नीलाम-घर भेज दिए गए।

### 33. गुलामों की बिक्री के हृदय-विदारक दृश्य

"गुलामों के बेचने की आदत?" शायद यह नाम सुनकर ही लगे कि यह बड़ा विकट स्थान होगा और माल गोदामों की तरह न मालूम कितना अंधकार से भरा और मैला-कुचैला होगा। पर नहीं, यह बात नहीं है। सभ्यता की उन्नति के साथ-साथ लोग सभ्य प्रणाली और चतुराई से बुरे काम करना सीखते हैं। दासों का व्यापार करनेवाले इस बात की बड़ी फिक्र रखते थे कि मानव-संपदा, अर्थात् जीवात्मा-रूपी माल के दाम बाजार में किसी प्रकार कम न आएँ। वे लोग बिकने के पहले



गुलामों को अच्छा खाने और अच्छा पहनने को देते थे। उन्हें कोई रोग न होने पाए, इस ओर भी उनका पूरा ध्यान रहता था। इसी से गुलामी का धंधा करनेवाले आदतिए अपने स्थानों को बड़ा साफ-सुथरा रखते थे। इन आदतघरों के सामने सजे-सजाए खुले बरामदे होते थे। वहाँ गुलामों को एक कतार में खड़ा किया जाता था। बाहरी आदमी देखते ही समझ लेता था कि इस घर में नर-नारियों का सौदा होता है। खरीदारों को आदतिए बड़ी आव-भगत से बुलाकर गुलामों को दिखाते थे। पर अंदर जाकर लोग देखते थे कि स्वामी, स्त्री, पिता, माता, बालक - ये एक-दूसरे से सदा के लिए बिछड़ जाने की बात सोच-सोचकर बिलख रहे हैं। पति के कंधे पर सिर रखकर स्त्री कह रही है - "हे ईश्वर अब जन्म भर के लिए हम लोगों का बिछोह हो जाएगा। ईश्वर करे, हम दोनों को एक ही आदमी खरीद ले।" कहीं स्त्री का कंधा पकड़कर पति कह रहा है - "मेरा यह जीवन वृथा है। मैंने क्यों यह नर-तन पाया?" बच्चे को हृदय से चिपकाकर माँ बार-बार उसका मुख चूमती है और सिर पीटकर कहती है - "हे भगवान, तूने मुझे संतान क्यों दी? मृत्यु, तू कहाँ छिप गई है?" बच्चे मजबूती से अपनी माताओं के कपड़े पकड़े हुए हैं। सोचते हैं, बस, वे कपड़े पकड़े रहेंगे तो उन्हें कोई अलग नहीं कर सकेगा। इन दृश्यों को देखकर पत्थर का कलेजा भी पिघल जाता है। पर उन अर्थलोलुप नर-पिशाच अंग्रेज बनियों के हृदय की कठोरता की कोई हद नहीं है।

जो मानव-आत्मा अमृत की अधिकारी है, विश्वपति की अमृतगोद जिसके लिए खुली हुई है, धन के लोभ से आज उन्हीं आत्माओं के सौदे हो रहे हैं। यह घृणित सौदा करनेवाली वही गोरी जाति है, जो सभ्यता की लंबी-लंबी डींगें हाँकती है और दूसरी जातियों को ठग बताकर स्वयं बड़ी शहंशाह बनती है।

टॉम और एडाल्फ के सिवा सेंटक्लेयर के और भी आधे दर्जन दास-दासी स्केग नामक आदतिए के यहाँ पहुँचाए गए। वहाँ और भी बहूतरे दास-दासी आए हुए थे। इन सबको हर समय खुश रखने के लिए आदत के मालिकों की बड़ी चेष्टा रहती थी। उदास मुख देखने से कहीं ग्राहक कम दाम न लगाएँ, इसी लिए भाँति-भाँति के उपायों से इन्हें हँसाने का यत्न किया जाता था। चारों ओर हँसी-मजाक तथा तमाशे हो रहे थे। पर क्या टॉम-जैसे आदमी को इस दशा में हँसी आ सकती थी? एक तो इवा और सेंटक्लेयर का शोक ही उसके हृदय को साल रहा था, उस पर उसकी यह दुर्दशा हो रही थी! कोई भी, जिसमें आत्मा है, इस दशा में हँस नहीं सकता था।

टॉम दूसरे दास-दासियों से कुछ दूर घर के एक कोने में, अपने संदूक का सहारा लेकर बैठ गया। वह बहुत ही उदास था, पर आदतवाले किसी को उदास बैठने देनेवाले न थे। वे इन्हें खुश रखने के लिए बजाने को बाजा देते और नाचने-गाने का हुक्म देते थे। इनमें जो दुःख के कारण हँसी-खुशी मनाने में असमर्थ होते, वे 'बदमाश' गिने जाते थे। इन सब बदमाशों को नाना प्रकार का दंड भोगना पड़ता था। खरीदारों के सामने जो हँसते हुए खड़े न होते, उनकी जान मुसीबत में कर दी जाती थी।

स्केग की आदत का सहकारी कार्याध्यक्ष सांबो नामक एक हब्शी था। यह सदा सबको खुश

करने की फिक्र में रहता था और जिनको उदास बैठे पाता, उनपर कोड़े फटकारता था। पूछा जा सकता है कि हब्शी होकर वह यह अपने स्वजातीयों पर इतना अत्याचार क्यों करता था? बात यह है कि संसार में जो जाति पराधीन और पराजित होती है, उस जाति के लोगों का पतन हो जाता है। वे परम स्वार्थी और नीच हो जाते हैं। स्वयं कोई पद या अधिकार पा जाने से वे भिन्न जातीय मालिक को खुश करने के लिए खुशामद के मारे अपने ही भाइयों को अकारण सताने में अपनी शान और बड़प्पन समझते हैं। इसी से यहाँ सांबो अपने ही भाइयों पर जो अत्याचार करता था, उसके लिए हम उसे अपराधी नहीं समझते।

सांबो ने जब देखा कि टॉम अलग एक कोने में उदास बैठा है, तो वह फौरन उसके पास पहुँचकर बोला - "तुम क्या कर रहे हो?"

टॉम ने शांति से कहा - "कल मेरी नीलामी होगा।"

उसको हँसाने के लिए सांबो खिलखिलाकर हँसते हुए बोला - "हमारी भी कल नीलामी होगा।"

सांबो ने समझा कि उसने एक बड़े मजाक की बात कही है और टॉम इस पर जरूर हँस पड़ेगा। इसके बाद सांबो एडाल्फ के कंधे पर हाथ रखकर बोला - "इन सब लोगों की कल नीलामी होगी।"

एडाल्फ ने छिटककर कहा - "मेहरबानी करके मुझसे अलग रहो।"

इस पर सांबो बोला - "बाप रे बाप! यह तो गोरा हब्शी है। इसे तो तमाखूवाले के यहाँ तमाखू बेचने बैठा दिया जाए, तो बड़ा अच्छा रहे।"

एडाल्फ ने गुस्से में भरकर कहा - "तुमसे कहता हूँ कि हट जाओ। क्या नहीं हटोगे?"

"हमारे गोरा हब्शी लोगों को बड़ा जल्दी गुस्सा आता है।" यह कहकर वह हाथ नचा-नचाकर एडाल्फ की नकल करने लगा और व्यंग्य से बोला - "मालूम होता है, यह किसी बड़े आदमी के यहाँ था।"

"हाँ, मैं जिसके यहाँ था, वह तेरे जैसे छप्पन गुलाम खरीद सकता था।"

"बाबा, तब तो वह कोई बहुत ही बड़ा आदमी होगा।"

एडाल्फ ने अभिमान के साथ कहा - "मैं सेंटक्लेयर के परिवार में था।"

सांबो ने मजाक में कहा - "हाँ, बड़े आदमी न होते तो उस घर की ये टूटी-फूटी चायदानियाँ

यहाँ क्यों बिकने आती!"

इस मजाक से एडाल्फ को बड़ा क्रोध आया। वह सांबो पर तेजी से झपटा। दूसरे लोग यह देखकर तालियाँ बजाने लगे, इससे बड़ा शोर-गुल मचा। शोर सुनकर आदत का प्रधान अध्यक्ष हाथ में चाबुक लिए वहाँ पहुँचा। उसे देखकर सब अपनी-अपनी जगह पर जा हटे। सांबो ने उसे देखकर कहा - "सरकार, पहलेवाले लोगों में कोई गुल-गपाड़ा नहीं करता। हमने सबको सीधा कर दिया। ये जो नए गुलाम आए हैं, बड़ा उत्पात करते हैं।"

इस पर अध्यक्ष साहब बिना पूछताछ के टॉम और एडाल्फ को दो चार लात-धूँसे जमाकर चलता बना। जाते-जाते कह गया कि सब चुपचाप सो जाओ, शोर मत मचाना।

दासों के घर का दृश्य देखने के बाद अब दासियों की दशा जानने का कौतूहल हो सकता है। आइए, हमारे साथ इस घर में चलिए। यहाँ आपको बहुत-सी दासियाँ दिखाई देंगी। इनमें बूढ़ी भी हैं, जवान भी; अंधे भी हैं, लड़कियाँ भी। सभी तरह की हैं। अस्सी बरस की बुढ़िया से लेकर तीन वर्ष की लड़कियाँ तक यहाँ देखिए, यह एक दस बरस की लड़की किस तरह बिलख-बिलखकर रो रही है। कल इसकी माता नीलामकर दी गई है, आज कोई इसकी ओर आँख उठाकर भी देखनेवाला नहीं। बालिका 'माँ-माँ' कहकर चिल्ला रही है, पर कोई उसे पूछनेवाला नहीं।

और देखिए, यह अस्सी पार किए, कठोर मेहनत के कारण वातरोग से पीड़ित, बुढ़िया बैठी हुई चुपचाप रो रही है। तीन बार इसकी डाक बोली गई, लेकिन बेकाम समझकर किसी ने इसे नहीं खरीदा। इसके पाँच-छह लड़के-लड़कियों को लोग खरीद ले गए हैं। शोक से व्याकुल जननी उन्हीं के लिए आँसू बहा रही है।

और देखिएगा? चलिए, देखते चलिए। अभी आपने देखा ही क्या है? इधर देखिए, दो स्त्रियाँ साधारण स्त्रियों से कुछ दूर बैठी हैं। ये कपड़े-लत्ते से भलीमानस-सी जान पड़ती हैं। रंग भी इनका करीब-करीब अंग्रेजों-जैसा है। इनमें एक की उम्र 45 साल की होगी, इसके अंग खूब गठीले हैं। इसके पासवाली दूसरी युवती की उम्र पंद्रह बरस की होगी। इन दोनों के चेहरों से जान पड़ता है कि दूसरी पहली की बेटी है। पहली स्त्री अंग्रेज पिता और हब्शी माता से है। लड़की भी अंग्रेज से ही पैदा हुई जान पड़ती है। इनके कपड़ों के रंग-ढंग तथा हाथों की कोमलता पर ध्यान देने से पता चलता है कि इन्होंने कभी परेशानी नहीं उठाई है। कल इन दोनों की नीलामी होगा।

न्यूयार्क-निवासी क्रिश्चियन-चर्च के एक धर्मात्मा मेंबर साहब की ओर से ये नीलामी के लिए आई हैं। इनके दाम के हकदार वही धर्मात्मा मेंबर साहब होंगे। पर वह साहब जैसे धार्मिक क्रिश्चियन हैं, उससे इस बात में कोई शक नहीं रह जाता कि इन रुपयों में से वह कुछ तो गिरजाघर बनाने के लिए और कुछ लार्ड बिशप साहब के खर्च के लिए अवश्य देंगे।

उन दोनों स्त्रियों में माता का नाम सूसन और कन्या का एमेलिन है। ये न्यू अर्लिस की

एक सहृदय और संभ्रांत महिला की दासियाँ थीं। उसने इन्हें बड़ी लगन से लिखाया-पढ़ाया था। पर फिजूल-खर्ची के कारण उसका इकलौता लड़का न्यूयार्क की बी.एंड-कंपनी का कर्जदार हो गया। उस कंपनी ने नालिश करके उस पर डिग्री करा ली। डिग्री में अचल संपत्ति की कुरकी और नीलामी में बड़ा खर्चा और परेशानी की बात बताकर कंपनी के वकील ने चल संपत्ति कुर्क कराकर नीलाम कराने की सलाह दी। चल संपत्ति में दास-दासी ही सबसे ज्यादा कीमती होते हैं। पर एक बड़ी अड़चन थी। कंपनी के साहब उत्तरी प्रदेश के और एक खास तरह के क्रिश्चियन हैं। वह भला नर-नारियों का सौदा करने की प्रथा का सहारा कैसे लें! इस मामले को लेकर बड़ी लिखा-पढ़ी होने लगी। चल संपत्ति बेचे बिना तीस हजार रुपयों के जल्दी उतरने की संभावना नहीं थी। एक ओर तीस हजार की रकम और दूसरी ओर क्रिश्चियन धर्म; दोनों की होड़ लगी थी। अंत में तीस हजार की ही जीत रही। कंपनी के साहब ने वकील को चल संपत्ति कुर्क कराकर नीलाम कराने का पत्र लिखा। पत्र पाते ही वकील से सूसन और उसकी कन्या एमेलिन को कुर्क करके नीलामी में भेज दिया। उन्हीं दोनों माँ-बेटियों को आप यहाँ गोदाम में बैठी बिलखती देख रहे हैं।

एमेलिन कहती है - "माँ, तुम जंघे पर सिर रखकर थोड़ा आराम कर लो।"

"नहीं, बेटा, मुझे नींद नहीं आएगी। जान पड़ता है, हम लोगों के मिलन का यह आखिरी दिन है।" सूसन ने सिसकते हुए कहा।

एमेलिन ने धीरज से कहा - "माँ, तुम ऐसा क्यों कहती हो? शायद हम दोनों को कोई एक ही आदमी खरीद ले।"

सूसन आँसू पोंछते हुए बोली - "नहीं बेटा, इसकी कोई उम्मीद नहीं। मैं झूठी उम्मीद दिलाकर मन को भुलाना नहीं चाहती।"

"क्यों वह नीलामवाला तो कहता था कि हम दोनों एक ही-सी हैं। इससे दोनों की एक ही डाक कर देगा।"

सूसन की उम्र अधिक होने के कारण उसका अनुभव भी बहुत था। वह आदमियों को देखकर ताड़ जाती थी कि कौन कैसा है। उस आदमी के चेहरे का रंग-रंग देखकर, उसकी बातें सुनकर, सूसन के होश उड़ गए। उस गोदाम का रक्षक जब एमेलिन का हाथ पकड़कर और उसके सुंदर बालों को हिला-डुला कर देखते हुए कहने लगा कि "यह माल बड़ा बढ़िया है, इसके खूब दाम आएँगे," तभी सूसन की जान निकल गई। सूसन का हृदय बहुत ही धार्मिक था। इससे यह सोचकर उसका हृदय दहकने लगा कि उसके गर्भ से जन्मी हुई कन्या को कोई लंपट पिशाच अंग्रेज खरीदकर उपपत्नी बनाएगा।

एमेलिन ने फिर कहा - "माँ, तुम रसोई बहुत अच्छी बनाना जानती हो। किसी भले घर में तुम्हें रसोईदारिन का और मुझे दरजिन का काम मिल जाए, तो हम लोगों के दिन बड़े मजे में

कटेंगे।"

सूसन ने कहा - "बेटी, मैं चाहती हूँ कि तेरे सिर के सब बाल पीछे की ओर सीधे-सीधे कर दूँ।"

एमेलिन ने पूछा - "क्यों माँ, ऐसा करने से तो मैं अच्छी नहीं लगूँगी। क्या कोई भला आदमी ऐसे बाल देखकर खरीदेगा?"

सूसन ने कहा - "हाँ, खरीद सकता है।"

"कैसे?"

"भले आदमी साफ और सीधे-सादे लोगों को अधिक पसंद करते हैं, बनाव-शृंगार और ठाट-बाट उन्हें नहीं रुचता। ठाट-बाट देखकर तो लंपट ही रीझकर खरीदते हैं। बेटी, ये सब बातें मैं तुझसे ज्यादा जानती हूँ। मैं तुझसे कहती हूँ कि अगर हम लोग अलग-अलग बिके तो तू जहाँ रहे, अपने धर्म से रहना। मेरी इस बात को याद रखना कि प्राण दे देना, पर धर्म न खोना। अगर कोई गोरा तेरा धर्म भ्रष्ट करने पर तुल जाए तो आत्म-हत्या करके अपने धर्म की रक्षा करना। मेम साहब के उपदेशों को मत भूलना। अपनी बाइबिल और भजनों की पुस्तक हमेशा साथ रखना। ईश्वर को मत भूलना, वह सदा तेरी रक्षा करेगा।"

सूसन बड़े निराश-हृदय से कन्या को उपदेश दे रही थी। वह सोचती थी कि कल उसकी परम-सुंदरी पवित्र-हृदया कन्या को वही नीच अंग्रेज खरीद लेगा, जिसके पास धन होगा। वह बार-बार कहने लगी - "मेरी आँखों की पुतली एमेलिन आज यदि सुंदर न होकर कुरूप होती और शिक्षित न होकर मूर्ख होती तो अच्छा था।"

ऐसे समय में ईश्वर की प्रार्थना करने और उस पर भरोसा रखने के सिवा और किसी तरह धीरज नहीं आ सकता। पर आज-तक इस गोदाम में से न मालूम ईश्वर से ऐसी कितनी ही जीवित प्रार्थनाएँ और पुकारें हुई हैं, जिनका कोई ठिकाना नहीं? क्या ईश्वर इनकी प्रार्थनाएँ नहीं सुनता? क्या वह इन्हें भूल गया? कदापि नहीं। वह परम न्यायी, परम करुणामय, दीनदयाल भगवान किसी छोटी-से-छोटी आत्मा तक को एक पल के लिए नहीं भूलता। अरे पाखंडी, निर्मोही, अर्थपिशाच गोरे बनियों, तुम सबको निश्चय ही इस पाप का फल भोगना पड़ेगा। तुम नहीं तो तुम्हारी संतानें अपने रक्त से इस पाप का प्रायश्चित्त करेंगी। जिस बाइबिल को तुम लोग अपना धर्मशास्त्र कहते हो, उसी बाइबिल में लिखा है, 'गले में पत्थर बाँधकर समुद्र में डूब जाने से जो हानि होती है, उससे भी अधिक हानि उन लोगों को उठानी पड़ेगी, जो एक छोटी-से-छोटी आत्मा का भी अपमान करते हैं।'

देखते-देखते रात गहरी हो चली। सूसन और उसकी कन्या हृदय के पट खोलकर ईश्वर को

पुकारने लगीं। नाना प्रकार के भजन गाने लगीं।

ओ सूसन, ओ एमेलिन, तुम जन्म भर के लिए एक-दूसरे से बिदा माँग लो। आज की रात समाप्ति के साथ-साथ तुम्हारे भाग्य का सूर्य भी सदा के लिए अस्त हो जाएगा।

सवेरा हुआ। सब लोग अपने-अपने काम में लग गए। स्केग नाम का साहब आज की नीलामी का प्रबंध करने लगा। बिकने के लिए आए हुए दास-दासियों को वह तरतीब से खड़ा करने लगा। नीलामी बोलने से पहले खरीदारों के अंतिम दिखावे के लिए उसने सबको एक पंक्ति में खड़ा किया।

स्केग साहब एक हाथ में चुरट और दूसरे में नीलाम की पुस्तक लिए हुए इधर-से-उधर टहलकर देखने लगा। देखते-देखते सूसन और एमेलिन के पास जाकर बोला - "तेरे वे घुँघराले बाल क्या हुए?"

एमेलिन ने सकपकाकर उसकी ओर देखा। उसकी माता ने कहा - "मैंने इसे बाल साफ करके जूड़ा बाँधने को कहा था। बिखरे और बलखाए हुए बाल उड़-उड़कर मूँह पर पड़ते थे। जूड़ा उससे साफ और अच्छा दीखता है।"

स्केग ने चाबुक सँभालकर उसे धमकाते हुए कहा - "जा जल्दी! जैसे बाल थे, वैसे करके ला।" फिर उसकी माता से कहा - "तू जाकर ठीक करा दे। घुँघराले बाल रहने से सौ रुपए ज्यादा मिलेंगे।"

धीरे-धीरे नीलाम-घर भर गया। खरीदार आपस में तरह-तरह की बातें करने लगे। एक खरीदार एडाल्फ का बदन जाँच कर देख रहा था। तब तक किसी ने कहा - "ओहो, अल्फ्रेड! कहो, तुम कहाँ चले?"

अल्फ्रेड ने कहा - "भाई, मुझे एक अरदली की जरूरत है। मैंने सुना कि सेंटक्लेयर के गुलाम बिक रहे हैं। इससे यहाँ खरीदने आया हूँ।"

उस आदमी ने कहा - "सेंटक्लेयर के गुलाम खरीदोगे? मैं तो कभी ऐसा नहीं कर सकता।" सेंटक्लेयर के यहाँ के गुलाम आदर पा-पाकर, बिगड़कर, दो कौड़ी के हो गए हैं।

अल्फ्रेड बोला - "इसका मुझे डर नहीं। मेरे हाथ में पड़ते ही इनका बाबूपन हवा हो जाएगा। दो दिन में समझ जाएँगे कि मैं सेंटक्लेयर नहीं हूँ। यह आदमी शक्ल-सूरत का अच्छा है, इसी को लूँगा।"

उस आदमी ने कहा - "यह बड़ा फिजूल खर्च है।"

अल्फ्रेड ने जवाब दिया - "हमारे यहाँ इसकी दाल नहीं गलेगी। दो बार दंडगृह की हवा खिलाई कि इसके होश ठिकाने आ जाएँगे।"

टॉम बड़ी विन्नम दीनता से हर एक खरीदार का मुँह देखने लगा। वह देखना चाहता था कि इनमें कोई दयालु खरीदार भी है या नहीं। पर जितने आदमियों को उसने देखा, उनमें कोई अच्छा नहीं जान पड़ा। किसी के चेहरे पर क्रोध झलक रहा था, तो कोई देखने में बड़ा निर्दयी मालूम पड़ता था, कोई कामी दिखाई देता। यों ही सैंकड़ों मुख देखे, पर सेंटक्लेयर की-सी मधुर और शांत मूर्ति कहीं न दिखाई दी।

नीलामी आरंभ होने ही को थी कि एक मजबूत-सा नाटा आदमी आया और गुलामों को टो-टोकर, बदन में हाथ लगा-लगा कर देखने लगा। इसके चेहरे से मालूम होता था, मानो नरक का द्वारपाल हो। इसे देखते ही टॉम का हृदय भयभीत हुआ और बड़ी घृणा पैदा हुई। इस आदमी ने एक-एक करके सब दास-दासियों को परखा और अंत में टॉम के पास पहुँचकर तथा उसके मुँह में उंगली डाल कर देखने लगा, फिर पैरो की ताकत देखने के लिए उसे कूदवाया। परीक्षा समाप्त होने पर टॉम से बोला - "सबसे पहले तू कहाँ के दास-व्यापारी के यहाँ था?"

टॉम ने कहा - "कैंटाकी में, साहब!"

"क्या क्या करता था?"

"अपने मालिक के खेत का काम देखता था।"

"ठीक है।"

टॉम से हटकर वह एडाल्फ के पास पहुँचा, पर घृणा से उसके मुख की ओर देखकर वहाँ जा पहुँचा, जहाँ सूसन और एमेलिन खड़ी थीं। उसने अपना व्रज-सा कठोर हाथ फैलाकर एमेलिन को अपने निकट खींच लिया। एमेलिन भय से काँप उठी। उसने एमेलिन के कंधे, छाती और भुजाओं पर हाथ लगाकर उसकी शारीरिक दशा देखी, फिर सतृष्ण नयनों से बारंबार उसकी ओर ताकने लगा। इसके बाद उसे उसकी माता की ओर धकेलकर चलता बना।

जिस समय वह नर-पिशाच जैसा खरीदार एमेलिन को देख रहा था, उस समय उसकी माता का हृदय भय और शंका से काँप रहा था। एमेलिन स्वयं भी उसका मुख देखकर बहुत डर गई और रोने लगी। उसका रोना देखकर नीलामवाले बहुत बिगड़े और बोले - "यहाँ रोना-झींकना मचाएगी तो डंडे पड़ेंगे।"

अब नीलाम आरंभ हुआ। नीलाम की चौक पर पहले एडाल्फ खड़ा किया गया। दो-चार डाक बोलने के बाद उसे अल्फ्रेड ने खरीद लिया। यों एक-एक करके सेंटक्लेयर के सब दास-दासियों

को भिन्न-भिन्न लोगों ने खरीद लिया। अंत में टॉम की बारी आई।

नीलाम की चौकी पर खड़ा होकर टॉम इधर-उधर देखने लगा। पाँच-छह डाक होने के बाद वह भी बिक गया। जिस नाटे-से आदमी को देखकर टॉम को भय और घृणा हुई थी, उसी ने उसे खरीदा। दाम चुकाकर उसे नीचे उतारा और गला पकड़कर एक किनारे थोड़ी दूर बिठा दिया।

इसके बाद सूसन का नीलाम हुआ। पर नीलाम की चौकी से उतरते समय वह सतृष्ण नयनों से पीछे घूमकर अपनी कन्या की ओर देखने लगी। उसकी कन्या ने उसकी ओर हाथ फैलाया। सूसन ने अपने खरीदार से बड़ी दीनतापूर्वक कहा - "स्वामी, कृपा करके मेरी कन्या को भी आप ही खरीद लीजिए।"

उसका खरीदार औरों की निस्वत सहृदय जान पड़ता था। उसने कहा - "कोशिश करूँगा। पर इसके दाम ऊँचे जाएँगे। मुझे उम्मीद नहीं कि मैं उतने दाम दे सकूँगा।"

एमेलिन नीलाम की चौकी पर खड़ी की गई। उसका वह सरलतापूर्ण मुख-कमल डर से पीला पड़ गया, किंतु उसके सौंदर्य में कुछ कमी नहीं आई थी, उलटे एक अनूपम नवीन सौंदर्य का भाव उसके मुख पर छा गया। यह देखकर उसकी माता मन-ही-मन, पछताकर कहने लगी, इससे तो अच्छा था कि यह कुरूप होती। एमेलिन को खरीदने की इच्छा से बहुत लोगों ने डाकें बोलीं। एमेलिन की माँ का खरीदार भी दोन-तीन डाक बढ़ा, पर देखते-ही-देखते डाक इतनी बढ़ी कि उसने अपनी हिम्मत के बाहर दाम बढ़े देखकर मौन साध लिया। यों ही धीरे-धीरे कई खरीदार चुप हो गए। अंत में केवल दो आदमियों की बोली रह गई। इनमें एक वही टॉम का खरीदार था और दूसरा था इस प्रदेश का एक धनी और कुलीन पुरुष। अंत में आखिरी डाक में टॉम के खरीदार ने ही एमेलिन को खरीदा। नर-पिशाच साइमन लेग्री ही उस सरल-हृदय सच्चरित्र पंचदश-वर्षीया बालिका के जीवन का मालिक हुआ। इस दुरात्मा के हाथ से एमेलिन की रक्षा करनेवाला दीनबंधु भगवान के सिवा और कोई नहीं था।

एमेलिन सावधान! अपनी माता का अंतिम उपदेश सदा याद रखना! प्राण देना, पर धर्म मत खोना।

एमेलिन के इस प्रकार बिक जाने पर उसकी माता बिलख-बिलखकर रोने लगी। उसकी माता का खरीदार कुछ सहृदय था। इससे वह मन-ही-मन में कुछ दुःखित हुआ। पर ऐसे दृश्य आठ पहर चौंसठ-घड़ी इन लोगों की आँखों के सामने फिरा करते थे। इससे इनका कलेजा पक जाता था।

अतः वह आनंदपूर्वक अपनी खरीदी हुई संपत्ति सूसन को लेकर अपने घर ओर रवाना हुआ।

इस नीलाम के दो-तीन दिन बाद क्रिश्चियन फर्म बी.एंड. के वकील ने सूसन और एमेलिन



की बिक्री के रुपयों में से अपना कमीशन और नीलाम खर्च काटकर बाकी रुपए उस कंपनी के क्रिश्चियन मालिक को भेज दिए।

### 34. नाव में

रेड नदी में एक छोटी-सी नाव पाल डाले दक्षिण की ओर बढ़ी चली जा रही है। नाव में कई दास-दासियों के रोने और सिसकने की आवाजें आ रही हैं। टॉम इन्हीं के बीच बैठा है। उसके हाथ-पैर जंजीर से जकड़े हुए हैं, पर उसका हृदय जिस दुःख से दबा जा रहा है, उस दुःख का बोझ हथकड़ी-बेड़ियों से भी अधिक है। उसकी सारी आशा-आकांक्षाओं पर पानी फिर गया है। पीछे छूटते हुए नदी-तट के वृक्षों की भाँति उसके सामने जो कुछ था, वह एक-एक करके पीछे छूट गया। अब वे नहीं दीख पड़ेंगे, अब वे नहीं लौटेंगे। कैटाकी का घर, स्त्री, पुत्र, कन्या और उस उदार स्वामी का परिवार आज कहाँ है? सेंटक्लेयर का घर। उस घर की वह विपुल शोभा-समृद्धि, इवा का वह देवोपम मुखचंद्र। वह उन्नतचेता सुंदर प्रफुल्लमूर्ति, कोमल-प्राण सेंटक्लेयर, वह परिश्रम-रहित जीवन, वह सुख के विश्राम दिवस - सब एक-एक करके जाते रहे, अब उनकी जगह रह गई है स्वप्न की-सी स्मृति।

टॉम ने नए खरीदार लेगी साहब ने न्यू अर्लिस की कई आदतों से आठ दास-दासी खरीदे थे। इनमें दो-दो को एक बंधन में जकड़ रखा था। लेगी साहब कुछ दूर नाव पर चलने के बाद, राह में नदी के मुहाने पर, सबको साथ लेकर 'पॉट्रेस्ट' नामक जहाज पर सवार हुआ। सब दास-दासियों को सवार करा लेने के बाद वह टॉम के पास आया। सेंटक्लेयर के यहाँ टॉम सदा अच्छे कपड़े पहना करता था। बेचने के पहले आदतवालों ने टॉम को अपना सबसे बढ़िया कपड़ा पहनने का हुक्म दिया था। उस समय का पहना बढ़िया कपड़ा अभी तक उसके बदन पर था। लेगी ने आकर उससे कहा - "खड़ा हो!"

टॉम खड़ा हो गया।

अब लेगी ने उससे वह बढ़िया कपड़ा उतार देने को कहा। टॉम उतारने लगा। पर हाथ जंजीर में जकड़े होने से वह झटपट उतार न सका। इस पर लेगी ने स्वयं जोर से उसके कपड़े खींचकर उतारे। फिर वह सेंटक्लेयर के दिए हुए उसके बक्से की ओर घूमा। इसे उसने पहले ही खोल कर देख लिया था। उसमें से पुराना कोट और पतलून निकालकर टॉम को पहनने को दिया। टॉम इस पतलून को घूँड़साल में काम करने के वक्त के सिवा और कभी न पहनता था। इस समय लेगी की आज्ञानुसार वह फटीपुरानी पतलून उसे पहननी पड़ी। फिर लेगी ने उसके बूट उतरवाकर एक

जोड़ी फटा जूता पहनने को दिया। वह भी उसने पहन लिया।

इस जल्दी में भी, कपड़ों की अदला-बदली में, टॉम ने अपने कोट की पॉकेट से बाइबिल निकाल ली, नहीं तो उसे इससे भी हाथ धोना पड़ता। कपड़े उतारते ही लेगी उसकी जेबें टटोलने लगा कि उनमें क्या रखा है। कोट की पाकेट से इवा का दिया हुआ एक रेशमी रुमाल निकला। उसे तुरंत उसने अपनी जेब के हवाले किया। फिर दूसरी जेब से एक प्रार्थना-पुस्तक निकाली। टॉम जल्दी में इसे निकालना भूल गया था। इस पुस्तक को देखते ही लेगी क्रोध से जल उठा। बोला - "क्यों रे, तेरा गिर्जे से ताल्लुक रहता है?"

टॉम ने दृढ़ता से कहा - "जी सरकार!"

लेगी ने आग-बबूला होकर कहा - "मैं तेरे यह सब पाखंड जल्दी ही निकाल दूंगा। मैं अपने खेत के क्ली-कबाड़ियों को भजन या उपासना नहीं करने देता। इसे अच्छी तरह समझ ले। अब तू अपने मन में जान ले कि मैं ही तेरा गिर्जा और मैं ही तेरा सब-कुछ हूँ। जो मैं कहूँगा, वही तुझे करना पड़ेगा।"

लेगी ने बड़ी लाल-पीली आँखें करके टॉम से ये बातें कहीं। उस समय टॉम चुप था, पर उसकी अंतरात्मा कह रही थी - नहीं, कभी नहीं, न तू मेरा गिर्जा है, न कुछ है। इस समय बाइबिल का वह वाक्य, जो सदा इवा उसके सामने पढ़ा करती थी, उसे याद आया - जान पड़ा, मानो उसे धीरज दिलाने के लिए कहीं से आवाज आ रही है - "डरना मत; क्योंकि मैंने तेरा उद्धार किया है।... मैंने तुझे अपना नाम दिया है। तू मेरा ही होगा।"

पर लेगी के कानों में यह ध्वनि नहीं पड़ी। पाप-पूर्ण कर्णों में यह ध्वनि प्रवेश नहीं कर सकती थी। टॉम के नीचे किए हुए चेहरे की ओर जरा देर लेगी देखता रहा, फिर दूसरी ओर को चल दिया। सेंटक्लेयर ने टॉम को कुछ कीमती कपड़े दिए थे। अर्थपिशाच लेगी ने लोभ में पड़कर टॉम का सब-कुछ नीलाम कर डाला, यहाँ तक कि संदूक भी बेच दिया और जो कुछ मिला, सब हड़प गया। कानून से दासों का किसी चीज पर अधिकार नहीं है। इसी से जब टॉम को लेगी खरीद चुका तो उसके सारे माल-असबाब का भी वही मालिक हो गया। इस नीलाम के समय टॉम पर क्या बीती, यह वही जानता था।

माल-असबाब को नीलामकर चुकने पर लेगी फिर टॉम के पास पहुँचकर बोला - "टॉम, तेरा जो कुछ असबाब का झंझट था, सब मैंने नीलाम में पार कर दिया। अब जो कपड़े तेरे पास हैं, उन्हें सँभालकर रखना। एक बरस के पहले मेरे यहाँ दूसरे कपड़े नहीं मिलेंगे। मैं अपने यहाँ के हब्शियों को साल में बस एक बार कपड़े देता हूँ।"

इसके बाद जहाँ एमेलिन दूसरी स्त्री के साथ जंजीर में बँधी बैठी थी, वहाँ लेगी पहुँचा। उसने एमेलिन की ठोड़ी पकड़कर कहा - "मेरी प्यारी, उदासी को छोड़ो!"

वह सच्चरित्र बालिका भय और घृणा से उसकी ओर देखने लगी। यह देखकर उसने कहा - "इस तरह मुँह बनाने से काम नहीं चलेगा। यह सब छोड़ो। मेरे सामने सदा खुश रहना पड़ेगा। सुनती है न?"

फिर एमेलिन के साथ जंजीर से बँधी हुई दूसरी स्त्री को धक्का देकर बोला - "अरी बुढ़िया, यह हांडी-सा मुँह बनाए क्या पड़ी है? तुझसे कहता हूँ, जरा हँसकर बोल। यह मुँह बनाना छोड़ दे।"

दो-चार कदम पीछे हटकर और फिर आगे बढ़कर वह बोला - "मैं तुम सभी से कहता हूँ, मुँह इधर करके एक बार मेरी ओर देखो, ठीक मेरी आँखों की ओर ताको। (जोर से पृथ्वी पर पैट पटककर) एक बार, एक नजर मेरी ओर देखो।"

मारे डर के सबकी आँखें उसकी ओर लग गईं। फिर वह लोहे का मुग़्दर-सा अपना मुक्का दिखाकर कहने लगा - "जरा इस मुक्के की ओर देखो। यह मुक्का लोहे से भी सख्त है। हब्शियों को ठोकते-ठोकते ही हाथ ऐसा कड़ा हो गया है।"

इतना कहते-कहते अपना वह मुक्का बँधा हुआ हाथ टॉम के मुँह के पास ले गया। टॉम डरकर पीछे सरक गया। फिर लेगी कहने लगा - "मैं तुम सबको समझाए देता हूँ, मैं खेत में रखवाला नहीं रखता, सब काम खुद ही देखता-सुनता हूँ। तुम सभी को अच्छी तरह काम करना पड़ेगा। जब जो बात बोलूँगा, उसकी तामील तुरंत करनी पड़ेगी। इसी ढंग से मैं काम लेता हूँ। मेरे यहाँ दया-माया से कोई सरोकार नहीं। इसे तुम लोग खूब समझ लो। मुझे वह सब दया-माया दिखलाना पसंद नहीं है।"

उसकी बातें सुनकर दास-दासियों की जान सूख गई और सब ठंडी साँसें लेने लगे। कुछ देर बाद वह शराब पीने के लिए जहाज के दूसरे कमरे में जाने लगा। उसके पास ही कोई भलामानस आदमी खड़ा था। उससे वह कहने लगा - "मैं अपने हब्शियों के साथ इसी तरह का बर्ताव आरंभ करता हूँ। मेरी यह चाल है कि खरीदकर लाते ही मैं इन्हें सब समझा देता हूँ कि किस तरह से इन्हें मेरे साथ रहना होगा।"

उस अपरिचित भलेमानस ने बड़े गौर से उसकी ओर इस तरह देखा, मानो कोई पंडित किसी नई वस्तु की जाँच कर रहा हो। फिर कहा - "बेशक!"

लेगी ने और आगे कहा - "हाँ, मैं ऐसे नाजुक-नाजुक हाथोंवाला खेतिहर नहीं हूँ कि क्लियों को कोड़े लगाने का काम रखवाले को सौंपूँ। यह देखिए, मेरी मुट्ठी और अंगुलियाँ एकदम फौलाद की मानिंद हैं। इस जगह का हाथ का मांस पत्थर-सा कड़ा हो गया है। और कोई बात नहीं, यह हब्शियों को ठोकते-ठोकते ऐसा हो गया है।"

उस अपरिचित ने लेगी का हाथ देखकर कहा - "बेशक, बहुत कड़ा हो गया है; पर मैं

समझता हूँ कि इस अभ्यास से तुम्हारा हृदय इससे भी ज्यादा सख्त हो गया है।"

लेगी ने हँसते हुए कहा - "हाँ, क्यों नहीं, यह तो ठीक ही है। मैं काम में दया-माया के चक्कर में नहीं पड़ता।"

"तुमने बहुत अच्छे दास-दासी खरीदे हैं।"

"हाँ, अच्छे ही हैं। यह जो टॉम दीख पड़ता है, इसकी सब लोगों ने तारीफ की थी। इसके लिए मुझे कुछ ज्यादा देना पड़ा, पर इससे काम भी खूब लूँगा। लेकिन इसने कुछ बुरी बातें सीख रखी हैं। धर्म की ओर इसका बड़ा झुकाव है, पर यह सब मैं जल्दी ही निकाल बाहर करूँगा। यह अधेड़ दासी खूब सस्ते में हाथ लगी। मैं समझता हूँ, इसे कोई बीमारी होगी। सोचता हूँ, दो बरस तो चलेगी, और दो बरस में मैं खूब मेहनत लेकर अपनी कीमत वसूल कर लूँगा। बहुत-से खेतिहर, बीमार पड़ जाने पर मर जाने के डर से, क्लियों से अधिक काम नहीं लेते। पर मेरा वैसा हिसाब नहीं है। बीमार हो या अच्छा, बँधा हुआ काम करना ही पड़ेगा। थोड़ा काम करके चार बरस जीने से जो नतीजा निकला है, ज्यादा मेहनत करके दो बरस जीने से भी वही नतीजा निकलता है। एक हब्शी से थोड़ा काम लेकर ज्यादा दिन जिलाने से कोई फायदा नहीं होता। ज्यादा मेहनत लेने से जल्दी मर जाए तो फिर उसके बदले में एक और नया गुलाम खरीद लेने से अधिक नफे की उम्मीद रहती है।"

अपरिचित ने पूछा - "तुम्हारे खेत में गुलाम साधारणतः कितने वर्ष जीते हैं?"

लेगी ने जवाब दिया - "इसका कोई हिसाब नहीं। कोई कुछ कम, कोई कुछ ज्यादा! लेकिन मामूली तौर से जवान हो तो छः-सात बरस और चालीस के पार हो तो दो-तीन बरस से ज्यादा नहीं टिकते। पहले बीमार पड़ने पर मैं भी हब्शियों को दवा दिया करता था और कंबल देता था। लेकिन आखिर मैं नतीजा कुछ नहीं निकला, नाहक मैं चीजों की बरबादी होती थी। अब इन अड़गों से मैं दूर रहता हूँ। बीमारी में भी काम लेता हूँ। मर जाने पर और नए खरीद लेता हूँ। इससे हर तरह की सहूलियत रहती है।"

वह अपरिचित आदमी लेगी के पास से हटकर थोड़ी दूर पर बैठे हुए एक युवक के निकट जाकर बैठ गया। वह देर से इन लोगों की सारी बातें सुन रहा था।

उस पहले आदमी ने इस युवक से कहा - "दक्षिण प्रदेश के सभी खेतिहर इस आदमी की भाँति सख्त नहीं हैं।"

युवक ने कहा - "ऐसा न होना ही अच्छा है।"

पहला आदमी बोला - "यह आदमी तो महानीच और बदमाश है। इसका बर्ताव तो सचमुच

ही पशुओं-जैसा है।"

युवक ने कहा - "पर आपके देश के कानून की यह खूबी है कि वह ऐसे ही निष्ठुर और नीच आदमियों को अनगिनत नर-नारियों के जीवन का अधिकारी बनने का अवसर देता है। ऐसा कोई कानून आपके यहाँ नहीं है, जिसकी रू से ऐसे निष्ठुर आदमियों के अत्याचार से इन बेचारे गुलामों की रक्षा हो सके। खेतवालों में अधिकांश ऐसे ही हृदयहीन होते हैं।"

पहला आदमी बोला - "खेतवालों में जहाँ बुरे बहुत हैं, वहाँ कुछ भले भी हैं।"

युवक ने कहा - "दलील के लिए मान भी लिया जाए कि आपके खेतवालों में भले भी हैं, तो भी मैं कहता हूँ कि अत्याचार और निष्ठुरता के लिए वही पूरी तरह दोषी हैं, क्योंकि ऐसे ही दो-चार भलेमानसों के कारण यह घृणित प्रथा अब तक दूर नहीं हुई। यदि सभी खेतवाले लेग्री-सरीखे होते, तो क्या फिर भी यह प्रथा बनी रहती?"

इधर जब इन दोनों में ये बातें हो रही थीं, उधर जहाज में दूसरे स्थान पर एक जंजीर में जकड़ी हुई एमेलिन और लूसी भी आपस में बातें कर रही थीं।

एमेलिन ने कहा - "तुम किसके यहाँ रही थी?"

लूसी बोली - "एलिस साहब के यहाँ थी। तुमने शायद उन्हें देखा हो।"

"क्या वह तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव करते थे?"

"बीमार पड़ने के पहले तो वह बहुत ही अच्छा बर्ताव करते थे पर बीमार होने के बाद उनका स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा हो गया, और सबसे रूखा व्यवहार करने लगे। मुझे रात-रात भर उनकी टहल के लिए जागना पड़ता था। पर एक दिन मुझे नींद आ गई, इस पर उन्होंने गुस्सा करके कहा कि तुझे किसी खूब सख्त आदमी के हाथ बेचूँगा।"

"तुम्हारे दुःख-दर्द का कोई साथी है?"

"मेरा पति है। वह लुहार का काम करता है। मालिक ने उसे एक दूसरी जगह किराए पर दे रखा है। मेरे चार लड़के हैं, लेकिन मुझे ऐसी जल्दी में नीलाम-घर में भेज दिया कि मैं अपने स्वामी या लड़कों से एक बार भी नहीं मिल पाई।"

यह कहते-कहते लूसी रोने लगी। किसी का दुःख देखकर मनुष्य के मन में स्वभावतः उसे धीरज देने की इच्छा होती है। लूसी की दुःखगाथा सुनकर एमेलिन उसे कुछ धीरज दिलानेवाली बात कहना चाहती थी, पर उसकी समझ में न आया कि क्या कहे। इस भयंकर मालिक के डर से वे दोनों इतनी डरी हुई थीं कि हृदय से कोई बात ही न उठती थी।

घोर संकट के समय मनुष्य को धार्मिक विश्वास बड़ी सांत्वना देता है। लूसी अपढ़ होने पर भी धर्म में बड़ा विश्वास रखती थी। एमेलिन ने भी धर्म के विषय में नियमित शिक्षा पाई थी और उसका हृदय धर्म की भावना से भरा था। पर ये ऐसी दुर्दशा में पड़ गई थीं, ऐसे राक्षस-प्रकृति लंपट अंग्रेज के हाथ में पड़ी थीं कि इस दशा में धार्मिक मनुष्य भी ईश्वर पर भरोसा रखकर सांत्वना प्राप्त कर सकता है या नहीं, इसमें संदेह है।

जहाज धीरे-धीरे बढ़ने लगा। अंत में एक छोटे कस्बे के पास आकर उसने लंगर डाला। लेगी अपने दास-दासियों को साथ लेकर वहीं उतर गया।

### 35. नरक-स्थरली

बड़े ही दुर्गल और बीहड़ रास्ते से एक गाड़ी चली आ रही है। उसके पीछे-पीछे टॉम और कई गुलाम बड़ी कठिनाई से मार्ग पार कर रहे हैं। गाड़ी के अंदर हजरत लेगी साहब बैठे हुए हैं। पीछे की ओर माल-असबाब से सटी दो स्त्रियाँ बँधी हुई बैठी हैं। यह दल लेगी साहब के खेत की ओर जा रहा है।

यह जन-शून्य मार्ग मुसाफिरों के लिए वैसे ही कष्टकर था; पर स्त्री, पुत्र और पिता-माता से बिछड़े हुए गुलामों के लिए तो यह और भी दुःखदायक था। इस दल में अकेला लेगी ही ऐसा था, जो मस्त चला जा रहा था। बीच-बीच में वह ब्रांडी का एकाध घूँट लेता जाता था। कुछ दूर आगे बढ़ने पर उसको नशा चढ़ आया। उससे उत्तेजित होकर अपने गुलामों को गाने का हुक्म दिया। भला उन दुःखी हृदयों से कहीं संगीत की ध्वनि निकल सकती थी? वे सब एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। लेकिन लेगी ने उनपर चाबुक फटकारते हुए कहा - "गाओ सूअरो, देर क्यों करते हो।"

तब टॉम ने गाना आरंभ किया :

मेरे यरूशलम सुख-धाम,

कितना मधुर तुम्हारा नाम।

नाश जब होगा दुःख का फंद,

लूँगा तब दर्शन-आनंद!

लेगी को टॉम का गाना बिल्कुल पसंद नहीं आया, उल्टा वह गुस्से से उस पर चाबुक चलाकर बोला - "रहने दे अपने भजन-वजन! मैं नहीं सुनना चाहता। मैं एक मजेदार गीत सुनना चाहता हूँ।" अब लेगी के साथ उसका जो एक पुराना नौकर था, वह गाने लगा-

तुमको कहता कौन मनुज, बाबा, तुम राक्षस-अवतार।

हरते हृदय-हारिणी निज पत्नी की गर्दन मार ॥बाबा॥

कपि-स्वभाव हनुमत के चेले, ये सब हैं तब पापड़ बेले।

स्वाँग सभ्यता के वश खेले, केवल सभा-मंझार ॥बाबा॥

ईसा मूसा का सिर खाया, और सकल उपदेश भुलाया।

इब्राहीम दास दल भाया, थे जो कई हजार ॥बाबा॥

उस हब्शी गुलाम के इस तरह गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने पर लेगी ऐसा मस्त हुआ कि खुद भी उसी के सुर-में-सुर मिलाकर चीखने लगा। रास्ते भर मालिक और नौकर दोनों यों ही गाते हुए चले जाते थे।

थोड़ी देर बाद लेगी ने एमेलिन की ओर घूम-घूमकर उसके कंधे पर हाथ धरते हुए कहा - "प्यारी जान, अब हमारा घर आ पहुँचा।"

लेगी ने जब एमेलिन का तिरस्कार किया था, तब वह बहुत ही डरी थी। पर अब, जब इस नीच ने, प्यारी जान कहकर उसके कंधे पर हाथ रखा, तब उसने सोचा कि इस मधुर व्यवहार की अपेक्षा लेगी यदि उसे ठोकर मारता तो कहीं अच्छा था। लेगी की आँखों का भाव देखते ही एमेलिन की छाती धड़कने लगी। लेगी के छूने से वह और पीछे हट गई और पूर्वोक्त रमणी के साथ सटकर उसकी ओर ऐसी कातर दृष्टि से देखने लगी जैसे संकट के समय बच्चा माँ की ओर देखता है।

फिर लेगी ने उसके कान छूकर कहा - "तुमने कभी झुमका नहीं पहना?"

"जी नहीं! डरत हुए एमेलिन बोली।"

"तुम यदि मेरी बात सुनो और मानो तो मैं घर चलकर तुम्हें एक जोड़ा झुमका दूँगा। तुम्हें इतना डरने की जरूरत नहीं। मैं तुमसे कोई बहुत मेहनत का काम नहीं लूँगा। तुम मेरे साथ

मौज में रहोगी, बड़े आदमियों की तरह रहोगी - सिर्फ मेरी बात माननी पड़ेगी।"

यों ही बातें होते-होते गाड़ी लेग्री के खेत के पास जा पहुँची। पहले इस खेत का मालिक एक अंग्रेज था। वह लेग्री-जैसा नीच नहीं था। उस समय यह जगह भी देखने में आज-जैसी बेडौल न थी। लेकिन उसका दिवाला निकल जाने पर लेग्री ने बड़े सस्ते दामों में यह खेत खरीद लिया था। इस समय यह जगह बिल्कुल नरक के समान दिखाई पड़ती थी।

गाड़ी जब घर के फाटक पर पहुँची, तब तीन-चार दासों के साथ शिकारी कुत्ते खड़खड़ाहट सुनकर भौंकते हुए बाहर निकले। पीछे से यदि वहाँ का एक हब्शी गुलाम इन कुत्तों को न डाँटता और लेग्री उतरकर इन्हें न पुकारता, तो जरूर ये कुत्ते टॉम और नए आए दासों को नोच डालते।

लेग्री ने टॉम तथा दूसरे गुलामों की ओर घूमकर कहा - "देखते हो, कैसे बेढब कुत्ते हैं। अगर किसी ने यहाँ से भागने की कोशिश की, तो ये कुत्ते बोटी-बोटी नोच डालेंगे।"

फिर लेग्री ने पुकारा "सांबो!"

एक नर-पिशाच-सा हब्शी सामने आकर खड़ा हो गया।

लेग्री ने पूछा - "काम-काज तो खैरियत से चल रहा है?"

"जी हुजूर, बड़ी खैरियत से।"

फिर "कड़ंबो" कहते ही एक और नर-पिशाच वहाँ आ पहुँचा। वह अब तक एक किनारे खड़ा अपने मालिक का मन अपनी ओर खींचने की चेष्टा कर रहा था।

लेग्री ने पूछा - "उस दिन तुझसे जो काम करने को बताया था, वह सब हुआ?"

"जी हाँ, सब हो गया।"

ये दो काले पिशाच लेग्री के खेत के प्रधान कार्याध्यक्ष थे। बहुत दिनों से निर्दयी आचरण करते-करते अब ये ऐसे नृशंस हो गए थे कि कोई भी नीच-से-नीच काम करने में नहीं हिचकते थे। लेग्री ने इन्हें शिकारी कुत्तों से भी बढ़कर खूंखार बना दिया था। गुलामी की प्रथा के देश में ये हब्शी अंग्रेजों से भी अधिक अत्याचार करने लगे थे। और कोई कारण नहीं, केवल इन हब्शियों की आत्मा का बेहद पतन हो गया था। संसार में चाहे जिधर नजर उठा कर देखिए, अत्याचार-पीड़ित या चिर-पराजित जाति के लोगों के मन में किसी प्रकार का वीरोचित भाव नहीं जमने पाता। ऐसी जाति के हृदय में नीचता, ईर्ष्या, द्वेष और हिंसा आदि अनेक प्रकार के दोष अपना घर कर लेते हैं।



अपने खेत का काम खूबी से चलाने के लिए लेगी ने एक बड़ी चाल खेल रखी थी। वह इस बात को अच्छी तरह जानता था कि अत्याचार-पीड़ित जाति के लोगों में परस्पर किसी प्रकार की सहानुभूति नहीं होती। कुड़बो सांबो से खार खाता था और जलता था और सांबो कुड़बो से। मौका मिलने पर कोई किसी की बुराई करने से न चूकता था और खेत के और गुलाम इन दोनों से द्वेष रखते थे। लेगी सांबो का कुसूर कुड़बो से और कुड़बो का सांबो से जान लेता था।

लेगी के सामने उसके दोनों पार्षद सांबो और कुड़बो के खड़े होने पर ऐसा जान पड़ता था, मानो तीन भयानक दानव खड़े हैं। जंगल के खूंखार पशुओं से भी इनकी प्रकृति निकृष्ट थी। उनकी वे भयावनी शक्तें, डरावनी आँखें और कर्कश आवाज सर्वथा इस स्थान के उपयुक्त जान पड़ती थीं।

लेगी ने कहा - "सांबो, इन सबको ठिकाने पर ले जा। यह औरत तेरे लिए लाया हूँ। मैंने तुझसे वादा किया था कि अबकी बार तेरे लिए एक गोरी मेम लाऊँगा। इसे ले जा।" इतना कहकर एमेलिन की जंजीर से बँधी हुई लूसी को खोलकर सांबो की ओर ढकेल दिया।

लूसी चौंककर पीछे हटी और बोली - "सरकार, नव अर्लिस में मेरा बूढ़ा पति है।"

लेगी ने कहा - "तो इससे क्या हुआ? यहाँ तुझे एक पति नहीं चाहिए? मैं वे सब बातें नहीं सुनता। (चाबुक उठाकर) जा, चुपचाप सांबो के साथ हो ले।"

फिर एमेलिन से बोला - "प्यारी, आओ, तुम मेरे साथ अंदर चलो!"

लेगी ने आँगन में खड़े होकर जब एमेलिन को 'प्यारी' कहा, तब घर के झरोखे में से एक स्त्री का चेहरा बाहर झाँकते हुए दिखाई दिया। दरवाजा खोलकर लेगी के अंदर जाते ही उस स्त्री ने गुस्से से दो-चार बातें सुनाई। इस पर लेगी ने कहा - "तेरा साझा, चुप रह! जो मेरे जी में आएगा, करूँगा। एक छोड़कर तीन लाऊँगा।"

टॉम अश्रुपूर्ण नेत्रों से एमेलिन की ओर देख रहा था। उसने लेगी की सब बातें सुनी थीं, पर आगे न सुन सका, क्योंकि वह शीघ्र ही सांबो के साथ चला गया।

लेगी के दासों के रहने का स्थान बड़ी ही मैला-कुचैला और गंदा था। घुड़साल की तरह फूस की छोटी-छोटी झोपड़ियाँ थी। उन सब गंदी झोपड़ियों को देखकर टॉम की जान सूख गई। वह पहले खुद ही एक झोपड़ी में इधर-उधर घूमकर अपनी बाइबिल रखने के लिए कोई जगह ढूँढ़ने लगा। फिर सांबो से बोला - "इनमें से मुझे कौन-सी झोपड़ी मिलेगी?"

सांबो ने कहा - "अभी तो मालूम नहीं, सारी झोपड़ियाँ बंद पड़ी हैं। तुमको कहाँ रखा जाएगा, सो मैं नहीं जानता।"

बड़ी देर के बाद टॉम को एक जगह मिली, पर वह ऐसी जगह थी, जिसके बारे में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं।

शाम को सब दास-दासी खेत से अपनी-अपनी झोपड़ी को लौटे। इनमें से हर एक के बदन पर फटे-पुराने कपड़े थे, शरीर धूल से लथपथ और मुँह बिल्कुल पिचके हुए। अकाल-पीड़ित लोगों की भाँति भूख-प्यास से घबराकर वे झोपड़ियों में घुसे। सुबह से शाम तक ये खेत में काम पर पिसे, बीच-बीच में कितनी ही बार कारिंदे की लातें और चाबुकों की मार खाई। अब इस वक्त यहाँ आकर इन्हें खाने के लिए एक-एक पाव गेहूँ दिया गया। उसी गेहूँ को पीसकर इन्हें रोटियाँ पकानी पड़ेंगी। अपना साथी होने लायक कोई आदमी ढूढ़ने की गरज से टॉम हर एक पुरुष और स्त्री का मुँह ध्यान से देखने लगा, पर यहाँ उसे एक बालक तक में मनुष्यात्मा की गंध न मिली। पुरुष पशुओं की तरह खूँखार, खुदगर्ज और बेरहम थे; स्त्रियाँ बहुत सताई गई और कमजोर थीं। उनमें दूसरी जो कुछ सबल थीं वे निर्बलों को धकेलकर अपना काम बनाती चली जा रही थी। किसी के मुख पर दया का नामोनिशान तक न था। हर एक दूसरे को वैर-भाव से घूर रहा था। सबको अपने-अपने पेट की चिंता पड़ी थी। वास्तव में घोर अत्याचार सहते-सहते उनका कलेजा पत्थर जैसा कठोर हो गया था। भूख-प्यास के सिवा मानव-प्रकृति की अन्य सब प्रकार की आकांक्षाएँ मिट गई थीं। संध्या-समय हर एक को जो गेहूँ मिलता, उसे सब अलग-अलग पीसते। दासों की संख्या के हिसाब से चक्कियों की संख्या बहुत कम थी। इससे बड़ी रात तक चक्कियों की घरघराहट चला करती। जो बलवान थे वे सबसे पहले अपना काम बना लेते, और निर्बलों की भोजन बनाने की बारी सबके अंत में आती।

लेगी ने सांबो को जो अधिक अवस्थावाली स्त्री सौंपी थी, उसकी ओर सांबो ने एक थैली गेहूँ फेंककर पूछा - "तेरा नाम क्या है?"

स्त्री ने कहा - "लूसी।"

"अच्छा, लूसी, आज से तुम मेरी औरत हो। यह गेहूँ ले जाकर मेरे और अपने खाने के लिए रोटियाँ पका लो।"

"मैं तुम्हारी स्त्री नहीं हूँ, कभी होने की भी नहीं। तुम यहाँ से जाओ।"

"फिर ऐसा कहेगी तो डंडे से सिर फोड़ दूँगा।"

"तेर खुशी! अभी मार डाल! जितनी जल्दी मौत आए उतना ही अच्छा। अब तक मर गई होती तो अच्छा था।"

सांबो जब उसे मारने चला तब कुइंबो ने, जो कई स्त्रियों को धकेलकर अपना गेहूँ पीस रहा था, कहा - "खबरदार सांबो, आदमी मारकर तुम काम का नुकसान करते हो। मैं मालिक से कह

दूँगा।"

इस पर सांबो ने कहा - "मैं मालिक से कह दूँगा कि तू चार स्त्रियों को धकेलकर अपना गेहूँ पीस रहा था।"

टॉम को सारे दिन पैदल चलना पड़ा था, इससे वह थककर चूर हो गया था। भूख से तबियत परेशान थी, पर ठिकाना नहीं था कि कब खाना नसीब होगा। कुड़बो ने उसके हाथ में एक थैली गेहूँ थमाकर कहा - "ले यह गेहूँ, जा रोटी बना-खा। यह एक हफ्ते की खुराक है।"

करीब आधी रात तक टॉम देखता रहा, पर उसकी गेहूँ पीसने की बारी न आई। रात के एक बजे जब चक्की खाली हुई तो उसने देखा कि दो रोगी स्त्रियाँ चक्की के पास बैठी हुई हैं। वे बहुत थकी हुई थीं, उनके शरीर में ताकत नहीं थी। यहाँ बहुत पहले आने पर भी अब तक उन्हें किसी ने गेहूँ नहीं पीसने दिया।

टॉम ने उठकर पहले उनके गेहूँ खुद पीस दिए और फिर अपने पीसे। यह पहला मौका था। इसके पहले कभी किसी ने दया नहीं दिखाई थी। यहाँ के लिए यह एक अलौकिक बात थी। बहुत मामूली दया का काम होने पर भी टॉम का यह आचरण देखकर उन दोनों स्त्रियों का हृदय कृतज्ञता से भर गया। उनका श्रम-खिन्न कठोर मुँह स्त्री-सुलभ ममता के भाव से चमक उठा। बदले में उन्होंने टॉम की रोटियाँ बना दीं। जब वे दोनों रोटियाँ बना रही थी, टॉम ने चूल्हे के पास बैठकर अपनी बाइबिल निकाली। उसके हाथ में पुस्तक देखकर एक स्त्री ने कहा - "तुम्हारे हाथ में यह क्या है?"

टॉम ने कहा - "बाइबिल।"

"दीनबंधु, कैंटाकी छोड़ने के बाद अब तक बाइबिल के दर्शन नहीं हुए थे।"

टॉम ने चाव से कहा - "तुम क्या पहले कैंटाकी में थी?"

"हाँ, वहीं थी, और अच्छी थी। कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसी दुर्दशा में पड़ना होगा।"

दूसरी स्त्री ने कहा - "वह कौन-सी पुस्तक बताई?"

टॉम बोला - "बाइबिल।"

दूसरी स्त्री ने कहा - "बाइबिल क्या होती है?"

पहली स्त्री बोली - "तुमने क्या कभी इस पुस्तक का नाम नहीं सुना? कैंटाकी में मेरी मालकिन कभी-कभी यह पुस्तक पढ़ा करती थी। तब मैं भी सुना करती थी। यहाँ तो केवल

गाली-गलौज सुनने में आती है। अच्छा, तुम पढ़ो, जरा मैं भी सुनूँ।"

टॉम बाइबिल में से पढ़ने लगा- "थके मांदे, भार से दबे हुए मनुष्यों, तुम मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।"

पहली स्त्री ने कहा - "वहा, ये तो बड़ी बढ़िया बात है। ये बातें कौन कहता है?"

टॉम बोला - "ईश्वर!"

पहली स्त्री ने पूछा - "ईश्वर कहाँ मिलेंगे? पता लग जाता तो मैं उनके पास जाती। उनके पास गए बिना मुझे विश्राम नहीं मिलेगा। मेरा शरीर बहुत थक गया है। इस पर सांबो मुझे नित्य धमकाता और कोड़े लगाता है। कोई दिन ऐसा नहीं होता कि आधी रात के पहले खाना नसीब हो जाए। खाकर जरा आँख झपकी कि सवेरा हुआ ही दीखता है और चट से खेत में जाने का घंटा बज जाता है। अगर परमेश्वर का पता मालूम हो जाता तो उनसे ये सब बातें जाकर कहती। हाय भगवान, अब तो यह कष्ट नहीं सहा जाता।"

टॉम ने कहा - "ईश्वर यहाँ भी है, और सब जगह है।"

स्त्री बोली - "तुम्हारी बात पर मेरा विश्वास नहीं जमता, ऐसी बातें बहुत बार सुनी हैं कि ईश्वर यहाँ है, वहाँ है; पर न मालूम कहाँ है कि हम लोगों का दुःख देखकर भी वह क्यों कुछ नहीं करता। मैं अब झोपड़ी में लेटकर सोती हूँ, यहाँ ईश्वर हर्गिज नहीं है।"

यह कहकर वह स्त्री चली गई। टॉम अकेला बैठा प्रार्थना करने लगा।

नीले आकाश में जैसे यह चंद्रमा उदय होकर चुपचाप, गंभीरतापूर्वक जगत का निरीक्षण कर रहा है, उसी प्रकार परमात्मा चुपचाप गंभीर भाव से जगत् के पाप, ताप और अत्याचारों को देख रहा था। जिस समय यह काला गुलाम हाथ में बाइबिल लिए हुए असहाय दशा में उसको पुकार रहा था, उस समय उसकी हर बात उस परमात्मा के कानों तक पहुँच रही थी। वह घट-घट व्यापी अंतर्दामी है। पर ईश्वर यहाँ मौजूद है, इसका विश्वास उस अनपढ़ स्त्री को कोई कैसे कराए? भला इस अत्याचार और यंत्रणा में पड़ी हुई ऐसी स्त्री के लिए ईश्वर पर विश्वास करना कब संभव हो सकता था?

टॉम के मन को आज उपासना के अंत में पूरी शांति नहीं मिली। वह बड़े अशांत चित्त से सोने गया। किंतु झोपड़ी की गंदी हवा और दुर्गंध के मारे उसकी वहाँ ठहरने की इच्छा न होती थी, लेकिन करता क्या? बेतरह थका हुआ था, जाड़ा भी सता रहा था, लाचार जाकर पड़ रहा। सोते ही आँख लग गई, स्वप्न आया, मानो झील के किनारे बाग में वह चबूतरे पर बैठा हुआ है और इवा बड़ी गंभीरता से उसके सामने बाइबिल पढ़ रही है।

"जब तू जल पर से पैदल जाओगे तब मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और जल तुम्हें डूबा न सकेगा। जब तू अग्नि में कूदोगे, तब भी मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, इससे अग्नि तुम्हें जला न सकेगी। मैं तुम्हारा एकमात्र विधाता और परमेश्वर हूँ।"

ये शब्द मधुर संगीत की भाँति टॉम के कानों में गूँजने लगे, मानो इवा सोने के रथ पर चढ़ी हुई बार-बार स्नेह-दृष्टि से उसकी ओर देखती हुई आकाश में उड़ रही थी और रथ में से उस पर फूलों की वर्षा कर रही थी।

टॉम की आँख खुल गई। लेकिन यह कैसा स्वप्न है? अविश्वासी इसे स्वप्न समझकर झूठा मान सकता है, पर जिस दयालु बालिका ने जीते-जी सदा, दूसरों के दुःख पर आँसू बहाए, क्या वह मृत्यु के बाद दुःखी को धीरज देने नहीं आ सकती? क्या यह संभव है? कदापि नहीं!

### 36. अत्याचारों की पराकाष्ठा

टॉम ने थोड़े ही समय में लेगी के खेत के काम ढंग और यहाँ का रवैया समझ लिया। कार्य में वह बड़ा चतुर था, और अपने पुराने अभ्यास तथा चरित्र की साधुता के कारण किसी कार्य में भूल अथवा लापरवाही न करता था। उसका स्वभाव भी शांत था, इससे उसने मन-ही-मन सोचा कि यदि मेहनत करने में हीला-हवाला न किया जाए तो कदाचित् कोड़ों की मार न सहनी पड़े। यहाँ के भयानक अत्याचार और उत्पीड़न देखकर उसकी छाती दहल गई। पर वह ईश्वर को आत्म-समर्पण करके धीरज के साथ काम करने लगा। उसका मन कभी एकदम निराश न होता था। उसका दृढ़ विश्वास था कि ईश्वर सदा उसकी रक्षा करेगा। किसी-न-किसी तरह वह मंगलमय पिता मेरा बेड़ा अवश्य पार लगाएगा।

लेगी साहब टॉम का काम-काज विशेष ध्यान देकर देखने लगा। उसने शीघ्र ही समझ लिया कि काम में टॉम बड़ा चतुर है, पर टॉम के प्रति उसका जो विद्वेष-भाव था, वह किसी तरह न टला। इसका मूल तत्व क्या था, यह लेगी-सरीखे मनुष्य की समझ के बाहर था। झूठे का सच्चे पर, पापी का पुण्यात्मा पर और अधर्मी का धर्मात्मा पर एक प्रकार का सहज द्वेष-भाव होता है। यही कारण है कि संसार में परम धार्मिक देश सुधारक अपने ही देशवालों की दृष्टि में खटकते हैं। जिनके लिए वे अपनी जान न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं, वही लोग उनकी जान के ग्राहक बन जाते हैं।

लेगी इस बात को भली भाँति समझ गया था कि वह गुलामों के साथ जो कठोर बर्ताव और अत्याचार करता है, उसे टॉम बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता है। पर संसार का नियम है कि

भले-बुरे सभी प्रकार के लोग दूसरे की प्रशंसा के भूखे रहते हैं। जब तक दूसरे लोग उनके आचरण और मत का अनुमोदन न करें, तब तक उनके जी को संतोष नहीं होता। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक गुलाम तक का प्रतिकूल मत असह्य हो जाता है। इसके सिवा लेग्री ने यह भी देखा कि टॉम जब-जब दूसरे दास-दासियों पर दया प्रकट करता है, उनको कोई कष्ट होने पर स्वयं दुःखित होता है। लेग्री के खेत में दास-दासियों में परस्पर कभी सहानुभूति के चिह्न दिखाई नहीं पड़े थे। इससे टॉम का आचरण उसे असह्य हो गया। टॉम को परिदर्शक के काम पर नियुक्त करने के लिए ही लेग्री इतने अधिक दाम देकर उसे खरीदकर लाया था; लेकिन जिस आदमी की प्रकृति अत्यंत कठोर न हो वह परिदर्शक के काम के लिए नहीं चुना जा सकता। परिदर्शक को सदा क्लियों की पीठ पर कोड़े लगाने का काम करना पड़ता था। टॉम अन्य सब कामों में पक्का होने पर भी इस अत्यावश्यक गुण से सर्वथा वंचित था। इससे लेग्री साहब ने सोचा कि टॉम का हृदय कठिन और निष्ठुर बनाने के लिए शीघ्र ही उपाय करना होगा। हृदय को निष्ठुर बनाने की नवीन शिक्षा-प्रणाली का उपयोग अविलंब किया गया।

एक दिन प्रातः काल जब सब दास-दासी खेत पर जाने के लिए जूटे, उस समय टॉम ने इस दल में आश्चर्य के साथ एक नई स्त्री को देखा। टॉम का ध्यान उसकी ओर खिंच गया। स्त्री लंबी और कमनीय थी। उसके हाथ-पैर कोमल थे और उसके वस्त्र भलेमानसों के-से थे। उम्र चालीस-पैंतालीस के लगभग होगी। इसके मुख पर ऐसा भाव था कि जिसने एक बार देख लिया, वह सहज ही भूल नहीं सकता था। इसके भाव से ऐसा जान पड़ता था, मानो इसके जीवन का इतिहास अनेक कष्टकर और अदभुत घटनाओं से भरा हुआ है। इसका प्रशस्त ललाट, विशाल उज्ज्वल नेत्र, टेढ़ी और घनी भौंहें मुखमंडल को शोभायमान कर रही थीं। इसके अंगों के गठन से जान पड़ता था कि यह रमणी युवावस्था में बड़ी सुंदर रही होगी। लेकिन शोक और दुःख के चिह्नों ने अब उस सौंदर्य को बिगाड़ दिया था। उसके चेहरे पर घोर विद्वेष, नैराश्य और अहंकारजन्य एक अद्भुत सहिष्णुता का भाव झलक रहा था। वह स्त्री कहाँ से आई और कौन है, टॉम को इसका कुछ भी पता न था। पर वह स्त्री खेत को जाते समय बराबर टॉम की बगल में चल रही थी। मालूम होता था कि खेत के अन्य दास-दासी इसे भली भाँति जानते थे, क्योंकि उन नीच-प्रकृति के जीर्ण-शीर्ण कपड़ों से ढके क्लियों में कोई उसे देखकर मुस्कराया, किसी ने मजाक उड़ाया, कोई उसे घूरने लगा और किसी-किसी ने बड़ा आनंद मनाया। एक ने कहा - "क्यों बीवी, अंत में आ न गई ठिकाने पर! मुझे बड़ी खुशी हुई।"

दूसरे ने कहा - "अब मालूम होगा, बीवी, कि यहाँ गुलछर्रें नहीं उड़ते हैं।"

तीसरा बोला - "देखना है, कैसा काम करती है। काम न करने पर इसकी भी कोड़ों से खबर ली जाएगी।"

चौथे ने कहा - "इसकी पीठ पर कोड़े लगे तो मैं बड़ा खुश होऊँगा।"

उस स्त्री ने इस सबकी कुछ भी परवा न की। वह अपनी उसी गंभीर चाल से चलती रही,

मानो वह कुछ सुनती ही नहीं। टॉम सदा से सभ्यों में रहा था। स्त्री की चाल-ढाल से उसने समझ लिया कि जरूर यह कोई सभ्य स्त्री होगी। पर इसकी यह दर्दशा क्यों हो रही है, इसका कुछ निर्णय न कर सका। स्त्री यद्यपि बराबर टॉम के पास चल रही थी, पर टॉम से एक शब्द भी न बोली।

टॉम शीघ्र ही खेत पर पहुँचकर काम में लग गया। वह स्त्री उससे बहुत दूर न थी। इससे वह बीच-बीच में आँख उठाकर उसके काम की ओर देखता जाता था। उसने देखा कि वह बड़ी फुर्ती से काम कर रही है। औरों की अपेक्षा वह बहुत शीघ्रता और आसानी से कपास चुनने लगी; पर जान पड़ता था कि वह बड़ी विरक्ति, घृणा और अभिमान के साथ यह काम कर रही है।

टॉम के बगल में ही, नीलामी में उसके साथ खरीदी हुई, लूसी नाम की दासी बैठी कपास बीन रही थी। यहाँ आने के बाद यह स्त्री बहुत ही कमजोर और बीमार हो गई। वह कपास बीनती जाती थी और क्षण-क्षण में मृत्यु को बुलाती जाती थी। कभी-कभी एकदम धरती पर पसर जाती थी। टॉम ने उसके पास सरककर चुपके से अपनी डलिया में से थोड़ी कपास निकालकर उसकी डलिया में डाल दी।

लूसी ने आश्चर्य के साथ देखते हुए कहा - "अरे, नहीं-नहीं, ऐसा मत करो। इसके लिए तुम आफत में पड़ जाओगे।"

ठीक इसी समय वहाँ सांबो आ पहुँचा। लूसी को एक ठोकर मारी। इससे लूसी बेहोश हो गई।

तब सांबो टॉम के पास जाकर उसके मुँह और पीठ पर चाबुक फटकारने लगा।

टाप चुपचाप अपना काम करता रहा। पर लूसी को अचेत हुई देखकर परिदर्शक का एक दूसरा साथी नौकर कहने लगा - "अभी इस हरामजादी को होश में लाता हूँ।"

इतना कहकर उसने जेब से एक आलपिन निकालकर उसके सिर में चुभो दी। इससे लूसी कराह उठी। परिचालक बोला - "उठ हरामजादी, मुझसे यह सब ढोंग नहीं चलेगा। मैं तेरी सब बदमाशी निकाल दूँगा।"

लूसी होश में आकर कुछ उत्तेजित-सी होकर तेजी के साथ कपास इकट्ठी करने लगी।

उस आदमी ने कहा - "देख, अगर इसी तरह जल्दी-जल्दी काम नहीं करेगी तो तुझे यमराज के घर पहुँचा दूँगा।"

टॉम ने सुना, लूसी ने कहा - "जल्दी भेज दो तो जान बचे!" फिर सुना - "हे भगवान, हे

परमात्मन्, अब कितना सहना पड़ेगा! क्या इस दुनिया से मुझे नहीं उठा लोगे?"

टॉम जानता था कि यदि शाम तक लूसी डलिया भर कपास न दे सकी, तो इसकी जान की खैरियत नहीं। लेग्री मारे कोड़ों के इसकी चमड़ी उधेड़ देगा। अतः उसके लिए अपनी आफत की कुछ भी परवा न करके उसने अपनी सारी कपास उसकी डलिया में डाल दी।

लूसी ने कहा - "अरे, ऐसा मत करो!... तुम नहीं जानते कि इसके लिए वे तुम्हारी कितनी आफत करेंगे।"

"मैं तुम्हारी निस्वत अच्छी तरह सह सकता हूँ।" इतना कहकर टॉम फिर अपनी जगह पर जा डटा। यह एक क्षण भर की बात थी।

एकाएक पूर्वोक्त अपरिचित रमणी काम करते-करते टॉम के इतने निकट आ गई कि उसने टॉम के अंतिम शब्द सुने, और फिर पल भर अपनी बड़ी-बड़ी काली आँखें उन लोगों पर गड़ाकर देखने लगी। इसके बाद अपनी डलिया से थोड़ी-सी कपास लेकर टॉम की डलिया में डालकर बोली - "तुम अभी यहाँ का कायदा बिल्कुल नहीं जानते हो। यहाँ एक महीना तो बीतने दो, फिर दूसरे की सहायता करना तो दूर रहा, तुम्हें अपनी ही जान बचानी मुश्किल हो जाएगी।"

एक परिचालक थोड़ी दूर पर उस स्त्री की यह कार्रवाई देख रहा था। वह चाबुक लिए हुए वहाँ पहुँचा और विजय के स्वर में बोला - "हाँ हाँ, क्या करती हो? मैं तुम्हारी सारी हरकतें देखता हूँ। तुम इस समय मेरे वश में हो, यह सब चाल नहीं चलेगी।"

उस स्त्री ने बड़ी कड़ी नजर से परिचालक की ओर देखा। उसके आँठ फड़कने लगे और आँखों से चिनगारियाँ बरसने लगीं। वह परिचालक को डाँटकर बोली - "सूअर, पाजी! आ तो एक बार मेरे पास। देखूँ तेरी हिम्मत! अब भी मुझमें इतनी क्षमता है कि शिकारी कुत्तों से तेरी बोटी-बोटी नुचवाकर जिंदा गड़वा दूँ। तू मेरे सामने रौब दिखाने आया है!"

उसकी बातों से सहमकर परिचालक बोला - "शैतान की बच्ची, तब तू यहाँ काम करने क्यों आई है? मिस कासी, तुम मेरा कोई नुकसान न करना।"

रमणी बोली - "तू, यहाँ से दूर हट!"

परिचालक वहाँ से हटकर दूसरी ओर कुलियों का काम देखने चला गया।

वह स्त्री फिर तेजी से अपने काम में लग गई। उसका गजब का फूर्तीलापन देखकर टॉम चौंधिया गया। दिन डूबने के पहले ही उसकी डलिया फिर भर गई और तारीफ यह कि बीच में उसने कई बार अपनी कपास टॉम की डलिया में भी डाल दी थी। संध्या के बाद अधिक अंधकार हो जाने पर सब कुली सिर पर अपनी डलिया रखे हुए कपास के गोदाम पर, जहाँ तौल होता था,



पहुँचे। लेगी वहाँ बैठा दो परिचालकों से घुल-घुलकर बातें कर रहा था।

लेगी ने कहा - "इस काले गुलाम टॉम को ठीक करना चाहिए। यह जल्दी रास्ते पर नहीं आएगा, बड़ी मेहनत लेगा।"

हब्शी परिचालक खीसें निकालकर हँसने लगा। पर कुइंबो बोला - "हज़ूर ही से यह ठीक होगा। आप जिस जोर से चाबुक लगाना जानते हैं, शैतान भी वैसा नहीं जानता।"

लेगी बोला - "इसे सिखाने का सबसे अच्छा और सीधा उपाय यह होगा कि इसे दूसरी स्त्रियों को कोड़े लगाने का काम सौंपा जाए।"

कुइंबो ने कहा - "हाँ, सरकार, लेकिन यह बात वह कभी मंजूर नहीं करेगा। मार-पीट करने के लिए वह कभी तैयार न होगा। उसका वह धरमपना दूर करना सरल नहीं है।"

लेगी बोला - "मैं आज ही उसका धरमपना निकाले देता हूँ।"

इतने में सांबो ने कहा - "यह देखिए, लूसी ने कोई काम नहीं किया। दिन भर बैठी रही, यह बड़ी बदजात है। कुलियों में ऐसा और पाजी नहीं है।"

कुइंबो बोला - "खबरदार सांबो, मैं जानता हूँ कि लूसी से तू क्यों खार खाता है।"

सांबो ने लेगी की ओर देखकर कहा - "सरदार, आप ही ने तो उसे मेरी औरत बनाने को कहा था, पर वह आपकी बात नहीं मानती।"

लेगी ने बहादूरी से कहा - "मैं मारते-मारते उसकी चमड़ी उधेड़ देता। लेकिन आज-कल काम की भीड़ है, इससे नुकसान होगा।"

"लूसी बड़ी बद है, कुछ नहीं करना चाहती। सिर्फ दिक् करती है और यह टॉम उसकी मदद करता है।" कुइंबो ने कहा।

"टॉम ने इसकी मदद की है? अच्छा, तो टॉम ही इसको कोड़े भी लगावे। इससे टॉम खूब सीख जाएगा। यह शैतान यों ही अधमरी हो रही है। तुम लोगों की मार से तो मरने का भी डर है, पर टॉम उतने जोर से कोड़े नहीं लगावेगा, इससे वह भी डर नहीं है।"

यह बात सुनकर सांबो और कुइंबो खीसें निकालकर हँसने लगे।

परिचालकों ने कहा - "लेकिन सरकार, टॉम ने और मिस कासी ने लूसी की डलिया में बड़ी कपास डाली है।"

लेगी बोला - "मैं अभी तौले लेता हूँ।" वे दोनों परिचालक फिर ठठाकर हँसे।

लेगी ने पूछा - "मिस कासी ने अपना दिन भर का काम तो पूरा कर लिया है न?"

परिचालक ने जवाब दिया - "सरकार, काम तो वह शैतान की तरह करती है।"

लेगी ने सबकी कपास तौलने की आज्ञा दी। कुली बहुत थक गए थे। इससे बड़े कष्ट से अपनी-अपनी डलिया उठाकर काँटे पर रखने लगे। लेगी हाथ में स्लेट लेकर तौल और नाम लिखने लगा।

टॉम की टोकरी का तौल हुआ और उसका काम संतोषजनक पाया गया। अपनी टोकरी तुल जाने के बाद टॉम बड़ी उत्कंठा से लूसी की टोकरी की ओर देखने लगा।

लूसी ने डरते और काँपते हुए अपनी टोकरी लाकर रखी। तौल में वह पूरी थी, पर लेगी ने उसे धमकाने की नीयत से बनावटी गुस्से से कहा - "यह हरामजादी बड़ी सुस्त है। आज भी कपास कम है। इसे किनारे खड़ा करो, अभी इसकी खबर ली जाती है।" लूसी ने निराशा से एक ठंडी साँस ली और एक तख्ते पर बैठ गई।

फिर उस कासी नाम की स्त्री ने बड़ी अवज्ञा और उद्धतता के साथ अपनी टोकरी लाकर रखी। लेगी विद्रूप और कौतूहल से उसका मुख देखने लगा।

कासी आँखें गड़ाकर लेगी की ओर घूरने लगी। उसके होठ फड़कने लगे। उसने फ्रेंच भाषा में लेगी से कुछ कहा। बात किसी की समझ में न आई, पर लेगी का चेहरा पिशाच-सा हो गया, और उसने कासी को मारने के लिए हाथ उठाया। रमणी घृणा दिखाती हुई निर्भीकतापूर्वक वहाँ से चल दी।

कुछ देर बात लेगी ने टॉम को बुलाकर कहा - "टॉम, मैंने तुझे साधारण कुली का काम करने के लिए नहीं खरीदा है। मैं तुझे परिचालक का ओहदा दूँगा और ठीक काम करने पर तू तरक्की पाकर परिदर्शक भी हो सकेगा। कुलियों को किस तरह कोड़ों से पीटा जाता है, यह तूने इतने दिन देख-सुनकर खूब सीख लिया होगा। जा, इस लूसी को कोड़े लगा! यह हरामजादी बड़ी शरारती है।"

टॉम ने कहा - "मुझे माफ कीजिए। कृपा करके मुझे इस काम में मत लगाइए। यह मुझसे नहीं हो सकेगा। न मैंने कभी ऐसा काम किया है, न करूँगा।"

टॉम की बात सुनकर लेगी क्रुद्ध होकर कहने लगा - "तू जरूर कर सकेगा।"

इतना कहकर और चमड़े का चाबुक लेकर वह टॉम को पीटने और उसके मुँह पर घुँसों की

वर्षा करने लगा। करीब पंद्रह मिनट तक लात, घूँसे और कोड़े बरसाकर बोला - "बोल, अब भी इनकार करता है?"

टॉम की नाक से खून बहने लगा। उसे पोछते हुए उसने कहा - "सरकार, मैं दिन-रात काम करने को तैयार हूँ। इस शरीर में जितने दिन तक प्राण हैं, आपकी नौकरी बजाऊँगा; लेकिन इस काम को मैं अनुचित समझता हूँ। सरकार, यह मुझसे कभी नहीं होगा - मैं कभी नहीं करूँगा, कभी नहीं।"

टॉम बोलने में सदा से विनयी था। उसके बोलने का ढंग विशेष सम्मान-सूचक था। लेगी ने सोचा कि टॉम डर गया है, शीघ्र ही वश में आ जाएगा। पर उसके अंतिम शब्द सुनकर कुली लोग चौंक पड़े। लूसी हाथ जोड़कर बोली - "हे भगवान!"

सब लोग एक-दूसरे का मुँह देखने लगे, सब शंकित मन से आनेवाली विपत्ति की प्रतीक्षा करने लगे।

लेगी कुछ देर निस्तब्ध-सा और हतबुद्धि-सा रहा, लेकिन थोड़ी देर बाद गरजकर बोला - "क्यों रे हरामी के बच्चे, बोल, तू मेरी बात को अनुचित समझता है? तूझे उचित और अनुचित का विचार करने की क्या पड़ी है? क्यों बे, तू अपने को क्या समझता है? सूअर, तू अपने को बड़ा शरीफ का बच्चा समझता है कि अपने मालिक के सामने उचित-अनुचित करता है! इस छोकरी को कोड़े लगाने को तू अन्याय समझने का बहाना लगाता है।"

टॉम ने कहा - "सरकार, मैं इसे मारना अन्याय समझता हूँ। यह स्त्री रोगी और कमजोर है, इसे मारना निर्दयता है। मैं ऐसा काम नहीं करूँगा। सरकार, मुझे मारना चाहें तो मार डालें। मुझे मरना कबूल है, लेकिन इनमें से किसी को मारने के लिए मेरा हाथ नहीं उठेगा।"

टॉम ने धीमे स्वर में बातें कही थी; पर उसके वाक्यों से उसके हृदय की दृढ़ता और अटल प्रतिज्ञा का पता चलता था। लेगी क्रोध से काँपने लगा। उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं, पर जैसे कुछ भयंकर जंतु अपने शिकार को एकदम न मारकर धीरे-धीरे खिला-खिलाकर मारते हैं, वैसे ही लेगी ने भी टॉम को तत्काल कोई जबरदस्त सजा नहीं दी। क्रोध के वेग को तनिक रोककर वह उस पर तीव्र व्यंग्य-बाण छोड़ते हुए कहने लगा - "चलो, अंत में हम पापियों के दल में यह एक धर्मात्मा कुत्ता आ गया। यह किसी महात्मा और किसी सज्जन से कम नहीं। हम सब पाखंडी हैं। यह हम लोगों को यहाँ हमारे पापों की जानकारी कराने आया है। वाह, कैसा धर्मात्मा है! क्यों रे बदजात, तू धर्म का तो बड़ा ढोंग रचता है पर क्या तूने बाइबिल से यह बात नहीं सुनी - 'अरे नौकरो, अपने मालिक के हुक्म की तामील करो।' मैं क्या तेरा मालिक नहीं हूँ? तेरे इस काले शरीर के बारह सौ डालर नकद नहीं गिने? बोल, इस समय तेरी आत्मा और शरीर मेरा है या नहीं?" उसने टॉम को अपने डबल जूतों की जोर से ठोकर लगाते हुए कहा - "बोल, बोल, बता!"

इस भयंकर शारीरिक यंत्रणा में, इस घोर पाशविक अत्याचार से मूर्दार हुए रहने पर भी, टॉम के हृदय में लेगी के इस प्रश्न से आनंद और जयोल्लास की धारा बह निकली। वह एकाएक सिर ऊँचा करके खड़ा हुआ। उसके घायल मुख से जो खून की धार बह रही थी, उस खून के साथ आँसुओं की धारा का मेल होने लगा। टॉम आँखें उठाकर विश्वासपूर्वक कहने लगा - "नहीं, नहीं, नहीं, सरकार, मेरी आत्मा आपकी कभी नहीं है। आपने इसे नहीं खरीदा है - तुम इसे नहीं खरीद सकते। यह उसी एक के हाथ बिकी हुई है, जो इसकी रक्षा करने में समर्थ है। कोई परवा नहीं, कोई परवा नहीं! इस शरीर को तुम जितना चाहो, उतना सता लो, आत्मा का तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

लेगी ने त्यौरी चढ़ाकर कहा - "मैं कुछ नहीं बिगाड़ सकता? देखता हूँ, देखता हूँ। अरे सांबो, कुड़ंबो, लो, इस सूअर को दुरुस्त करो। ऐसी मार मारो कि महीने भर खाट से सिर न उठा सके।"

दोनों यमदूत-सरीखे नर-पिशाच तत्काल टॉम को बाहर खींचकर ले गए और पीटने लगे। यह देखकर लूसी बार-बार चीखने लगी।

### 37. कासी की करुण कहानी

रात के दो पहर बीत चुके होंगे। चारों ओर घनघोर अँधियारी छाई हुई है। सड़ी-गली कपास और इधर-उधर फैली टूटी-फूटी चीजों से भरी हुई एक तंग कोठरी में टॉम अचेत पड़ा है। दिन भर अन्न-पानी नसीब नहीं हुआ। इससे उसके प्राण कंठ में आ लगे हैं। इस पर कोठरी में मच्छरों की भरमार। जरा आँखें बंद करने तक का आराम नहीं है।

टॉम जमीन पर पड़ा पुकार रहा है - "हे भगवान! दीनबंधु! एक बार दीन की ओर आँख उठा कर देखो! पाप और अत्याचार पर विजय पाने की शक्ति दो!"

तभी उसे अपनी कोठरी की ओर आते किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी और लालटेन की मद्धिम रोशनी उसके मुँह पर पड़ी।

टॉम ने कहा - "कौन है? ईश्वर के लिए मुझे एक घूँट पानी पिला दो!"

कासी ने, जिसके पैरों की आहट सुनाई दी थी, लालटेन को जमीन पर रखकर, अपने साथ

लाई हुई बोतल से थोड़ा पानी एक गिलास में निकाला और टॉम का सिर उठाकर उसे पिलाया।  
बुखार की तेजी के कारण टॉम ने और दो गिलास पानी पिया।

कासी ने कहा - "जितना चाहो, पानी पी लो। मैं काफी लाई हूँ। जानती थी कि ऐसी हालत में तुम्हें पानी की कितनी जरूरत होगी। तुम्हारी जैसी हालत होने पर मैं क्लियों को अक्सर पानी पिलाने जाती हूँ। आज तुम्हारे लिए पानी लेकर पहली बार नहीं आई हूँ।"

टॉम ने पानी पीकर कहा - "श्रीमतीजी, आपको बहुत धन्यवाद!"

कासी दुःखित स्वर में बोली - "मुझे 'श्रीमतीजी' मत कहो। मैं भी तुम्हारी तरह एक अभागिन गुलाम हूँ, बल्कि तुमसे भी गई-बीती हूँ।"

फिर कासी ने वह खाट और बिछौना भी टॉम के सामने रखा, जिन्हें वह अपने साथ लाई थी। उसने एक चादर को ठंडे जल से भिगोकर टॉम की चारपाई पर बिछाया और बोली - "मेरे अभागे साथी, किसी तरह हिम्मत करो और गिरते-पड़ते भी आकर इस खाट पर लेट जाओ।"

टॉम का सारा बदन लहू-लुहान था। उसमें हिलने-डुलने की तनिक भी शक्ति नहीं थी, परंतु बड़े कष्ट से जैसे-तैसे सरकते-सरकते वह उस ठंडे बिछौने पर जा लेटा। उस पर पहुँचते ही उसे कुछ आराम मालूम हुआ।

बहुत समय से इस नरक-जैसे अत्याचारपूर्ण स्थान में रहते-रहते कासी घावों की सफाई और उनकी परिचर्या के काम में अनुभवी हो गई थी। वह टॉम के घावों पर अपने हाथ से मलहम लगाने लगी। मलहम के लगते ही टॉम की पीड़ा और कम हो गई। इसके बाद उसने टॉम का सिर ऊँचा उठाकर उसके नीचे थोड़ी-सी रुई रख दी। फिर बोली - "तुम्हारे लिए मैं जो कुछ कर सकती थी, उतना करने की मैंने कोशिश की है।"

टॉम ने इसके उत्तर में अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। कासी अब जमीन पर बैठ गई और दोनों हाथ घुटनों पर लपेटकर तीव्र यंत्रणा व्यंजक भाव से एकटक सामने की ओर देखने लगी। उसके सिर का कपड़ा पीठ पर गिर गया, और उसके लंबे-लंबे काले बाल उदासी भरे मुँह के चारों ओर बिखर गए।

कुछ देर बाद कासी बोली - "इसका कोई नतीजा नहीं, अभागे साथी, तुम्हारी सारी कोशिशें बेकार हैं। तुमने आज बड़ा विलक्षण साहस दिखलाया है। न्याय भी तुम्हारी ही ओर था, पर यह लड़ाई व्यर्थ है। इसमें तुम्हारी जीत होगी, ऐसा नहीं लगता। तुम अबकी बार साक्षात् शैतान के पंजे में फँस गए हो। वह बहुत ही निर्दयी है। अंत में तुम्हें हारकर आत्म-समर्पण करना होगा- न्याय का पक्ष छोड़ना होगा।"

न्याय का पक्ष छोड़ना होगा। क्या मेरी मानसिक निर्बलता और शारीरिक यंत्रणा ने भी कुछ

देर पहले चुपके से मेरे कानों में यही बात नहीं कही थी? टॉम काँप उठा। जिस प्रलोभन के साथ टॉम आज तक बराबर लड़ता चला आया था, विषाद-भरी कासी उसे उसी प्रलोभन की 'जिंदा तस्वीर' जान पड़ने लगी। टॉम आर्त होकर बोला - "हे भगवान! हे परम दयालु पिता! मैं न्याय का पक्ष कैसे छोड़ सकता हूँ?"

कासी ने स्थिर स्वर में कहा - "ईश्वर से पुकार करने का कोई नतीजा नहीं निकलेगा। ईश्वर कुछ सुनता-सुनाता नहीं है। मेरा विश्वास है कि ईश्वर है ही नहीं, और यदि है तो वह हम-जैसे लोगों का विरोधी है। लोक और परलोक, सभी हम लोगों के विरोधी हैं। दुनिया की हर चीज हमें नरक की ओर धकेल रही है। फिर हम नरक में क्यों न जाएँ?"

टॉम ने आँखें मूंद ली। कासी के मुँह से ऐसी नास्तिकता-भरी बातें सुनकर उसका हृदय दहल उठा। कासी फिर कहने लगी - "देखो, यहाँ के बारे में तुम कुछ नहीं जानते, पर मैं यहाँ की हर चीज को जानती हूँ। मुझे यहाँ रहते पाँच बरस बीत गए हैं। मेरे शरीर और आत्मा सब इसी के पैरों के नीचे हैं, फिर भी इस नर-पशु को हृदय से घृणा करती हूँ। यहाँ पर अगर तुम जीवित ही गाड़ दिए जाओ, आग में डाल दिए जाओ, तुम्हारे शरीर की बोटी-बोटी कर दी जाए, तुम्हें कुत्तों से नुचवा डाला जाए, या पेड़ से लटकाकर कोड़ों से तुम्हारी जान तक ले ली जाए, तो भी उस पर कोई कार्रवाई नहीं होगी। किसी अंग्रेज को गवाह बनाए बिना कोई अपराध सिद्ध नहीं किया जा सकता। और यहाँ पाँच-पाँच मील तक कोई अंग्रेज नहीं है। हो भी तो क्या? यह झूठी अंग्रेज कौम क्या किसी भी बुरे काम से परहेज करती है? वे क्या तुम्हारे-हमारे लिए अदालत में सच्ची बात कहेंगे? ईश्वर का या मनुष्य का बनाया ऐसा कोई कानून यहाँ नहीं है, जिससे हम लोगों का कुछ भला हो सके। और यह नराधम! संसार का ऐसा कोई पाप नहीं है, जिसे करने में संकोच करे। मैंने यहाँ आकर जो कुछ देखा है, उसे अगर मैं पूरा-पूरा कह सकूँ तो कोई भी आदमी मारे डर के पागल हो जाएगा। इस पाखंडी की इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम करने का कुछ नतीजा नहीं निकलेगा। मैं क्या अपनी इच्छा से इस नीच के साथ रह रही हूँ? क्या यहाँ आने से पहले मैं एक सभ्य महिला नहीं थी? और यह - हे ईश्वर, यह व्यक्ति क्या था और क्या हो गया! फिर भी पाँच साल से इसके साथ हूँ। इन पाँच सालों में मैं दिन-रात हर घड़ी अपने भाग्य को कोसती रही हूँ। लेकिन अब यह पामर पशु मुझे छोड़कर, एक पंद्रह साल की कन्या को पत्नी बनाने को ले आया है। उसी के मुँह से मैंने सुना कि उसकी भलीमानस मालकिन ने उसे बाइबिल पढ़ना सिखाया है और वह अपनी बाइबिल यहाँ भी साथ लाई है - नरक में अपने साथ बाइबिल लेकर आई है!"

इतना कहते-कहते कासी पागल की तरह हँस पड़ी।

कासी की बातें सुनकर टॉम की आँखों के सामने अंधकार छा गया। वह हाथ जोड़कर बोल उठा - "हे नाथ, तुम कहाँ हो? क्या हम दीन-दुखियों की सुध एकदम ही बिसार दी? हे पिता, तुम्हारे सहायक हुए बिना निस्तार नहीं है।"

कासी फिर सूखेपन से कहने लगी - "और तूम्हें क्या पड़ी है जो तूम् इन अभागे कृत्तों-जैसे नीच गुलामों के लिए इतना कष्ट सहते हो! इन्हें जरा-सा मौका मिलना चाहिए, फिर ये कभी तूम्हारी बुराई करने से नहीं चूकेंगे। तूम् इनमें से किसी को बेंत लगाने के लिए राजी नहीं हो; पर इन्हें मालिक का इशारा मिल जाए तो ये तुरंत तूम्हें पीट डालेंगे। ये एक-दूसरे के लिए बड़े निर्दयी हैं। इनके लिए तुम्हारे कष्ट उठाने का कोई नतीजा नहीं होगा।"

टॉम बोला - "हाय! ये इतने निर्दयी कैसे हो गए? अगर मैं भी इन्हीं की तरह दूसरे साथियों को बेंत लगाने को तैयार हो जाऊँ, तो मैं भी धीरे-धीरे इन्हीं-जैसा हो जाऊँगा। नहीं-नहीं, मेम साहब, मैं सब कुछ खो चुका हूँ - पत्नी, पुत्र, कन्या, घर-द्वार सब जाता रहा। एक दयालु मालिक मिले थे, सो वे भी परलोक सिधार गए। यदि एक सप्ताह मौत उन्हें और छुट्टी दे देती तो मुझे वह गुलामी से मुक्त कर देते। इस संसार में मेरा अब कुछ नहीं रहा, कुछ नहीं रहा - मैं अपना सब-कुछ खो चुका हूँ। अब मैं अपना परलोक नहीं बिगाड़ूँगा। नहीं-नहीं, मैं कभी पाप नहीं कमाऊँगा।"

कासी ने कहा - "यह नहीं हो सकता कि इन पापों को ईश्वर हमारे हिसाब में दर्ज करे। जब हमें मजबूर करके पाप कराया जाता है तो इसके लिए वह हमें अपराधी नहीं ठहराएगा। वह उन्हीं के सिर पाप का बोझा लादेगा, जो हमें दबाकर पाप कराते हैं।"

टॉम ने कहा - "तूम्हारी बात ठीक है, लेकिन हाथों से पाप करते-करते हमारा हृदय कलुषित हो जाएगा। अगर मैं सांबो जैसा कठोर हृदय और दुराचारी हो जाऊँ - इससे क्या कि मैं वैसा कैसे हुआ हूँ - मेरा हृदय एक बार भी दुराचारी बना कि फिर दुराचारी ही बना रहेगा। तूम्हारे तर्क से हृदय का दुराचारी होना रोका नहीं जा सकता, मुझे सबसे बड़ा डर इसी का है।"

टॉम की बातें सुनकर कासी पागल की तरह उसकी ओर देखने लगी। लगा, जैसे सहसा किसी नए विचार ने उसके हृदय पर आघात किया हो। वह ठंडी साँस लेकर बोली - "हे भगवान, मैं भी कैसी पापिन हूँ! टॉम, तूम्ने सच्ची बात कही है। हाय-हाय-हाय!" ... कहते-कहते गहरे मानसिक दुख से कातर होकर वह जमीन पर गिर पड़ी।

इसके बाद दोनों कुछ देर तक चुप रहे। अंत में टॉम ने क्षीण स्वर में कहा - "मेम साहब कृपा करके..."

कासी तुरंत उठ खड़ी हुई। उसका मुँह पहले-जैसा ही उदास था।

टॉम ने कहा - "मुझे पीटते समय उन लोगों ने मेरा कोट इस कोने में फेंक दिया था। उसकी जेब में मेरी बाइबिल है। आपकी बड़ी कृपा होगी, यदि आप उसे उठा दें।"

कासी कोने में गई और बाइबिल ले आई। टॉम ने बाइबिल को खोला और उसमें अपनी एक निशान-लगी हुई जगह दिखाते हुए कासी से कहा - "मेम साहब, यदि आप कृपा करके मुझे इसे

पढ़कर सुना दें तो पानी पीकर मैं जितना सुखी हुआ हूँ, उससे अधिक सुखी होऊँगा।"

कासी ने सूखे हृदय और अश्रद्धा से बाइबिल को हाथ में लेकर टॉम द्वारा निशान लगाई हुई जगह से आगे पढ़ना शुरू किया। वह पढ़ना-लिखना खूब जानती थी, अतः ईसा को सूली पर चढ़ाए जाने का हाल बड़ी स्पष्टता तथा मधुरता से पढ़ने लगी। पढ़ते हुए बार-बार उसका दिल काँपने लगा। बीच-बीच में वह रुकने लगी। दो क्षण ठहरकर सँभल जाती और फिर आगे पढ़ने लगती। अंत में जब वह पढ़ते-पढ़ते "पिता, इन्हें क्षमा करना, क्योंकि ये नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं।" - इस वाक्य पर पहुँची तो पुस्तक बंद करके रोने लगी। टॉम भी रो रहा था।

कुछ देर बाद टॉम ने कहा - "अगर हम लोग ईसा के दृष्टांत का अनुसरण कर सकते, तो क्या इस तरह दुःखों और कष्टों से हार मान लेते? ईसा का यह दृष्टांत तो हमें कठिनाइयों का सामना करना सिखलाता है। मेम साहब, मैं देखता हूँ कि आप खूब पढ़ी-लिखी हैं। हर बात में मुझसे बढ़-चढ़कर हैं, पर एक विषय में आपको इस गँवार टॉम से भी शिक्षा मिल सकती है। आपने कहा है कि ईश्वर गोरों के पक्ष में हम लोगों के विरुद्ध है, नहीं तो हमपर इतना अत्याचार होने पर भी वह इसका विचार क्यों नहीं करता? आपका यह संस्कार गलत बुनियाद पर टिका है। आप ध्यानपूर्वक देखें कि ईसा ने अपनी संतान के लिए कैसे-कैसे भारी कष्ट सहन किए। किस तरह ईसा ने दोनों की भाँति जीवन बिताया, और यहाँ तक कि पापियों ने अंत में उनके प्राण तक ले लिए। लेकिन क्या हममें से किसी की भी दशा उनकी-सी हुई है? निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि ईश्वर हम लोगों को भूले नहीं है। हमें यह नहीं सोच लेना चाहिए कि हमारे दुःख और कष्ट में पड़े रहने से ईश्वर हमारा सहायक नहीं रहा। उस पर विश्वास रखकर यदि हम अपने को पापों से दूर रख सकें तो अंत में अवश्य हमें स्वर्ग मिलेगा। यह विपत्ति, यह दुःखों और कष्टों के पहाड़, हमें अग्नि में तपाए हुए सोने के समान शुद्ध करके, ईश्वर के साथ रहने योग्य बना रहे हैं।"

कासी ने कहा - "पर जिस दुर्दशा में पड़ने से हमारे लिए पाप के रास्ते से हटकर चलना मुश्किल हो जाता है, वैसी दुर्दशा में वह हमें क्यों डालता है?"

टॉम ने उत्तर दिया - "कैसा भी संकट क्यों न हो, मेरी समझ में, हम उसे पार कर सकते हैं। किसी भी दशा में पाप के मार्ग से हटकर चलना हमारे लिए असंभव नहीं है।"

कासी बोली - "सो तो तुम्हारे सामने आएगा। वे कल फिर तुम्हें सताएँगे, तब क्या करोगे? मैं यहाँ की सब बातें जानती हूँ। तुम्हें वे जैसी-जैसी तकलीफें देंगे, उनका विचार-मात्र करने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसी तकलीफें दे-देकर अंत में वे तुम्हें पापकर्म करने पर मजबूर करेंगे।"

टॉम कुछ क्षण चुप रहा, फिर बोला - "हे भगवान! क्या तू मेरी रक्षा नहीं करोगे? प्रभो, आप मेरे सहायक हो। देखना, तुम्हारा दास पीड़ा और अत्याचार के डर से कुमार्गी न होने पाए!"

कासी फिर बोली - "मैं यहाँ पहले ही क्रंदन और कितनी प्रार्थनाएँ सुन चुकी हूँ; पर अंत में



होता यही है कि लोगों का संकल्प टूट जाता है। ये पापी उन्हें अपने वश में लाने में सफल हो जाते हैं। देखो न, उधर एमेलिन जी-जान से चेष्टा कर रही है और इधर तूम भी पूरी ताकत से अपनी कोशिश में लगे हो, पर इसका नतीजा क्या होगा- या तो तुम्हें इनकी बात माननी पड़ेगी या तुम कुत्तों से नुचवाए जाओगे।"

टॉम ने कहा - "अच्छा, तो मुझे मरना ही मंजूर है। उन्हें जी चाहे उतना सता लेने दो। एक-न-एक दिन मरना तो अवश्य ही है। उसे तो कोई टाल नहीं सकता। मार डालने के सिवा वे मेरा कुछ और बिगाड़ ही नहीं सकते। मरने पर इनके हाथों से मुक्त हो जाऊँगा। ईश्वर मेरे साथ है, वही मुझे इस परीक्षा में उत्तीर्ण करेगा।"

कासी ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपनी आँखें गड़ाए पृथ्वी की ओर देखती रही।

कुछ देर बाद वह आप-ही-आप बुदबुदाने लगी - "यह हो सकता है! पर जो अत्याचार और उत्पीड़न से अधीर होकर आगे बढ़ चुके हैं, उनके लिए तो कोई आशा ही नहीं है, कुछ भी नहीं है। अपवित्रता में पड़े-पड़े हमारा यहाँ तक पतन हो जाता है कि हमें अपने-आप से ही घृणा हो जाती है। मरने की इच्छा होती है, पर आत्महत्या करने का साहस नहीं होता। कोई आशा नहीं है! हाय-हाय! कोई आशा नहीं है! यह बालिका एमेलिन... उस समय ठीक मेरी भी यही उम्र थी।"

बड़ी शीघ्रता से बोलते हुए, उसने टॉम से कहा - "तूम देखते हो, आज मैं क्या हो गई हूँ। मैं भी कभी ऐश्वर्य की गोद में पली थी। मुझे याद है कि मैं बचपन में गुड़िया की तरह सज-धजकर मौज से खेलती फिरती थी। सभी संगी-साथी और हमारे घर आनेवाले मेरे रूप की प्रशंसा किया करते थे। हमारे यहाँ एक बाग था। उसमें मैं अपने भाई-बहनों के साथ नारंगियों के पेड़ों के नीचे आँख-मिचौनी खेला करती थी। मुझे ग्यारह साल की उम्र में एक पाठशाला में भेजा गया। वहाँ मैंने गाना-बजाना, फ्रेंच भाषा तथा अन्य कितनी ही बातों की शिक्षा पाई। लेकिन पिता की मृत्यु के कारण, मुझे चौदह साल की उम्र में घर वापस आना पड़ा। उनकी मृत्यु अकस्मात् हो गई थी। उनके पीछे जब सारी संपत्ति का हिसाब लगा कर देखा गया, तब मालूम हुआ कि इतने से तो कर्ज भी मुश्किल से चुकेगा। लेनदारों ने जायदाद की सूची बनाते समय मेरा नाम भी उसमें चढ़ा दिया। मैं मोल ली हुई दासी के गर्भ से जन्मी थी, पर मेरे पिता सदा मुझे मन-ही-मन स्वतंत्र कर देने की इच्छा रखते थे। किंतु उन्होंने यह किया नहीं था, इससे मैं भी जायदाद की सूची में चढ़ाई गई। मैं सदा से जानती थी कि मैं कौन हूँ, पर इस संबंध में मैंने कभी अधिक नहीं सोचा। किसी को भी यह आशंका नहीं थी कि ऐसा हट्टा-कट्टा और तंदुरुस्त आदमी इतनी जल्दी मर जाएगा। मेरे पिता की देखते-देखते, हैजे से मृत्यु हो गई थी। उनकी अंत्येष्टि-क्रिया के दूसरे ही दिन उनकी विवाहिता स्त्री सब बाल-बच्चों को लेकर अपने पिता के घर चल दी और मुझे वहीं वकील के जिम्मे छोड़ दिया। उनके इस व्यवहार से मैं बड़ी चकित हुई, पर इसका कारण मेरी समझ में नहीं आया। जिस वकील को अन्य सब चीजों के साथ मुझे सौंपा गया था, वह हमारे घर के पास-पड़ोस में ही रहता था और नित्य ही एक बार घर आया

करता था। मुझसे उसका व्यवहार बड़ी सज्जनता का था। एक दिन वह अपने साथ एक रूपवान युवक को लाया। वह युवक मुझे इतना सुंदर मालूम हुआ कि वैसा सुंदर आदमी मैंने इससे पहले नहीं देखा था। मैं उस संध्या को कभी नहीं भूलूँगी। मैं बाग में उसके साथ टहली थी। मैं रंज और दुःख से अकेली मूर्दा-सी पड़ी रहती थी। उसने मेरे साथ ऐसी दया और सज्जनता का व्यवहार किया कि मैं क्या कहूँ! उसने मुझसे कहा कि मदरसे में जाने से पहले उसने मुझे देखा था और तभी से मुझपर उसका प्रेम हो गया था। अब वह मेरा बंधु और रक्षक बनना चाहता था। असल बात यह थी, यद्यपि उसने मुझसे कही नहीं थी कि उसने मुझे दो हजार डालर में खरीद लिया था, और मैं उसकी संपत्ति थी, फिर भी इच्छा से मैंने उसे आत्म-समर्पण कर दिया, क्योंकि मैं उससे प्रेम करती थी। हाय! मेरा उस पर कितना प्रेम था! अब मेरा उस पर कितना प्रेम है, और जब तक मेरी साँस है तब तक रहेगा भी। वह कितना सुंदर, कितना उदार और कितने महान दिल का था। उसने मुझे दास-दासी, घोड़ा-गाड़ी, बाग-बगीचे, कपड़े-जेवर तथा अन्य प्रकार की सामग्रियों से भरे, एक बहुत सजे हुए मकान में रखा था। धन से जो भी चीजें मिल सकती हैं वे सब उसने मुझे दीं। पर मैं उन चीजों की कुछ भी कदर नहीं करती थी - मैं तो केवल उसी को चाहती थी और उसकी जरा-सी इच्छा पर सर्वस्व वार सकती थी।

"मेरी केवल एक ही इच्छा थी - मैं चाहती थी कि वह मुझे शास्त्रविधि से ब्याह ले। मैं सोचती थी कि जब वह मुझसे इतना प्रेम करता है, तो विवाह करके वह मुझे अवश्य दासता की बेड़ियों से मुक्त कर देगा। पर जब भी मैं उसके सामने यह बात उठाती, वह कहता कि यह बात लोकाचार और देशाचार की दृष्टि में निषिद्ध होने के कारण असंभव है। वह मुझे समझाता - यदि हम दोनों एक-दूसरे से विश्वासघात न करें, तो, यहाँ न सही, ईश्वर के यहाँ हम दोनों विवाहित ही हैं। अगर यह सच है तो क्या मैं उसकी पत्नी न थी? क्या मैंने उससे कभी विश्वासघात किया था? क्या सात बरस तक मैं उसकी प्रकृति का अध्ययन नहीं करती रही? एक बार उसे मियादी बुखार हो गया था, उस समय लगातार इक्कीस दिन तक मैं उसकी सेवा करती रही। मैंने अकेले अपने हाथ से उसका सारा दवा-पानी और पथ्य आदि सब-कुछ किया। अच्छा होने पर वह मुझे अपनी मंगलकारिणी देवी कहा करता और कहता कि मैंने ही उसकी जान बचाई है। हमारी दो सुंदर संतानें हुईं। पहला पुत्र था और पिता के नाम पर उसका नाम हेनरी रखा गया। उसकी सूरत-शक्ल ठीक अपने पिता-जैसी थी। सुंदर नेत्र, चौड़ा और खुला माथा, लटकते घुँघराले बाल सब उसके पिता-जैसे ही थे। रूप के साथ ही उसने अपने पिता का तेज और दूसरे गुण भी पाए थे। छोटी संतान एलिस नाम की कन्या थी, जिसे वह मुझसे मिलती हुई बताया करता था। उसे मुझपर और अपनी दोनों संतानों पर बड़ा गर्व था। वह मुझे और अपने दोनों बच्चों को कपड़ों और जेवरों से खूब सजा-सजाकर अपने साथ खुली गाड़ी पर हवा खिलाने ले जाता था। रास्ते में मिलनेवाले लोग मेरे और मेरी संतानों के रूप की जो प्रशंसा करते, उसे वह हवाखोरी से लौटकर मुझे रोज सुनाता था। वे कैसे सुख के दिन थे! मैं संसार में अपने को सबसे अधिक सुखी मानती थी। पर अचानक ही वह सुख मुझसे छिन गया। दुःख की घड़ियाँ शुरू हो गईं। उसका एक चचेरा भाई, जिसे वह अपना बड़ा मित्र और संसार भर में एक ही मित्र समझता आया था, वहाँ आया। न जाने क्यों, उसे प्रथम बार देखते ही मुझे डर मालूम हुआ। मुझे मेरी

आत्मा ने बताया कि यह हम लोगों पर मुसीबत ढाएगा। वह व्यक्ति हेनरी को रोज घुमाने ले जाता और घर लौटते प्रायः रात के दो-दो तीन बज जाते। इसके लिए मेरा एक शब्द कहने का साहस न होता, क्योंकि मैं जानती थी कि वह बड़ा अभिमानी है। इसी से मुझे बड़ा भय मालूम होता था। वह दुराचारी उसे जुओं के अड़्डों की हवा खिलाने लगा और धीरे-धीरे उसे उसमें बिल्कुल लिप्त कर दिया। उसका तो स्वभाव था कि किसी चीज में फँस जाने के बाद उससे निकलना असंभव था। इसके बाद उसने उसका एक और अंग्रेज युवती से परिचय करा दिया। मैंने शीघ्र ही देख लिया कि उसका हृदय मेरे हाथ से निकल गया है। उसने मुझसे खुलकर कभी कहा तो नहीं, पर मैंने सब समझ-बूझ लिया। दिन-दिन मेरी छाती फटती जाती, पर मैं मुँह खोलकर कुछ न कह पाती। इधर जुए में हारते-हारते वह कर्जदार हो गया। तब उस पाजी ने उसे सलाह दी कि वह मुझे मेरी संतानों सहित बेचकर पहले ऋण चुकाए और बाद में उस अंग्रेज युवती से विवाह कर ले। और स्वयं आगे बढ़कर वह हम लोगों को खरीदने को तैयार हो गया। तब हेनरी ने दोनों संतानों सहित मुझे उस सत्यानाशी के हाथ बेच डाला। एक दिन हेनरी ने मुझसे कहा कि किसी काम से दो-तीन हफ्तों के लिए उसे बाहर जाना है। उसने आज और दिनों की अपेक्षा अधिक प्रेम दिखाया और कहा कि मैं शीघ्र ही लौट आऊँगा। पर मैं भुलावे में नहीं आई। मैंने समझ लिया कि सत्यानाश का समय आ पहुँचा है। मैं बोल न सकी, आँखों ने आँसू बहाए। उसने मुझे और बच्चों को बार-बार चूमा, फिर बाहर खड़े घोड़े पर सवार होकर चला गया। मैं एकटक उसकी ओर देखती रह गई। उसके आँखों से ओट होते ही मैं अचेत गिर पड़ी।"

"उसके दूसरे दिन वह पाखंडी बटलर मेरे पास आया और बोला कि मैंने तुम्हें तुम्हारी दोनों संतानों सहित खरीद लिया है। उसने मुझे लिखे हुए कागज भी दिखाए। मैंने उसे बार-बार शाप देकर कहा कि मैं जीते-जी कभी तेरे साथ नहीं रहूँगी।"

"बटलर ने कहा, ठीक है! तुम्हारी जैसी इच्छा! पर देख लो। अगर नहीं मानती हो तो मैं तुम्हारी दोनों संतानों को ऐसी जगह बेच डालूँगा, जहाँ तुम फिर कभी उन्हें नहीं देख सकोगी।"

"उसने आगे कहा कि मुझे मोल लेने के अभिप्राय से ही उसने जाल रचकर हेनरी को कर्जदार बनाया और एक दूसरी स्त्री के साथ उसे लगाकर मुझे बेचने की सलाह दी। वह पाखंडी कहने लगा - "मैं दो-चार बूँद आँसुओं अथवा तिरस्कारों से हटनेवाला नहीं हूँ। तुम मेरी मुट्ठी में हो। मेरी बात न मानने में तुम्हारी भलाई नहीं है।"

मैंने देखा कि मेरे हाथ-पैर बँधे हैं - मेरी दोनों संतानें उसी के हाथ में थीं। मैं जब उसकी इच्छा के खिलाफ कुछ करती तो वह उन्हें बेच डालने की धमकी देता। संतानों की रक्षा के लिए मैं उसके वश में हो गई। पर वह कैसा घृणित जीवन था। हृदय में दिन-रात मर्मभेदी यंत्रणा की आग धधकती रहती थी। जिस नर-पशु को मैं रोम-रोम से घृणा करती और जिसे देखकर हर समय मेरी क्रोधाग्नि भभक उठती थी, उसी के पैरों में मुझे देह, आत्मा, और सर्वस्व की आहुति देनी पड़ी! हेनरी के सामने मैं सदा खुशी से पढ़ती, नाचती और गाती थी, पर इस व्यक्ति की खुशी के लिए मुझे जो कुछ करना पड़ता था वह मैं बड़े भय और अनिच्छा से करती थी। किंतु

जिन दो संतानों के लिए मैं उस पापी के वश में हुई, उनसे वह बड़ा ही रूखा व्यवहार करने लगा। मेरी कन्या बड़ी भयभीत थी, वह उसके डर से सदा सशंक रहती। पर मेरा पुत्र अपने पिता की भाँति तेजस्वी और स्वाधीनता-प्रिय था। वह सदा उस नीच के साथ लड़ता-झगड़ता रहता था। यह देखकर मैं सदा डरा करती और अपनी दोनों संतानों को सदा उससे दूर रखती। पर मेरे सब कुछ करते रहने पर भी उस निर्दयी ने मेरी दोनों प्रिय संतानों को बेच डाला। कब और किसके हाथ बेचा, यह मुझे मालूम नहीं हो सका। एक दिन वह पापी मुझे साथ लेकर घूमने गया, परंतु फिर घर लौटने पर मुझे अपनी संतान का मुँह देखने को नहीं मिला। पूछते ही उस नर-पिशाच न बिना किसी हिचक-संकोच के कहा कि उन दोनों को बेच दिया गया है। उसने मुझे रुपए-उनके खून के दाग-दिखाए। संतान की बिक्री की बात सुनकर मैं पागल-सी हो गई। मेरा भले-बुरे का ज्ञान जाता रहा, मैं उसे ईश्वर के नाम पर शाप देने लगी और उस पर तरह-तरह की गालियों की वर्षा करने लगी। मेरी यह दशा देखकर वह पाखंडी कुछ भयभीत हुआ। पर जिन्होंने षडयंत्र, धोखादेही, चालाकी और जालसाजी को ही अपना अस्त्र बना रखा है, उनका हृदय कभी नहीं हारता, कभी नहीं पसीजता। ये लोग ऐसे जाल फैला करके ही लोगों को फुसलाने की चेष्टा करते हैं। वह धूर्त फिर मुझे कौशल द्वारा वशीभूत करने के लिए कहने लगा कि यदि मैं उसकी आज्ञा में नहीं रहूँगी तो मेरी संतानों को और भी बड़ी तकलीफें सहन करनी पड़ेंगी; लेकिन यदि मैं उसके आदेशों को मानकर चलूँगी तो वह कभी-कभी संतानों को देखने का अवसर देगा और वह फिर से खरीदकर भी ला सकता है। किसी स्त्री की संतान को कब्जे में कर लेने के बाद फिर उस स्त्री से आप चाहे जो करा सकते हैं। उस पाखंडी ने इस प्रकार भय दिखाकर और आशा बँधाकर फिर वश में कर लिया। इस प्रकार दो-तीन सप्ताह एक प्रकार से निर्विरोध बीते। फिर एक दिन जब मैं दंड-गृह के पास होकर घूमने जा रही थी, वहाँ भीड़ देखकर तथा एक बालक की चीख-पुकार सुनकर मैं कुछ दूर पर खड़ी हो कर देखने लगी। तत्काल उस घर में से मेरा हेनरी तीन-चार आदमियों को धक्के देकर चिल्लाता हुआ निकला और दौड़कर उसने मेरा कपड़ा पकड़ लिया। वे तीनों-चारों आदमी बड़ी बुरी गालियाँ बकते हुए उसे पकड़ने के लिए दौड़े आए। उनमें एक नर पिशाच-सा अंग्रेज था। वह कहने लगा कि मैं हेनरी को दंड-गृह को ले जा रहा था कि वह हाथ छुड़ाकर भाग आया है और अब उसे चौगुनी सजा दी जाएगी। उस आदमी का चेहरा मुझे जीवन भर न भूलेगा। वह हृदय-हीनता का साक्षात् अवतार लगता था। मैं उस समय अत्यंत विनयपूर्वक उन लोगों से पुत्र हेनरी को छोड़ देने के लिए कहने लगी, पर मेरी कातरता देखकर उलटे वे सब हँसने लगे। हेनरी बड़ी निराश दृष्टि से मेरी ओर देखकर रोने लगा। उसने मजबूती से मेरा कपड़ा पकड़ लिया। दंड-गृह के वे निर्दयी मनुष्य उसे खींच ले जाने के लिए मेरे कपड़े का भी कुछ अंश फाड़कर ले गए। जब उसे जबरदस्ती ले जाया जाने लगा तो वह 'माँ! माँ' कहकर चीखने लगा। मेरे पास एक भलामानस आदमी खड़ा था। मैंने उससे कहा, 'मेरे पास जो कुछ रुपए हैं, उन्हें मैं तुम्हें देती हूँ। तुम कृपा करके किसी तरह मेरे पुत्र को बेंत की सजा से बचा लो।' वह सिर हिलाकर बोला, 'नहीं-नहीं, जो आदमी इसे यहाँ लाया है, वह किसी तरह इसे माफ नहीं करेगा। वह कहता है कि यह कैसे भी काबू में नहीं आता, कोड़े लगवाने के सिवाय और कोई उपाय इसे काबू में लाने का नहीं है।' मैं दौड़ती-दौड़ती घर आई। पूरे रास्ते हेनरी का क्रंदन और उसकी चीख-पुकार मेरे कानों में आती रही। मैंने घर पहुँचते ही उस नराधम बटलर के

कमरे में जाकर बहुत घिघियाते हुए, बड़ी विनय के साथ, हेनरी को इस संकट से बचाने के लिए कहा। वह पामर हँसते हुए बोला, 'बहुत ठीक हुआ! हेनरी जैसी शरारतें करता है, वैसा ही नतीजा भी है। बिना कोड़ों के वह दुरुस्त होने का भी नहीं।'

उस निष्ठुर नीच का यह हृदयहीन व्यवहार देखकर और उसके मुँह से ऐसे मर्मबेधी वचन सुनकर मैं उन्मत्त-सी हो गई। मुझे लगा, मानो मेरे सिर पर वज्र गिरा हो। मेरा सिर घूम गया। मैंने भयंकर मूर्ति धारण की। इसके बाद क्या हुआ, सो मुझे याद नहीं। केवल इतना याद है कि सामने मेज पर पड़ी छुरी उठाकर मैं उसका सिर धड़ से जुदा कर देने को झपटी थी। इसके बाद मैं बेहोश हो गई और फिर कई दिन तक उसी दशा में पड़ी रही।

जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि एक अपरिचित सुंदर कमरे में पड़ी हुई हूँ। एक काली स्त्री मेरी सेवा-सुश्रूषा में लगी हुई है। एक डाक्टर मुझे रोज देखने आता है। मेरे लिए बड़ी सावधानी बरती जा रही है। थोड़ी देर बाद मुझे मालूम हुआ कि वह पापी मुझे यहाँ बेचने के लिए छोड़कर चला गया है और यही कारण है कि ये लोग मेरे लिए इतना कष्ट उठा रहे हैं।

अब मुझे जीने की कोई साधन नहीं थी। मैं हमेशा मौत को बुलाती थी, पर उसने मुझे अपनाया नहीं। अनिच्छा होते हुए भी मैं दिन-ब-दिन ठीक होने लगी और अंत में फिर पहले तरह चंगी हो गई।

इसके बाद वहाँवाले मुझे अच्छे और कीमती वस्त्र पहनने को देते। कई धनी लोग वहाँ आते, मेरे पास आकर बैठते, मेरे शरीर की जाँच करते, मेरे साथ तरह-तरह की बातें करते और वहाँवालों से मेरे मूल्य को लेकर मोल-तोल करते। पर मैं ऐसी उदासीन बनी बैठी रहती कि कोई मुझे खरीदने का आग्रह न करता। यह देखकर वहाँवाले मुझे कोड़े लगाने को तैयार होते और हँसी-खुशी से बातें करने को कहते। अंत में एक दिन कप्तान स्ट्रुअर्ट नाम का एक साहब आया। वह कुछ सहृदय जान पड़ा। उसने समझ लिया कि किसी गहरे शोक के कारण मेरी यह दशा हो गई है। उसने अनेक बार अकेले में भेंट करके मुझसे अपनी दुःखों की कहानी सुनाने के लिए कहा। आखिर उसने मुझे खरीद लिया और वचन दिया कि जहाँ तक होगा, वह मेरी दोनों संतानों की तलाश करके खरीदने की चेष्टा करेगा। हेनरी की तलाश करने पर उसे पता चला कि वह पर्ल नदी के पार किसी खेतिहर के हाथ बेच दिया गया था। इस प्रकार हेनरी को फिर से खरीदे जाने की आशा समाप्त हो गई। पुत्र के संबंध में मैंने वही अंतिम बात सुनी थी, तब से आज अठारह वर्ष हो गए, कुछ नहीं सुना। फिर वह मेरी कन्या की खोज में गया और देखा कि एक वृद्ध स्त्री उसका पालन कर रही है। स्ट्रुअर्ट ने एक बड़ी रकम देकर उसे खरीदना चाहा, किंतु नर-पिशाच दुष्टात्मा बटलर जान गया कि मेरे ही लिए स्ट्रुअर्ट मेरी कन्या को खरीद रहा है, अतः मुझे कष्ट देने की इच्छा से उसे स्ट्रुअर्ट के हाथ नहीं बेचा। कप्तान स्ट्रुअर्ट बहुत ही नरम दिल का था। वह मुझे साथ लेकर अपने कपास के खेतवाले मकान में जाकर रहने लगा। मैं भी वहाँ उसके साथ ही रहने लगी। एक वर्ष के भीतर ही स्ट्रुअर्ट से मेरा एक लड़का पैदा हुआ। ओह! कैसा सुंदर था वह। मैं उसे कितना प्यार करती थी। देखने में वह ठीक हेनरी-जैसा था। परंतु मैंने पहले ही

निश्चय कर लिया था कि संतान को पाल-पोसकर बड़ा नहीं करूँगी। पंद्रहवें दिन मैंने उस बालक को बार-बार चूमा, बार-बार उसकी ओर देखा, और तब उसे अफीम खिलाकर छाती से चिपटाकर सो गई। बालक चिरनिद्रा में डूब गया। दो ही घंटे बाद उसकी साँस बंद हो गई। सारी रात मैं उसे छाती से लगाए रही। फिर मैंने कई बार उसका मुँह चूमने के बाद कहा, 'बेटा, मैंने तुझे इन पाखंडी गोरों के हाथों से मुक्त कर दिया। अब तुझे दासी के गर्भ से जन्म लेने के कारण कोई कष्ट न उठाना पड़ेगा।' इस तरह अपने ही हाथों अपने पुत्र के मारे जाने से मुझे कोई कष्ट न हुआ, बल्कि उल्टे इस खयाल से कि मैंने उसे अत्याचार और उत्पीड़न से बचा दिया, मुझे कुछ संतोष ही हुआ। और यह अच्छा ही हुआ। गुलाम अपनी संतान को मौत के सिवा अधिक सुखदायी और शांतिप्रद दूसरी क्या चीज दे सकते हैं? कुछ दिनों के बाद कप्तान को हैजे की बीमारी हुई और वह मर गया। संसार की कैसी उलटी गति है! जो लोग जीना चाहते हैं, वे मर जाते हैं और मुझ-जैसे अभागे, जो बार-बार मौत माँगते हैं, जीवित रहते हैं।

"स्टार्ट के मरने के बाद, उसके उत्तराधिकारियों ने मुझे बेच डाला। इस प्रकार मैं एक-एक करके कई आदमियों के हाथों में रही। उसके बाद यह नर-पिशाच मुझे खरीद लाया और पाँच बरस से मैं यहाँ हूँ।"

यह कहते-कहते कासी का कंठ सूख गया, वह और आगे नहीं बोल सकी। मालूम होता है, लेग्री का खयाल आते ही उसके हृदय में एक विशेष प्रकार का शोक, दुःख तथा विद्वेष का भाव जाग उठा था।

यह कहानी सुनाते समय कासी कभी टॉम को संबोधन करके कह रही थी और कभी अपने-आप ही, पागलों की तरह बोलती चली जा रही थी।

कासी की जीवन-कहानी सुनते-सुनते टॉम अपने शारीरिक दुःख को एकदम भूल गया। वह अपनी आँखों से एकटक कासी को देखे जा रहा था। उसने अपने हाथों का सहारा लिया हुआ था।

कुछ देर ठहरने के बाद कासी ने फिर कहा - "टॉम तुम मुझसे कहते हो कि पृथ्वी पर परमेश्वर है और वह सब-कुछ देखता है। हो सकता है कि ईश्वर हो। मैं जब शिक्षाश्रम में थी, तब वहाँ की भगिनियाँ (सिस्टर्स) मुझसे कहा करती थीं कि एक दिन मनुष्यों के पाप और पुण्य का विचार होगा। पर क्या उस दिन गोरों को अपने पापों का नतीजा नहीं भोगना पड़ेगा? क्या वे अपने पापों के लिए दंड नहीं पाएँगे? उनकी समझ में हम लोगों को कोई कष्ट नहीं है। हम लोगों के दिलों में अपने बाल-बच्चों के लिए कुछ दुःख नहीं होता है। हम लोगों की संतानों को भी कोई कष्ट नहीं होता है किंतु मुझे मालूम होता है कि केवल मेरे हृदय में शोक की जो आग दबी हुई है, उससे ही यह सारा देश भस्म हो सकता है। मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करती हूँ कि मुझ सहित यह सारा देश पृथ्वी के गर्भ में समा जाए, पृथ्वी से आग निकले और यह पूरा देश जलकर खाक हो जाए। वह विचार का दिन शीघ्र आए। जिन अत्याचारी अंग्रेजों ने मेरा और मेरी संतान का सत्यानाश किया है, जिन्होंने न केवल हमारे शरीरों बल्कि आत्माओं तक का निर्मम

विनाश किया है, उन लोगों के विरुद्ध मैं राजाधिराज ईश्वर के सामने खड़ी होकर अपील करूँगी, उनसे विनयपूर्वक न्याय करने की प्रार्थना करूँगी।"

"बचपन में धर्म पर मेरी विशेष भक्ति थी, ईश्वर पर मेरा प्रेम था और मैं उसकी उपासना करती थी। अब तो मेरे शरीर और आत्मा का बिल्कुल पतन हो गया है। शैतान सदा मेरे सिर पर सवार रहता है। वह मुझे अपने हाथ से अत्याचारों और कठोरताओं का प्रतिफल देने को उकसाता है। इसी बीच में किसी दिन इस अत्याचार का फल दूँगी। इस नर-पिशाच लेगी को ठिकाने लगाऊँगी। किसी रात्रि को मौका मिलते ही अपना मनोरथ सिद्ध करूँगी।"

यह कहकर कासी अकस्मात खिल-खिलाकर हँस पड़ी, और तभी सहसा वह अचेत होकर गिर पड़ी। कुछ देर बाद वह होश में आई और सँभलकर उठ बैठी। फिर टॉम से बोली - "बोलो, तुम्हारे लिए और क्या करना होगा? और पानी दूँ?"

जब कासी के मुँह से दया की बात निकली, तब तो वह साक्षात् दया की देवी जान पड़ती; पर जब वह प्रतिहिंसा से उत्तेजित होती तो ठीक राक्षसी-जैसा रूप धारण कर लेती। इस संसार में सभी मनुष्यों का यही हाल है। वे कभी देव और कभी दानव का स्वाँग करते रहते हैं। जब दया, प्रेम और भक्ति की लहर चढ़ी रहती है तब मनुष्य देवता जान पड़ता है; पर द्वेष और प्रतिहिंसा का भाव आते ही वह दानव की शक्ल में बदल जाता है।

टॉम ने पानी पिया और दयापूर्ण हृदय तथा व्याकुल नेत्रों से उसकी ओर देखकर कहा - "मेम साहब, मैं चाहता हूँ कि आप उस ईश्वर की शरण लें जो दुःखी, पापी, ज्ञानी, सबको बिना भेद-भाव के शांति का अमृत प्रदान करता है।"

कासी ने कहा - "टॉम, बताओ, वह ईश्वर कहाँ है? कौन है? मैं उसके पास जाना चाहती हूँ।"

टॉम बोला - "उसके संबंध में अभी आपने मेरे सामने पढ़ा है।"

कासी ने कहा - "बचपन में कभी मैंने उसका सिंहासन पर बैठे हुए चित्र देखा था, पर वह यहाँ नहीं है। यहाँ पाप और अत्याचार के सिवा और कुछ नहीं दीख पड़ता है।"

इतना कहकर कासी छाती पीटने लगी। टॉम ने फिर कुछ कहना चाहा, परंतु कासी ने उसे रोककर कहा - "बस, अब सो जाओ, बातें न करो!"

यह कहकर उसने पानी का पात्र उसके पास रखा और फिर उसके आराम का इंतजाम करके उस कोठरी से चली गई।



### 38. भभकती यंत्रणा

लेग्री अपने घर में बैठा ब्रांडी ढाल रहा है और गुस्से से आप-ही-आप भनभना रहा है - यह इसी सांबो की बदमाशी है।... इसी का उठाया हुआ सब बखेड़ा है। टॉम एक महीने में भी उठने-बैठने लायक होता नहीं दिखाई देता। इधर फसल का कपास चुनने का समय आ गया। क्लियों की कमी से बहुत नुकसान होगा, कारोबार ही बंद हो जाएगा। सांबो अगर शिकायत न करता तो यह बखेड़ा ही न उठता।

लेग्री की ये बातें समाप्त भी न होने पाई थीं कि पीछे से किसी ने कहा - "असल में यही बात है! इन बखेड़ों में हानि के सिवा कोई लाभ नहीं है।"

लेग्री ने पीछे को घूम कर देखा तो वहाँ कासी को खड़े पाया। लेग्री ने कहा - "क्यों री चुड़ैल, तू फिर आ पहुँची।"

कासी ने कहा - "हाँ, आ तो गई हूँ।"

लेग्री बोला - "तू बड़ी झूठी है, बड़ी कुलटा है। मैं कहता हूँ, मेरा कहना मान, शांति से रहा कर, नहीं तो मैं तुझसे कुली का काम कराऊँगा।"

कासी ने उत्तर दिया - "एक बार नहीं, हजार बार मैं कुली का काम करूँगी। मुझे क्लियों की तरह टूटी झोपड़ी में रहना मंजूर है, पर आगे से मैं तेरी छाया में नहीं रहना चाहती।"

लेग्री बोला - "तू मेरे पैरों-तले तो अब भी है। खैर, जाने दे, झगड़े की जरूरत नहीं (कासी की कमर में हाथ डालकर और उसकी कलाई पकड़कर) मेरी प्यारी, मेरी जान, इधर आ और मेरी जाँघ पर बैठ! सुन मैं तेरे फायदे की बात कहता हूँ।"

कासी ने कड़ककर कहा - "खबरदार! मुझे छूना मत। मुझपर शैतान सवार है।"

कासी की लाल-लाल आँखें और कड़कती आवाज सुनकर लेग्री थोड़ा सहम गया। वास्तव में लेग्री के डरने का कुछ विलक्षण कारण है। पर उसने डरने पर भी अपने मन का भाव छिपाते हुए पहले तो कासी को धमकाया - "जा, जा, चल यहाँ से!" फिर कुछ देर के बाद बोला - "कासी, तू ऐसा व्यवहार क्यों करती है? पहले जैसे तू मुझपर प्रेम किया करती थी, मित्रता का बर्ताव करती थी, वैसे अब क्यों नहीं करती?"

कासी ने रुखाई से कहा - "क्या कहा? मैं तुमसे प्रेम करती थी!" किंतु इतना कहते-कहते



उसका गला रुक गया।

पशुओं-जैसा आचरण करनेवाले पुरुषों को उन्मत्त स्त्रियाँ सहज में दबा सकती हैं। कासी भी जब चाहती, लेगी को दबा लेती। पर आजकल कासी के साथ लेगी का झगड़ा हो रहा था। वह एमेलिन को उपपत्नी बनाने की गरज से लाया था, पर वह किसी तरह अपना धर्म छोड़ने को राजी नहीं होती थी। इससे दुराचारी लेगी एमेलिन पर तरह-तरह के अत्याचार करता था, जब-तब उस पर आक्रमण करने की भी इच्छा करता था। एमेलिन की दुर्दशा देखकर कासी के हृदय की सहानुभूति जाग उठती थी। इससे वह एमेलिन का पक्ष लेकर तरह-तरह की चतुराइयों से उसे लेगी के आक्रमणों से बचाती थी। इसी लिए कासी और लेगी का विवाद बढ़ गया था। लेगी ने कासी को तंग करने के लिए अन्य क्लियों के साथ खेत पर भेज दिया। उसने सोचा, इससे कासी की अक्ल ठिकाने आ जाएगी। पर वह इससे भी उसके वश में न हुई और उसकी उपेक्षा करके खेत का काम करने को तैयार हो गई। यही कारण था कि इसके पहले दिन कासी क्लियों के साथ खेतों पर काम करने गई थी। कासी का यह आचरण देखकर लेगी के मन में बड़ी बेचैनी पैदा हो गई। पहले दिन खेत में किए हुए काम की जाँच के समय लेगी ने उसके साथ मेल करने की इच्छा से, कुछ सांत्वना-मिश्रित घृणा के भाव से, उससे बातें की थीं। पर कासी उससे मुँह फेरकर चली गई। आज फिर लेगी कहने लगा - "कासी, तुम सीधी-सादी होकर रहो, उत्पात मत बढ़ाओ।"

कासी ने जवाब में कहा - "मुझी को क्यों कहते हो? तुम स्वयं क्या कर रहे हो? तुम सिर्फ दूसरों को कहना जानते हो। तुम्हें खुद तो जरा-सी भी अक्ल नहीं है। इन काम के दिनों में तुमने एक परिश्रमी और काम-काजी आदमी को अपनी सनक में आकर पीट-पाटकर निकम्मा बना दिया। इस काम में तुमने कौन-सी अक्लमंदी की?"

लेगी बोला - "सचमुच मैंने बेवकूफी की है, लेकिन यह भी तो सोचो कि कोई आदमी जिद पकड़ ले तो उसे दुरुस्त भी तो करना चाहिए!"

कासी ने कहा - "मैं कहती हूँ, इस विषय में वह तुम्हारे किए कभी दुरुस्त नहीं होने का।"

लेगी ने तब क्रोध से उठते हुए कहा - "मुझसे दुरुस्त नहीं होने का? मैं करके देखूँगा, होता है कि नहीं। ऐसा तो आज तक कोई गुलाम मुझे नहीं मिला, जो मेर हाथ से दुरुस्त न हुआ हो। मैं उसकी हड्डी-पसली चूरकर दूँगा!"

उसी समय कमरे का द्वार खोलकर सांबो अंदर आया। वह हाथ में एक काली-सी पोटली लटकाए हुए था। उसे देखकर लेगी ने कहा - "क्यों बे सूअर, तेरे हाथ में क्या है?"

सांबो ने कहा - "सरकार जादू की पुड़िया!"

लेगी बोला - "वह क्या होती है?"

सांबो ने उत्तर दिया - "हब्शी लोग जादू की पुड़िया पास रखते हैं। इसके पास रहने से कोड़ों की मार असर नहीं करती। टॉम ने काले डोरे से इसे गले में बाँध रखा था।"

ईश्वर-शून्य हृदय कायरता और कुसंस्कारों के पनपने के लिए उपयुक्त होता है। लेगी को ईश्वर पर जरा भी विश्वास न था, इसी से उसका मन नाना प्रकार के कुसंस्कारों का घर बना हुआ था।

ज्योंही उसने पोटली को हाथ में लेकर खोला, त्योंही उसमें से एक चांदी का सिक्का और लंबे-घुँघराले बालों का एक गुच्छा निकला। सुवर्ण की तरह चमकता हुआ वह बालों का गुच्छा, किसी जीवित पदार्थ की तरह, लेगी की उँगलियों से चिपट गया। वह भय से चिल्लाकर बोल उठा - "चूल्हे में जाए!" उसका तात्कालिक भाव देखकर मालूम हुआ, मानो बालों के इस गुच्छे के छू जाने से उसका हाथ जल रहा है। वह जोर से जमीन पर लात पटककर, अँगुलियों से बालों को छड़ाकर फेंकते हुए सांबो से बोला - "तुझे ये बाल कहाँ मिले? ले, अभी तुरंत ले जाकर जला डाल?" इतना कहकर सामने जलती हुई आग में उन बालों को फेंक दिया और सांबो से बोला - "खबरदार, जो ऐसी चीजें फिर कभी मेरे पास लाया!"

सांबो आश्चर्य से देखता खड़ा रह गया। कासी भी यह देखकर विस्मय से लेगी का मुँह ताकने लगी। लेगी ने कुछ स्थिर होकर सांबो को घूँसा दिखाते हुए कहा - "फिर कभी मेरे सामने यह जंजाल मत लाना!" लेगी का ऐसा रुख देखकर सांबो वहाँ से नौ-दो-ग्यारह हो गया। उसके चले जाने पर लेगी यह सोचकर कि ऐसी छोटी-सी बात पर मुझे इतना गुस्सा नहीं करना चाहिए, कुछ लज्जित-सा हो गया और फिर गिलास में ब्रांडी ढालकर गले में उड़ेलने लगा। कासी बाहर आकर चुपके-से टॉम को कुछ दवा-पानी देने चली गई।

यहाँ यह जानने की उत्कंठा होगी कि बालों के इस गुच्छे को देखकर लेगी का क्रोध इतना क्यों भड़क उठा। वह उन्हें देखकर इतना क्यों डर गया! इसका मूल कारण जानने के लिए लेगी के पूर्व जीवन की दो-चार घटनाओं का उल्लेख करना आवश्यक है।

इस पापात्मा लेगी की माता अत्यंत सच्चरित्र और स्नेहमयी थी। अतः कितनी ही बार उत्तम-उत्तम भजनों के शब्द और ईश्वर का नाम लेगी के कानों में बचपन में पड़ता रहा था। किंतु माता जितनी धार्मिक थी, पिता उतना ही द्रष्टात्मा था। लेगी की उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसके स्वभाव पर उसके द्रष्ट पिता के संस्कार गहरे होने लगे। लेगी की माँ आयलैंड के एक किसान की बेटी थी। उस सहृदय रमणी का भाग्य दैवेच्छा से इस पाशविक प्रकृतिवाले हृदयहीन मनुष्य के साथ बँध गया। युवावस्था शुरू होने के पहले ही लेगी ने नाना तरह के नीच कर्मों में हिस्सा लिया था और इस विषय में अपनी साध्वी माँ के रोने-झींकने की भी कोई चिंता नहीं की थी। धन कमाकर उसके द्वारा भोग-विलास करना ही उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था। सत्रह-

अठारह वर्ष की उम्र में ही उसने घर छोड़कर अपने को जहाज के काम में लगाया। उस समय से वह जल-मार्ग से जानेवाली महिलाओं पर, समय-असमय घोर अत्याचार करता था। इसके बाद लेग्री केवल एक बार ही अपने घर गया था। उस समय उसकी माता ने उसे घर पर रहकर ही भले लोगों की तरह जीवन बिताने को कहा। माँ के रोने-धोने से लेग्री का मन क्षण भर के लिए पसीजा। उसकी जिंदगी में केवल यही क्षण उसके सुधार के लिए उपयुक्त था। यदि इस क्षण का उपयोग वह कर पाता तो शायद सुधार जाता। पर उसके हृदय पर पाप की ही विजय रही। उसने माँ के वचनों को नहीं माना। तब वह स्नेहमयी जननी बेटे के गले से लगकर रोने लगी, किंतु वह अपनी माँ को पैर से धकेलकर घर से चला आया। उसकी माँ बेहोश होकर जमीन पर पड़ी रही। विदेश जाकर फिर कभी उसने अपनी माँ की खोज-खबर नहीं ली।

एक दिन की बात है। वह अपने ही जैसे दुराचारी मित्रों के साथ बैठकर शराब पी रहा था और दो-तीन अनाथ कुली औरतों की अस्मृत को जबरदस्ती बिगाड़ने की तैयारी कर रहा था कि इसी बीच एक नौकर ने आकर उसके हाथ में एक पत्र दिया। पत्र खोलते ही उसमें से बालों का एक गुच्छा निकला। वह बालों का गुच्छा उसकी अँगुलियों से लिपट गया। इस पत्र में उसकी माँ की मृत्यु की खबर थी और लिखा था कि मृत्यु के समय उसने पुत्र के सारे अपराधों को क्षमा करके ईश्वर से उसके कल्याण की प्रार्थना की थी। पत्र को पढ़कर लेग्री के मन में भय का संचार हुआ। अपनी माँ के वे सजल नेत्र उसे याद आए, जब वह उसे अंतिम बार पैर से धकेलकर चला आया था। माता द्वारा मृत्यु के समय की गई प्रार्थना का स्मरण करते ही उसका हृदय काँप उठा। परंतु ब्रांडी की बोतल और कुली युवतियाँ सामने बैठी थीं, यदि जल्दी ही जननी-संबंधी सारी स्मृति को हृदय से दूर नहीं किया तो सारा मजा ही किरकिरा हो जाएगा। उसने तुरंत अपनी जननी के बालों का गुच्छा और वह चिढ़ी आग में डाल दी। पर बालों के उस गुच्छे के जलते ही उसे फिर उसी भयंकर नरक की याद आई। उसका हृदय फिर काँप उठा, किंतु वह सामने रखी हुई बोतल से ब्रांडी ढाल-ढालकर पीने लगा, और किसी तरह इस भयानक चिंता से अपने को बचाने की फिक्र करने लगा। कुछ देर के लिए ब्रांडी ने उसके हृदय से वह स्मृति दूर कर दी। पर तब से प्रायः वह रात्रि के समय अपनी माँ को अपनी चारपाई के पास ही खड़ी देखा करता था। माँ का चेहरा उदास होता और उसकी आँखों में आँसू होते। माँ के वे बाल आकर उसकी अँगुलियों में लिपट जाते और वह भय तथा त्रास से काँप जाता। बाल जलाने के संबंध में लेग्री के जीवन में एक ऐसी ही घटना घट चुकी है, इसी से आज फिर बाल जलाने के समय उसे बड़ा डर लगा। इसी कारण वह सांबो पर इतना गुस्सा हुआ था। सांबो और कासी के चले जाने पर भी वह अपने मन को स्थिर नहीं कर सका। कुछ ही पलों के बाद बोला - "भाड़ में जाएँ ये सब बातें! इनको सोचकर क्या होगा!" वह फिर ब्रांडी के प्याले-पर-प्याले ढालने लगा। फिर मन-ही-मन सोचने लगा - "क्या बात है? वे बाल जैसे अँगुलियों से लिपट गए थे, वैसे ही ये बाल भी क्यों लिपट गए? क्या बालों में भी जान होती है? वे बाल क्या आग में जले नहीं?" वह फिर सोचने लगा - "मैं अब इन चिंताओं को मन में नहीं आने दूँगा। चलता हूँ एमेलिन के पास... बंदरिया मुझसे घिन करती है, पर मैं उसे हत्थे पर लाऊँगा। आज मैं उसे किसी भी तरह नहीं

छोड़ने का!"

इतना कहकर लेग्री ऊपर के कमरे में एमेलिन के पास जाने लगा। सीढ़ी पर पाँव रखते ही उसके कानों ने एक गीत की कड़ी सुनी। गीत सुनकर वह ठिठक गया। केशों को जलाने से उसका मन अस्थिर हो गया था, अब गीत सुनकर वह और भी घबराया।

कोई अत्यंत करुण स्वर में गा रहा था :

हाय! कब छूटेगा संसार?

कब तक रोऊँगी अभाग्य पर, पड़कर नरक-मंझार।

शोक-निशा है ग्रसने वाली, हँ पीड़ा अपार।।

हाय! कब छूटेगा संसार?

गीता को सुनकर लेग्री का मन और भी उद्विग्न तथा अस्थिर हो गया। वह मन-ही-मन कहने लगा, भाड़ में जाए वह अभागी! मैं इसका गला घोटकर मार डालूँगा। इसके बाद जल्दी-जल्दी प्रकारने लगा - "एम!एम!" परंतु कहीं से कोई उत्तर न आया। केवल माँ! माँ! की प्रतिध्वनि ही उसे सुनाई पड़ रही थी। गीत अभी चल रहा था :

महाभयंकर वह दिन होगा, हा विधि! हा कर्तार!

जब पापानल में जल-भुनकर, होऊँगी मैं छार।।

हाय! कब छूटेगा संसार?

लेग्री फिर ठहरा। उसके सिर से पसीना निकलने लगा। उसका हृदय काँपने लगा। उसे मालूम होने लगा, मानो उसके सामने आँसू बहाती हुई उसकी माँ ही खड़ी है। तब वह मन में सोचने लगा - यह क्या हुआ? सचमुच ही यह टॉम जादू करना जानता है क्या? चलो, आगे उसे नहीं मारूँगा। लेकिन यह बालों का गुच्छा उसने कहाँ से पाया? क्या वे मेरी माँ के ही बाल थे? वे कैसे हो सकते हैं? उन्हें जलाए तो मुझे कई साल बीत गए! यह बालों का गुच्छा ठीक वैसा ही क्यों जान पड़ता था? अगर उन जले हुए बालों में जान आ गई, तो यह बड़ा मजाक होगा!

अरे ओ नराधम लेग्री! तू इन केशों की महिमा क्या जाने! तेरे-जैसे पापी इसे नहीं समझ सकता। इन केशों ने ही आज तेरे हाथ-पैरों में बंधन डाल दिए। ऐसा न होता तो इसी घड़ी तू उस निर्दोष निर्मल-चरित्र एमेलिन का जीवन-सर्वस्व हरण करके उसके परम पवित्र शरीर को अपवित्र कर देता। उसके निर्मल जीवन में कलंक की कालिमा लगा देता।

आज लेग्री के मन में भभकी हुई यंत्रणा की ज्वाला किसी भी उपाय से शांत नहीं हो रही है। अतः उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि आज मैं अकेला नहीं रहूँगा। सांबो और कूड़ंबो को बुलाकर वह सारी रात उनके साथ शराब-कबाब उड़ाता रहा और हल्ला मचाता रहा। इनके शोरगुल के मारे दूसरे लोगों की नींद हराम हो रही थी। टॉम को पथ्य-पानी देकर कासी रात को एक बजे के बाद घर लौट रही थी। घर में घुसते ही उसे इनका शोर सुनाई पड़ा। उसने देखा कि शराब के नशे में चूर होकर लेग्री, सांबो और कूड़ंबो तीनों हाथापाई कर रहे हैं। कासी ने बरामदे में आकर, पर्दे को थोड़ा खिसकाकर इन लोगों की ओर देखा। उसकी आँखों में उस समय घोर द्वेष और घृणा के भाव दिखाई पड़े। वह मन-ही-मन सोचने लगी-क्या इस नर-पिशाच से मानव-समाज को मुक्त करने की कोई सूरत निकलेगी? यही सोचते हुए वह सीढ़ियाँ चढ़कर द्रुमंजिले पर पहुँची और धीरे-धीरे एमेलिन का दरवाजा खटखटाने लगी।

### 39. संवेदना का प्रभाव

कासी ने कमरे के अंदर पहुँच कर देखा कि एमेलिन एक कोने में दुबकी हुई भयभीत बैठी है। उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ है। कासी के आने की आहट सुनकर वह चौंक उठी। पर उसने जब कासी को देखा तो दौड़कर उसकी बाँहें पकड़ लीं और बोली - "कासी! तुम हो? मैंने सोचा था, कोई और आ रहा है। बड़ा अच्छा हुआ जो तुम आ गई। मुझे डर बहुत ही सता रहा था। तुम नहीं जानती हो कि नीचे के कमरे में कितना भयंकर शोर हो रहा है।"

कासी ने कहा - "मैं सब जानती हूँ, बहुत दिनों से सुनती आई हूँ।"

एमेलिन बोली - "कासी, क्या यहाँ से हम लोगों के निकल चलने का कोई उपाय नहीं है? इस जंगल में साँपों और शेरों के बीच रहना अच्छा है, पर यहाँ नहीं।"

कासी ने कहा - "कब्र के लिए और कोई जगह नहीं है।"

दो क्षण ठहरकर एमेलिन बोली - "तुमने कभी चेष्टा की है?"

कासी ने उत्तर दिया - "मैंने खूब चेष्टा कर देखी है, पर कोई नतीजा नहीं।"

एमेलिन ने कहा - "मुझे वन में, दलदल में, पेड़ों के पत्ते खाकर रहना मंजूर है। मैं भयंकर साँपों से भी इतना नहीं डरती, जितना लेग्री- जैसे नर-पशुओं के निकट रहने से डरती हूँ।"

कासी बोली - "बहूतों ने तुम्हारी ही भाँति यहाँ से भाग निकलने की बात सोची, पर भागने से कहाँ छुटकारा है? वह तुम्हें दलदल में भी नहीं टिकने देगा। शिकारी कुत्तों से पता लगवा लेगा, पकड़वा, और-तब..."

एमेलिन ने पूछा - "और तब क्या करेगा?"

कासी बोली - "इसके बदले यह पूछो कि क्या नहीं करेगा। जलदस्यूओं में रहकर यह अपने पेशे से क्रूर हो गया है। यदि मैं तुम्हें उसकी कभी-कभी मजाक में कही हुई बातें सुनाऊँ और यहाँ का अपना आँखों देखा हाल बताऊँ तो तुम्हें रात में नींद आना भी मुश्किल हो जाएगा। इस घर के पिछवाड़े एक अधजला पेड़ है। उस पेड़ के नीचे की जमीन काली राख से ढकी पड़ी है। यहाँ के किसी आदमी से पूछो कि यहाँ क्या हुआ है? देखो, फिर वह कहने की भी हिम्मत करता है या नहीं।"

एमेलिन ने जिज्ञासा से पूछा - "तुम्हारे कहने का मतलब मैं नहीं समझी।"

तब कासी ने बताया - "मैं तुमसे वह सब नहीं कहूँगी। मैं उन बातों को मन में लाना भी बुरा समझती हूँ। और मैं तुमसे कहती हूँ कि यदि कल भी टॉम अपनी जिद पर अड़ा रहा और उसने लेग्री की बात नहीं मानी, तो परमात्मा ही जानता है कि हमें कल कैसा भयानक दृश्य देखना पड़ेगा।"

एमेलिन भय से पीली पड़कर बोली - "ओफ! कितना भयंकर है। अरी कासी, मुझे रास्ता बता। मैं अब क्या करूँ?"

कासी ने समझाया - "जो मैंने किया है, और अंत में झगड़ मारकर जो तुम्हें भी करना पड़ेगा, वही करो!"

एमेलिन ने अपनी व्यथा सुनाई - "वह मुझे अपनी घिनौनी ब्रांडी पिलाना चाहता है और मैं उससे हद से ज्यादा नफरत करती हूँ।"

कासी ने बताया - "ब्रांडी पीना अच्छा रहेगा। पहले मैं भी ब्रांडी से घृणा करती थी, लेकिन अब तो मैं उसके बिना जी नहीं सकती। यह सब-कुछ खाए-पिए बिना काम नहीं चलता। जब तुम पीने लगोगी, तब इतनी बुरी भी नहीं लगेगी।"

एमेलिन बोली - "माँ मुझे बराबर कहा करती थी कि ऐसी चीजों को छूना तक नहीं चाहिए।"

कासी ने कहा - "तुम्हारी माँ तुम्हें ऐसा कहती थी, यह अचरज की बात है। माँ की कही हुई इन बातों का क्या नतीजा होना है? जिसने हमें मोल लिया है, वह हमारे शरीर और आत्मा

का मालिक है। उसकी कही बात हमें माननी होगी। मैं कहती हूँ तुम ब्रांडी पीओ! जितनी पी सको, उतनी पीओ! इससे तुम्हारी मानसिक पीड़ा बहुत-कुछ दूर हो जाएगी।"

एमेलिन ने प्रार्थना की - "कासी! कासी! मुझपर दया करो!"

कासी चौंककर बोली - "क्या मैं नहीं करती हूँ? तुम्हारी-जैसी एक मेरी भी बेटी थी। ईश्वर जाने, वह अब कहाँ है! कैसी है! संभव है, जिस रास्ते का उसकी माता ने सहारा लिया है, वह भी उसी पर चली हो, और उसकी संतानें भी उसी पर जाएँगी। हाय, इस बदकिस्मती का क्या ठिकाना है!"

एमेलिन ने अपने हाथों को ऐंठते हुए कहा - "मेरा जन्म ही न होता तो अच्छा था।"

कासी बोली - "मेरे लिए तो यह पुरानी इच्छा है। बहुत बार मैंने ऐसी इच्छा की है। मन में आता है कि जान दे दूँ, पर हिम्मत नहीं होती।"

एमेलिन ने कहा - "आत्महत्या करना पाप है।"

"मैं नहीं जानती कि आत्महत्या को क्यों पाप बताया जाता है?" कासी ने दुखी स्वर में कहा - "हम नित्य जिन पापों में लिप्त रहती हैं, उनसे भी बड़ा क्या कोई पाप है? पर जब मैं शिक्षाश्रम में थी, तब वहाँ की भगिनियों से मैंने इस विषय में जो बातें सुनी थीं, उन्हें याद करके आत्महत्या करने में डर लगता है। यदि आत्महत्या के साथ आत्मा का लोप हो जाता, तो फिर..."

एमेलिन ने यह सुनकर, पीछे हटकर, दोनों हाथों से मुँह ढँक लिया।

यहाँ जब ये बातें हो रही थीं, उस समय लेग्री शराब के गहरे नशे में मस्त होकर नीचे के कमरे में पड़ा नींद में खराटे भर रहा था।

नींद की दशा में वह स्वप्न देख रहा था कि सफेद कपड़े पहने हुए कोई मूर्ति उसके पास खड़ी है और बरफ जैसे ठंडे हाथों से उसके शरीर को छू रही है। यह मूर्ति उसे कुछ परिचित-सी जान पड़ी। डर के मारे उसका सारा शरीर जड़ हो गया। फिर उसे ऐसा लगा, जैसे वह बालों की लट आकर उसकी अँगुलियों के चारों ओर लिपट गई। देखते-देखते वह लट गले तक जा पहुँची और उसने गले को सब ओर से लपेटकर बाँध लिया। लेग्री की साँस रुक गई। तब वह श्वेत वस्त्रधारी मूर्ति उसके कान में कुछ कहने लगी। उसकी बात सुनकर लेग्री को लगा कि उसके हृदय की गति रुकने लगी है। उसने फिर देखा कि वह किसी कुएँ के किनारे खड़ा हुआ है। कासी वहाँ हँसती हुई आई और उसे कुएँ में धकेल दिया। फिर उसने उसे श्वेत वस्त्रधारी मूर्ति को अपने सामने देखा। उस मूर्ति ने अपने मुँह पर से पड़ा पर्दा हटा लिया। लेग्री ने देखा, यह तो उसकी माँ है! उसे देखकर माँ वापस चली गई और वह एक बड़े गहरे खड्ड में जा गिरा। वहाँ

चारों ओर शोरगुल, चिल्लाहट, आर्तनाद और भूत-प्रेतों की विकट हास्य-ध्वनि सुनकर लेगी की नींद खुल गई।

इधर सवेरा हो गया था।

प्रतिदिन प्रातःकालीन सूर्य मानव-हृदय में नई-नई भावनाएँ जगाता है। प्रातःकालीन समीर मधुर स्वर में कहता है - "अरे मनुष्यों, अपने पापासक्त मन को सुमार्ग पर लाने के लिए, अपने हृदय का मैल धो डालने के लिए, ईश्वर ने तुम्हें फिर यह एक नया अवसर दिया है।" लेकिन न तो प्रातःकालीन सूर्य, और न प्रातःकालीन पवन, कोई भी, लेगी सरीखे पाप-पंक में लिप्त व्यक्ति के मन में शुभ भावना जगा सका। लेगी के मन में प्रभात-काल किसी प्रेरणा का उदय नहीं कर पाता था। वह बिस्तर से उठा नहीं कि शराब की बोतल हाथ में ले लेता था।

कासी को, जो उसी समय दूसरे दरवाजे से कमरे में आई थी, देखकर लेगी बोला - "कासी, आज रात को मुझे बड़ी तकलीफ हुई।"

कासी ने रुखेपन से कहा - "आज ही क्या, अभी आगे-आगे और भी कष्ट भोगना होगा।"

लेगी ने पूछा - "तुम्हारे ऐसा कहने का क्या मतलब है?"

कासी ने कहा - "अभी नहीं, बाद में समझोगे। लेगी, मैं तुम्हारे भले के लिए एक सलाह देती हूँ।"

लेगी बोला - "क्या?"

कासी बोली - "वह सलाह यही है कि अब तुम टॉम को सताना बंद कर दो।"

लेगी गुर्गरकर बोला - "इस बात से तुम्हारा क्या संबंध है?"

कासी ने धीरज से जवाब दिया - "मेरा इस बात से सीधा कोई संबंध नहीं है, लेकिन मैं तुम्हें जो समझाना चाहती हूँ वह यह है कि ये काम के दिन हैं, इस वक्त मारपीट करने से तुम्हारा ही नुकसान है। आखिर तुम बारह सौ डालर नकद गिनकर एक आदमी लाओ और उसे इस तरह बेकार ही मार डालो, तो सोचो, कितना नुकसान होगा। तुम्हारी हानि के खयाल से ही मैं उसे जल्दी चंगा करने की कोशिश करती हूँ।"

लेगी ने क्रोध के साथ कहा - "तू उसे ठीक करने क्यों गई? मेरे मामले में तेरे टाँग अड़ाने का क्या मतलब है?"

कासी बोली - "सचमुच कुछ भी नहीं। पर मैंने इसी तरह कई बार तुम्हारा रुपया बचा



दिया। अगर फसल अच्छी न हुई तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी।"

कपास की फसल के लिए लेग्री जी-जान से कोशिश करता था। इसी से कासी ने टॉम की मार टालने के खयाल से, बड़ी चतुराई से बात शुरू की थी।

लेग्री बोला - "खैर, मैं इस बार उसे छोड़ दूँगा। लेकिन शर्त यह है वह मुझसे क्षमा माँगे और भविष्य में मेरी बात पर चलने का वादा करे।"

कासी ने तुरंत कहा - "यह वह नहीं करेगा।"

लेग्री ने पूछा - "नहीं करेगा?"

कासी ने दृढ़ता से कहा - "नहीं करेगा।"

लेग्री बोला - "मुझे मालूम तो हो, कि क्यों नहीं करेगा?"

कासी ने समझाया - "उसका विश्वास है कि उसने जो कुछ किया है, ठीक ही किया है। वह कभी नहीं कहेगा कि उसने अनुचित किया है।"

लेग्री झुँझलाकर बोला - "हब्शी गुलामों का भी क्या कोई न्याय-अन्याय होता है? मैं जो कहूँगा, वही उसे करना होगा।"

कासी ने स्थिर स्वर में उत्तर दिया - "तब वह काम के समय खाट पर ही रहेगा और इस साल तुम्हारी फसल खराब होगी।"

लेग्री अकड़ से बोला - "लेकिन वह जरूर माफी माँगेगा, जरूर माँगेगा। मैं क्या इन हब्शी गुलामों को नहीं पहचानता?"

कासी ने उसे पुनः वही उत्तर दिया - "लेग्री, मेरी इस बात को गाँठ बाँध लो, वह कभी माफी नहीं माँगेगा। तुम उसे मामूली गुलाम मत समझना। तुम उसकी बोटी-बोटी काट डालोगे, तब भी वह अपनी बात से नहीं टलेगा।"

लेग्री बोला - "मैं उसे देखूँगा। वह इस समय कहाँ है?"

कासी ने बताया - "जिस कोठरी में सड़ी रुई और पुराना माल-असबाब पड़ा है, उसी में है।"

लेग्री ने कासी के सामने इस तरह हेकड़ी तो जाहिर की, किंतु उसके मन में भी शंका होने लगी कि टॉम क्षमा नहीं माँगेगा। उसने सोचा कि यदि वह टॉम से क्षमा नहीं मँगवा सका तो साथ रहनेवाले लोगों में उसकी हेठी होगी, रौब में फर्क पड़ेगा, इसलिए वह अकेला ही टॉम की

कोठरी की ओर गया। उसने मन-ही-मन सोचा कि यदि टॉम क्षमा नहीं माँगेगा तो भी उसे इस वक्त नहीं मारूँगा, फसल का मौसम बीत जाने पर उसे दुरुस्त करूँगा।

हम पहले ही कह आए हैं कि सवेरे की हवा और सवेरे का सूर्य लोगों की भिन्न-भिन्न प्रकृति के अनुसार उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के भाव जगाता है। किंतु लेगी जैसे भावहीन चिंताशून्य, अर्थलोलुप, इंद्रियासक्त पिशाच के हृदय में किसी प्रकार का भाव प्रवेश नहीं कर सकता। उसका ध्यान केवल कपास के खेत, पैसा इकट्ठा करना, शराब और कुली औरतों में लगा है। किंतु अपढ़ होने पर भी टॉम का मन भावों और चिंताओं से शून्य नहीं है। प्रभातकालीन सजीवता ने उसके हृदय में नवीन बल का संचार किया। उसे मालूम होने लगा-मानो शुक्र तारा आकाश से उतरकर उससे कह रहा है - "टॉम, डरना नहीं। ईश्वर तुम्हारे साथ है।" टॉम को मन-ही-मन बड़ी प्रसन्नता होने लगी। विशेषकर इस बात से कि लेगी उसे जान से मार डालेगा। पहले उसे इस बात को नहीं सोचा था, परंतु कासी की पहले दिन की बातचीत के ढंग से वह समझ गया था कि अब उसकी मृत्यु बहुत निकट है। अतः इस मृत्यु-संवाद को पाकर उसकी आत्मा विमल आनंद से पूर्ण हो गई। वह सोचने लगा, मृत्यु के उपरांत वह ईश्वर के उस प्रेम-राज्य में जाकर विश्राम करेगा, जहाँ द्वेष, हिंसा और अत्याचार की गंध भी नहीं है। वहाँ प्राणों से प्रिय इवान्जेलिन का मुख-कमल देखेगा और यह भी देखेगा कि परम दयालु मालिक सेंटक्लेयर की नास्तिकता परलोक में जाकर दूर हो गई है। अहा, टॉम के लिए इससे बढ़कर सुख और संतोष की बात और क्या हो सकती है? वह अपने शारीरिक कष्टों को भूलकर आनंद से विह्वल हो गया। उसके मुखमंडल पर प्रसन्नता एवं किंचित हास्य का आभास दिखाई दे रहा था। इसी समय नर-पिशाच लेगी ने वहाँ पहुँचकर उसे पुकारा और पैरों से ठुकराते हुए कहा - "कहो बच्चू, कैसे हो? मैंने तुझसे नहीं कहा था कि तुझे सिखा दूँगा? बोल, यह शिक्षा कैसी लगती है? अभी कुछ जिद बाकी है कि निकल गई? आज इस पापी को कुछ धर्म नहीं सिखाएगा।"

टॉम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

इस पर लेगी ने उसे फिर ठोकर मारते हुए कहा - "उठ सूअर!"

पिछले दिन की मार से टॉम बहुत शक्तिहीन हो गया था, इससे बोला - "क्यों, तुझे क्या हो गया है? मालूम होता है, रात की ठंडी हवा से सर्दी खाकर अकड़ गया है।"

टॉम बड़े कष्ट से उस पापी उत्पीड़क के सामने निडर होकर खड़ा हो गया।

लेगी कहने लगा - "अरे शैतान, मैं समझता हूँ कि अभी तुझे काफी सजा नहीं मिली है। मेरे सामने घुटने टेककर माफी माँग, नहीं तो और पीटता हूँ। जल्दी कर! माफी माँगता है कि नहीं?" इतना कहकर हाथ में लिए कोड़े से वह उसे सड़ासड़ पीटने लगा।

टॉम ने कहा - "सरकार, लेगी साहब, यह मुझसे नहीं होगा। मैंने केवल वही किया है, जिसे

मैंने उचित समझा है। आगे भी, काम पड़ने पर, मैं ऐसा ही करूँगा। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं किसी को मारने-पीटने का हृदयहीन काम कभी नहीं करूँगा।"

लेगी बोला - "ठीक है। लेकिन हजरत, अभी आपको यह पता नहीं कि इसके बाद आपकी क्या दुर्गति होगी। तू समझता है कि कल जो कुछ हुआ, वह काफी हो गया पर मैं तुझे बताता हूँ कि वह तो बस बानगी था। जरा उस मजे का खयाल करके देख, जब तुझे पेड़ से बाँध दिया जाएगा और नीचे धीमी-धीमी आग जलाकर तुझे भूना जाएगा।"

टॉम ने कहा - "सरकार, मैं जानता हूँ कि आप भयंकर-से-भयंकर काम कर सकते हैं।"

इतना कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू आ गए और वह ऊपर को हाथ उठाकर कहने लगा - "किंतु इस शरीर का नाश कर डालने के बाद आप और कुछ अधिक नहीं कर सकेंगे - उसके बाद तो मैं अनंत में मिल जाऊँगा।"

अनंत! कैसा चमत्कारी शब्द है! प्रेम और आनंद, दोनों इस में समाए हुए हैं। काले टॉम के हृदय में इसने शांति और आनंद का स्रोत बहा दिया। और यही शब्द लेगी को भीतर-ही-भीतर बिच्छू के डंक-जैसा लगा। इस पर वह दाँत किचकिचाने लगा।

टॉम फिर स्वाधीनतापूर्वक कहने लगा - "लेगी साहब, तुमने मुझे खरीदा है, इससे मैं तुम्हारा दास हूँ। अवश्य ही मैं जी-जान से तुम्हारा काम करूँगा। मेरा शारीरिक बल और समय तुम्हारे काम के लिए है, परंतु अपनी आत्मा को मैं कभी तुम्हारे हाथ में अर्पण नहीं करूँगा। जान रहे या जाए, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए, लेकिन मैं ईश्वर के आदेश का पालन अवश्य करूँगा। मेरी यह आत्मा उसी के चरणों में समर्पित है। मैं उसके आदेश का उल्लंघन करके कभी हृदयहीन व्यवहार नहीं करूँगा!- कभी नहीं! तुम्हारा जी चाहे, मुझे कोड़ों से मारो, लाठियों से मारो, आग में जलाकर बिल्कुल खत्म कर दो-कुछ भी करो, परंतु मैं धर्म को नहीं छोड़ूँगा। हर्गिज नहीं-हर्गिज नहीं!!"

लेगी ने क्रोध से उबलते हुए कहा - "देखता जा, मैं तेरी सब बदमाशी निकाल दूँगा। जब तुझे ठिकाने से मार पड़ेगी, तब तू समझेगा।"

टॉम बोला - "मुझे मदद मिलेगी!"

लेगी ने पूछा - "कौन तेरी मदद करेगा?"

टॉम ने कहा - "सर्वशक्तिमान ईश्वर मेरी मदद करेंगे।"

लेगी ने एक घूँसा मारकर टॉम को जमीन पर धकेल दिया और कहा - "देखूँगा, तेरा ईश्वर

कैसे तेरी मदद करता है।"

इसी समय पीछे से एक ठंडा और कोमल हाथ लेग्री के शरीर पर लगा। उसने फिर देखा, कासी है, परंतु ठंडे हाथ के स्पर्श से उसे पिछली रात के सपने की याद हो आई और वह कुछ भयभीत हो गया।

कासी ने फ्रेंच भाषा में कहा - "लेग्री, तू भी कैसे अहमक हो! छोड़ो इसे। काम के वक्त तू नाहक का टंटा लेकर खड़े हो गए हो। तूम्हें मैं कई बार समझा चुकी हूँ। मैं इसकी दवा-पानी करके देखती हूँ कि किसी तरह जल्दी अच्छा होकर खेत के काम लायक हो जाए।"

यह सही है कि मगर और गैंडे के चमड़े पर गोली असर नहीं करती, लेकिन उनके शरीर में भी एक ऐसा स्थान होता है, जिसे भेदकर गोली उनका काम तमाम कर सकती है। उसी भाँति नीच, लंपट, निर्दयी, अविश्वासियों और नास्तिकों को डराने का भी एक-न-एक रास्ता होता है। भ्रांत संस्कारों से पैदा हुआ भय सदा ही उनके मनों में घर किए रहता है। पिछली रात के सपने में देखी हुई अपनी माँ की दृष्टि का स्मरण आते ही लेग्री का हृदय काँप गया।

लेग्री ने कासी से कहा - "अच्छा इसे तूम्हीं सँभालो!"

फिर वह टॉम से बोला - "इस वक्त तो मैं तुझे छोड़ता हूँ, क्योंकि आजकल काम के दिन हैं। पर याद रखना, इसके बाद मैं तुझे समझूँगा। तुझे सीधा न किया तो मेरा नाम लेग्री नहीं!"

इतना कहकर वह चला गया।

कासी मन-ही-मन बोली - "अब तो तू यहाँ से सरको, फिर देखा जाएगा। तुम्हारे भी तो दिन नजदीक ही आ रहे हैं।"

फिर कासी ने टॉम से पूछा - "कहो तुम्हारे, क्या हाल हैं?"

टॉम ने कहा - "इस समय ईश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंह का मुँह बंद कर दिया है।"

कासी बोली - "हाँ, इस समय तो सचमुच मुँह बंद कर दिया। लेकिन अब वह तुमसे बुरी तरह मात खाकर गया है। धीरे-धीरे तुम्हारा खून चूस-चूसकर वह तुम्हारी जान लेगा। मैं इस पाजी को भली-भाँति जानती हूँ।"

टॉम लेकर एक वृद्ध क्वेकर रमणी के घर पर शारीरिक यंत्रणा से कराह रहा था। आपने साथी मार्क को गालियाँ दे रहा था और कभी फिर उसका साथ न देने के लिए सौ-सौ कसमें खा रहा था।

वह दयालु बुढ़िया लेकर के पास बैठी माता की तरह उसकी सेवा-टहल कर रही है। वृद्ध का नाम डार्कस है। सब लोग उसे 'डार्कस मौसी' कहकर पुकारते हैं। वृद्ध कद में जरा लंबी है। उसके मुँह पर दया, ममता, स्नेह और धर्म के चिह्न लक्षित होते हैं। उसके कपड़े भी एकदम सादे और सफेद हैं, वह दिन-रात बड़े ध्यान से लेकर के पथ्य-पानी की सार-सँभाल करती है।

लेकर बिछौने की चादर को इधर-उधर लपेटते हुए कह रहा है - "ओफ! कैसी गरमी है! यह कमबख्त चादर भी खाए जाती है।"

वृद्ध डार्कस मौसी ने उसे बिस्तर की सलवटों को ठीक करते हुए कहा - "टॉमस बाबा, तुम्हें ऐसी भाषा का व्यवहार नहीं करना चाहिए।"

लेकर ने कहा - "मौसी, मेरा शरीर जल रहा है, मुझसे सहा नहीं जाता।"

डार्कस ने समझाया - "गालियाँ बकना, सौगंध खाना और गंदे शब्दों का व्यवहार करना भले आदमियों का काम नहीं। इन गंदी आदतों को छोड़ने की चेष्टा करो!"

लेकर ने कहा - "यह कमबख्त मार्क बड़ा शैतान का बच्चा है। पहले वकालत करता था, इसी से इतना लालची है। ऐसा गुस्सा आता है कि बदमाश को फाँसी पर लटका दूँ।"

इतना कहकर लेकर ने फिर सारे बिछौने को सिकोड़-सिकोड़कर उलट-पुलट कर डाला।

क्षण भर के बाद फिर वह कहने लगा - "वे भगोड़े दास-दासी भी यहीं हैं क्या?"

डार्कस ने बताया - "यहीं हैं।"

लेकर ने कहा - "उनसे कह दो कि जितनी जल्दी झील के किनारे जाकर जहाज पर सवार हो जाएँ, उतना ही अच्छा है।"

डार्कस बोली - "शायद वे ऐसा ही करेंगे।"

लेकर ने सावधान किया - "उन्हें बड़ी होशियारी से जाने को कहना! सेनडस्की के जहाज के आफिस में हमारे आदमी लगे हैं। वे कड़ी पूछताछ करेंगे। मैं यह सब इसलिए बता रहा हूँ कि

उस नामाकूल मार्क को कौड़ी भी हाथ न लगे।"

डार्कस ने कहा - "फिर तुम गंदे शब्द मुँह से निकालते हो!"

लोकर बोला - "डार्कस मौसी, मुझे इतना कसकर मत बाँधो। बहुत कसने से सब टूट जाएगा। मैं धीरे-धीरे अपने को सुधार लूँगा। लेकिन उन भगोड़ों की बाबत मैं जो कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनो। उस औरत से कह देना कि वह मर्दाना वेश बनाकर जहाज पर चढ़े और बालक को बालिका-जैसे कपड़े पहना दे। उन लोगों का हुलिया सैनडस्की भेजा जा चुका है।"

डार्कस ने कहा - "हम लोग सावधानी से काम करेंगे।"

टॉम लोकर तीन सप्ताह तक वहाँ बीमार पड़ा रहा। फिर नीरोग होकर घर चला गया। वहाँ पहुँचने के बाद उसने गुलामों को पकड़ने का धंधा एकदम छोड़ दिया और किसी अच्छे धंधे में लग गया। तीन सप्ताह तक क्वेकर परिवार के सत्संग में रहने के कारण उसके स्वभाव में बड़ा परिवर्तन हो गया था। क्वेकर समुदायवालों को वह बड़ी भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। डार्कस मौसी की तो वह अपनी माँ से भी अधिक भक्ति करने लगा था।

लोकर के मुँह से यह सुनकर कि सैनडस्की में उनका हुलिया पहुँच चुका है और वहाँ कड़ी जाँच होगी, उन्होंने विशेष सावधानी से काम लेने का निश्चय किया। साथ जाने से पकड़े जाने का खतरा देखकर जिम और उसकी माता दो दिन पहले चल पड़े। उसके बाद जार्ज और इलाइजा अपने बालक सहित रात को सैनडस्की पहुँचे।

रात बीच चली थी। स्वतंत्रता का सुख-सूर्य हृदयाकाश में उदित होने को ही था। स्वतंत्रता-आह, कैसा जादू-भरा शब्द है! इसका उच्चारण करते ही हृदय आनंद से नाच उठता है। देवि स्वतंत्रते! तुम साथ रहो तो खप्पर में माँगकर खाना और वृक्षों के नीचे जीवन बिताना भी सुखकर है; परंतु तुम्हारे बिना तो राज-भोग भी उच्छिष्ट-जैसा है। तुम्हें पाने के लिए अमेरिका के अंग्रेजों ने जान की बाजी लगा दी और अपने कितने ही वीरों की रण में आहुति दी। सारा संसार तुम्हारे लिए लालायित है। पर जहाँ वीरता और एकता है, वहीं तुम्हारा निवास होता है। भीरुता, कायरता, स्वार्थपरता तथा फूट के तो तुम पास भी नहीं फटकती हो। इनसे तुम्हें बड़ी नफरत है। इस संसार में निर्बल, भीरु और स्वार्थध जातियाँ तुम्हारे मुख-दर्शन की आशा नहीं कर सकतीं, और जिस जाति से तुम दूर हो, उसमें जीवन कहाँ? संसार का कोई सुख पराधीन जाति को सुखी नहीं कर सकता। उसके लिए संसार की सब चीजें दुःखदायी हैं। परंतु देवि! तुमसे नाता जोड़ते ही स्वार्थपरता का अंधकार और निर्बलता की मार देखते-ही-देखते काफूर हो जाती है। तब हताश और संकीर्ण मानव-हृदय में सार्वभौम प्रेम का चंद्रमा उदय होता है।

संसार में क्या कोई ऐसी वस्तु है, जिसे कोई जाति तो अत्यंत सुख और प्रिय समझती हो, किंतु कोई मनुष्य उसे प्रिय न समझता हो? स्वतंत्रता जितनी किसी जाति को प्रिय होती है,

दूसरे मनुष्य को भी वह उतनी ही प्रिय होती है। जातीय और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में भेद ही क्या है? अलग-अलग व्यक्तिगत स्वतंत्रता के समूह को ही जातीय स्वतंत्रता कहते हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बिना जातिगत स्वतंत्रता भी कब संभव है? यह युवक जार्ज हेरिस, जो यहाँ मुँह लटकाए विषाद-मग्न बैठा है, किस तरह स्वतंत्रता के लिए व्याकुल है? यह व्यक्ति कैसा अधिकार चाहता है! केवल इतना ही अधिकार-कि वह अपनी स्त्री को अपनी समझ सके; दूसरों के अत्याचारों से उसकी रक्षा कर सके; अपनी संतान को अपनी समझकर अच्छी शिक्षा दे सके; अपनी मेहनत की कौड़ी को अपनी मशक्कत की कमाई को अपने लिए खर्च कर सके, और अपने धार्मिक विश्वास के अनुसार काम कर सके। बस, इससे अधिक वह और कुछ नहीं चाहता।

स्वार्थी नर पिशाचो! क्या तुम उसे इतना भी अधिकार नहीं दोगे? क्या इन अधिकारों के बिना भी मनुष्य जीवित रह सकता है? मनुष्य के कुछ स्वभाव-सिद्ध अधिकारों को पाने के लिए आज जार्ज तुम्हारे देश से भागने का उद्योग कर रहा है। अपनी स्त्री का मर्दाना-वेश बना रहा है- उसके लंबे सुंदर बाल काट रहा है।

बाल कट जाने के बाद इलाइजा मुस्कराकर बोली - "कहो जार्ज, क्या अब मैं एक सुंदर युवक-सी नहीं दीख पड़ती?"

जार्ज ने कहा - "तुम किसी भी वेश में हो, मुझे हमेशा बहुत सुंदर लगती हो।"

इलाइजा ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा - "जार्ज, तुम इतने उदास क्यों हो रहे हो? अब तो कनाडा यहाँ से केवल चौबीस घंटों की दूरी पर है। सिर्फ एक दिन और एक रात का सफर बाकी है और उसके बाद, अहा! उसके बाद..."

जार्ज ने इलाइजा को अपनी ओर खींचकर धीरे-से कहा - "इलाइजा, मुझे बड़ा डर मालूम हो रहा है। कहीं इतनी दूर आए हुए पकड़े गए, तो सारी मेहनत और सारा किया-धरा मिट्टी में मिल जाएगा। किनारे लगकर भी नाव डूब जाएगी। ऐसा होने पर मैं जीवित नहीं रह सकूँगा।"

इलाइजा ने उसे धीरज बँधाया - "जार्ज, डरो मत। उस दयामय को यदि हम लोगों को पार न लगाना होता तो वह हमें हर्गिज इतनी दूर न लाता। जार्ज, मुझे लगता है कि वह हम लोगों के साथ है। फिर डरने की क्या बात है?"

जार्ज बोला - "इलाइजा, तुम देवी हो! तुम ईश्वर का साथ अनुभव करती हो। पर बोलो, क्या जन्म से सहते आए हमारे इन दुःखों का अंत हो जाएगा? क्या हम स्वतंत्र हो जाएँगे?"

इलाइजा ने कहा - "जार्ज, मुझे तो इसका निश्चय है। मुझे मालूम हो रहा है कि ईश्वर ही हम लोगों को स्वतंत्र करने के लिए यहाँ से जा रहा है।"

जार्ज बोला - "ठीक है, मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास हो रहा है।"

इसके बाद जार्ज ने इलाइजा को मर्दानी टोपी ओढ़ाकर कहा - "गाड़ी का समय हो चुका हो तो चले। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि मिसेज स्मिथ हेरी को लेकर अब तक क्यों नहीं आई।"

इतने ही में दरवाजा खुला और एक अर्धवृद्ध अवस्था की महिला बालक हेरी को बालिका के वेश में सजाए हुए, साथ लेकर अंदर आई।

इलाइजा ने उसे देखते ही क्या - "वाह, क्या खूबसूरत लड़की बनी है। अब हम लोग इसे हैरियट के नाम से पुकारेंगे। क्यों, ठीक होगा न!"

माता को मर्दाने कपड़ों में, बाल कटाए हुए देखकर, बालक हतबुद्धि हो गया। वह बार-बार ठंडी साँसें लेने लगा। इलाइजा ने उसकी ओर हाथ बढ़ाकर कहा - "क्यों हेरी, अपनी माँ को पहचानता है?"

बालक शर्माकर उस अर्धवृद्ध स्त्री से चिपक गया।

जार्ज ने कहा - "इलाइजा, जब तुम जानती हो कि उसे तुमसे अलग रखने की व्यवस्था की गई है, तो अब उसे नाहक क्यों अपने पास बुलाने की कोशिश करती हो?"

इलाइजा बोली - "मैं जानती हूँ। यह मेरी मूर्खता है। लेकिन इसे अलग रखने को मेरा जी नहीं मानता। खैर, लबादा कहाँ है?"

इसके बाद जब इलाइजा मर्दाना लबादा पहनकर तैयार हो गई तब जार्ज ने मिसेज स्मिथ से कहा - "अब से हम लोग आपको बुआ कहेंगे और लोगों पर यह प्रकट करना होगा कि हम लोग अपनी बुआ के साथ जा रहे हैं।"

मिसेज स्मिथ ने कहा - "मैंने सुना है कि जो लोग तुम्हें पकड़ने आए हैं, वे टिकटघर में बैठे बाट देख रहे हैं।"

जार्ज ने कहा - "वे लोग बैठे हैं! खैर, चलो, देखा जाएगा। अगर हम लोगों की उनसे भेंट हो गई तो हम उन्हें बता देंगे।"

इसके बाद ये लोग एक किराए की गाड़ी पर सवार होकर चले। जिस आदमी ने इन्हें अपने घर में शरण दी थी, वह गाड़ी तक इनके साथ आया और चलते समय उसने इनके उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

इन सब लोगों का छद्म-वेश ऐसा बन गया था कि कोई इन्हें पहचान नहीं सकता था। असल में यह टॉम लोकर के साथ भलाई करने का नतीजा था। कभी-कभी भलाई का फल हाथों-



हाथ मिलता है। यदि इन्होंने, वैर चुकाने की नीयत से, लोकर को जंगल में ही रहने दिया होता, उसे ये डार्कस के घर न उठा लाए होते, तो आज अपने सामान्य वेश में आने पर यहाँ जरूर पकड़े जाते। टॉम लोकर के साथ इन्होंने जो भलाई की, इन्हें उसका बहुत अच्छा फल मिला।

मिसेज स्मिथ कनाडा की एक प्रतिष्ठित महिला नागरिक थीं। वह कनाडा लौट रही थीं। इन लोगों की दुर्दशा देखकर उन्हें दया आ गई और उन्होंने इनकी सहायता करने की ठान ली। दो दिन पहले ही हेरी उनके जिम्मे कर दिया गया था। इन दो दिनों में मेवा-मिठाई और खिलौने वगैरह देकर उन्होंने हेरी को ऐसा मिला लिया था कि वह उनका साथ ही नहीं छोड़ता था।

इनकी गाड़ी जहाज-घाट के किनारे जा लगी। जार्ज उतरकर टिकट लेने गया, तो उसने दो आदमियों को अपने संबंध में आपस में बातें करते सुना। उनमें से एक दूसरे से कह रहा था - "भाई, मैंने एक-एक करके सब मुसाफिरों को देख लिया, तुम्हारे भगोड़े इनमें नहीं है।" फिर जार्ज ने देखा कि इनमें पहला मार्क है, और दूसरा एक जहाज का क्लर्क है।

मार्क बोला - "उस स्त्री को तो तुम मुश्किल से पहचान सकते हो कि वह दासी है, क्योंकि वह अंग्रेजों-जैसी गोरी है और पुरुष भी वैसा ही है, पर उसके एक हाथ पर जलने का दाग है।"

जार्ज उस समय हाथ बढ़ाकर टिकट ले रहा था। उसका हाथ काँप उठा, पर वह सँभलकर धीरे-धीरे वहाँ से हट गया और वहाँ जा पहुँचा, जहाँ इलाइजा और मिसेज स्मिथ बैठी हुई थीं।

मिसेज स्मिथ हेरी को साथ लेकर स्त्रियों के कमरे में चली गईं।

जहाज ने जब चलने की सीटी दी और घंटा बजा तो जार्ज के हृदय में आनंद की लहरें उठने लगीं और मार्क ठंडी साँसें लेता हुआ जहाज से उतरकर किनारे आया। वह मन-ही-मन निराश होकर कहने लगा कि वकालत के धंधे में आमदनी की सूरत न देखकर दूसरी तरह से उसी देश के प्रचलित कानून की रक्षा के लिए यह नया धंधा किया, पर इसमें भी कुछ होता-जाता नजर नहीं आ रहा है। यही सब सोचते-सोचते मार्क खिन्न मन से अपने देश को लौट गया।

दूसरे दिन जहाज ने एमहर्स्टबर्ग जाकर लंगर डाला। यह कनाडा का एक छोटा-सा कस्बा है। जार्ज, इलाइजा आदि सब आकर किनारे पर उतरे। स्वाधीन भूमि पर पैर रखते ही उनका हृदय आनंद से भर गया। आज उन्हें गुलामी से छुट्टी मिली। आज स्त्री और पुत्र को अपना कहने का मानवीय स्वत्व जार्ज को प्राप्त हुआ। स्वामी और स्त्री, दोनों एक-दूसरे के गले से लिपट गए। दोनों के नेत्रों से आनंद के आँसू बहने लगे और घुटने टेककर उन्होंने ईश्वर की प्रार्थना में यह गीत गाया-

विपत्ति-सिंधु मैं तुम्हीं जहाज!

कौन बचावे दीन-हीन को तुम बिन हे महाराज!

निपट निराशा अंधकार था मम-हित महा कुसाज।

उदय हुआ सुख-भानु पूर्व में, तब करुणा से आज।।

जैसे तुम्हें पुकारा दुख में, वैसा पा सुख-साज।

ध्यान तुम्हारा ही करते हैं, गाते सुयश दराज।।

प्रार्थना के बाद सब लोग उठे और मिसेज स्मिथ उन्हें उसी नगर के निवासी एक सज्जन पादरी साहब के पास ले गईं। यह उदार पादरी अपने घर ऐसे ही निराश्रित और भागे हुए दास-दासियों को शरण दिया करता था।

जार्ज और इलाइजा के आज के आनंद का पारावार नहीं है। भला भाषा के द्वारा इनके इस स्वतंत्रता के आनंद का वर्णन कैसे हो सकता है? आज रात भर उन्हें नींद नहीं आई। सारी रात आनंद की उमंगों में बीत गई। इस आनंद में इन लोगों ने एक बार भी यह सोचने तक का कष्ट न उठाया कि आखिर यहाँ करना क्या होगा, जिंदगी कैसे कटेगी! न इनके घर-द्वार है, न कोई साज-सरंजाम। कल तक के खाने के लिए इनके पास कोई ठिकाना नहीं है। फिर भी यह स्वतंत्रता-प्राप्ति के आनंद में ऐसे फूले हुए हैं कि उन्हें और किसी बात की चिंता ही नहीं है। वास्तव में पूछिए तो मनुष्य-जीवन में स्वतंत्रता की अपेक्षा और अमूल्य वस्तु है ही क्या, जिसकी मनुष्य परवाह करे? जो लोग प्रभुत्व अथवा धन के लोभ से किसी व्यक्ति अथवा जाति-विशेष को ऐसे अनमोल रत्न से वंचित करते हैं, उन्हें अवश्य ईश्वर का कोप-भाजन बनना पड़ेगा - उसके सामने जवाबदेह होना पड़ेगा, पीढ़ी-दर-पीढ़ी उन्हें अत्याचारों का फल चखना पड़ेगा।

## 41. जयोल्लांस

क्या सभी दशाओं में मृत्यु कष्टकर जान पड़ती है? बहुत-से लोग तो इस दुःखों - यंत्रणाओं से भरे संसार में ऐसे होते हैं, जो खुशी-खुशी मरना चाहते हैं। वे मृत्यु को भयानक नहीं समझते। कितने ही ऐसे धर्मवीर हुए हैं, जिन्होंने निर्भीक होकर मृत्यु से भेंट की। सत्य और धर्म के लिए, संसार से अन्याय को दूर करने के लिए, कितने ही धर्मवीर और कर्मवीर प्रसन्नता से मृत्यु की वेदी पर बलि हो गए। क्या उन्हें उस समय मृत्यु कष्टकर जान पड़ी थी? कदापि नहीं! मनुष्य जब सत्य विश्वास से उत्तेजित हो जाता है और हृदय में उमड़े हुए धर्म-प्रेम और प्रेमावेश के

कारण अपने-आपको भूल जाता है, उस समय वह बाह्य ज्ञान से सर्वथा रहित हो जाता है। किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट उसकी अंतरात्मा को स्पर्श नहीं कर सकता।

परंतु जिन्हें नित्य मार का कष्ट सहन करना पड़ता है, जिन्हें अत्याचारी लोग बूँद-बूँद रक्त चूसकर मारते हैं और कठोर आचरण सहते-सहते जिनके हृदय की दया, ममता, एवं अन्य सब प्रकार के सद्भावों का शनैः-शनैः नाश हो जाता है, उन्हें भी क्या मृत्यु कष्टकर नहीं है? इससे अधिक कष्टकर मृत्यु संसार में और हो भी क्या सकती है?

नर-पिशाच लेगी जब टॉम को पीटता था और उसे मार डालने की धमकी देता था, उस समय टॉम मन-ही-मन सोचता था कि अब उसके संसार छोड़ने का समय आ गया है, अब शीघ्र ही मृत्यु आकर उसके सारे दुःख-दर्दों को दूर किए देती है। अतः उसके भयभीत होने का कोई कारण नहीं था। सत्य-विश्वास से उत्तेजित हो कर, धर्मवीरों की भाँति, बेधड़क हो कर, वह लेगी के सामने डटकर खड़ा हो जाता और ईश्वर के सदृष्टांत के अनुसरण करने का विचार करके मन-ही-मन हर्षित होता था। जब वह उसे ठोक-पीटकर चला जाता और टॉम देखता कि मृत्यु तो आई नहीं, उस समय हृदय का वह उमड़ा हुआ धर्मवेग और मार के समय की उत्तेजना शनैः-शनैः मंद पड़ जाती और तब उसे मार का दर्द बहुत अखरता। उसका शरीर शिथिल पड़ जाता और साथ ही उसकी अंतरात्मा को भी अवसन्नता धर दबाती। उसके दिल में निराशा आ जाती और अपनी दुर्दशा का स्मरण होते ही उसके दिल में असह्य यंत्रणा की अग्नि धधक उठती।

पहले दिन की मार से ही टॉम का शरीर जगह-जगह से छिल गया था और वह बहुत अशक्त हो गया था। पर लेगी ने वह अशक्तता दूर होने के पूर्व ही, मारे हठ के, उसे खेत के काम में जोत दिया। अन्य कुलियों के साथ उसे काम पर जाना पड़ता था। अपनी इस कमजोरी की हालत में भी वह जी लगाकर खेत का काम करता था, परंतु खेत के रखवाले केवल अपनी हिंसक-वृत्ति को चरितार्थ करने के लिए समय-समय पर उसे बैत लगाते रहते थे। भला इस निष्ठुर आचरण पर भी कोई सहिष्णु रह सकता था? परंतु टॉम बड़ी ही शांत प्रकृति का आदमी था। उसके धीरज और सहिष्णुता की सीमा नहीं थी। परंतु कभी-कभी सांबो और कूँबो के हृदयहीन आचरण से उसका मन भी सहिष्णुता को भुला बैठता था। टॉम की समझ में अभी तक यह बात नहीं आई थी कि लेगी के खेत के कुली ऐसे मनुष्यत्व-विहीन और दुश्चरित्र क्यों हो गए हैं! उनका हृदय केवल हिंसा, द्वेष, वैर-विरोध स्वार्थपरता, निष्ठुरता का घर क्यों बन गया है! वह इस बात से हैरान था कि इन कुलियों के जड़-हृदय में क्षण भर के लिए भी सहानुभूति का संचार क्यों नहीं होता? परंतु अब उसे उनके किसी आचरण से आश्चर्य नहीं रहा। अब उसने सहज ही समझ लिया कि अपनी इस प्रकृति का निष्ठुर आचरण के अवश्यभावी फल के सिवा और कोई कारण नहीं है, पर वह अपने मन में बहुत डरा कि समय पाकर वह निष्ठुर आचरण कहीं उसकी प्रकृति को भी भ्रष्ट न कर दे। इस डर से वह जब जरा-सा अवकाश पाता, तुरंत अपनी बाइबिल लेकर बैठ जाता। परंतु आजकल काम का इतना जोर था कि रविवार तक काम के बोझ से छुट्टी नहीं मिलती। कपास चुने जाने के दिनों में कई महीनों तक लेगी कुलियों को रविवार की भी छुट्टी नहीं देता था। क्यों देता? धर्म तो उसका कुछ था ही नहीं, उसके लिए तो

देवता और देवता का मंदिर वही कपास का खेत था और था नगदनारायण!

पहले टॉम खेत से लौटने पर नित्य रात्रि को रोटी बनाने के समय, चूल्हे के उजाले में बैठकर, बाइबिल के एक-दो उपदेश पढ़ लिया करता था, किंतु आजकल वह इतना कमजोर हो गया था कि खेत से लौटने पर पल भर भी उससे बैठा न जाता था। आते ही थकावट के मारे वह झोपड़ी में पड़ा रहता और दर्द से छटपटाने लगता।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जब-तब टॉम-सरीखे पक्के धर्म-विश्वासी का मन भी डावांडोल होने लगा। जिस सुदृढ़ विश्वास के कारण उसने सारे जीवन किसी भी कष्ट की परवाह नहीं की, उसी अदम्य धर्म-विश्वास के, निष्ठुर आचरण के सामने परास्त होने की संभावना होने लगी। अज्ञेय अंधकारपूर्ण जीवन-पहेली के संबंध में उसके मन में भाँति-भाँति के प्रश्न उठने लगे। हृदय सुस्त पड़ने लगा। अपने मन में वह प्रश्न करने लगा "जगत्-पिता कहाँ है? वह चुप क्यों है? क्या संसार में सचमुच पाप ही की जय होती है?" फिर आप-ही-आप सोचने लगा - नहीं, परमात्मा मुझे कभी नहीं भुलाएगा। संभव है, मिस अफिलिया के पत्र पाने पर कैंटाकी से कोई मेरा उद्धार करने आता हो।

यों सोचते-सोचते वह व्याकुल होकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। वह प्रतिदिन सवेरे उठकर बड़ी आशा से मार्ग की ओर देखता था कि कैंटाकी से कोई उसे मुक्त कराने के लिए आ रहा है या नहीं। यों ही देखते-देखते कितने ही दिन बीत गए, परंतु कोई कहीं से आया-गया नहीं। तब फिर उसके मन में वही पुराना प्रश्न जाग उठा, 'क्या ईश्वर ने मेरी सुध बिल्कुल ही बिसार दी है?'

एक दिन संध्या के उपरांत खेत से आकर वह ऐसा शक्तिहीन हो गया कि धड़ाम से जमीन पर गिर गया। आज उसकी उठने की शक्ति एकदम जाती रही। लेटे-लेटे ही रोटियाँ बनाने की फिक्र में लगा। बीच में उसकी बाइबिल पढ़ने की इच्छा हुई। तब चूल्हे की आग जरा तेज करके निशान लगाए हुए अपनी पसंदवाले बाइबिल के अंशों को पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते मन-ही-मन प्रश्न करने लगा-क्या संसार से शास्त्र की शक्ति जाती रही है? क्या यह धर्मशास्त्र भग्न हृदयों को बल और निष्प्रभ चक्षुओं में ज्योति नहीं देता? इसके बाद ठंडी साँस लेकर उसने ज्यों ही बाइबिल बंद की, त्योंही उसे पीछे से किसी का विकट हास्य सुनाई दिया। गर्दन घुमा कर देखने पर उसने लेग्री को अपने पीछे खड़ा पाया।

लेग्री बोला - "अब तो समझ लिया न, कि धर्म तेरी कुछ मदद नहीं करने का? मैंने तो पहले ही कहा था कि तेरा धर्म-कर्म सब हवा कर दूँगा।"

धर्म के संबंध में इस व्यंग्य ने टॉम के हृदय में बरछी मार दी। इतना कष्ट उसे दिन भर की भूख-प्यास से भी नहीं हुआ था।

लेग्री ने कहा - "तू निरा गधा है। मैंने खरीद के समय तूझे कोई बड़ा ओहदा देने की बात

सोची थी। मैं तूझे सांबो और कुड़बो से भी ऊँची जगह देता। आज वे तूझे कोड़े लगाते हैं, लेकिन मेरी बात मानकर तू उन सबको कोड़े लगा सकता था। मैं तूझे बीच-बीच में थोड़ी व्हिस्की या ब्रांडी भी पीने को दिया करता। मैं अब भी कहता हूँ कि तू अपने ये सब ढोंग छोड़ दे। अपनी उस फटी-पुरानी पोथी को चूल्हे में झोंककर मेरा धर्म अंगीकार कर!"

टॉम ने शांति से कहा - "ईश्वर न करे ऐसा हो!"

लेग्री बोला - "तू देखता तो है कि ईश्वर तेरी कुछ भी मदद नहीं कर रहा है। अगर उसे तेरी मदद करना मंजूर होता तो वह तूझे मेरे हाथ में ही न पड़ने देता। टॉम, तेरा यह धर्म-कर्म एक तरह का झूठा ढोंग है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मेरी बात मानकर चलना ही तेरे लिए अच्छा रहेगा। मैं सामर्थ्यवान आदमी हूँ और तेरा कुछ उपकार कर सकता हूँ।"

टॉम ने उत्तर दिया - "नहीं सरकार, मैं अपना संकल्प नहीं छोड़ूँगा। भगवान मेरी सहायता करे या न करे, पर मैं उसकी शरण में रहूँगा और अंत तक उस पर विश्वास रखूँगा।"

लेग्री ने ठोकर मारकर उस पर थूकते हुए कहा - "तू बड़ा मूर्ख है! खैर, कुछ परवा नहीं, मैं तूझे समझूँगा। तू देखेगा कि मैं तूझसे कैसे अपनी बात मनवाता हूँ।" यह कहकर लेग्री वहाँ से चला गया।

यंत्रणा के बड़े भार से जब आत्मा सर्वथा अवसन्न हो जाती है और धैर्य सीमा को पहुँच जाता है, उस समय देह और मन की सब शक्तियाँ उस भार को अलग फेंकने के लिए तिलमिलाने लगती हैं। इसी से प्रायः घोरतम यंत्रणा के उपरांत तत्काल हृदय में आनंद और साहस का स्रोत बहते देखा जाता है। यही दशा इस समय टॉम की थी।

निर्दयी मालिक के नास्तिकता-पूर्ण तानों ने उसके दुःख से बोझिल हृदय को और अधिक अवसन्न कर दिया। यद्यपि उसका विश्वास उस अनंत परमेश्वर से डिगा नहीं, पर निराशा से वह सर्वथा शिथिल हो गया। टॉम चूल्हे के पास संज्ञा-शून्य की भाँति बैठा रहा। सहसा उसके चारों ओर के पदार्थ मानो शून्य में विलीन हो गए और काँटों का ताज पहने, रक्त से आरक्त, आहत ईसा की मूर्ति उसके नेत्रों के सम्मुख उपस्थित हुई। भय और आश्चर्य से उस आगत के चेहरे के महान सहिष्णु भाव की ओर वह निहारने लगा। उन गंभीर और करुणा से उद्दीप्त युगल नेत्रों की दृष्टि उसके अंतस्तल पर पड़ी, इससे उसकी अवसन्न और मुमूर्षु आत्मा जाग उठी। वह घुटने टेककर और दोनों हाथ आगे फैलाकर बैठ गया। उसी समय शनैः-शनैः उस आकृति का रूप बदलने लगा। काँटों के मुकुट की जगह किरणें चमकने लगीं। एक अपूर्व प्रभा-मंडल से उद्भासित उस मुख ने स्नेह-चक्षुओं से उसकी ओर देखा। उस कंठ से सुधा की धारा बह निकली। टॉम ने सुना, वाणी कह रही थी - "जैसे मैंने पाप और अत्याचारों पर विजय प्राप्त कर, पिता के साथ पवित्र सिंहासन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त किया, वैसे ही वह भी मेरे साथ इस सिंहासन पर बैठ सकेगा, जो संसार में पाप और अत्याचारों पर विजय प्राप्त करेगा।"

टॉम कितनी देर तक वहाँ पड़ा रहा, इसका उसे कुछ भी होश न था। जब वह होश में आया, तब उसने देखा कि आग बुझ गई है, उसके कपड़ों और शरीर को ओस ने तर कर दिया है, परंतु आत्मा का वह संकट-काल निकल गया है। अब उसे हृदय में एक अपूर्व आनंद भरा हुआ है। उस आनंद की उमंग में भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, अपमान और नैराश्य आदि की सभी यंत्रणाओं को उसने बिसार दिया है। इस जीवन की समस्त आशाओं को तिलांजलि देकर उसने अपना चित्त अनादि देव के चरणों में लगा दिया। आकाश के उज्ज्वल तारों की ओर आँखें लगाकर टॉम आकाश को प्रतिध्वनित करता हुआ आत्मा के गंभीर आनंद में मगन हो कर, यह गीत गाने लगा -

हिम सम पृथ्वी गल जाएगी, भानु भस्म हो जाएगा।

तब भी मैं प्रभु, तेरा हूँगा, तू मेरा कहलाएगा।।

होगा पूर्ण धरा का जीवन, जड़ शरीर यह मंद।

शांति-सरोवर में तैरूँगा, पाकर के मैं ब्रह्मानंद।।

वर्ष सहस्र यहाँ पर रहकर फिर प्रकाश-युत भानु-समान।

गाता नित्य रहूँगा वैसे जैसे था जब छेड़ा गान।।

यह कोई नई घटना नहीं थी। धर्म-विश्वासी गुलामों में ऐसी अचरज-भरी घटनाएँ प्रायः होती रहती थीं। मनोविज्ञानी पंडितों का मत है कि ऐसी भी अवस्थाएँ हुआ करती हैं, जिनमें मन के भाव और कल्पनाएँ इतनी उत्तेजित और प्रबल हो जाती हैं कि उस समय समस्त बाहरी इंद्रियों पर उनका प्रभाव हो जाता है, और ऐसी अवस्था में कल्पित पदार्थ प्रत्यक्ष-से दीख पड़ने लगते हैं। सर्वव्यापी परमेश्वर मनुष्य को वे शक्तियाँ देकर उसके जीवन में जो अनेक घटनाएँ घटाता है, उनकी गिनती कौन कर सकता है? और इस बात का निर्णय कौन कर सकता है कि वह किन-किन उपायों के द्वारा निराश और असहाय आत्माओं में नए बल का संचार करता है? यदि यह दास विश्वास करे कि ईसा ने उसे प्रत्यक्ष दर्शन दिया था, उससे बातें की थीं, तो कौन उसकी बात का प्रतिवाद करेगा!

दूसरे दिन प्रातःकाल, जब हड्डियों के ढाँचे बने गुलाम लोग खेतों की ओर चले, तब उन चीथड़ों में लिपटे, जाड़े से काँपते अभागों में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा था, जो उमंग से पैर रखता मस्तानी चाल से जा रहा था। कारण यही था कि ईश्वर के अनंत प्रेम पर उसका अटल विश्वास जम गया था। अरे लेगी! तू अब अपनी सारी शक्ति आजमा कर देख ले। अति दारुण यंत्रणा, शोक, अपमान सब-के-सब इसके लिए शांति-निकेतन ही सीढ़ियाँ बनकर इसे स्वर्ग की ओर अग्रसर करने में सहायता करेंगे।

उत्पीड़ित टॉम का विनीत हृदय अब और भी अधिक शांतिपूर्ण हो गया। नित्य-पवित्र परमेश्वर ने उसके श्रद्धापूर्ण हृदय को अपना पवित्र मंदिर बना लिया। इस जीवन का मर्मगत परिताप बीत चुका। इस जीवन की आशा, भय और आकांक्षा का उद्वेलन पीछे छूट गया और पल-पल की संग्राम-क्लिष्ट रुधिराक्त मानवीय इच्छाएँ संपूर्ण रूप से ईश्वरीय इच्छा में विलीन हो गईं। टॉम को अपनी जीवन-यात्रा का बचा भाग बहुत अल्प प्रतीत होने लगा और अनंत शांति तथा अनंत सुख इतना पास और इतना स्पष्ट जान पड़ने लगा कि जीवन के दुस्सह्यतम कष्ट भी उसके हृदय पर असर न कर सके।

उसका यह बाहरी परिवर्तन सबको दिखाई पड़ने लगा। उसका मुख हर समय प्रफुल्ल रहने लगा और हर काम में उसका फूर्तीलापन फिर दिखाई देने लगा। वह बड़े धीरज, सहिष्णुता और शांति के साथ अत्याचार और निष्ठुर व्यवहार सहने लगा। किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार से उसके मन में उद्विग्नता या उत्कंठा नहीं पैदा होती थी। यह देखकर एक दिन लेगी ने सांबो से कहा - "टॉम पर आजकल कौन-सा भूत सवार हो गया है? थोड़े दिन हुए तब तो वह बिल्कुल हिल गया था, लेकिन आजकल तो वह बड़ी तेजी दिखलाता है!"

सांबो ने कहा - "कुछ ठीक नहीं मालूम, सरकार! शायद यहाँ से भाग जाने की जुगत कर रहा होगा।"

लेगी ने अपनी छिपी इच्छा व्यक्त की - "एक बार भागने की कोशिश करे तो अपना काम ही बन जाए। मैं भी यही चाहता हूँ।"

सांबो ने हँसते हुए कहा - "जान पड़ता है, हम लोगों को जल्दी ही वह दिन देखना नसीब होगा। जरूर वह भागने की ताक में है। भागने पर जब शिकारी कुत्ते उसे दाँतों में दबा लाएँगे तब बड़ा मजा आएगा। एक बार जब भोली नाम की दासी भागी थी तो कैसा तमाशा हुआ था। मेरा तो उस वक्त हँसते-हँसते पेट फटा जा रहा था। कुत्तों ने जाकर उसे पकड़ा और हम लोगों के पहुँचने से पहले ही उसका आधा शरीर नोच डाला। उसे देखकर मुझे ऐसी हँसी छूटती थी कि क्या कहूँ!"

लेगी बोला - "मालूम होता है, लूसी अब शीघ्र ही कब्र में आराम करेगी; लेकिन सांबो, जब भी कोई दास या दासी बहुत खुश और तेज दिखाई पड़े तो तुम्हें फौरन उसका मिजाज दुरुस्त करने की ओर ध्यान देना चाहिए।"

सांबो ने उत्तर दिया - "आप बेखटक रहिए। मैं खुद ही सब ठीक कर लूँगा।"

यह तीसरे पहर की बात थी, जब लेगी घोड़े पर सवार होकर पास के किसी कस्बे में जा रहा था। उसने मन-ही-मन सोचा था कि उधर से लौटते हुए कुलियों के झोपड़े देखता चलूँगा।

कस्बे से लौटते हुए जब वह कुलियों की झोपड़ियों से थोड़ी दूर रह गया, तब उसे किसी के

गाने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने जरा ठहरकर सुना तो मालूम हुआ कि टॉम गा रहा है:

जब देखूँगा, लिखा हुआ है स्वर्ग-द्वार पर मेरा नाम,

भय-भावना बिदा कर दूँगा, अश्रु पोंछ लूँगा विश्राम।

वैरी बन जग लड़ने आवे और नरक से बरसैं बाण,

तो भी धरा भृकुटि को निर्भय देखूँ गिन्नू तुच्छ शैतान।

प्रलय-समुद्र उमड़ आवे या घोर शोक का हो तूफान,

मुझको कुछ परवाह न होगी, कुछ न पड़ेगा मुझको जान।

मिले निरापद मुझे स्वर्ग-गृह परम पिता सर्वस्व-समान।

यह गीत सुनकर लेगी मन-ही-मन कहने लगा - "हा-हा, बदमाश सोचता है कि स्वर्ग जाऊँगा। इसका गीत सुनकर मेरे तो कान जल उठते हैं!"

इसके बाद वह टॉम के सामने पहुँचा और चाबुक ऊँचा उठाकर बोला - "हरामजादे! इतनी रात में बाहर पड़ा क्या गोलमाल कर रहा है?"

बहुत ही प्रसन्न और विनम्र-भाव से "जो हुकूम सरकार" कहकर जब टॉम अपनी झोपड़ी में जाने लगा, तो उसकी प्रसन्नता देखकर लेगी के मन में असीम क्रोध की ज्वाला भड़क उठी और तत्काल उसने उसके कंधों और पीठ पर कोड़े बरसाते हुए कहा - "क्यों रे सूअर, तू यहाँ बड़ी मौज उड़ा रहा है!"

परंतु यह चाबुक की मार ऊपर-की-ऊपर ही रह गई, टॉम के भीतर हृदय पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। उसे इस मार का कोई दुःख नहीं हुआ। वह अब जीवनमुक्त हो चुका है। उसकी यह पंचभौतिक काया आत्मा से पृथक् हो चुकी है। अतः कोई भी बाह्य कष्ट उसे नहीं जान पड़ता था। टॉम सिर झुकाए खड़ा रहा। लेगी ने महसूस किया कि इसे अपने ढंग पर लाना शक्ति से बाहर है। उसने समझा, ईश्वर अत्याचारों से इसकी रक्षा कर रहा है। ऐसा सोचकर वह ईश्वर को गालियाँ देने लगा। ताने, धमकियों और बेटों की मार, किसी से भी टॉम के हृदय की शांति को लेगी नष्ट नहीं कर सका। इन दशाओं में जब उसने टॉम को विनम्रता और प्रफुल्लता से दिन काटते देखा, तो वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। ईसा को सतानेवालों ने, उन्हें प्रसन्नता से अत्याचारों को सहते देखकर कहा था - "ईसा, तू क्या हम लोगों के हृदय की अग्नि को समय से पूर्व ही सुलगा देगा?" लेगी के हृदय में भी आज यही भाव उत्पन्न हुआ। वह टॉम को दुःखी देखने के लिए कोड़े लगाता, परंतु टॉम इससे तनिक भी दुःखी न होता। यह देखकर लेगी के



हृदय में अशांति की भयानक आग धधकने लगी।

लेग्री के खेत में काम करनेवाले दीन-दुखी कृषियों की दुर्दशा देखकर टॉम के हृदय में बड़ा ही क्लेश हुआ। उसके अपने दुःखों का अंत हो गया है, स्वयं वह स्वर्गीय शांति का अधिकारी बन चुका है, अब वह अपनी इस शांति-संपदा का कुछ अंश इन दीन-दुखियों को बाँटने की चिंता करने लगा। उसने कृषियों के साथ धर्म-चर्चा करके उन्हें शांति के रास्ते पर लाने की बात सोची, परंतु उनके साथ धर्म-चर्चा करने का बिल्कुल ही अवकाश नहीं था। केवल खेत में आते-जाते समय बातें करने का कुछ अवसर था। टॉम ने इन्हीं क्षणों का सदुपयोग करके अभागे कृषियों के साथ धर्म-चर्चा प्रारंभ कर दी। पहले तो उसके सद्विचार का मर्म कोई भी नहीं समझ सका, परंतु धीरे-धीरे उनका वह कठोर हृदय भी पसीजने लगा। कभी वह आप भूखा रहकर अपना भोजन किसी दूसरे को दे डालता, कभी किसी सर्दी से परेशान रोगी कृषी का कष्ट देखकर उसे अपना फटा कंबल दे देता और खुद जमीन पर ही पड़ा रहता। कभी किसी कमजोर स्त्री मजदूर को कपास चुनने में असमर्थ देखकर अपनी चुनी हुई कपास उसकी टोकरी में डाल देता। यह सब करते हुए उसने एक बार भी परवा नहीं की कि इन कार्रवाइयों से उसकी पीठ की चमड़ी उधेड़ी जा सकती है।

उसका ऐसा दयालुतापूर्ण आचरण देखकर खेत के सारे कृषियों का हृदय उसकी ओर आकर्षित होने लगा। कुछ समय बाद कपास चुनने के दिन निकल गए, अतः कृषियों को अब उतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। उन्हें काफी अवकाश रहता था। इस समय वे अक्सर टॉम के पास बैठकर धर्म-कथाएँ सुनते तथा टॉम के साथ-साथ प्रार्थना किया करते थे।

परंतु प्रार्थना से लेग्री बहुत चिढ़ता था। वह जब सुनता कि कृषी लोग टॉम के पास बैठकर धर्म-चर्चा कर रहे हैं, तो वह वहाँ पहुँचकर उन्हें बहुत मारता-पीटता। इससे उनकी धर्म-चर्चा की तृष्णा और भी बढ़ गई। वास्तव में धर्म-विद्वेषियों का अपना स्वयं का आचरण ही धर्म-प्रचार में सर्वाधिक सहायक होता है।

निरंतर अत्याचारों और हृदयहीनता के कारण लूसी का धर्मभाव सर्वथा नष्ट होनेवाला था, पर टॉम के उपदेशों और धर्म-संगति से उसका मृतप्राय विश्वास पुनः सजीव हो उठा। औरों की बात जाने दीजिए, कासी जो इतनी प्रतिहिंसक, क्रूर और उन्मत्त हो गई थी, उसके हृदय में भी भक्ति, विश्वास और प्रेम का संचार हो गया।

कासी का हृदय पहले से ही असह्य यंत्रणाओं की आग में जल रहा था, संतान-शोक के कारण वह प्रायः सनकी-सी हो गई थी, इससे उसने मन-ही-मन ठान लिया था कि मौका मिलने पर वह इस अत्याचारी लेग्री को उसके कुकर्मों का मजा जरूर चखाएगी।

एक दिन रात के समय, जब और सब लोग सो रहे थे, टॉम ने एकाएक उठ कर देखा कि कासी उसे इशारे से बाहर बुला रही है।

टॉम कुटिया से बाहर आया। रात के दो बजे होंगे। चारों ओर चाँदनी छिटकी हुई थी। टॉम ने आज कासी के चेहरे पर विलक्षण आशा और उत्साह का भाव देखा। वैसे उसका चेहरा सदा निराशा की मूर्ति बना रहा था, परंतु आज उस सर्वग्रासी निराशा की जगह पर आशा की चमक थी।

कासी ने बड़ी व्यस्तता से टॉम की कलाई इस सख्ती से पकड़कर, मानो उसके हाथ इस्पात के बने हों, उसे आगे को खींचते हुए कहा - "पिता टॉम, इधर आओ, तुमसे एक खास बात कहनी है।"

टॉम ने कुछ शंकालु-भाव से पूछा - "क्यों, क्या बात है?"

कासी ने कहा - "क्यों, तुम स्वतंत्र होना पसंद नहीं करते?"

टॉम बोला - "जब ईश्वर की मर्जी होगी, तब स्वतंत्रता मिलेगी।"

कासी ने बड़े उल्लास से कहा - "लेकिन तुम्हें आज ही रात को स्वतंत्रता मिल सकती है। इधर आओ, इधर आओ!"

इसके बाद कासी चुपके-चुपके टॉम के कान में कहने लगी - "अभी लेखी नींद में बेहोश है। मैंने ब्रांडी में अफीम मिला दी है। अतः जल्दी नींद नहीं खुलेगी। इधर आओ। पिछवाड़े का दरवाजा खुला है। वहाँ मैंने पहले से ही एक कुल्हाड़ी रख छोड़ी है। मैं तुम्हें मार्ग बताए देती हूँ। मैं अपने हाथों से काम कर लेती, पर मेरे हाथों में इतना बल नहीं है। तुम मेरे साथ आओ।"

टॉम ने बड़ी दृढ़ता से कहा - "संसार भर का राज्य मुझे मिले तो भी मैं ऐसा पाप-कर्म नहीं करूँगा।"

कासी बोली - "पर जरा इन अभागों की दुर्दशा पर तो विचार करो। हम लोग इन सब गुलामों को मुक्त कर देंगे और फिर किसी द्वीप में चलकर बसेंगे।"

टॉम बोला - "मिस कासी, मैं तुम्हें भी मना करता हूँ। ऐसा बुरा काम कभी न करना। बुरे काम का नतीजा कभी अच्छा नहीं होगा। ईश्वर के लिए कष्ट सहो, पर इस पाप से हाथ न रंगो। कासी, ऐसा काम मत करना। नहीं-नहीं, तुम एक तो यों ही पाप के समुद्र में डूब रही हो, उस पर अब यह नया पाप मोल मत लो। हमें कष्ट सहते हुए समय का इंतजार करना चाहिए।"

कासी कुछ क्रोध में बोली - "इंतजार! क्या मैंने इंतजार नहीं किया? मैंने बहुत इंतजार किया है। अब इस हाड़-मांस के शरीर से ज्यादा नहीं सहा जाता।"

टॉम ने कासी को समझाया - "देखो कासी, ईसा ने अपना रक्त दिया, लेकिन किसी दूसरे

का खून नहीं गिराया। हमें शत्रु को भी प्यार करना चाहिए।"

कासी बोली - "प्यार करूँ? ऐसे दुश्मन को प्यार करूँ? क्या मेरा शरीर लोहे का बना हुआ है?"

टॉम ने कहा - "हम लोगों की सच्ची जीत तभी होगी तब हम शत्रु को भी क्षमा करके उसके कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर सकें।"

इतना कहकर टॉम आकाश की ओर देखने लगा।

टॉम का यह हृदय-ग्राही उपदेश सुनकर कासी का हृदय पिघल गया। तब उसने कहा - "पिता टॉम, मैं तो पहले ही कह चुकी हूँ कि मुझपर शैतान सवार है। मैं प्रार्थना करना चाहती हूँ, पर कर नहीं सकती। तुमने जो कहा है, सच है, लेकिन मेरा हृदय न जाने कैसी प्रतिहिंसा से भरा हुआ है कि मैं जब भी प्रार्थना करती हूँ, मेरे हृदय में शत्रु के विरुद्ध आग धधकने लगती है।"

टॉम बोला - "हाय, तुम्हारी आत्मा में कितनी अशांति भरी हुई है। मैं तुम्हारे कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँगा। कासी बहन, ईश्वर में मन लगाओ!"

कासी चुपचाप खड़ी रही। उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदे गिरने लगीं।

टॉम ने फिर कहा - "कासी बहन, तुम यदि यहाँ से भागकर कहीं निकल सको तो मैं तुम्हें और एमेलिन को भागने की सलाह देता हूँ।"

कासी ने पूछा - "क्या तुम भी हम लोगों के साथ चलोगे?"

टॉम ने बताया - "मैं पहले तो चला भी जाता, लेकिन अब मुझे यहाँ एक काम है। मैं इन दीन-दुखी दास-दासियों को धर्म की ओर ले जाने की चेष्टा करूँगा। ईश्वर ने मुझे यह काम सौंपा है। लेकिन तुम लोगों का यहाँ से भाग जाना ही ठीक है। तुम लोग यहाँ रहोगी तो धीरे-धीरे दूसरी बुराइयों में फँस जाओगी।"

कासी ने कहा - "भागने की कोई सुविधा नहीं है। कहाँ जाएँ? कब्र के सिवा हम लोगों के लिए कहाँ जगह है? जहाँ भी हम जाएँगी, लेगी शिकारी क़त्लों से पकड़वा मँगाएगा। साँपों और मगरों को रहने की जगह है, पर हम लोगों के लिए इस दुनिया में कहीं ठिकाना नहीं है।"

टॉम ने कुछ देर चुपचाप कासी की बात सुनी, फिर कहा - "जिसने दानियल को सिंह की माँद से बचाया था, अपनी विश्वासी संतानों की अग्नि-कुंड से रक्षा की थी, जो समुद्र पर से चलाया गया था, और जिसके हुक्म देते ही हवा भी रुक गई थी, वह अब भी विद्यमान है। मुझे

जान पड़ता है, वह निश्चय ही यहाँ से भाग जाने में तुम लोगों की सहायता करेगा। तुम लोग एक बार यत्न करके देखो, तुम लोगों के उद्धार के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगा।"

ईश्वर की महिमा विचित्र है! कौन जान सकता है कि किन विचित्र नियमों के अनुसार हमारे मानसिक कार्य-कलापों और चिंताओं का शासन होता है! टॉम की बात सुनकर कासी के मन में अकस्मात एक विचार उत्पन्न हुआ। पहले उसे भागना असंभव जान पड़ता था, पर अब संभव जान पड़ने लगा। कासी ने पहले तो भागने के विषय में बहुत-कुछ सोचा-विचारा था, पर निश्चय न कर सकी थी कि भाग निकलने की भी कोई सूरत है, लेकिन आज उसे ऐसा लगने लगा कि उसके लिए भागना बहुत ही सहज है। इससे उसके मन में आशा का संचार हो गया। वह टॉम से बोली - "पिता टॉम! मैं चेष्टा करूँगी।"

टॉम ने आकाश की ओर देखते हुए कहा - "परमपिता परमात्मा तुम्हारे सहायक हों!"

## 42. पलायन की योजना

पहले बताया जा चुका है कि बहुत धनी और बड़े जमींदार के दिवालिया हो जाने पर लेग्री ने बहुत सस्ते में उसका यह मकान और खेत खरीद लिया था। यह मकान बहुत बड़ा था, इसमें बहुत पुरानी कोठरियाँ थीं। जमींदार के शासन में यहाँ अनजान लोग रहते थे; पर जब से यह मकान लेग्री के हाथ में आया है, तब से इसके चार-पाँच सहन तो बिल्कुल सूने पड़े रहते हैं। लेग्री का व्यापार कोई बहुत लंबा-चौड़ा न था, और न वह वैसा संपन्न ही था। कुछ दिनों पहले, जब वह जहाज का कप्तान था, उसने इधर-उधर से लूट-खसोट तथा चोरी-जारी करके दो-चार हजार की पूँजी बना ली थी और उसी से बड़े सस्ते में यह घर और खेत खरीदकर काम चालू कर दिया था। पहले मालिक के पास इतने बड़े खेत में काम करने के लिए पाँच सौ के लगभग कृषी थे, पर अब उसी खेती का काम लेग्री केवल 50 गुलामों से कराता है। इसी से लेग्री के खेत में काम करनेवाले कुल दो-तीन वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहते थे।

मकान में जो 5-6 कमरे खाली पड़े थे, उनमें उत्तर की ओर एक बड़ा कमरा था। यह कमरा कासी के सोने के कमरे से सटा हुआ था। कासी के कमरे के बाईं ओर लेग्री का शयनागार था। उस मकान में रहनेवाले सब लोगों के मन में यह खयाल जमा हुआ था कि लेग्री के उत्तर दिशावाले कमरे में भूत रहता है। रात की कौन कहे, दिन में भी लोगों की उस कमरे में जाने की हिम्मत नहीं होती थी। कई वर्ष हुए, लेग्री ने इस कमरे में एक कृषी स्त्री-मजदूर को तीन सप्ताह तक भूखी-प्यासी रखकर उसकी जान ले ली थी। तभी से सबको विश्वास हो गया था कि यह कमरा भूतों का अड्डा है। इसी घटना से भूत-कथा का सूत्रपात हुआ। स्वयं लेग्री की भी

कमरे में घुसने की हिम्मत न होती, लेकिन वह अपना भय किसी के सामने जाहिर नहीं करता था।

एक दिन कासी, बिना लेगी से पूछे-ताछे ही, बड़ी घबराहट में सारा माल-असबाब उठाकर अपना कमरा बदलने लगी। दास-दासियों को बुलाकर उसने सारा सामान उठाकर दूसरे कमरे में ले जाने को कहा। कूली लोग बहुत डरते-काँपते हुए वहाँ की सब चीजें उठाकर दूसरे कमरे में जाकर रखने लगे। उस समय लेगी घूमने गया हुआ था। जब वह लौटा तो यह उलटफेर देखकर उसने पूछा - "कासी, क्या बात है? इस कमरे की चीजें उठाकर वहाँ क्यों लिए जा रही हो?"

कासी ने कहा - "मुझे इस कमरे में नींद नहीं आती।"

लेगी ने पूछा - "क्यों, क्या बात है?"

कासी ने कहा - "मैं वह सब कहना नहीं चाहती।"

लेगी बोला - "कहने में क्या हर्ज है?"

तब कासी ने कहा - "इस उत्तरवाले कमरे में ऐसी-ऐसी विचित्र आवाजें आती हैं कि मुझे बड़ा डर लगता है और इसी से नींद नहीं आती।"

लेगी ने फिर पूछा - "क्या आवाज आती है? वह कैसी आवाज है?"

कासी ने कहा - "क्या तुम्हें मालूम नहीं, वह किसकी आवाज है, कैसी आवाज है?"

इस बात पर लेगी आपे से बाहर हो गया और जमीन पर जोर से पैर मारकर उसने कासी के मुँह पर चाबुक चलाई। इस कमरे में कूली स्त्री की मौत हुई थी, इस बात को लेगी किसी पर प्रकट नहीं होने देता था। इसी से कासी पर बहुत क्रुद्ध हुआ। चाबुक खाकर कासी एक किनारे हट गई और जोर-जोर से कहने लगी - "लेगी, तुम्हीं एक रात इस कमरे में सो कर देखो। देखती हूँ, तुम डरते हो कि नहीं।"

कासी की इस बात से लेगी के मन में भय जमकर बैठ गया। असल में जिन अशिक्षित लोगों में धर्म के प्रति विश्वास का भाव नहीं होता, उनके मन में ऐसे कूसंस्कार-मूलक भय का भाव बड़ी जल्दी पैदा हो जाता है।

कासी ने अच्छी तरह जान लिया कि लेगी के मन में भय समा गया है। इससे वह मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुई। इसके बाद कासी उस उत्तरवाले कमरे के पास की एक कोठरी में अपना बिछौना वगैरह तथा सात दिन तक की खाने-पीने की सामग्री रख आई। बीच-बीच में वह ठीक आधी रात को वहाँ जाकर छिपे-छिपे लेगी के कमरे का दरवाजा खटखटाती और विचित्र प्रकार

की आवाज करती। इससे लेगी का कसंस्कारमूलक भय दिन-ब-दिन बढ़ता गया। इस संबंध में कासी दास-दासियों के मन में अधिक भय पैदा करने की नीयत से नित्य नए-नए उपद्रवों के किस्से गढ़कर सुनाती। इससे उन सबका डर बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक बढ़ गया कि रात को वे उस कमरे की ओर आँखें उठाकर देखने में भी भय खाने लगे।

तीन-चार दिन में जब कासी ने देख लिया कि अब भूत-संबंधी संस्कार सब के मन में खूब गहरे जम गए हैं तो वह भागने की तैयारी करने लगी। बिछौने आदि तो पहले ही रख आई थी, अब अपने और एमेलिन के कपड़े भी ले जाकर वहाँ रख आई थी।

तीसरे पहल लेगी बहुत देर से अपने किसी पड़ोसी के यहाँ गया था। यह सुअवसर पाकर, संध्या के बाद, जब चारों ओर अँधेरा छा गया, कासी ने एमेलिन से कहा - "चल, झटपट उठकर चल। भागने का इससे अच्छा दाँव फिर नहीं मिलेगा।"

वे दोनों घर से निकलकर दलदल की ओर चलीं। पहले उन्होंने निश्चय किया था कि पश्चिम की ओर दलदल में चलेंगी, पर यह सोचकर कि वहाँ रहने से लेगी उन्हें शिकारी कुत्तों द्वारा पकड़वा मँगाएगा, उन्होंने कुछ दूर पश्चिम और फिर उत्तर जाकर, वहाँ से पूर्व की ओर मुँहकर कुछ बढ़ने पर, सामने की खाई पार करके, भूतहे घर में पहुँचकर पाँच-छह दिन वहीं रहने का निश्चय किया और सोचा कि अपने भागने के बाद लेगी संभवतः चार-पाँच दिन उन्हें दलदल में ही इधर-उधर खोजेगा अथवा शिकारी कुत्तों से खोज कराएगा; परंतु जब चार-पाँच दिन में वह खोजकर थक जाएगा तब मौके से किसी दिन रात को निकलकर चल देंगी। चलते-चलते जब वे दोनों दलदल के पास पहुँची, तब उन्हें पीछे से "पकड़ो! पकड़ो! दासी भागी जा रही हैं!" का शोर सुनाई दिया। कासी ने पहले तो अनुमान किया कि सांबो चिल्ला रहा है, पर पीछे उसे आवाज से मालूम हुआ कि वह आवाज सांबो की नहीं, स्वयं लेगी की है। इस चिल्लाहट से एमेलिन बहुत डरी और कासी का हाथ पकड़कर बोली - "कासी माँ, मुझे तो बेहोशी आ रही है।"

कासी बोली - "यदि इस समय तुझे बेहोशी आ गई तो मैं तेरी जान ही ले लूँगी, नहीं तो चुपचाप मेरे पीछे दौड़ती चली आ!"

कासी के भय से एमेलिन जी-जान से दौड़ने लगी और शीघ्र ही लेगी की आँखों से ओझल हो गई। लेगी ने देखा कि अब इस अंधेरे में बिना शिकारी कुत्तों के इनको पकड़ने की कोई सूरत नहीं है, अतः वह कुत्तों तथा लोगों को साथ लेने के लिए खेत की ओर लौटा और सांबो, कुड़बो तथा अन्य दास-दासियों, शिकारी कुत्तों और बंदूकों को लेकर उन्हें फिर पकड़ने चला।

लेगी मन-ही-मन जानता था कि वे दोनों सहज ही भागकर नहीं निकल सकेंगी। उसके सह हब्शी गुलाम चारों दिशाओं में फैलकर उनकी खोज करने लगे।

सांबो ने लेगी से पूछा - "अच्छा, कासी को देख पाऊँ तो क्या करूँ?"

लेगी बोला - "कासी को गोली मार सकता है, पर एमेलिन को जान से मत मारना। और जो इन दोनों को जीवित पकड़कर ला सके, उसे पाँच सौ रुपया इनाम दूँगा।"

इधर कासी और एमेलिन अपने निश्चय के अनुसार रास्ता तय करके उस ठिकानेवाले कमरे में जा पहुँची। घर में पहुँचने पर, जंगले के पास खड़ी होकर, एमेलिन ने कासी को बुलाकर कहा - "वह देख, शिकारी कुत्तों को साथ लिए कितने आदमी चले जा रहे हैं। चल, हम लोग चलकर किसी अँधेरी कोठरी में छिप जाएँ।"

कासी बोली - "डर क्या है? यहीं बरामदे में बैठ कर दोनों तमाशा देखेंगी। वे इधर कदापि नहीं आएँगे।"

सारे दास-दासियों तथा कुत्तों को साथ लिए लेगी दलदल की ओर निकल गया। घर एकदम सूना पड़ा था। एमेलिन को साथ लेकर कासी धीरे से दक्षिण दिशावाला दरवाजा खोलकर लेगी के सोने के कमरे में घुस गई। वहाँ उसे लेगी के संदूक की कुंजी बिस्तर पर पड़ी हुई मिली, जिसे वह जल्दी में वहीं पड़ी छोड़ गया था। कुंजी पाकर कासी को बहुत खुशी हुई। उसने तत्काल संदूक खोला और उसमें से तीन-चार हजार रुपयों के नोट निकालकर अपने कपड़ों में छिपा लिए। यह देखकर एमेलिन बहुत डरी। उसने कहा - "ओ कासी माँ, यह तुम क्या कर रही हो? ऐसा बुरा काम मत करो।"

इस पर कासी ने कुछ झुंझलाकर कहा "चुप रहो! बिना पैसों के जहाज का भाड़ा और रास्ते का सफर-खर्च कहाँ से आएगा? क्या दलदल में सड़कर मरना है?"

एमेलिन बोली - "जो भी हो, लेकिन यह तो चोरी ही है।"

कासी ने बड़ी घृणा के साथ कहा - "चोरी है? जो मनुष्यों की आत्मा और शरीर-सब कुछ चुरा लेते हैं, वे हमसे क्या कह सकते हैं? लेगी ने ये रुपए कहाँ से पाए हैं? इन कृतियों का खून चूस-चूसकर ही तो ये रुपए बटोरे हैं। यह दास-दासियों का खून है। चोर का माल ले जाने में क्या दोष है? यह सारे-का-सारा माल चोरी का है।"

इसके बाद कासी एमेलिन का हाथ पकड़कर से उत्तर के कमरे में ले गई। वहाँ जाकर बोली - "मैंने काफी रोशनी का प्रबंधकर रखा है और समय बिताने के लिए कुछ पुस्तकें भी लाकर रख दी हैं। मुझे निश्चय है कि वे हम लोगों को खोजने यहाँ नहीं आएँगे। हाँ, यदि आ ही गए तो सचमुच उन्हें भूतों का तमाशा दिखाकर डराऊँगी।"

एमेलिन ने पूछा - "क्या तुम्हें निश्चय है कि वे लोग हम दोनों की खोज में यहाँ न आ सकेंगे?"

कासी बोली - "मैं तो चाहती हूँ कि लेगी एक बार यहाँ आए, पर वह यहाँ नहीं आएगा और

न दास-दासी ही आना स्वीकार करेंगे।"

एमेलिन ने सीधी-सादी तौर पर पूछा - "अच्छा, तुमने उस समय मुझे मार डालने की धमकी किस मतलब से दी थी?"

कासी ने बताया - "जिससे तुम्हें मूर्च्छा न आ जाए। यदि उस समय तुम्हें मूर्च्छा आ जाती, तो फिर वे सब तुम्हें पकड़ लेते।"

यह सुनकर एमेलिन काँप उठी। कुछ देर के बाद वे दोनों चुप हो गईं। फिर कासी एक पुस्तक पढ़ने लगी और पढ़ते-पढ़ते उसे नींद आ गई।

आधी रात के वक्त लेगी जब अपना दल-बल लिए निराश होकर घर लौटा, तो बड़ा शोरगुल होने लगा। शोर-गुल होने से कासी और एमेलिन की नींद टूट गई। एमेलिन जागते ही चीख उठी, लेकिन कासी ने उसे धीरज बँधाकर कहा - "कोई भय की बात नहीं है। वह दलदल में हम लोगों को खोजकर लौट आया है। वह देखो, लेगी के घोड़े के बदन पर कितना कीचड़ लगा हुआ है। लेगी के बदन पर भी कीचड़ लिपटा है। कुत्ते कैसे थके हुए जीभ लपलपा रहे हैं!"

एमेलिन ने कहा - "धीरे-धीरे बातें करो। चुप रहो, कोई सुन लेगा।"

किंतु कासी ने और जोर से बोलते हुए कहा - "ऐसा क्या डर पड़ा है? हम लोगों की बात कोई सुनेगा तो भूत के डर से और भी डरेगा।"

धीरे-धीरे अधिक रात बीत गई। लेगी बहुत थक गया था, अतः वह अपने भाग्य को कोसता हुआ सोने के कमरे में चला गया।

### 43. कसौटी

चलते-चलते हजारों मील की मंजिल तय हो जाती है और देखते-देखते अमावस्या की घोर निशा बीतकर प्रभात का सूर्य निकल आता है। काल का अबाध-अनंत प्रवाह पाप-पंक में डूबे दुराचारियों को धीरे-धीरे उस घोर अमा-निशा की ओर धकेल रहा है, परंतु साधुओं और महात्माओं को विपत्ति-वेदनाओं से हटाकर धीरे-धीरे सूर्य की शत-शत किरणों से प्रदीप्त दिवस की ओर ले जा रहा है।



पार्थिव पद और प्रभुत्व से शून्य टॉम के जीवन में कितने ही उलटफेर हुए। पहले वह स्त्री-पुरुषों सहित सुख से सानंद जीवन बिताता था, अकस्मात् दिन फिरे, और सुख की घड़ियों की जगह दुःख की घड़ियों ने उसे घेर लिया। स्त्री-पुत्रों से वियोग हो गया। उस समय उसे दासता की बेड़ियाँ बहुत अखरीं। समय ने फिर पलटा खाया और सहृदय हाथों में जा पड़ा। इसी लिए वह दासता की लोहे-जैसी कठिन बेड़ी कुसुम-जैसी कोमल हो गई। परंतु विधाता से उसका यह सुख भी अधिक दिनों तक नहीं देखा गया। देखते-देखते वह ऐसे हाथों में चला गया, जहाँ उसकी सांसारिक सुख-रूपी आशा-लताओं को जड़-मूल से उखाड़कर नष्ट कर डाला गया। उसके पश्चात् दुर्भेद्य गहरे अंधकार को भेदकर स्वर्गीय उज्ज्वल तारों की अपूर्व ज्योति उसके नेत्रों के सम्मुख चमकने लगी, उसके लिए स्वर्ग का द्वार उन्मुक्त हो गया।

कासी और एमेलिन के भाग जाने के बाद लेग्री की क्रोधाग्नि एकदम भभक उठी और बेचारा टॉम ही उस धधकती हुई क्रोधाग्नि का शिकार हुआ। लेग्री जब दोनों दासियों को पकड़ने के लिए सब गुलामों को बुला रहा था, उस समय टॉम की आँखों से खूशी टपक रही थी। टॉम ने हाथ उठाकर आकाश की ओर देखा। लेग्री ने उसका यह भाव देख लिया था। दूसरे इस बात से भी वह टॉम की नीयत जान गया कि सब गुलाम तो भगोड़ी दासियों को पकड़ने के लिए दौड़-धूप करने लगे, पर टॉम ने उसका साथ नहीं दिया। लेग्री ने एक बार टॉम को पकड़नेवालों के साथ जबर्दस्ती भेजने की सोची, लेकिन फिर उसके पहले आचरण का स्मरण करके उसने उसे भेजना व्यर्थ समझा, क्योंकि टॉम जिस बात को बुरा समझता है, उसे वह जीते-जी कभी न करेगा।

लेग्री के लाव-लशकर सहित एमेलिन और कासी को पकड़ने चले जाने पर खेत पर केवल टॉम तथा दो-एक वे लोग रह गए, जिन्होंने टॉम से प्रार्थना करना सीखा था। ये लोग मिलकर कासी और एमेलिन के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

बहुत खोज के बाद आधी रात के समय लेग्री जब निराश और परेशान होकर घर लौटा, तब टॉम पर उसकी क्रोधाग्नि एकदम भभक उठी। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि जब से उसने टॉम को खरीदा है तब से आज तक उसने उसकी आज्ञा का उल्लंघन-ही-उल्लंघन किया है। यह चिंता नरकाग्नि की तरह उसके हृदय को जलाने लगी। ज्योंहि वह अपने बिस्तर पर बैठा, अपने-आप से बोला - "मैं टॉम से नफरत करता हूँ। मुझे उससे जबर्दस्त नफरत है। क्या वह मेरी चीज नहीं है? क्या मैं उससे मनमाना व्यवहार नहीं कर सकता? अच्छा देखता हूँ, मुझे रोकनेवाला कौन है।" - ऐसा कहकर वह बार-बार जमीन पर पैर पटकने लगा। लेकिन उसने फिर सोचा कि टॉम को मैंने अधिक दामों पर खरीदा है, ऐसी कीमती चीज को यों नष्ट करना ठीक नहीं है। कल उससे कुछ कहना-सुनना मुनासिब नहीं होगा।

उसने निकट के खेतों से ढूँढ़ने वाले, शिकारी कुत्ते, बंदूकें और बहुत से गुलाम इकट्ठे किए। अब उसने निश्चय किया कि जितनी दलदली जमीन है, उसका चप्पा-चप्पा खोज डाला जाएगा। यदि कासी और एमेलिन मिल गईं, तब तो ठीक, नहीं तो टॉम के प्राण लेने का उसने पक्का

संकल्प किया। वह अंदर से उबलकर दाँत पीसने लगा। उसके पापासक्त मन ने इस भयंकर नर-हत्या के संकल्प का पूरी तरह समर्थन किया।

कानून गढ़नेवाले कहा करते कि मनुष्य अपना स्वार्थ सोचकर दास-दासियों के प्राण नहीं ले सकता, पर क्रुद्ध होने पर ये हत्यारे अपने-पराए तथा भले-बुरे का होश खो बैठते हैं। इनके हाथों में बेचारे गुलामों के प्राण सौंपकर उन लोगों ने निःसंदेह बड़ा पापपूर्ण काम किया था।

प्रातःकाल जब लेग्री अपने आदमी इकट्ठे कर रहा था, तब कासी उत्तर दिशावाले दालान के एक सूराख से उसकी सब कार्रवाई देख-सुन रही थी। पकड़नेवाले दल में दो तो पास के दूसरे दो खेतों के परिदर्शक थे और बाकी लेग्री के शराबी सहचर थे। सभी बड़े उत्साह से तैयार हो रहे थे और गिलासों में भर-भरकर शराब उड़ा रहे थे। उनकी सारी बातचीत सुनने की इच्छा से कासी घर की एक दीवार से कान लगाए चुपचाप खड़ी थी।

उनमें से एक परिदर्शक कह रहा था - "मेरा शिकारी कुत्ता भगोड़ों को पकड़ते ही नोच डालता है।" दूसरे ने कहा - "जैसे ही भगोड़ी दासियाँ मेरी नजर के सामने पड़ेंगी, मैं उन्हें तुरंत बंदूक का निशाना बनाकर भागने का मजा चखा दूँगा।"

उन दोनों राक्षसों की बातें सुनकर कासी बोल उठी - "हे भगवान! क्या इस संसार में सब पापी-ही-पापी बसते हैं? हमने ऐसा कौन-सा अपराध किया है, जो हम लोगों पर ये इतना अत्याचार करते हैं।" फिर एमेलिन की ओर मुँह करके बोली - "बेटी, तू अगर आज मेरे साथ न होती तो मैं अभी उन सबके पास जाकर कहती, 'लो, मुझे गोली से मारकर अपनी साध पूरी कर लो।' स्वाधीन होकर ही मेरा क्या हुआ जाता है? अब मुझे अपनी दोनों संतानों का मुँह देखने को मिलेगा? मैं फिर पहले-जैसा पवित्र जीवन प्राप्त कर सकूँगी?"

कासी के मुँह का भाव देखकर एमेलिन सहम गई और भय से कुछ भी न बोल सकी। उसने एक भयभीत बालक की भाँति कासी का हाथ पकड़ लिया।

कासी ने हाथ छुड़ाते हुए कहा - "मेरा हाथ छोड़ दे, मैं तुझे प्यार नहीं करना चाहती। अब संसार में किसी को भी प्यार करने की मुझे इच्छा नहीं होती।"

एमेलिन ने कहा - "दुखिया कासी माँ, इतना दुःख मत करो। यदि ईश्वर हमें स्वतंत्रता देता है तो शायद वह तुम्हें तुम्हारी बेटी से भी मिला देगा। यह न हो सका तो मैं तुम्हारी बेटी बनकर रहूँगी। अब अपनी दुखिया माँ को देखने की आशा मैंने भी छोड़ दी है। मैं अब तुम्हीं को अपनी माँ समझूँगी। कासी माँ, तुम मुझपर प्यार करो या न करो, मैं तुम्हें अवश्य प्यार करूँगी।"

कासी बोली - "ओह, अपनी दोनों संतानों के लिए मेरा हृदय कैसा हाहाकार कर रहा है। मेरी आँखें उन्हें देखने के लिए तरस रही हैं।" फिर उसने अपनी छाती पीटते हुए कहा - "हे भगवान!

मुझे अपनी संतानों से मिला दे। मैं तभी शांतिपूर्ण हृदय से प्रार्थना कर सकूँगी।"

एमेलिन ने कहा - "उस पर विश्वास करो - वह हमारा पिता है!"

कासी बोली - "हम लोगों पर भगवान का कोप बरस रहा है। वह हम लोगों पर नाराज हो रहा है।"

एमेलिन ने बताया - "नहीं कासी, वह अवश्य हम लोगों पर कृपा करेगा। हम लोगों को उसका भरोसा करना चाहिए।"

इन दोनों में जब ये बातें हो रही थीं, उस समय लेग्री अपने आदमियों सहित निराश और परेशान होकर घर लौट आया था। जब वह बहुत उदास मुँह बनाए घोड़े की पीठ से उतरा, उस समय कासी बड़ी प्रसन्नता से, सूराख के रास्ते, उसे देख रही थी। उतरते ही उसने कूँबो से कहा - "जल्दी जा और टॉम को यहाँ ला। इस मामले में जरूर उसका हाथ है। उसके काले चमड़े के अंदर से सारी बातें बाहर निकालनी होंगी।"

टॉम को पकड़कर लाने के उद्देश्य से सांबो और कूँबो, दोनों बड़ी प्रसन्नता से उछलते-कूदते हुए चले। आपस में इन दोनों की एक घड़ी नहीं बनती थी, लेकिन टॉम पर इन दोनों की ही शनि-दृष्टि थी, क्योंकि लेग्री ने टॉम को अपना मुख्य परिदर्शक बनाने का संकल्प लिया था।

सांबो और कूँबो ने टॉम से जाकर कहा - "चलो, साहब बुला रहे हैं।" और हाथ पकड़कर वे उसे ले जाने लगे। टॉम ने जान लिया कि कासी और एमेलिन के भागने का वृत्तांत पूछने के लिए ही लेग्री उसे बुला रहा है। टॉम सब बातें जानता था और वे इस समय कहाँ हैं, इसका भी उसे पता था, पर उसने मन-ही-मन ठान लिया था कि चाहे जान चली जाए, पर वह इस गुप्त भेद को प्रकट करके उन दोनों अनाथ औरतों को सर्वनाश के मुँह में नहीं जाने देगा। यह सोचकर, वह ईश्वर के चरणों में अपने को सौंपकर, मृत्यु के लिए कटिबद्ध हो गया। वह हाथ जोड़कर ईश्वर से प्रार्थना करने लगा - "ओ परम पिता, मैं आपके हाथों में अपने प्राणों का समर्पण करता हूँ, आज तक आपने ही मेरी रक्षा की है।"

उसे ले जाते हुए कूँबो कहने लगा - "अहा-हा! अब की बार बच्चू को छठी का दूध याद आ जाएगा, आज मालिक बेहद गुस्सा हो गए हैं। अब छिपने-छिपाने की गुंजाइश नहीं है, सारी बातें पेट से बाहर निकालनी पड़ेंगी। गुलामों को भागने में मदद देने से क्या मजा आता है, यह अबकी बार ही मालूम पड़ेगा। अबकी बार तेरी खोपड़ी दुरुस्त हो जाएगी।"

कूँबो की असभ्य और क्रूर बातें टॉम के कानों में नहीं पहुँचीं। जिस समय कूँबो यह सब बकवास कर रहा था, उस समय टॉम के कानों में अति मधुर कंठ के ये शब्द सुनाई दे रहे थे - "शारीरिक यातना देनेवालों से भय मत करो, क्योंकि इसके आगे उनका कोई बस नहीं है।"

इस उत्साहपूर्ण वाक्य को सुनने से टॉम को अपनी हड्डियों तक में नए बल का अनुभव हुआ। लगा, जैसे ईश्वर के स्पर्श-मात्र से उसके शरीर में नया रक्त और उत्साह दौड़ने लगा है। सैकड़ों आत्माओं का बल मानो उस अकेले की आत्मा में प्रवेश कर रहा है। आगे बढ़ते हुए वह ज्यों-ज्यों पेड़-पत्तों, लता-पादपों एवं दासों के झोपड़ों को पीछे छोड़ता जाता था, त्यों-त्यों उसे मालूम हो रहा था, मानो वह अपनी दुरावस्था को भी पीछे छोड़ता जा रहा है। उसकी आत्मा आनंद में नृत्य करने लगी। उसके पिता का घर निकट आ गया है, उसकी दासता की बेड़ियों के टूटने का समय आ पहुँचा है!

लेगी ने टॉम के कोट का कालर पकड़कर खींचते हुए बड़े क्रोध से कहा - "टॉम, तू जानता है कि मैंने तुझे मार डालने का संकल्प कर लिया है!"

टॉम ने धीरता से कहा - "यह आपके लिए बहुत सहज काम है सरकार!"

लेगी बोला - "टॉम, तू इन भगोड़ी दासियों के संबंध में जो कुछ जानता है, मेरे सामने कह दे, नहीं तो आज मैंने तेरी जान लेने की ठान ली है।"

टॉम इस प्रश्न पर चुप खड़ा रहा।

खूंखार शेर की तरह गरजते हुए तथा जमीन पर पैर मारते हुए लेगी बोला - "मैं जो पूछ रहा हूँ, उसका जवाब दे!"

टॉम ने दृढ़ता और धीरज से साफ शब्दों में कहा - "सरकार, मुझे कुछ नहीं कहना है।"

लेगी गालियाँ देते हुए बरसा - "पाजी, काले ईसाई, तू मुझसे यह कहने की हिम्मत कर सकता है कि तू उनके बारे में कुछ नहीं जानता?"

टॉम चुप खड़ा था।

लेगी उसे मारते हुए जोरों से गरजा - "जल्दी बोल! तू क्या जानता है?"

टॉम ने कहा - "सरकार, मैं जानता हूँ, पर बता नहीं सकता। मुझे मरना स्वीकार है।"

यह सुनकर लेगी कुछ देर गुस्से को थामकर बोला - "सुन बे टॉम! एक बार मैंने तुझे छोड़ दिया, इससे तू यह मत समझ कि अब की बार भी छोड़ दूँगा। इस बार मैंने ठान लिया है कि कुछ रुपयों का नुकसान हो जाए तो कोई परवा नहीं। मैं या तो तुझे अपने काबू में करूँगा, या तेरे शरीर से रक्त की एक-एक बूँद निकालकर तेरी जान ले लूँगा।"

टॉम ने एक बार उसकी आँखों में अपनी आँखें डालकर देखा और उत्तर दिया - "सरकार, अगर आप बीमार होते, किसी आफत में फँसे होते, या आपकी जान के लाले पड़े होते और मेरे

प्राण देने से आप बच सकते, तो मैं आपके लिए प्रसन्नता के साथ अपने प्राण न्यौछावर कर देता। अब भी अगर मेरी इस तृच्छ देह के रक्त से आपकी आत्मा का कल्याण हो सके तो मैं बड़ी खुशी से आपके लिए अपने शरीर का सारा खून बहाने के लिए तैयार हूँ; परंतु सरकार, इस नर-हत्या रूपी भयंकर पाप से अपनी आत्मा को कलंकित न कीजिए। इस काम में मेरी निस्बत आपकी ही अधिक बुराई होगी। मेरे प्राण आप खुशी से ले सकते हैं - इससे मेरे तो सारे ही दुःखों का खात्मा हो जाएगा, परंतु अपने पिछले पापों तथा इस नवीन नर-हत्या रूपी पाप के कारण आपका बहुत ही अमंगल होगा। सरकार, एक बार इस पर गौर करके देखिए।"

टॉम की यह बात सुनकर उस पाषाण-हृदय नर-पिशाच अंग्रेज के मन में भी पल भर के लिए डर पैदा हो गया। उसे ऐसा मालूम पड़ा जैसे स्वर्ग से उतरा कोई देवदूत उपदेश दे रहा हो।

लेगी चकित होकर टॉम का मुँह देखने लगा। उस समय वहाँ खड़े सब लोग एकदम सन्न थे। ऐसा सन्नाटा छाया हुआ था कि सुई भी गिरती तो सुनाई देती। यह लेगी के चरित्र को सुधारने का अंतिम सुयोग था।

पापी मनुष्य को अपकर्म्मों से दूर होने के लिए मंगलमय परमात्मा समय-समय पर, पल-पल पर, अवसर देते हैं; क्षण-क्षण पर पापी की आँखों के सामने ऐसी अवस्थाएँ आती हैं कि वह इस ईश्वर-प्रदत्त सुअवसर का सदुपयोग करके, सहज में आत्म-संयम करके, अपने जीवन की गति को बदल सकता है। लेगी, खूब सोच लो, तुम्हारे लिए यह अंतिम अवसर है।

परंतु सारे जीवन नर-हत्या करते-करते इन अर्थ-पिशाच स्वार्थी गोरों का हृदय पत्थर से भी ज्यादा सख्त हो गया था। अतः साधु-भाव क्षण भर से अधिक इस हृदय पर नहीं टिक सका। लेगी दो-चार पल ठहरा। एक बार मन में विचार आया कि क्या करूँ? इस चिंता ने मन को डाँवाडोल किया, किंतु अभ्यस्त पैशाचिक भाव के मन में आते ही, तत्काल लेगी का क्रोध भड़क उठा और वह गाय के चमड़े से बने चाबुक से टॉम को पीटने लगा।

उस दिन के भीषण लोमहर्षक कांड का वर्णन करने में लेखनी एकदम असमर्थ है। नृशंस प्रकृति का मनुष्य बिना हिचकिचाहट के जो भयंकर अत्याचार करता है, उसे सुनने में भी सहृदय मनुष्य कानों पर हाथ रख लेते हैं। सिर्फ हाथ ही नहीं रखते, कभी-कभी उन कठोर अत्याचारों की बात सुनकर उनके हृदय में बरछी-सी लग जाती है और उनकी मौत का कारण बन जाती है। इसी से दूसरों का कष्ट देखकर इवान्जेलिन के हृदय की ग्रंथि खुल गई और वह संसार को त्यागकर परमपिता की गोद में चली गई।

परम कारुणिक ईसा ने संसार के कल्याण के लिए बड़ी-से-बड़ी यातनाएँ, घोर-से-घोर संकट तथा दुस्सह अपमान सहे थे, इसी से वे मृत्यु के उपरांत देवता समझे गए। फिर उन्हीं ईसा का प्रचारित ईसाई-धर्म जिनकी एकमात्र पूँजी है, वे भला क्यों इस यातना को सहने में असमर्थ होने लगे? जिन राजाओं के भी राजा परमेश्वर ने 1900 वर्ष पूर्व ईसा की सूली के पास आकर कहा

था - "बेटा, कोई डर नहीं है! चले आओ! तुम्हारे लिए स्वर्ग-राज्य का द्वार खुला हुआ है।" - वही अनंत मंगलमय जगत-पिता आज, पार्थिव पद और प्रभुत्व से हीन दीन टॉम के पास खड़ा होकर उसे आश्वस्त कर रहा है और मधुर कंठ से कह रहा है - "कोई भय नहीं है, टॉम! तुम्हारी दुःख-निशा का अंत हो गया। स्वर्ग का द्वार तुम्हारे लिए मुक्त है। तुम राजमुकुट धारण करके स्वर्ग-राज्य में प्रवेश करो। तुम्हें उठा लेने के लिए मेरी भुजाएँ फैली हुई हैं।"

मार खाते-खाते जब टॉम बेदम हो गया और उसके प्राण निकलने की तैयारी होने लगी, तब भी उसे लुभाने के लिए लेगी ने कहा - "भागी हुई दासियाँ कहाँ हैं? अब भी बता दे, तो तुझे छोड़ सकता हूँ।"

परंतु जिसने परमपिता के हाथों में आत्म-समर्पण कर दिया है, उसे कौन लुभा सकता है। उसके मुख से 'हे पिता!' 'हे परमेश्वर!' के सिवा कोई आवाज नहीं निकली।

टॉम का धीरज देखकर क्रूर हत्यारे सांबो का हृदय भी क्षण भर के लिए पिघल गया। उसने लेगी से कहा - "सरकार, अब और मार की दरकार नहीं। इसकी जान तो यों ही निकल जाएगी।"

लेकिन पापिष्ठ लेगी ने फिर कहा - "अभी और मार! और मार! जब तक कोई बात नहीं बताएगा, तब तक मैं इसे नहीं छोड़ूँगा।"

इसी समय धरा पर क्षत-विक्षत पड़े हुए मुमूर्षु टॉम ने लेगी की ओर देखकर कहा - "ओ अभागो! तू मेरा और अधिक कुछ नहीं कर सकता। जा, मैं तेरे सारे अपराधों को क्षमा करता हूँ।" इतना कहते-कहते वह अचेत हो गया।

उसके शरीर को हिला-डुला कर देखते हुए लेगी ने कहा - "मालूम होता है, मर गया। अच्छा हुआ, अब इसका मुँह बंद हो गया।"

यह ठीक है लेगी, कि तूने उसका मुँह तो बंद कर दिया, पर उसकी आवाज तो तेरे अंतःकरण में सदा गूँजती रहेगी! उसे कौन बंद कर सकेगा?

फिर लेगी वहाँ से चला गया। लेकिन टॉम के प्राण अभी शरीर से नहीं निकले थे। मार के समय टॉम ने जो प्रार्थना की थी, उसे सुनकर सांबो और कूड़बो जैसे नर-पिशाचों का हृदय भी पिघलने लगा। लेगी के चले जाने पर वे दोनों तुरंत उसे उठाकर एक झोपड़ी के अंदर ले गए और टॉम को बचाने की चेष्टा करने लगे।

सांबो बोला - "हम लोगों ने बड़ा पाप-कर्म किया है। आशा है, इसके लिए मालिक ही को जवाब देना पड़ेगा, हम लोगों का कुछ न होगा।"

फिर वे दोनों टॉम के जख्मों को धोने लगे। घावों को धोकर उन्होंने उसे एक खाट पर लिटा

दिया। इसके बाद उनमें से एक लेगी के पास गया और अपने पीने का बहाना बनाकर थोड़ी-सी ब्रांडी ले आया और थोड़ी-थोड़ी करके टॉम के गले में डालने लगा।

कुछ देर में टॉम को होश आ गया। कूडंबो बोला - "टॉम भाई! हम लोगों ने तुम पर बड़े-बड़े अत्याचार किए हैं।"

टॉम ने कहा - "मैं हृदय से तुम लोगों को क्षमा करता हूँ।"

सांबो ने कहा - "टॉम, हमें एक बात बताओ कि ईसा कौन है? तुमने जिसे पुकारा था, वह कौन है?"

ईसा का मधुर नाम सुनकर टॉम के शरीर में बल आ गया। वह तेजी के साथ ईसा की दया की कथा कहने लगा। तब इन दोनों नराधमों का दिल भी पसीजा और वे काँपते हुए बोले - "आहा! ऐसा सुंदर नाम हमने पहले कभी नहीं सुना था। हे ईश्वर! हमपर दया कर!"

टॉम ने कहा - "ओ अभागों! तुम्हें धर्म-मार्ग पर ले जाने के लिए मैं सारे कष्ट उठा सकता हूँ।"

इतना कहकर उसने इन दोनों की आत्माओं के उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

टॉम की प्रार्थना पूरी हुई। सांबो और कूडंबो ने उसी समय कुपथ छोड़कर सुपथ पर चलने की दृढ़ प्रतिज्ञा की।

#### 44. टॉम की महायात्रा

इसके दो दिनों के बाद एक छोटी गाड़ी पर चढ़कर एक नौजवान लेगी के यहाँ आया और झटपट गाड़ी से उतरकर वहाँ के लोगों से बोला - "मैं इस घर के मालिक से मिलना चाहता हूँ।"

यह जार्ज शेल्वी था। पाठकों को स्मरण होगा कि टॉम के नीलाम में भेजे जाने के पहले, मिस अफिलिया ने शेल्वी साहब की मेम के पास टॉम को छुड़ाने के लिए एक पत्र भेजा था। पर विधि की विडंबना देखिए, डाकखाने की गलती से वह पत्र इधर-उधर मारा-मारा फिरा और दो महीने बाद श्रीमती शेल्वी को मिला। वह टॉम के भावी अमंगल की बात सोचकर बहुत घबड़ाई।

पर इस समय उसके हाथ में टॉम की सहायता का कोई उपाय न था। उसके पति रोग-शय्या पर पड़े थे, उन्हीं की सेवा श्रृंखला एवं काम-काज के झंझट में वह बेतरह फँसी हुई थी। कुछ दिनों बाद शेल्वी साहब इस दुनिया से कूच कर गए। इतने सारे काम का बोझ उसी के कंधों पर आ गया। उसके पति पर बहुत ऋण था, उसे चुकाने की उसे बड़ी चिंता हुई। पर उस सुशिक्षिता, सहृदया नारी का हृदय केवल स्त्री-सुलभ कोमलता, स्नेह, दया और धर्म का ही आगार न था, बल्कि काम-काज संभालने में भी उसने अपनी असाधारण बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। उसने कुछ हिस्सा खेत का और घर की बहुत-सी फालतू चीजें बेचकर बहुत शीघ्र ही अपने पति का सारा ऋण चुका दिया और सारे कामों का सिलसिला ठीक कर लिया। उसका तरुण पुत्र अपनी माता के सब कार्यों में हाथ बँटाने लगा।

जब सब ठीक-ठीक हो गया, तब माता और पुत्र दोनों मिलकर टॉम के उद्धार का उपाय सोचने लगे। जिस वकील ने सेंटक्लेयर के दास-दासी एवं घर का माल-असबाब बेचने का भार उठाया था, बुद्धिमती मिस अफिलिया ने अपने पुत्र में उसका नाम-पता लिख दिया था। इससे टॉम के पते के लिए पहले पत्र लिखा गया, पर वह वकील टॉम के वर्तमान खरीदार का ठिकाना नहीं जानता था।

इस संवाद से माता और पुत्र को बड़ी चिंता हुई। इसके छः महीने बाद माता के किसी काम से जार्ज शेल्वी को दक्षिण की ओर जाना पड़ा। इस अवसर पर उसने स्वयं नवअर्लिस में आकर टॉम की खोज करने का निश्चय किया। दो महीने तक तो कहीं कुछ पता न लगा, पर अकस्मात् एक दिन एक आदमी से भेंट हो गई। उससे मालूम हुआ कि लेग्री नाम का एक आदमी उसे खरीद ले गया है। यह संवाद पाकर वह तुरंत रेड नदी में खड़े हुए एक जहाज पर सवार हो लिया और आज यहाँ पहुँचा।

लेग्री से भेंट होते ही जार्ज शेल्वी ने कहा - "मूझे पता चला है कि नवअर्लिस से आपने टॉम नाम के एक दास को खरीदा है। वह पहले मेरे पिता के खेत में काम करता था। मैं उसे फिर खरीदने आया हूँ।"

उसकी बात सुनकर लेग्री का मुँह फीका पड़ गया। वह खीझकर बोला - "हाँ, मैंने इस नाम के एक आदमी को खरीदा है। बड़ा अच्छा सौदा निकला! ऐसा बेअदब, हठी और पाजी तो किसी ने कभी न देखा होगा। हमारे गुलामों को भड़काकर भगाता है, अभी दो दासियाँ उसकी सलाह से भाग गई हैं, जिनका दाम 800 रु या 1000 रु से कम न होगा। कहता है, उसने उन्हें भागने की सलाह दी थी। उसी की सलाह से वे भागी हैं, पर जब पता बताने को कहा गया तो उसने साफ इनकार कर दिया। इतनी मार खाने पर भी, जितनी और किसी गुलाम ने नहीं खाई होगी, उसने पता नहीं बताया। मालूम होता है, अब वह मरने बैठा। मैं नहीं कह सकता कि मरेगा या नहीं।"

ये बातें सुनकर जार्ज का चेहरा सुर्ख हो गया। उसकी आँखों से आग की चिनगारियाँ बरसने



लगीं। पर झगड़ा करने में कोई अक्लमंदी न समझकर उसने केवल इतना ही पूछा - "वह कहाँ है? मैं उसे देखना चाहता हूँ।"

बाहर जो गुलाम जार्ज का घोड़ा पकड़े हुए खड़ा था, वह बोल उठा - "टॉम इसी कुटिया में है।"

लेग्री ने उस गुलाम को एक लात जमाई, पर जार्ज ने वहाँ पल भर की भी देर न की और झट से कुटिया की ओर बढ़ा।

टॉम दो दिन से इस कुटिया में पड़ा था। शारीरिक कष्ट अनुभव करने की उसकी शक्ति चली गई थी। आत्मा जीवनमुक्त हो गई थी। पर शरीर पहले खूब हष्ट-पुष्ट था, इस कारण देह-पिंजर से आत्मा सहज में बाहर नहीं होने पाती थी। इसी से अब भी उसमें प्राण बाकी था। टॉम सदा लेग्री के भूखे दास-दासियों की सहायता किया करता था, कभी-कभी स्वयं भूखा रहकर अपना आहार उन्हें दे देता था। इससे टॉम की इस दशा के कारण सब बड़े दुःखी हो रहे थे। लेग्री के डर के मारे टॉम को देखने जाने की उनकी हिम्मत न होती थी, पर रात को वे छिपकर उसकी कुटिया में जाते और यथा-शक्ति उसकी सेवा-शुश्रूषा करते थे। अधिक इनसे और क्या होता, जब-तब दो बूँद जल उसके मुख में डाल देते थे।

कासी को टॉम की विपत्ति का सब हाल मालूम हो गया। उसके दुःख की बात जानकर उसका हृदय शोक से भर गया। टॉम ने उसके और एमेलिन के लिए ही यह अलौकिक त्याग स्वीकार किया था। यह सोचते-सोचते उसके हृदय में कृतज्ञता की लहरें उठने लगीं। वह सारी आफतों को तुच्छ समझकर पहली रात को टॉम को ही देखने के लिए उसकी कुटिया में पहुँची। टॉम अपने उस अंतिम समय में अस्फुट स्वर से कासी को स्नेहपूर्वक जो धर्मोपदेश करने लगा, उसे सुनकर उसके हृदयाकाश से निराशा का अंधकार सर्वथा दूर हो गया। वह शोकदग्ध वज्रसम कठोर हृदय पसीजकर नरम पड़ गया। वह रोती हुई प्रार्थना करती चली गई।

टॉम की कुटिया में प्रवेश करते ही उसकी दुर्दशा देखकर जार्ज को चक्कर आने लगा। उसके हृदय में गहरी चोट लगी। वह टॉम के बगल में घुटनों के बल बैठकर जोर से बोला - "क्या यह संभव है? क्या मनुष्य मनुष्य के साथ इतना अत्याचार कर सकता है? टॉम काका! मेरे दुःखी टॉम काका!"

मृत-प्राय टॉम के कानों में इस कंठ-स्वर से अमृत-सा बरस गया। वह संज्ञाशून्य-सा पड़ा था, पर यह स्वर सुनकर धीरे-धीरे उसने सिर हिलाया, होठों पर जरा हँसी आई। अस्फुट स्वर से बोला - "ईश-कृपा से क्या संभव नहीं है? मृत्युशय्या भी सुख से भर उठती है!"

जार्ज सिर झुकाए एकटक टॉम के मुँह की ओर देख रहा था। आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। शोक से रूंधे कंठ से कहने लगा - "प्यारे टॉम काका! उठो, एक बार बोलो! आँखें ऊपर उठाकर देखो। तुम्हारा मास्टर जार्ज आया है, तुम्हारा प्यारा मास्टर जार्ज आया है। क्या

तुम मुझे नहीं पहचानते हो?"

टॉम ने आँख खोलकर क्षीण कंठ से कहा - "मास्टर जार्ज! मास्टर जार्ज!" ... वह चौकन्ना होकर इधर-उधर देखने लगा। फिर बोला - "मास्टर जार्ज!" ... मानो धीरे-धीरे अंत में यह बात उसकी समझ में आई। उसकी शून्य आँखें क्रमशः चमकने लगीं, उसका मुख प्रफुल्लित हो गया। नेत्रों से अश्रु-धारा बह निकली। वह हाथ जोड़कर क्षीण स्वर में कहने लगा - "धन्य भगवान! अंत में मेरी इच्छा पूर्ण कर दी। वे मुझे भूले नहीं। इससे मेरी आत्मा को संतोष मिल गया। धन्य भगवान! धन्य भगवान! अब मैं सुख से मरूँगा।"

जार्ज ने कहा - "तुम्हें मरना नहीं होगा। तुम नहीं मरोगे। इस बात का विचार भी मन में मत लाओ। मैं तुम्हें खरीदकर घर ले चलने के लिए आया हूँ।"

टॉम ने कहा - "ओह, मास्टर जार्ज, तुम बड़ी देर से आए। अब समय नहीं रहा। मैं तो ईश्वर के हाथ बिक चुका हूँ। वह मुझे अपने साथ अमृत-धाम को ले जाएगा। वहाँ जाने को जी चाह रहा है। कैंटाकी से स्वर्ग कहीं अच्छा है।"

जार्ज बोला - "टॉम काका, ऐसा मत कहो। तुम्हारी बातें सुनकर मेरी छाती फटी जाती है। हाय, तुम्हें कितना सताया गया है! कैसे मैले में डाल रखा है हाय, तुम्हारी दशा देखकर मेरे प्राण मुँह को आ रहे हैं! ओफ!"

टॉम ने मुस्कराते हुए कहा - "मुझे दुःखी मत कहो। मैं दुःखी था, पर अब वे सब बातें गई-गुजरी हो गईं। मैं पिता की गोद में जा रहा हूँ। जार्ज, यह देखो स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है। धन्य ईसा! धन्य परमेश्वर!"

जार्ज टॉम के इन सच्चाई से भरे, विश्वास-पूर्ण तेजोमय वाक्य सुनकर स्तंभित रह गया। वह अवाक् होकर उसके मुख की ओर देखने लगा।

टॉम ने जार्ज का हाथ पकड़कर कहा - "तुम रोओ मत! छोड़ से मेरी इस दशा का हाल कहना। ओफ! उसे कितना दुःख होगा। लेकिन तुम उससे कहना कि मेरी मृत्यु शांति से हुई है। मेरे लिए कोई दुःख न करे। उससे यह भी कह देना कि भगवान सर्वत्र मेरे साथ थे। उन्होंने सदा मुझे दुःखों पर विजय दी है। मुझे बच्चों के लिए सदा दुःख होता था। उन्हें मेरे मार्ग पर चलने को कहना। अपने माता-पिता और घर के हर आदमी को मेरा प्रेम कहना। मेरे दिल में हर जीवधारी के लिए प्रेम है। मैं जहाँ गया, वहाँ प्रेम के अलावा और कुछ नहीं किया। ओह, मास्टर जार्ज, प्रेम भी क्या ही अनोखी चीज है! वाह, धर्म के रास्ते पर चलने में कितना आनंद है!"

इसी समय लेग्री वहाँ कुटिया के द्वार तक आया और एक बार अंदर की ओर देखकर घृणा प्रकट करते हुए लौट गया।

जार्ज उसे देखकर क्रोध से बोला - "शैतान कहीं का! ईश्वर एक दिन इसे अपने किए का फल देगा।"

टॉम ने कहा - "जार्ज, ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। वह बड़ा अभाग जीव है। उसकी बातें सोच-सोचकर दुःख होता है। अब भी अगर वह पश्चाताप करे तो ईश्वर इसे क्षमा करेंगे। पर यह कभी पश्चाताप नहीं करेगा।"

जार्ज बोला - "उसका पश्चाताप न करना ही अच्छा है। उसे स्वर्ग न मिले, यही मैं चाहता हूँ।"

टॉम ने बड़े दुःख से कहा - "जार्ज, ऐसी बातें मत कहो। मुझे हैरानी होती है। मन में ऐसा भाव मत रखो। उसने मेरा कोई बिगाड़ नहीं किया। मेरे लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार खोल दिया।"

जार्ज को देखकर टॉम आनंद से उत्तेजित हो गया था। उसी उत्तेजना से उसका शरीर और भी सूस्त पड़ गया। आँखें बंद हो गईं। साँस जल्दी-जल्दी चलने लगी और उसकी आत्मा संसार से विदा हो गई। मृत्यु के समय उसके मुँह से ये शब्द निकल रहे थे - "ईसा के प्रेम से हम लोगों को कौन वंचित करेगा!"

जार्ज स्तब्ध होकर एकटक उसके मुख की ओर देख रहा था। उसे जान पड़ने लगा कि टॉम का यह मृत्यु-गृह पवित्र स्थल है। उसने घूमकर देखा तो लेग्री को अपने पीछे खड़ा पाया।

टॉम का अंतिम वाक्य सुनकर जार्ज का उत्तेजित भाव कुछ मंद पड़ गया था, नहीं तो आज वह लेग्री की अवश्य खबर लेता। पर लेग्री का मुँह देखकर उसके हृदय में घृणा उत्पन्न हो गई। जार्ज तुरंत वहाँ से उठ जाने को तैयार हुआ और उससे बोला - "तुमसे जो बन सका तुमने कर लिया, अब मैं इस मृत शरीर को साथ ले जाना चाहता हूँ। बोलो, इसकी मृत देह के लिए तुम्हें क्या देना है? मैं अच्छी तरह से इसका क्रिया-कर्म करूँगा।"

लेग्री बोला - "मैं मूर्दे हब्शी नहीं बेचता। जहाँ और जब तुम्हारा जी चाहे, इसे ले जाकर दफन करो।"

वहाँ दो-तीन दास खड़े हुए लाश की ओर देख रहे थे। जार्ज ने उनसे कहा - "तुम लोग मेरे साथ आकर इस लाश को गाड़ी में रखवा दो और मुझे एक कुदाल लाकर दो।"

लेग्री की आज्ञा की कोई अपेक्षा न करके उनमें से एक कुदाल लाने के लिए दौड़ा, और दो ने उस लाश को गाड़ी पर रखवा दिया। लेग्री भी गाड़ी के पास जाकर देखने लगा।

जार्ज ने अपना लबादा खोलकर गाड़ी में बिछाया और उस पर टॉम की मृत देह को लिटा

दिया। उसके बाद गाड़ी हाँकते समय लेग्री से कहा - "तुमने जो नर-हत्या की है, इसकी सजा पाओगे। यह मत समझना कि मैं तुम्हें यों ही छोड़ दूँगा। मैं मजिस्ट्रेट के सामने जाकर अभी बयान दूँगा।"

यह सुनकर लेग्री ने ताने से हँसकर कहा - "जाओ, जहाँ तुम्हारा जी चाहे, बयान दो। ओफ, मुझे तो अब डर के मारे नींद ही नहीं आएगी! पर अंग्रेज गवाह तुम कहाँ से पाओगे। ऐसे मुकदमे मैं गुलामों की गवाही नहीं मानी जाती।"

जार्ज ने मन-ही-मन सोचा - "यह ठीक कहता है। देश के कानून के अनुसार गोरों के विरुद्ध कालों की गवाही नहीं मानी जाती।" यह सोचकर जार्ज को बड़ा कष्ट हुआ।

लेग्री आप-ही-आप कहने लगा - "मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता कि एक मुर्द हबशी के लिए एक पढ़ा-लिखा अंग्रेज इतना बखेड़ा क्यों करता है? कितने ही कुली पुरुष और स्त्रियाँ यों ही मारे जाते हैं। यह मुकदमा चलाने चला है! कोई समझदार अंग्रेज-विचारक तो ऐसे तुच्छ विषय को सुनेगा ही नहीं। कौन भारी अपराध किया है, बस एक कुली ही न मारा है!"

आग लगने से जैसे बारूद का गोदाम भभक उठता है, वैसे ही लेग्री की यह बात सुनकर जार्ज का क्रोध भभक उठा। जार्ज वकीलों की तरह कानून के पन्ने उलटकर कर्तव्य निश्चय नहीं किया करता था। उसमें बड़ा तेज और बल था। उसने कानून नहीं पढ़ा था कि मनुष्यता से विहीन हो जाए। वह तुरंत गाड़ी से कूदकर लेग्री के मुँह पर जोर-जोर से घूँसे जमाने लगा। लेग्री की नाक से खून की नदी बह निकली। कायर लेग्री अधिक न सह सका और मुर्द की भाँति जमीन पर गिर पड़ा। जार्ज ने अकेले होते हुए भी वह वीरता दिखाकर प्रातः स्मरणीय जार्ज वाशिंगटन का नाम सार्थक कर दिया।

संसार में कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं कि लात खाने पर ही सीधे रहते हैं, ठीक से व्यवहार करना सीखते हैं। लेग्री उन्हीं व्यक्तियों में से था। अब उसने भलमनसी अखितयार की, धूल झाड़कर उठ बैठा और जब तक जार्ज का गाड़ी आँखों से ओझल न हो गई, तब तक अपना मुँह नहीं खोला।

लेग्री के खेत से हटकर एक वृक्ष-लता से आच्छादित सुंदर स्थान में जार्ज ने कुलियों को कब्र खोदने की आज्ञा दी। कब्र तैयार हो जाने पर कुलियों ने जार्ज के पास आकर कहा - "हजूर, यह लबादा खोल लिया जाए?" जार्ज ने कहा - "नहीं-नहीं, इसी के साथ इसे दफना दो!" फिर टॉम की मृत देह को संबोधित करके कहने लगा - "हाय टॉम काका, मेरे पास इस समय और कोई अच्छा कपड़ा नहीं है, जिसे तुम्हारे साथ दूँ। यही मेरी श्रद्धा का अंतिम चिह्न है।"

टॉम को मिट्टी दे दी गई और कब्र पर फूल बिछा दिए गए। तब जार्ज ने कुलियों को कुछ पैसे देकर कहा - "अब तुम लोग जा सकते हो।" वे जार्ज से कहने लगे - "हजूर, हम लोगों को खरीद लीजिए। हम दिन-रात जी-जान से आपका काम करेंगे। यहाँ हम लोगों को बड़ी तकलीफ

है।"

जार्ज ने कहा - "मैं यहाँ किसी को नहीं खरीद सकता। यह असंभव है। तुम लोग लौट जाओ।"

वे निराश होकर धीरे-धीरे चलते बने।

जार्ज टॉम की समाधि पर घुटनों के बल बैठकर आँखें और हाथ ऊपर करके कहने लगा - "हे अनंतस्वरूप परमात्मन्! मैं आपके सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि देश से इस घृणित दास-प्रथा को दूर करने के लिए, मैंने आज से अपने तन-मन को समर्पित कर दिया है। आप मेरे इस सत्संकल्प में सदा सहायक हों!"

टॉम के समाधि-स्थल पर कोई स्मृति-चिह्न नहीं बना, पर उसका जीवन ही उसका एकमात्र उज्ज्वल स्मृति-चिह्न था।

टॉम के लिए दुःखित होने का कोई कारण नहीं है। ऐसे जीवन और मृत्यु पर तरस खाने की कोई आवश्यकता नहीं है। टॉम दया का पात्र या दुःखी व्यक्ति नहीं था। वह जिस धन का धनी था, वह धन बड़े-बड़े महाराजाओं के भंडार में भी नहीं मिलता।

टॉम के हृदय की सत्यप्रियता, न्यायपरता, धर्म-जिज्ञासा, प्रेम, भक्ति और उसका सतत-विश्वास क्या संसार के और सारे धनों से अधिक मूल्यवान न था!

## 45. का अंत

कासी और एमेलिन के भाग जाने के बाद लेगी के दास-दासियों में भूतों की चर्चा ने बड़ा जोर पकड़ा। हर घड़ी उन्हीं की चर्चा होने लगी।

रात को बंद किए हुए दरवाजे खुले मिलते, रात को किसी के दरवाजा खटखटाने की-सी आवाज आती, इससे सबने यही नतीजा निकाला कि यह सारी कार्रवाई भूतों के सिवा और किसी की नहीं है। दासों में से कोई-कोई कहता - "भूतों के पास सब दरवाजों की तालियाँ जरूर हैं। बिना ताली के वे दरवाजा कैसे खोल सकते हैं? दूसरे उसका खंडन करते - "यह कोई बात नहीं, भूत बिना ताली के भी दरवाजे खोल सकते हैं।"

भूत की सूरत-शकल के बारे में भी बड़ा मतभेद होने लगा। किसी ने कहा - "भूतों के सिर नहीं होते। उसके दोनों कंधों पर दो आँखें होती हैं।" पर दूसरे ने उसकी बात काटकर कहा - "मैं तो खुद अपनी आँखों से दो-तीन भूत देख चुका हूँ। कोई भी भूत बिना सिर का नहीं होता।" तीसरे ने कहा - "हाँ-हाँ सिर तो होता है। यह तो मैं भी मानता हूँ, लेकिन वह पीठ की ओर फिरा हुआ होता है। मैंने जितने भूत देखे हैं उनमें एक का भी सिर छाती की तरफ नहीं था।" इस पर चौथा दास बोला - "मालूम होता है, तुम सब लोगों ने जितने भूत देखे हैं, सबके सब विलायती थी, देशी उनमें एक भी नहीं था।"

दास-दासियों में भूत के रूप-रंग के विषय में यों ही तर्क-वितर्क होते रहे, पर कोई बात तय नहीं हुई। मतभेद ज्यों-का-त्यों बना रहा।

दास-दासियों की ये भूत-संबंधी चर्चाएँ लेगी के कानों तक भी पहुँचने लगीं। उसने हजार यत्न किए, पर इन चर्चाओं का अंत न हुआ। दिन-पर-दिन भूत-चर्चा का बाजार गर्म होता गया। उत्तर के कमरे में बहूधा रात को किसी के पैरों की आहट सुनाई देती थी। इससे उठते ही सवेरे उसकी बात छिड़ जाती थी। रोज-रोज भूतों की कथाएँ सुनते-सुनते गँवार, धर्मज्ञानहीन लेगी के मन में बुरी तरह डर समा गया। इन भयंकर स्मृतियों को मन से दूर रखने के लिए वह पहले से दूनी-चौगुनी शराब पीने लगा।

जिस दिन सवेरे टॉम की मृत्यु हुई, उस दिन वह पास के एक दूसरे खेत में गया था। वहाँ से घर लौटने में अधिक रात हो गई। घर पहुँचते ही वह सोने के कमरे में गया और सारी किवाड़ें बंद करने लगा। उत्तर की ओर का दरवाजा बंद करके किवाड़ों के पीछे उसने एक कुर्सी रख दी। अपने सिरहाने एक भरी हुई पिस्तौल रखी। डटकर शराब चढ़ाई। फिर लेट गया। कुछ देर बाद उसे नींद आ गई। नींद में पहले की भाँति उसे अपनी माता की मूर्ति दिखाई दी। अनंतर चिल्लाहट सुनाई दी। इससे उसकी आँख खुल गई और उसे साफ-साफ आदमी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी। दरवाजे पर नजर पड़ते ही उसने देखा कि दरवाजा चौपट पड़ा है, घर की रोशनी बूझ गई है, अंधेरे में किसी ने उसके बदन पर ठंडे हाथ लगाए, जिससे वह खाट से उछलकर दूर जा खड़ा हुआ। इतने में श्वेत-वस्त्रधारी मूर्ति अंतर्धान हो गई। लेगी ने दरवाजे के पास जाकर देखा तो दरवाजे को बाहर की ओर से बंद पाया। देखते ही देखते बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। सवेरे जागने पर देखा गया कि खाट की जगह वह जमीन पर पड़ा है।

इसके दूसरे दिन से लेगी ने शराब की मात्रा और बढ़ा दी। उसने मन-ही-मन दो-तीन रात शराब पीकर एकदम बेहोशी ही हालत में बिताने का निश्चय किया, जिससे कोई भी दुश्चिंता उसके पास न फटकने पाए, पर दो-तीन दिन इस प्रकार खूब शराब पीने के कारण उसे भयानक ज्वर आया और वह पागल-जैसा हो गया। पहले किए अपने बुरे कामों तथा निष्ठुर आचरणों की बातें बकने लगा। वे सब लोमहर्षक बातें आदमी के दिल को कँपा देनेवाली थीं। इससे उस दशा में कोई उसके पास खड़ा नहीं होता था। दिन-रात वह अकेला बेसुध पड़ा रहता। तीन दिन के बाद उसके मुँह से खून गिरने लगा। और उसी के कुछ क्षणों बाद वह पापात्मा, नराधम अंग्रेज

अपने चिर-कलंकित जीवन से मुक्त हो गया।

उसकी लाश का उसके गुलामों ने रेड नदी में बहा दिया और उसके पास जो माल-टाल था, उसे लेकर उत्तर की ओर निकल भागे।

जिस रात को लेग्री मूर्च्छित हुआ था, उस रात को तीन-चार गुलामों ने देखा कि दो स्त्रियाँ सफेद चादर से अपना बदन ढके हुए घर से निकलकर बाहर चली गईं। उसके दूसरे ही दिन सवेरे बाहरी मकान का दरवाजा भी खुला हुआ पाया गया। इससे लेग्री के दिल में और भी डर समा गया था।

सूर्योदय के कुछ ही पहले कासी और एमेलिन नगर के निकट पेड़ों के नीचे बैठकर विश्राम कर रही थीं। वृक्षों की ओट में बैठकर कासी ने स्पेन देश की क्लीन स्त्रियों के वस्त्र धारण किए और एमेलिन ने उसकी परिचारिका का-सा वेश बना लिया। कासी भले घर में जन्मी थी और सभ्य जनों की-सी उसने शिक्षा पाई थी। इससे उसे देखकर कोई भगोड़ी दासी नहीं समझ सकता था। उसने नगर में जाकर एक संदूक मोल लिया। उसमें सब कपड़े रखे और उसे एक क्ली के सिर पर उठाकर निकट के एक होटल में जाकर रहने लगी।

उस होटल में पहुँचते ही पहले जार्ज शेल्वी से उसकी भेंट हुई। जार्ज शेल्वी भी यहाँ जहाज के लिए ठहरा था। कासी ने अपने गुप्त स्थान से जार्ज शेल्वी को टॉम की लाश ले जाते देखा था। जब उसने लेग्री को पीटा था, तब भी वह उसे देख रही थी। इससे जार्ज का चेहरा उससे सर्वथा अपरिचित न था, विशेषकर जार्ज के चले जाने के बाद कासी ने दूसरे दास-दासियों की बातचीत से पता लगा लिया था कि वह टॉम के पूर्व मालिक का पुत्र है। अतः उसने आग्रहपूर्वक जार्ज से घनिष्ठता बढ़ाने का यत्न किया।

कासी के क्लीन स्त्रियों के-से वस्त्र एवं आचार-व्यवहार के कारण किसी को उस पर संदेह न हुआ, खासकर होटल में जो खाने-पीने आदि की चीजों का दाम देने में कंजूसी नहीं करता, उससे सब संतुष्ट रहते हैं। कासी इन बातों को खूब जानती थी। इसी से वह लेग्री के संदूक से अच्छी रकम ले आई थी।

संध्या होते-होते जहाज आ गया। जार्ज शेल्वी ने बड़े शिष्टाचार से कासी का हाथ पकड़कर उसे नाव पर चढ़ाया और स्वयं विशेष कष्ट सहकर जहाज के बीच का एक अच्छा कमरा उसके लिए किराए पर ले दिया। जहाज जब तक रेड नदी में था, तब तक कासी कमरे से बाहर न निकली। शारीरिक अस्वस्थता का बहाना बनाकर कमरे में ही सोती रही, पर जब जहाज मिसिसिपी नदी के मुहाने पर पहुँचा तो कासी आई। जार्ज ने फिर इस नदीवाले जहाज में भी उसके लिए एक कमरा किराए पर ले दिया। इस जहाज में आते ही कासी की शारीरिक अस्वस्थता दूर हो गई और जहाज में वह इधर-उधर टहलने लगी।

जहाज के अन्य यात्री उसके वस्त्र और सौंदर्य देखकर आपस में कहने लगे - "जवानी में यह स्त्री बड़ी सुंदर रही होगी।"

जार्ज ने जब से कासी को देखा, उसके मन में यह विचार उठ रहा था कि उसने ऐसा ही सुंदर चेहरा और कहीं देखा है। इससे वह बड़े ध्यान से कासी के मुख की ओर देखता था। खाते-पीते, बातें करते, बराबर जार्ज की आँखें उसके मुँह पर लगी रहती थीं।

यह देखकर कासी के मन में उद्विग्नता उत्पन्न हो गई। वह सोचने लगी कि वह आदमी निश्चय ही मुझपर संदेह करता है। पर जार्ज की दया पर भरोसा करके उसने आदि से अंत तक अपना सारा वृत्तांत उसे कह सुनाया।

सुनकर जार्ज को बड़ा दुःख हुआ। उसने उससे सहानुभूति दिखाई और ढाढ़स बँधाया। लेग्री के दास-दासियों का कष्ट वह अपनी आँखों से देख आया था। इससे वहाँ से भागी हुई स्त्रियों पर सहज ही उसके मन में दया हो आई थी। उसने कासी को विश्वास दिलाया कि तुम डरो नहीं। मैं जी-जान से तुम्हारी रक्षा करूँगा।

कासी के कमरे से सटे हुए कमरे में मैडम डिथो नाम की एक फ्रेंच भद्र महिला सफर कर रही थी। जब उस फ्रेंच महिला को जार्ज की बातचीत से पता चला कि वह कैंटाकी का आदमी है, तो वह उसके साथ बातचीत करने के लिए विशेष उत्सुक हुई। शीघ्र ही उसने जार्ज से परिचय कर लिया। उसके बाद जार्ज प्रायः उसी के कमरे के द्वार पर कुर्सी डालकर उससे बातें किया करता। कासी अपनी जगह से उसकी सारी बातें सुनती रहती।

एक दिन मैडम डिथो ने बातें-ही-बातों में जार्ज से कहा - "पहले मैं भी कैंटाकी में ही थी।" और उसने कैंटाकी प्रदेश के जिस गाँव का नाम लिया, जार्ज शेल्वी का घर भी वहीं था। जार्ज को उसकी बातों से बड़ा आश्चर्य हुआ।

इसके बाद एक दिन मैडम डिथो ने जार्ज से पूछा - "अपने गाँव में तुम हेरिस नाम के आदमी को जानते हो?"

"हाँ, इस नाम का एक बूढ़ा आदमी हमारे गाँव में है।" जार्ज ने उत्तर दिया - "उसके बहुत से दास-दासी हैं न?"

"उसके एक जार्ज नाम के वर्णसंकर दास को आप जानते हैं? शायद आपने उसका नाम सुना होगा" मैडम डिथो ने पूछा।

जार्ज बोला - "क्या? उसका तो मेरी माता की एक दासी से विवाह हुआ था। पर अब तो वह कनाडा भाग गया है।"



मैडम डिथो ने कहा - "अच्छा कनाडा भाग गया है? ईश्वर का धन्यवाद है!"

जार्ज मैडम डिथो की बात सुनकर बड़ा चकित हुआ, पर उससे आगे कुछ नहीं पूछा। मैथम डिथो दोनों हाथों से मुँह ढककर आनंद से अश्रु बहाने लगी। फिर कुछ संभलकर बोली - "जार्ज मेरा भाई।"

जार्ज ने बहुत विस्मित होकर कहा - "ओह, ऐसा!"

मैडम डिथो ने गर्व से सिर उठाकर कहा - "हाँ मिस्टर शेल्वी जार्ज, जार्ज हेरिस मेरा भाई है।"

"मुझे आपकी बात सुनकर बड़ा अचंभा हुआ।"

"मिस्टर शेल्वी, जिस समय जार्ज बहुत छोटा था। उसी समय हेरिस ने मुझे दक्षिण के एक दास-व्यवसायी के हाथ बेच डाला था। उस दास-व्यवसायी से मुझे एक सहृदय फ्रांसीसी ने खरीद लिया और गुलामी की बेड़ी से मुक्त करके शास्त्र के अनुसार मुझसे विवाह कर लिया। कुछ दिन हुए मेरे स्वामी की मृत्यु हो गई। अब मैं अपने उस छोटे भाई जार्ज को खरीदकर दासता से मुक्ति देने की इच्छा से कैंटाकी जा रही हूँ।"

जार्ज बोला - "जार्ज हेरिस मुझसे कई बार कहा करता था कि मेरी एमिली नाम की एक बहन को हेरिस ने दक्षिण में बेच डाला है।"

मैडम डिथो ने कहा - "मेरा ही नाम एमिली है।"

"आपका भाई बड़ा बुद्धिमान और चरित्रवान युवक है, पर गुलाम होने के कारण कोई उसके गुणों का आदर नहीं करता। हमारे यहाँ की दासी से उसका विवाह हुआ था। इसी से मैं उसे अच्छी तरह से जानता हूँ।" जार्ज ने कहा।

"उसकी स्त्री कैसी है?"

"वह भी एक रत्न है। परम सुंदरी और बुद्धिमती है, मधुर बोलने वाली, सुशील और धर्मपरायण है। मेरी माता ने अपनी कन्या की तरह बड़े यत्न से उसका लालन-पालन किया था। वह लिखने-पढ़ने, सीने-पिरोने तथा घर के सभी कामों में बड़ी निपुण है।"

"क्या वह आप ही के घर जन्मी थी?"

"नहीं, मेरे पिता उसे नवअर्लिस से मेरी माता को उपहार में देने के लिए खरीद लाए थे। उस समय वह आठ-नौ बरस की थी। उन्होंने उसे कितने में खरीदा था, यह बात माता के सामने कभी प्रकट नहीं की, पर थोड़े दिन हुए उनके कागज-पत्रों से हम लोगों को मालूम हुआ कि उसके

लिए उन्होंने बहुत अधिक मूल्य दिया था। ऐसा लगता है, उसके अपूर्व सौंदर्य के लिए ही इतने ज्यादा दाम दिए गए थे।"

कासी जार्ज के पीछे बैठी थी। उसके इन बातों को बड़े ध्यान से सुनने का पता जार्ज को नहीं था। पर जार्ज की बात समाप्त होते ही कासी ने उसकी बाँह पर हाथ रखकर कहा - "मिस्टर शेल्वी, क्या आप बता सकते हैं कि आपके पिता ने उसे किससे खरीदा था?"

जार्ज ने कहा - "याद पड़ता है कि सिमंस नाम के किसी आदमी से उन्होंने खरीदा था।"

"हे भगवान!" यह कहकर कासी तुरंत मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

कासी की इस आकस्मिक मूर्च्छा का कारण मैडम डिथो और जार्ज की समझ में नहीं आया। वे मिलकर उसे होश में लाने का उपाय करने लगे। होश में आने पर कासी बालिका की भाँति जोर-जोर से रोने लगी।

माँ कहलानेवाली महिलाएँ पूरी तरह से कासी के मनोभाव को समझ सकेंगी। कासी यह मानकर कि वह अब अपनी कन्या से नहीं मिल पाएगी, निराश हो गई थी, पर ईश्वर की कृपा से फिर मन में उसे देख पाने की आशा बँध गई और इसी से वह हृदय के उमड़े वेग को संभाल न सकने के कारण बच्चे की तरह रोने लगी।

#### 46. टॉम काका के बलिदान का सुफल

जार्ज शेल्वी ने अपने घर लौटने के कुछ ही दिन पहले अपनी माता को जो पत्र लिखा था, उसमें केवल अपने घर पहुँचने की तारीख के सिवा और किसी बात की चर्चा नहीं की थी। टॉम की मृत्यु का समाचार देने की उसकी हिम्मत न पड़ी। कई बार उसने लेखनी उठाई कि टॉम की मृत्यु के समय की घटनाएँ विस्तार से लिखे, पर कलम उठाते ही उसका हृदय शोक से भर जाता था। दोनों आँखों में आँसू बहने लगते थे। वह तुरंत कागज को फाड़कर फेंक देता था और कलम एक ओर को रखकर आँसू पोंछते हुए अलग जाकर हृदय को शांत करने की चेष्टा करता था।

जिस दिन जार्ज ने घर पहुँचने को लिखा था, उस दिन घर के लोग बड़ी प्रसन्नता से उसके आने की बात जोह रहे थे। सबको आशा थी कि आज वह टॉम काका को साथ लेकर लौटेगा।

तीसरे पहर का समय था। मिसेज शेल्वी कमरे में बैठी हुई थीं। क्लोई पास खड़ी भोजन की

मेज पर काँटा-चम्मच सजा रही थी। क्लोई आज बड़ी प्रसन्न थी। पाँच बरस बाद स्वामी के दर्शन होंगे। आज क्लोई एक-एक चीज को पाँच-पाँच बार सजाती थी। मिसेज शेल्वी से वह इस विषय पर बातें करना चाहती थी। मेज के किस तरफ किस कुर्सी पर जार्ज बैठेगा, इत्यादि विषयों पर मालकिन से तरह-तरह की बातें हो रही थीं। अंत में क्लोई बोली - "मेम साहब, मिस्टर जार्ज की चिट्ठी आई है?"

मेम ने कहा - "हाँ आई तो है, लेकिन एक ही लाइन की है। बस आज पहुँचने की बात लिखी है।"

क्लोई बोली - "मेरे बूढ़े की कोई बात नहीं लिखी?"

"नहीं, क्लोई!"

क्लोई ने उदास होकर कहा - "मिस्टर जार्ज की तो यह पुरानी आदत है। उन्हें ज्यादा लिखना पसंद नहीं। सब बातें सामने ही कहना उन्हें अच्छा लगता है।"

क्लोई थोड़ी देर को अपने में खो गई। फिर बोली - "मेरा बूढ़ा घर आकर लड़कों को नहीं पहचान सकेगा। लड़की को भी मुश्किल से पहचानेगा। उसको ले गए तब तो यह बहुत छोटी थी। अब कितनी बड़ी हो गई। पोली जैसी भोली है वैसी ही चालाक भी है। मैं भोजन बनाकर इधर-उधर चली जाती हूँ तो वह बैठी भोजन की रखवाली किया करती है। आज मैंने ठीक वैसा ही भोजन बनाया है, जैसा बूढ़े को ले जानेवाले दिन बनाया था। हे परमेश्वर! उस दिन मेरा जी कैसा करने लगा था।"

मिसेज शेल्वी ने क्लोई की बातें सुनकर ठंडी साँस ली। उसे अपने हृदय पर बड़ा बोझ-सा जान पड़ा। उसका मन उचट गया। जब से उसे अपने पुत्र का पत्र मिला था, उसी दिन से उसके मन से तरह-तरह की शंकाएँ उठ रही थीं। वह सोचती थी कि जार्ज के पत्र में टॉम की बात न लिखने का कोई-न-कोई विशेष कारण होगा।

क्लोई ने कहा - "मेम साहब, मेरे भाड़े के रुपयों के बिल मँगा रखे हैं न?"

"हाँ, मँगाए पड़े हैं।"

"मैं बूढ़े को ये रुपए दिखलाऊँगी।"

फिर क्लोई ने उल्लास से कहा - "उसे मालूम होगा कि मैंने कितने रुपए पाए हैं। वह मिठाईवाला मुझे और कुछ दिन वहाँ रहने को कहता था। मैं रह भी जाती, लेकिन बूढ़े के आने के कारण मेरा मन वहाँ नहीं लगा। मिठाईवाला आदमी बड़ा अच्छा है।"

क्लोई अपने कमाए रुपए दिखाने के लिए बड़ा आग्रह करती थी। मिसेज शेल्वी ने उसके संतोष के लिए उसके बिल और उसमें लिखे रुपए वहाँ ला रखे थे।

क्लोई फिर कहने लगी - "बूढ़ा पोली को नहीं पहचान सकेगा। कैसे पहचानेगा?"

"ओफ, उसको गए पाँच बरस हो गए। तब तो पोली बहुत छोटी थी। जरा-जरा खड़ा होना सीखती थी। चलने के समय उसे गिरते-पड़ते देखकर बूढ़ा कैसा खुश होता था। तुरंत दौड़कर उसे गोद में उठा लेता था। वाह!"

इसी समय गाड़ी के पहियों की घड़घड़ाहट सुनाई दी। "मास्टर जार्ज!" कहते हुए क्लोई खिड़की पर दौड़ गई। मिसेज शेल्वी ने शीघ्र बाहर आकर पुत्र को छाती से लगा लिया।

जार्ज ने वहाँ क्लोई को खड़े देखते ही उसके दोनों काले हाथ अपने हाथों में लेकर कहा - "दुखिया क्लोई चाची! मैं तुमसे क्या कहूँ! मैं अपना सब-कुछ देकर भी टॉम को ला सकता तो ले आता, पर... वह तो ईश्वर के यहाँ चला गया!"

मिसेज शेल्वी हाहाकर कर उठीं, पर क्लोई कुछ न बोली।

सबने घर में प्रवेश किया। वे रुपए, जिनके लिए क्लोई बहुत गर्वित थी, उस समय भी मेज पर पड़े हुए थे।

क्लोई ने उन रुपयों को बटोरकर काँपते हुए हाथों से मेम के सामने रखकर कहा - "मैं अब कभी इन रुपयों को नहीं देखना चाहती हूँ, न इनकी बात ही सुनना चाहती हूँ। मैं पहले से जानती थी कि अंत में यही होना है। खेतवालों ने उसका खून कर डाला!"

क्लोई यह कहकर घर से बाहर चल दी। मिसेज शेल्वी उठीं और उसे हाथ से पकड़ लाकर अपने पास बिठाते हुए बोली - "मेरी दुखिया क्लोई!"

क्लोई उसके कंधे पर सिर रखकर रोती हुई कहने लगी - "मुझे क्षमा कीजिए... मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया है।"

मिसेज शेल्वी ने कहा - "मैं यह जानती हूँ। मेरे पास सामर्थ्य नहीं कि तुम्हारी इस व्यथा को शांत कर सकूँ, पर ईश्वर समर्थ है, वह सब कर सकता है। वह टूटे हुए हृदय को जोड़ सकता है और हृदय में लगे हुए घावों को भर सकता है।"

कुछ देर बाद वहाँ सभी आँसू बहा रहे थे। अंत में जार्ज उस शोकातुर विधवा के पास आकर बैठ गया और उसके हाथ अपने हाथों में लेकर गदगद कंठ से उसके स्वामी की वीरोचित मृत्यु की घटना सुनाने लगा।

टॉम ने उसके लिए जो प्रेम-संदेश भेजा था, वह भी कह सुनाया।

इसके कोई एक महीने बाद एक दिन प्रातःकाल शेल्वी साहब के घर के सारे दास-दासी अपने नए मालिक की आज्ञानुसार कमरे में इकट्ठे हुए। कुछ देर बाद सबने बड़े विस्मय से देखा कि जार्ज कागजों का एक बंडल हाथ में लिए वहाँ आया। उसने प्रत्येक के हाथ में एक-एक कागज देकर बताया कि यह उनकी दासता से मुक्ति का प्रमाण-पत्र है। आज उसने सारे गुलामों को गुलामी की जंजीर से मुक्त कर दिया।

उसने हर एक के सामने उसका प्रमाण-पत्र पढ़कर सुनाया। दास-दासी आनंदमग्न होकर रोने लगे। कोई-कोई शोर मचाने लगे और उनमें से ही कितनों को इस घटना से बड़ी चिंता हुई। वे उस कागज को वापस ले लेने का अनुरोध करने लगे। बोले - "हम जितने आजाद हैं, उससे ज्यादा आजादी नहीं चाहते। हम लोग इस घर को, मेम साहब को और आपको छोड़कर कहीं भी नहीं जाना चाहते।"

जार्ज उन लोगों को सारी बातें अच्छी तरह समझाने का यत्न करने लगा, पर वे सब उसकी बात को अनसुनी करके कहने लगे - "हम लोग यहाँ से नहीं जाएँगे।" अंत में जब सब चुप हो गए तब जार्ज ने कहा - "गुलामी से छूटकर तुम लोगों को हमारा घर छोड़कर जाने की जरूरत नहीं है। यहाँ पहले जितने नौकरों की आवश्यकता थी, अब भी उतनी ही है। घर में जो काम पहले था, वही अब भी है। पर अब तुम लोग पूरी तरह आजाद हो। मैं अब तुम लोगों से तय करके तुम्हें महीने-महीने नौकरी दूँगा। तुम लोगों को आजाद कर देने से तुम्हारा लाभ यह हुआ कि मान लो, अगर मैं किसी का कर्जदार हो जाऊँ या मर जाऊँ, तो तुम्हें कोई पकड़ ले जाकर बेच नहीं सकेगा। मैं अपना काम अपने-आप चलाऊँगा और तुम लोगों को यह बताने का यत्न करूँगा कि इस मिली हुई आजादी का कैसे सदुपयोग करना चाहिए। आशा है कि तुम लोग चरित्रवान बनने का यत्न करोगे और पढ़ाई-लिखाई में मन लगाओगे। मूढ़ों विश्वास है कि ईश्वर की कृपा से मैं तुम लोगों के लिए कुछ कर सकूँगा। मेरे भाइयों, आज के दिन तुमने जो अनमोल स्वाधीनता-धन पाया है, उसके लिए ईश्वर का गुणगान करो, उसे धन्यवाद दो।"

इसके बाद जार्ज ने निम्नलिखित पद्य में अपनी भावना व्यक्त की :

रहे अब तुम न किसी के दास!

परवश जीवन मृत्यु सदृश है, इसमें कौन सुपास?

किसने कब सुख पाया जग में करके पर की आस।।

वह भी जीना क्या जीना है, यदि मन रहा उदास।

इंगित पर औरों के नाचा, सह-सहकर उपहास।

सुख स्वतंत्रता का अनुभव कर, होगा उर उल्लास।

बीतेगा जीवन विनोद में, होंगे विविध विलास।।

भय न रहा अब तुम्हें किसी का, दूर हुआ दुःख त्रास।

हो स्वच्छंद सुखी हो विचरो जग में बारों मास।।

एक बहुत ही बूढ़ा हबशी खड़ा होकर अपने काँपते हुए हाथों को उठाकर कहने लगा - "ईश्वर का धन्यवाद है! हम सब आप की दया-दृष्टि से गुलामी की बेड़ी से मुक्त हुए हैं।" इस बूढ़े के साथ दूसरे दास-दासी भी कृतज्ञता सहित बार-बार ईश्वर की प्रार्थना करने लगे।

प्रार्थना समाप्त होने पर जार्ज ने उन्हें टॉम की मृत्यु के समय की सारी घटनाओं का हाल सुनाकर कहा - "देखो, मुझे एक बात और कहनी है। तुम सब कृतज्ञता के साथ हमारे टॉम काका को याद करो। यह मत भूलना कि इस सौभाग्य का कारण टॉम काका ही थे। उन्होंने अपनी जान देकर आज तुम लोगों को आजादी दिलवाई। उनकी मृत्यु देखकर मेरे हृदय में बड़ी व्यथा हुई थी। मैंने वहीं उनकी समाधि पर बैठकर परमेश्वर के सामने प्रतिज्ञा की थी कि मैं भविष्य में अब कभी दास-प्रथा को आश्रय नहीं दूँगा। स्वयं कभी दास नहीं रखूँगा। मैं ऐसा नहीं करूँगा कि किसी को अपनी संतान से अलग होना पड़े। आज मेरी वह प्रतिज्ञा पूरी हुई। तुम सब स्वाधीन हुए। देखो, जब-जब स्वाधीनता के सुख से तुम्हारे हृदय में आनंद हो, तब-तब मेरे परम बंधु टॉम काका का स्मरण जरूर करना, उसके परिवार पर कृतज्ञता और प्रेम प्रकट करना और जब तक जीते रहो, तब तक टॉम काका की मिसाल सामने रखकर उस पर चलते रहना। टॉम काका का साधु जीवन ही उसका एकमात्र स्मृति-चिह्न है। तुम सब टॉम काका की भाँति चरित्रवान और धर्मपरायण होने की चेष्टा करते हुए अपने-अपने हृदय में उसका स्मृति-मंदिर बना लो!"

## 47. उपसंहार

जार्ज ने मैडम डिथो से इलाइजा के संबंध में जो बातें की थीं, उन्हें सुनकर कासी को निश्चय हो गया कि हो न हो, इलाइजा ही मेरी बेटाई है। उसके निश्चय का विशेष कारण था। जार्ज ने अपने पिता द्वारा इलाइजा के खरीदे जाने की जो तारीख बताई थी, ठीक उसी तारीख को उसकी कन्या बिकी थी। इस प्रकार दोनों तारीखों के एक मिल जाने से यह अनुमान पक्का हो गया कि

मृत शेल्वी साहब ने जिस कन्या को खरीदा था, वह कासी की ही लड़की थी।

अब कासी और मैडम डिथो में बड़ी घनिष्ठता हो गई। वे दोनों एक ही साथ कनाडा की ओर चलीं। जब मनुष्य के दिन फिरते हैं तब सारी घटनाएँ अनुकूल-ही-अनुकूल होती जाती हैं। एम्हर्स्टबर्ग में पहुँचने पर इनकी एक पादरी से भेंट हुई। कनाडा पहुँचने पर जार्ज और इलाइजा ने उन्हीं के यहाँ एक रात बिताई थी, इससे पादरी साहब उन्हें अच्छी तरह जानते थे। उन्हें इन नवागत महिलाओं का सारा विवरण सुनकर बड़ा अचंभा हुआ और साथ ही बड़ी दया भी आई। वह तुरंत जार्ज की खोज के लिए मांट्रियल नगर जाने को इनके साथ हो लिए।

गुलामी की बेड़ी से मुक्त होकर जार्ज पाँच वर्षों से सानंद स्त्री-पुत्र सहित मांट्रियल नगर में जीवन बिता रहा है। वह एक मशीन बनानेवाले की दुकान पर काम करता है। उसे जो कुछ मिलता है, उतने से उसके दिन बड़े सुख से कट जाते हैं। यहाँ आने पर इलाइजा को एक कन्या और हुई। वह पाँच बरस की हो गई है और उसका पुत्र हेरी ग्यारहवें वर्ष में पदार्पण कर चुका है। इस समय वह इसी नगर के एक विद्यालय में पढ़ता है।

इनका निवास-स्थान बड़ा साफ-सुथरा है। सामने एक छोटी-सी सुंदर फुलवारी है, जिसे देखकर घर के मालिक की सुरुचि का परिचय मिलता है। घर में तीन-चार कमरे हैं। उन्हीं में से एक कमरे में बैठा हुआ जार्ज पढ़ रहा है। बचपन से ही जार्ज को पढ़ने-लिखने की बड़ी लगन थी। बहुत-सी विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी उसने पढ़ना-लिखना सीख लिया था। जब काम से थोड़ा अवकाश पाता, तत्काल पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ जाता।

संध्या निकट है। जार्ज अपने कमरे में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा है। इलाइजा बगलवाली कोठरी में बैठी चाय तैयार कर रही है। कुछ देर बाद वह बोली - "सारे दिन तुमने मेहनत की है, अब थोड़ा आराम कर लो। इधर आओ, कुछ बातचीत करेंगे। इतनी मेहनत करोगे तो तंदुरुस्ती खराब हो जाएगी।" इस पर इलाइजा की कन्या ने पिता की गोद में जाकर पुस्तक छीन ली। यह देखकर इलाइजा बोली - "वाह, ठीक किया! छोड़ो किताब को, इधर आओ!" इसी समय हेरी भी स्कूल से आ गया। जार्ज ने उसे देखकर उसके सिर पर हाथ रखते हुए पूछा - "बेटा, तुमने यह हिसाब अपने-आप लगाया है?"

हेरी ने कहा - "जी हाँ, मैंने स्वयं लगाया है। किसी की भी मदद नहीं ली।"

जार्ज बोला - "यही ठीक है। बचपन ही से अपने सहारे खड़ा होना चाहिए। खोटी किस्मत के कारण तुम्हारे बाप को लिखना-पढ़ना सीखने की सुविधा नहीं थी, पर तुम्हारे लिए मौका है, इसलिए खूब जी लगाकर पढ़ा-लिखा करो।"

इसी समय जार्ज को दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज आई। इलाइजा ने जाकर दरवाजा खोला तो देखा, वही एम्हर्स्टबर्गवाले पादरी साहब तीन स्त्रियों को साथ लेकर आए हैं।

पादरी साहब इनके एक बड़े उपकारी मित्र थे। उन्होंने निराश्रित अवस्था में इन्हें आश्रय दिया था। इससे इलाइजा उन्हें देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और जार्ज को बुलाया।

पादरी साहब और उनके साथ आई स्त्रियों ने घर में प्रवेश किया। इलाइजा ने सबको बड़े आदर-सत्कार से बिठाया।

एमहर्स्टबर्ग से चलते समय पादरी साहब ने मैडम डिथो और कासी से कह दिया था कि तुम लोग वहाँ पहुँचते ही अपना भेद मत खोल देना। उन्होंने मन-ही-मन एक लंबी-चौड़ी भूमिका बाँधकर व्याख्यान के ढंग पर जार्ज और इलाइजा को इनका परिचय देने का निश्चय कर रखा था। मालूम होता है, वही रास्ते भर इसी बात को सोचते आ रहे थे कि इस विषय में किस ढंग से शुरुआत करेंगे। इसी से जब सब लोग बैठ गए, तब पादरी साहब जेब से रुमाल निकालकर मुँह पोंछते हुए व्याख्यान देने की तैयारी करने लगे। पर मैडम डिथो ने भाषण आरंभ होने के पूर्व ही सब खेल बिगाड़ दिया। जार्ज के देखते ही वह उसके गले से लिपट गई और आँसू बहाती हुई बोली - "जार्ज, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते? मैं तुम्हारी बहन एमिली हूँ।"

कासी अब तक चुप बैठी थी। उसकी भाव-भंगिमा से जान पड़ता था कि यदि मैडम डिथो सब खेल न बिगाड़ती, तो वह पूर्व व्यवस्था के अनुसार मौन धारण किए रहने में बाजी मार जाती। पर इसी समय इलाइजा की कन्या वहाँ आ पहुँची। वह रूप-रंग में बिल्कुल इलाइजा-जैसी थी। बस, इतनी ही उम्र में इलाइजा कासी की गोद से अलग की गई थी। कासी उसे देखते ही पागल की तरह दौड़ी और छाती में दबोचते हुए बोली - "बेटी, मैं तेरी माँ हूँ। तू मेरी खोई हुई दौलत है!" कासी ने उसी को अपनी संतान समझा।

इनके यों परिचय देने से इलाइजा और जार्ज, दोनों को बड़ा विस्मय हुआ। वे चौंक पड़े। उन्हें सब स्वप्न-सा जान पड़ने लगा। अंत में हर्ष-मिश्रित क्रंदन रुकने पर पादरी साहब फिर खड़े हुए और सारा भेद खोलकर सुनाया। उनकी बातें सुनते समय सबकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। वास्तव में पादरी साहब की उस दिन की कहानी से उनके श्रोताओं का मन ऐसा पिघला था, जैसा शायद पहले कभी न पिघला होगा।

इसके बाद सब लोग घुटने टेककर बैठे और वह सहृदय पादरी ईश्वर को धन्यवाद देते हुए प्रार्थना करने लगे। उपासना की समाप्ति पर सबने उठकर परस्पर एक-दूसरे का आलिंगन किया। वे भी मन-ही-मन सोच रहे थे कि ईश्वर की महिमा कितनी अनंत है। जार्ज और इलाइजा को स्वप्न में भी ऐसे अद्भुत मिलन की आशा न थी, पर ईश्वर ने आज बिना माँगे ही उन्हें यह सुख और शांति देने की कृपा की।

कनाडा के एक पादरी के स्मृति-पटल पर भगोड़े दास-दासियों के ऐसे अदभुत मिलन की सहस्रों कहानियाँ अंकित थीं। उसकी पुस्तक पढ़कर पता चलता है कि दास-प्रथा पर लिखे हुए उपन्यासों की काल्पनिक घटनाओं की अपेक्षा मनुष्य के प्रकृत जीवन की घटनाएँ अधिक



आश्चर्यजनक होती हैं। छह बरस की अवस्था में संतान माता की गोद से बिछड़ गई है। फिर तीन वर्ष की अवस्था में उसी का अपनी माता के साथ कनाडा की धरती पर मिलन हुआ है। कोई किसी को पहचान नहीं सकता है। कितने ही भगोड़े दासों के जीवन में अद्भुत वीरता और त्याग के दृष्टांत दीख पड़ते हैं। अपनी माताओं और बहनों को दासता के अत्याचार से मुक्त करने के लिए वे अपनी जान पर खेल गए थे। एक दास युवक था। पहले वह यहाँ अकेला भागकर आया, किंतु पीछे से वह अपनी बहन को छुड़ाने के लिए जाकर एक-एक करके तीन बार पकड़ा गया। उसने बड़ी-बड़ी मुसीबतें और संकट सहे। एक-एक बार की कोड़ों की मार से छः-छः महीने खाट पकड़े रहा, पर तब भी किसी तरह उसने अपना निश्चय न छोड़ा। अंत में चौथी बार की चेष्टा में वह अपनी बहन को छुड़ा ही लाया।

क्या यह युवक सच्चा वीर नहीं है? पर अमरीका के पशु-प्रकृति के अंग्रेज उसे चोर समझते थे। न्याय की नजर से देखा जाए तो ये अर्थलोभी गोरे ही असली चोर हैं। अत्याचार-पीड़ित उस युवक का कार्य वास्तव में वीरता का कार्य कहलाने योग्य था।

कासी, मैडम डिथो और एमेलिन, तीनों जार्ज और इलाइजा के साथ रहने लगीं। कासी पहले कुछ सनकी-सी जान पड़ती थी। वह जब-तब आत्म-विस्मृति के कारण इलाइजा की कन्या को छाती से लगाने के लिए इतने जोरों से खींचती कि देखकर सबको आश्चर्य होता था। पर धीरे-धीरे उसकी दशा सुधरने लगी। इलाइजा अपनी माता की यह दशा देखकर उसे बाइबिल सुनाया करती थी, विशेषतः ईश्वर की दया की कथा सुनाती थी। कुछ दिनों बाद कासी का मन धर्म की ओर मुड़ा। उसके हृदय में भक्ति और प्रेम का स्रोत प्रवाहित होने लगा और बहूत थोड़े समय में उसका जीवन अत्यंत पवित्र हो गया।

थोड़े समय बाद मैडम डिथो ने जार्ज से कहा - "भाई, अपने पति के मरने से मैं ही उसके अतुल धन की मालकिन हुई हूँ। तुम अब इस धन को अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकते हो। मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार इस धन का सदुपयोग करना चाहती हूँ।"

यह सुनकर जार्ज बोला - "एमिली बहन, मेरी खूब पढ़-लिखकर विद्वान होने की बड़ी लालसा है। तुम मेरी शिक्षा का कोई प्रबंध कर दो।"

इतनी बड़ी उम्र में जार्ज की शिक्षा का क्या प्रबंध होना चाहिए, सब लोग इस विषय पर विचार करने लगे। अंत में सबकी यही राय हुई कि सब लोग फ्रांस चलकर रहें और जार्ज वहाँ के किसी विश्वविद्यालय में भर्ती होकर शिक्षा प्राप्त करें।

यह बात पक्की हो जाने पर ये सब एमेलिन को साथ लेकर जहाज पर सवार हो फ्रांस को चल पड़े। जहाज का कप्तान बड़ा अच्छा आदमी था। उसने एमेलिन का सदाचार, रूप-लावण्य, विनीत भाव और उसके सदगुणों को देखकर उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट की, और फ्रांस पहुँचकर उससे विवाह कर लिया। जार्ज ने चार वर्ष तक फ्रांस में रहकर अने शास्त्रों का अध्ययन

किया, पर किसी राजनैतिक घटना के कारण उन लोगों को फ्रांस छोड़कर फिर कनाडा लौट आना पड़ा।

अब जार्ज एक सुशिक्षित युवक है। उसके हाथ का लिखा हुआ एक पत्र हम नीचे उद्धृत करते हैं। यह पत्र जार्ज ने कार्यक्षेत्र में प्रवेश करने के कुछ ही पहले अपने किसी मित्र को लिखा था। शिक्षा के प्रभाव से उसका हृदय कितना उच्च हो गया था, इस पत्र को पढ़कर उसका अनुमान किया जा सकता है -

प्रिय मित्र, मुझे तुम्हारे पत्र में यह पढ़कर बड़ा खेद हुआ कि तुम मुझे गोरों के दल में मिलने का अनुरोध कर रहे हो। तुम कहते हो कि मेरा रंग साफ है और मेरी स्त्री, पुत्र, कुटुंबी कोई भी काले नहीं है, इससे मैं बड़ी आसानी से उनके समाज में मिल सकता हूँ, पर मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि इनमें मिलने की मेरी जरा भी इच्छा नहीं है। धनवानों और रईसों पर मेरी तनिक भी श्रद्धा नहीं है। मनुष्य-समाज का इनसे कभी उपकार नहीं हो सकता कि अधिकांश मनुष्य तो पशुओं की भाँति परिश्रम से पिस-पिसकर मरें और कुछ लोग बाबू और रईस बने फिर तथा चैन की बंसी बजाएँ। ऐसे आदमियों से मनुष्य-समाज का बड़ा अपकार हो रहा है। जिन मनुष्यों को पशुओं की भाँति परिश्रम करना पड़ता है, वे किसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते, जिंदगी भर मूर्ख बने रहते हैं। इससे उन्हें धर्म-अधर्म का कोई विचार नहीं रहता, वे सदा बुराईयों में फँसे रहते हैं। इन बुराईयों के मूल कारण वे ही लोग हैं, जो उनसे इस प्रकार पशुओं की भाँति काम लेते हैं। उन लोगों के पाप और दुर्नीति के अवश्यंभावी कुफल से समग्र मानव-समाज का अकल्याण होता है।

समाज में इतने पाप, दुःख, अत्याचार और दरिद्रता के फलने-फूलने का क्या कारण है? संसार में सुख-शांति क्यों नहीं है? इस विषय पर मैं जितना सोचता हूँ, उतनी ही इन रईसों और धनवानों पर से मेरी श्रद्धा घटती जाती है। बड़े आदमी ही इसके एकमात्र कारण जान पड़ते हैं।

अत्याचार से सताए हुए दीन-दुखियों पर, मानव-समाज के अन्नदाता पार्थिव-पद-प्रभुत्वहीन गरीब किसानों पर, निर्बल और निस्सहाय अनाथों पर ही अब मेरी श्रद्धा है।

तुम मुझे रईस-मंडली में मिलाकर शान के साथ जीवन बिताने को कहते हो, पर जरा विचारो तो, यह रईस-मंडली है क्या? असहायों, निराश्रयों और कंगालों के कठोर परिश्रम की कमाई को घर-बैठे मुफ्त में भोग-विलास में उड़ाना ही रईसी है या और कुछ? इसी का नाम शायद बड़प्पन है। गरीब दिन-रात खून-पसीना एक करके जो कुछ कमाए, उसे मैं छल-कपट से हड़प लूँ और मेरे पास जो कुछ है, उसमें से किसी को कानी कौड़ी तक न दूँ! मैं विद्वान हूँ, पर उन दुर्बलों को उनके कठोर परिश्रम की कमाई के बदले मैं अपनी विद्या का एक कण भी न दूँ! ऐसे ही आचरणों को भिन्न-भिन्न जाति के लोग रईसाना व्यवहार करते हैं। पर तुम्हीं कहो, क्या ऐसे रईसी जीवन से मुझे सुख मिल सकता है? ऐसा बड़प्पन लेकर क्या कोई कभी संसार से पाप, ताप, अत्याचार और दरिद्रता का मूलोच्छेद कर सकता है? कभी नहीं! बल्कि जो कोई इस

रईस मंडली में शामिल होगा, उसको समाज में प्रचलित पापों, अत्याचारों और निष्ठूरताओं का पक्ष लेना पड़ेगा। मैं मानता हूँ कि इस संसार में सब लोग कभी बराबर नहीं हो सकते, सबकी दशा समान नहीं हो सकती, और मैं यह भी मानता हूँ कि सामाजिक वंचनाओं के कारण लोगों की गिरी दशा में कभी सुधार नहीं होगा, वैषम्य बना रहेगा। इससे हमारे लिए यह कदापि उचित नहीं है कि किसी दूसरे का हाथ काटकर उसमें और अपने में भेद उत्पन्न कर लें। कहो, मेरी क्या दशा थी? मैं केवल दासी के पेट से पैदा होने के कारण ही, देश में प्रचलित कानून के द्वारा हर व्यक्ति को प्राप्त स्वाभाविक अधिकारों से वंचित रखा गया। भला ऐसे व्यवहार द्वारा मनुष्य-समाज में परस्पर द्वेष उत्पन्न होने के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? अपने पितृ-कुल की ऊँची जाति से मेरी तनिक भी सहानुभूति नहीं है। उच्च जातिवालों ने मुझे कभी किसी घोड़े या कुत्ते से अधिक नहीं समझा। केवल मेरी माता ही थी, जिसकी निगाह में मैं मनुष्य की संतान था। बचपन में जब से मेरा उस स्नेहमयी जननी से वियोग हुआ, तब से आज तक मेरी उससे भेंट नहीं हुई। वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी। उसने कैसे-कैसे कष्ट और दुःख भोगे, मैंने लड़कपन में कैसे-कैसे अत्याचार सहे और कष्ट उठाए, मेरी स्त्री ने बच्चे को बचाने के लिए किस तरह नदी पार की और किस वीरता से नाना प्रकार के दुःखों और यंत्रणाओं का सामना किया, इस सबको जब मैं याद करता हूँ, तो मेरा मन बेचैन हो जाता है। पर जिन लोगों ने हमें इतना सताया, इतने दुःख दिए, उनके विरुद्ध मैं अपने हृदय में किसी प्रकार का द्वेष नहीं रखता, बल्कि ईश्वर से उनके भी कल्याण की प्रार्थना करता हूँ।"

मेरी माता अफ्रीकावासिनी थी। इससे अफ्रीका मेरी मातृभूमि है। उन पराधीन, अत्याचार-पीड़ित, अफ्रीकावासियों की उन्नति के निमित्त ही मैं अपने जीवन को लगाऊँगा। देश-हित व्रत धारण करके प्राण-पण से बलवानों के अत्याचारों से निर्बलों की रक्षा करने का यत्न करूँगा।

तुम मुझे धर्मप्रचारक का व्रत लेने के राय देते हो, और मैं भी समझता हूँ कि धार्मिक हूँ बिना कभी मनुष्य की उन्नति नहीं हो सकती, लेकिन क्या इन अपढ़ और गँवारों को सहज ही धर्ममार्ग पर लाया जा सकता है? अत्याचार-पीड़ित जाति कभी सत्यधर्म का मर्म नहीं समझ सकती। उसकी अंतरात्मा जड़ होती है।

अत्याचार से पीड़ित पराधीन जाति को उन्नत करने के लिए सबसे पहले देश में प्रचलित कानून का सुधार करना होगा, पराधीनता की बेड़ी से इन्हें मुक्त करना होगा। तब जाकर इनका कुछ भला हो सकेगा। मैं तन-मन से इस बात की चेष्टा करूँगा कि अफ्रीका-वासियों में जातीय जीवन का गर्व आ सके और संसार की सभ्य जातियों में इनकी एक स्वतंत्र जाति के रूप में गणना हो सके। इन्हीं दिनों साइबेरिया क्षेत्र में साधारण तंत्र (जन-शासन) की स्थापना हुई है। मैंने वहीं जाने का निश्चय किया है।

तुम शायद समझते हो कि इन घोर अत्याचारों से सताए जानेवाले अमरीका के गुलामों को मैं भूल गया हूँ। पर कभी ऐसा मत समझना। यदि मैं इन्हें एक घड़ी के लिए, एक पल के लिए भी भूलूँ तो ईश्वर मुझे भूल जाए। पर यहाँ रहकर मैं इनका कुछ भला नहीं कर सकूँगा। अकेले

मेरे किए इनकी पराधीनता की बेड़ी नहीं टूटेगी। हाँ, यदि मैं किसी ऐसी जाति में जाकर मिल जाऊँ, जिसकी बात पर दूसरी जातियों के प्रतिनिधि ध्यान दें, तो हम लोग अपनी बात सबको सुना सकते हैं। किसी जाति की भलाई के लिए किसी व्यक्ति-विशेष से वाद-विवाद, अभियोग या अनुरोध करने का अधिकार नहीं है। हाँ, वह पूरी जाति अवश्य वैसा करने का पूर्ण अधिकार रखती है।

यदि किसी समय सारा यूरोप स्वाधीन जातियों का एक महामंडल बन गया, यदि अधीनता, अन्याय और सामाजिक वैषम्य के उत्पीड़न से यूरोप सर्वथा रहित हो गया, और यदि सारे यूरोप ने इंग्लैंड और फ्रांस की भाँति हम लोगों को एक स्वतंत्र जाति मान ली, तो उस समय हम विभिन्न जातियों की महा-प्रतिनिधि सभा में अपना आवेदन उपस्थित करेंगे और बलपूर्वक दासता में लगाए हुए, अत्याचार से पीड़ित, दर्दशाग्रस्त स्वजातीय भाइयों की ओर से सही-सही विचार करने की प्रार्थना करेंगे। उस समय स्वाधीन और सुसभ्य अमरीका देश भी अपने मस्तक से इस दासता-प्रथा रूपी सर्वजन-घृणित घोर कलंक को धोकर बहा देगा।

तुम कह सकते हो कि आयरिश, जर्मन और स्वीडिश जातियों की भाँति हम लोगों को भी अमरीका के साधारण तंत्र में सम्मिलित होने का अधिकार रहे। मैं भी इसे मानता हूँ। हम लोगों को समान भाव से सबके साथ मिलने देना चाहिए। सबसे पहली जरूरत यह है कि जाति और वर्ण के भेद को परे रखकर हम प्रत्येक व्यक्ति को योग्यतानुसार समाज में ऊँचे स्थान पर पहुँचने दें। इतना ही नहीं कि इस देश में जन-साधारण को जो अधिकार मिले हुए हैं, उन्हीं पर हमारा दावा है, बल्कि हमारी जाति की जो क्षति इन लोगों के अत्याचार से हो रही है, उस क्षति की पूर्ति के लिए अमरीका पर हम लोगों का एक विशेष दावा है। ऐसा होने पर भी मैं वह दावा नहीं करना चाहता। मैं अपना एक देश और एक जाति चाहता हूँ। अफ्रीकी जाति की प्रकृति में कुछ विशेषताएँ हैं। अंग्रेजों से अफ्रीकी जाति की प्रकृति बिल्कुल भिन्न होने पर भी ये विशेष गुण, सभ्यता और ज्ञान-विस्तार के साथ-साथ अफ्रीकनों को नीति और धर्म की ओर अग्रसर करने में उच्च और महान प्रमाणित होंगे।

मैं एक लंबे समय से समाज के अभ्युदय की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि हम इस नवीन युग की पूर्व सीमा पर खड़े हुए हैं। मुझे विश्वास है कि आजकल जो भिन्न-भिन्न जातियाँ भयंकर वेदनाओं से कातर हो रही हैं, उन्हीं की वेदनाओं से सार्वभौम प्रेम और शांति का जन्म होगा।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि अफ्रीका धर्म-बल से ही उन्नति के शिखर पर पहुँच सकेगा। अफ्रीकी चाहे क्षमतावान तथा शक्ति-संपन्न न हों, पर वे सहृदय, उदारचेता और क्षमाशील अवश्य हैं। जिन्हें अत्याचार की धधकती हृई आग में चलना पड़ता है, उनके हृदय यदि स्वर्गीय प्रेम और क्षमा के गुणों से पूर्ण न हों तो उनके हृदय की अग्नि को शांत करने के लिए और उपाय ही क्या है? अंत में यही प्रेम और क्षमा उन्हें विजयी बनाएँगे। अफ्रीका महाद्वीप में प्रेम

और क्षमा के मानवीय धर्म का प्रचार करना ही हम लोगों का जीवन-व्रत होगा।

मैं स्वयं इस विषय में कमजोरियों का शिकार हूँ। मेरी नस-नस में आधा खून गर्म-अंग्रेज खून है, पर मेरे सामने सदा एक मधुर-भाषिणी धर्म-उपदेशिका विद्यमान रहती है, यह मेरी सुंदर स्त्री है। भटकने पर यह मुझे कर्तव्य के मार्ग का ज्ञान कराती है, हम लोगों के जातीय उद्देश्य एवं जीवन के लक्ष्य को हमेशा निगाह के सामने जीता-जागता रखती है। देश-हित की इच्छा से, धर्मशिक्षा की कामना से, मैं अपने प्रियतम स्वदेश अफ्रीका को जा रहा हूँ।

तुम कहो कि मैं कल्पना के घोड़े पर सवार हूँ। कदाचित् तुम कह सकते हो कि मैं जिस काम में हाथ डाल रहा हूँ, उस पर मैंने पूरी तरह विचार नहीं किया है, पर मैंने खूब सोच-विचार कर रखा है, लाभ-हानि का हिसाब लगाकर देख चुका हूँ। मैं काव्यों में वर्णित स्वर्गधाम की कल्पना करके लाइबेरिया नहीं जा रहा हूँ। मैं कर्मक्षेत्र में डटकर परिश्रम करने का संकल्प करके वहाँ जा रहा हूँ। आशा है, स्वदेश के लिए परिश्रम करने से मैं कभी मुँह नहीं मोड़ूँगा, हजारों विघ्न-बाधाओं के आने पर भी कर्म-क्षेत्र में डटा रहूँगा और जब तक मेरे शरीर में दम है, देश के लिए काम करता जाऊँगा।

मेरे संकल्प के संबंध में तुम चाहे जो कुछ सोचो, पर मेरे हृदय पर अविश्वास मत करना। याद रखना कि मैं चाहे कुछ भी काम क्यों न करूँ, अपनी जाति की मंगल-कामना को ही हृदय में धारण करके उस काम में लगूँगा।

तुम्हारा

जार्ज हेरिस

इसके कुछ सप्ताह के बाद जार्ज अपने पुत्र तथा घर के दूसरे लोगों के साथ अफ्रीका चला गया।

मिस अफिलिया और टप्सी को छोड़कर उपन्यास में आए हुए नामों में से अब हमें और किसी के बारे में कुछ नहीं कहना है।

मिस अफिलिया टप्सी को अपने साथ वारमांड ले गई। पहले अफिलिया के पिता के घर के लोग टप्सी को देखकर बहुत विस्मित हुए और चिढ़े भी, पर मिस अफिलिया किसी तरह अपने कर्तव्य से हटनेवाली नहीं थी। उसके अपूर्व स्नेह और प्रयत्न से दास-बालिका थोड़े ही दिनों में सबकी स्नेह-पात्र बन गई। बड़ी होने पर टप्सी अपनी खुशी से ईसाई हो गई। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि, कर्मठता और धर्म के प्रति उत्साह देखकर कुछ मित्रों ने उसे अफ्रीका जाकर धर्म-प्रचार करने की सलाह दी।

पाठक यह सुनकर सुखी होंगे कि मैडम डिथो की खोज से कासी के पुत्र का भी पता लग

गया।

यह वीर युवक माता के पलायन के बहुत पूर्व कनाडा भाग आया था। यहाँ आकर दास-प्रथा के विरोधी, अनाथों के बंधु अनेक सहृदय व्यक्तियों की सहायता से उसने अच्छी शिक्षा पाई थी। जब उसे मालूम हुआ कि उसकी माता और बहन अफ्रीका जा रही हैं, तब वह भी अफ्रीका की ओर चल दिया।

अंत